PRKASHAN SAMACHAR 1971 G.K.V.

प्रकाशन समाचार

मार्च १९७१

इस मास के
दो विशिष्ट प्रकाशन

राका की मंज़िल

बलवंत सिंह

प्रख्यात कथाकार का नया उपन्यास ! दो सौ वर्ष पुराने अफ्रीकी कबीलों के निश्छल विश्वासों की अत्यंत मर्मस्पर्शी कहानी ! शैली-शिल्प ... विषय-वस्तु की दृष्टि से अभूतपूर्व उप... इसके सशक्त पात्र और प्रभावशाली ... पाठकों को अभिभूत कर लेंगे।

मूल्य १५.००
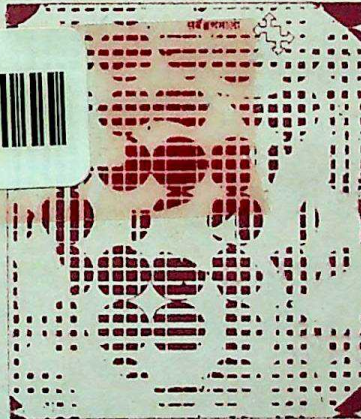
छायावाद

रवीन्द्र भ्रमर

छायावाद को उसकी समग्रता में देखते-परखते हुए लेखक ने इस कृति में अपने मूल्यांकन को यथासम्भव सुगम रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है।

मूल्य १२.००

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली-६ पटना-६

नये महत्वपूर्ण प्रकाशन

बांदी : सामन्तशाही की छाया में पलती बांदियों के जीवन पर हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भैरवप्रसाद गुप्त का मार्मिक उपन्यास। **मूल्य १०-००**

लोई का ताना : हिन्दी में सर्वथा अनूठे प्रयास के रूप में संत कबीर और उनकी पत्नी लोई के जीवन के ताने-बाने से भरपूर रांगेय राघव का रोचक उपन्यास **मूल्य ५-००**

मेरी प्रिय कहानियां : 'पुस्तक माला' की नई पुस्तक। इसमें जाने-माने लेखक कृश्न चन्दर की अपनी मनपसंद कहानियाँ, कहानी पर अपनी विचारोत्तेजक भूमिका के साथ, प्रकाशित हुई हैं। **मूल्य ५-००**

बिन मांगे मोती मिले : गुजरात के वर्तमान राज्यपाल, कर्मठ राष्ट्रसेवक और मर्मज्ञ चिन्तक श्री श्रीमन्नारायण के २० ललित निबन्धों का यह संकलन सरल बोधकथाओं, संस्मरणों, समसामयिक चिन्तन सामग्री से भरपूर हैं। **मूल्य ४-००**

सिख धर्म के दस गुरु : सिख धर्म के दस गुरुओं का इसमें सरल और रोचक परिचय दिया गया है। सबके पढ़ने और जानने योग्य। **मूल्य ३-५०**

'देश और निवासी' पुस्तक माला की दो नई पुस्तकें

थाइलैंड	जितेन्द्र कुमार मित्तल	३.००
इसराइल	आनन्द जैन	३.००

राजपाल एण्ड सन्ज,
कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित

सम्पादक : शीला संधू

वर्ष १८ ● अंक ७ ● मार्च १९७१
वार्षिक ४.००; विदेशों में ८.००; एक प्रति ०.४०

चुनाव-परिणाम : नई दिशा का संकेत

मध्यावधि चुनाव के परिणाम हर पार्टी और व्यक्ति के लिए चौंकानेवाले रहे हैं। जो पार्टियाँ हारी हैं केवल उन्होंने ही नहीं, भारी बहुमत से जीतनेवाली नई कांग्रेस ने भी इन परिणामों की आशा नहीं की थी। इस बार जनता ने यह सिद्ध कर दिया कि उसे झूठे-सच्चे नारों से नहीं बहकाया जा सकता और उसमें इतनी राजनीतिक चेतना उत्पन्न हो चुकी है कि वह मतदान के मामले में अपने विवेक से काम ले सके। यों १९६७ के चुनाव में भी उसने अपनी इस विवेक-शक्ति का परिचय दिया था और अनेक राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारों की स्थापना कराकर यह आशा की थी कि कांग्रेसी प्रशासन के गत्यवरोध को इस प्रकार दूर किया जा सकेगा। लेकिन उसकी वह आशा फलीभूत नहीं हुई और मिली-जुली सरकारों के संघटक दलों ने सिवाय आपसी खींचतान के और कोई ऐसा काम करके नहीं दिखाया जिससे लगता कि कांग्रेसी प्रशासन के मुकाबले कोई बेहतर प्रशासन जनता को मिला है। जिन-जिन राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं उन सभी में रोज सरकारें बनती-टूटती रहीं। केन्द्र में भी कांग्रेस की शक्ति कम होने के कारण सरकार कई ऐसे काम नहीं कर पाई जो जनहित की दृष्टि से होने चाहिए थे, लेकिन प्रतिपक्षी दलों के विरोध के कारण नहीं हो पाये। इन सब कारणों से जनता ने महसूस किया कि एक मजबूत सरकार का होना आवश्यक है और फलतः नई कांग्रेस को भारी बहुमत मिला, क्योंकि पिछले दिनों में प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कुछ ऐसे कदम उठाये थे जो आशा बँधानेवाले हैं।

एक और बात इन परिणामों से सामने आई है और वह यह कि जनता का झुकाव वामपक्षी विचारधारा की ओर है तथा साम्प्रदायिक और विभाजक शक्तियों को वह पसन्द नहीं करती है।

अब जबकि श्रीमती इन्दिरा गाँधी को संसद में दो-तिहाई बहुमत की शक्ति प्राप्त हो गई हैं, यह आशा करना अनुचित नहीं होगा कि वे जनता से किये गये अपने वायदों को पूरा करेंगी। अगर वे ऐसा नहीं करती हैं और उनके वायदे सिर्फ वायदे रह जाते हैं तो यह निश्चित है कि उनकी पार्टी का भविष्य उज्ज्वल नहीं रहेगा और प्रतिक्रिया-वादियों को उस अवस्था में अपना दाँव चलने का अवसर मिल सकता हैं।

मानक हिन्दी अंग्रेजी कोष
सं. राममूर्तिसिंह १२.००

मलयालम की श्रेष्ठ कहानियां
सं. सुधांशु ६.००

मलयालम के श्रेष्ठ एकांकी
सं. सुधांशु ६.००

अलग अलग आकृतियां
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' १०.००

कठपुतलियां
सच्चिदानन्द शर्मा ५.००

इतवार का दिन
राजेन्द्र सक्सेना ५.००

भारत में इस्लाम
आचार्य चतुरसेन १६.००

हिन्दू समाज का नव निर्माण
आचार्य चतुरसेन ६.००

चरण कमल
डा० चन्द्रकान्त भारद्वाज ४.००

परमाणु युग
शक्ति त्रिवेदी ५.००

आन के दावेदार
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ६.००

बलिदान
हरिप्रसाद पालिवाल ५.००

स्वामी रामतीर्थ साहित्य

हमारा भारत ३.५०
मानवता और विश्व प्रेम ३.५०
आनन्द की पगडंडियां ३.५०
ब्रह्मचर्य की शक्ति ३.५०
हमारा राष्ट्रीय धर्म ३.५०
गृहस्थ धर्म ३.५०
व्यावहारिक वेदान्त ३.५०
सफलता का रहस्य ३.५०
रामतीर्थ सूक्ति सुधा ३.५०
स्वामी रामतीर्थ (जीवनी) ६.५०

पराक्रम प्रेरणा माला

गुरु गोविन्द सिंह ४.५०
हरिसिंह नलवा ३.५०
मत चूके चौहान ३.५०
भारतीय संस्कृति के गायक ३.५०
हमारे बहादुर जनरल ३.५०
Our Gallant Generals ४.००

शरत साहित्य

श्रीकान्त १६.००
चरित्रहीन १५.००
गृहदाह ८.००
विजया ५.००

प्रभात प्रकाशन

२०५, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

सरल हिन्दी बनाम कठिन हिन्दी

दयानन्द वर्मा

पाँचवें ज्ञानपीठ-पुरस्कार-समर्पण-समारोह के उपरान्त श्री फिराक गोरखपुरी के सम्मान में एक भोज का आयोजन हुआ था। वहीं हिन्दी को सरल बनाने के बारे में चर्चा चल निकली।

फिराक साहब ने फर्माया—"हम जिस भाषा में लिखते हैं, हिन्दी वही है।"

एक सज्जन ने पूछा—"हिन्दी के आचार्य जिस भाषा में लिखते हैं, वह क्या है।"

"वह गँवारू भाषा है" फिराक साहब बोले—"जो भाषा हरेक की समझ में न आए उसे गँवारू कहना चाहिए।" शब्द कुछ तीखे थे लेकिन निकले एक सम्मानित विद्वान के मुख से थे। हिन्दी की यह आलोचना सुनकर मेरे अन्तर में यह प्रश्न उभरा कि क्या भाषा का केवल एक रूप होना चाहिए, वह रूप जो हरेक की समझ में आ जाए?

हिन्दी को सरल बनाने की जरूरत सिर्फ फिराक साहब ही महसूस नहीं करते। अन्य क्षेत्रों के विद्वानों ने समय-समय पर इस प्रकार के विचार अपने-अपने शब्दों में व्यक्त किए हैं। अब सोचना यह है कि हिन्दी की सरलता का निर्वाह कहाँ तक हो सकता है।

हरेक की समझ में आने वाली हिन्दी की जब कल्पना करता हूँ तो कई कठिनाइयाँ सामने आती हैं। मसलन यह है कि हमारा समाज अनेक वर्गों में बँटा हुआ है। हर वर्ग कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है, जो अन्य वर्गों के इस्तेमाल में नहीं आते। उदाहरणतः एक शब्द है 'खादर'। पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाली मेरी बेटी ने अपनी पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त इस शब्द का अर्थ मुझसे पूछा। मुझे शब्द-कोश देखकर उसका अर्थ बताना पड़ा, लेकिन गाँव का एक अनपढ़ व्यक्ति भी जानता है कि 'खादर' नदी किनारे की उस भूमि को कहते हैं जो बाढ़ आने पर डूब जाती है और बाढ़ के उतर जाने पर, नदी द्वारा छोड़ी गयी मिट्टी के कारण अधिक उपजाऊ बन जाती है।

कुछ शब्द विशेष-व्यवसायों में प्रचलित होते हैं और कुछ विशेष धर्मों में। 'पितर' शब्द का अर्थ सामान्य हिन्दू तो जानता है लेकिन मुसलमान के लिए यह शब्द क्लिष्ट है। 'इस्तंजा' का अर्थ मुसलमान तो समझता है लेकिन हिन्दू को समझना पड़ता है।

साहित्य और साहित्येतर विषयों में से हरेक की शब्दावली अलग-अलग होती है। कला के आचार्य को विज्ञान-विषय की सामान्य पुस्तक कठिन लगती है। साहित्य के महारथी को कानूनी-दस्तावेज का अर्थ समझने के लिए न्यायालय के बाहर बैठे मंशी को अपना गुरु मानना पड़ता है।

ऐसी स्थिति में हरेक की या कम-से-कम बहुसंख्यक वर्ग की समझ में आनेवाली भाषा वही हो सकती है जिसके माध्यम से केवल कुछ स्थूल भावनाओं की अभिव्यक्ति हो सके।

कामचलाऊ सरल भाषा, जिसे बोली कहना चाहिए, प्रत्येक समृद्ध भाषा का अनिवार्य अंग बेशक होती है लेकिन वह भाषा भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के लिए असमर्थ होती है। राष्ट्रभाषा-पद के योग्य भाषा वही हो सकती है जिसके माध्यम से किसी भी विषय का विवेचन सूक्ष्मता से हो सके। किसी भी विषय की गहराई तक पैठ करने के लिए उथले शब्दों से काम नहीं चलता। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।

पुस्तक-विक्रय मेरी आजीविका का साधन है। एक ग्राहक मेरे पास आता है। वह कहता है "मुझे हिन्दी में लिखी हुई पंजाबी गीतों की पुस्तक दीजिए।" मैं समझ लेता हूँ कि वह नागरी लिपि में छपी पंजाबी भाषा के गीतों की पुस्तक चाहता है। कहने वाले ने अपनी सीमित शब्दावली के माध्यम से अपना काम चला लिया। लेकिन जिस व्यक्ति की शब्दावली अपेक्षाकृत समृद्ध है उसे 'लिपि'

ग्रौर 'नागरी' जैसे ग्रसामान्य शब्द ग्रपनी वाणी तक लाने पड़ते हैं। इस प्रकार के ग्रसामान्य शब्द ही किसी भाषा को सामान्य-जन के लिए कठिन बनाते हैं।

सूक्ष्माभिव्यक्ति के लिए हर बोली को ग्रपने से पूर्ववर्ती किसी समृद्ध भाषा से शब्द लेने पड़ते हैं।

हिन्दी, जो कि एक लम्बे ग्रर्से से जन-भाषा के तौर-पर प्रयुक्त होती रही है, ग्रपने ग्रापको ग्रभिव्यक्ति-सक्षम बनाने के लिए संस्कृत से शब्द लेती रही है। कहा जाता है कि हिन्दी की इस संस्कृत-निष्टता के कारण यह भाषा जन-सामान्य के लिए जटिल बन गयी है। इस जटिलता को कम करने के लिए यह सुझाव अक्सर दिया जाता है कि उसमें ग्रंग्रेजी, उर्दू तथा ग्रन्य प्रादेशिक भाषाग्रों के शब्द लिए जाएँ।

आस-पास की प्रचलित भाषाग्रों के शब्द लिए बिना कोई भी भाषा प्रवाहमय नहीं बनती। ग्रादान-प्रदान की यह प्रक्रिया बिना किसी को सूचना दिए स्वतः होती रहती है। चुपके से घुस-पैठ करके ग्रा जाने वाले शब्द धारक-भाषा का ग्रनिवार्य ग्रंग होते हैं। उन्हें काट फेंकने की सोचना भाषा को विपन्न बनाना होता है। लेकिन ग्रन्य भाषाग्रों के जो शब्द भाषा का मर्म न समझने वाले वर्ग या व्यक्ति के ग्रादेश पर ग्रथवा राजनीति की माँग पर भाषा में प्रविष्ट कराये जाते हैं, वे ही भाषा को दुर्बोध बना देते है। चाहे वे शब्द संस्कृत के हों या ग्रन्य देशी-विदेशी भाषाग्रों के।

हिन्दी की प्रकृति से साम्य रखने वाले पुर्तगाली, ग्ररबी, फारसी, ग्रंग्रेजी तथा ग्रन्य प्रादेशिक भाषाग्रों के शब्द बिना किसी की फरमायश के हिन्दी का अंग बने हुए हैं। यहाँ मैंने ग्रन्य भाषाग्रों के साथ 'उर्दू' का नाम नहीं लिया। यह इसलिए कि संस्कृत के तत्सम शब्दों से हीन हिन्दी ग्रौर फारसी-ग्ररबी शब्दों से हीन उर्दू में मैं कोई ग्रन्तर नहीं समझता।

उस व्यक्ति की सुविधा के लिए, जिसका भाषा की गहराई से वास्ता नहीं होता, भाषा को 'खिचड़ी' बनाने से कहीं ग्रच्छा है कि देश-विदेश के उन ग्रहिन्दी-भाषी व्यक्तियों की सुविधा का ध्यान रखा जाए जो हिन्दी को एक मानक भाषा के रूप में सीखना चाहते हैं। कई भाषाग्रों पर निर्भर हिन्दी समझने में उन्हें जो कठिनाई होती है उसे बताने के लिए कृपया मुझे ग्रपनी जापान-यात्रा का एक संस्मरण सुनाने की अनुमति दीजिए। जापान में ग्रोसाका-विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० कातुरो कोगा से बहुत समय तक मेरा साथ रहा। मेरे मुख से निकली तथा-कथित सरल हिन्दी समझने में कोगा जी को अक्सर परेशानी होती थी।

भारत के किसी रेलवे स्टेशन पर खड़े होकर हम किसी से पूछते हैं—"नैक्स्ट ट्रेन के डिपार्चर का एनाऊंसमेण्ट कब होगा" तो वह हमारी इस हिन्दी को सरल समझता है लेकिन जापान के एक रेलवे स्टेशन पर जब मैंने ग्रादत के ग्रनुसार इस प्रकार की 'सरल' हिन्दी में कोगा जी से सवाल किया तो उन्होंने गौर से मेरी सूरत देखी। कोगा जी क्योंकि ग्रंग्रेजी भी जानते हैं, इसलिए वे ग्रंग्रेजी मिश्रित हिन्दी समझ लेते थे लेकिन मेरे मुख से निकलने वाले "मसलन, तकल्लुफ, दाखिला, रवानगी, सरे-ग्राम" ग्रादि जैसे ग्ररबी-फारसी शब्दों से गर्भित वाक्य उनके लिए दुर्बोध होते ग्रौर मुझे शुद्ध हिन्दी बोलने के लिए बार-बार ग्रटक-अटक जाना पड़ता।

इस संस्मरण से मेरा ग्राशय यह स्पष्ट करना है कि ग्रहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के लोगों को ग्रनेक बोलियों से मिश्रित हिन्दी सीखने की ग्रपेक्षा ऐसी हिन्दी सीखने में ग्रधिक सुविधा होती है जिसका मुख्य स्रोत कोई एक भाषा हो, कोई एक व्याकरण हो। चाहे वह भाषा संस्कृत हो या फारसी।

भाषा के 'सरल' ग्रौर 'कठिन' रूप के बारे में सविवरण इतना कह चुकने के बाद ग्रंत में मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि सरल भाषा का ग्रर्थ वह भाषा माना जाना चाहिए, जो जिस वर्ग के पढ़ने या सुनने के लिए लिखी या कही गयी है उस की समझ में ग्राजाये। ग्रगर ग्रन्य वर्गों के पल्ले वह नहीं पड़ती तो इसमें उस भाषा के लेखक या वक्ता का कसूर नहीं समझा जाना चाहिए बल्कि उसे पाठक या श्रोता की भूल समझना चाहिए जिसने विविधता-मय संसार में से ग्रपनी पसन्द की वस्तु छोड़कर ग्रन्य वस्तु उठा ली।

हमारे चार नये प्रकाशन !!!!

उपन्यास

● **एक चूहे की मौत** ● बदीउज्ज़माँ

हिन्दी कथा-साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर बदीउज्ज़माँ का उपन्यास विधा में सर्वथा अनूठा प्रतीक-प्रयोग...आज के व्यवस्था-तंत्र पर व्यंग के माध्यम से एक करारी चोट...हिन्दी उपन्यास में एक नयी युग-सृष्टि... सात रुपये

● **हम तीनों** ● वीरेन्द्र नारायण

हिन्दी का एक एकदम अनकहा उपन्यास...कथा-साहित्य में पहली आत्म-स्वीकृति, पूरा खुलाव और सीधी बेबाक़ियत...वैवाहिक जीवन की चोरियाँ, झूठ और फ़रेब...पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ...वह सभी कुछ है जो आप हैं, महसूस करते हैं लेकिन स्वीकार नहीं करते इसलिए कह नहीं सकते... पाँच रुपये

यात्रा विवरण

● **गुड़ियों के देश में** ● प्रमोद चन्द्र शुक्ल

एक कलाकार की नजर में जापान—लेखक द्वारा वास्तव में जापान की नई खोज—सभ्यता और संस्कृति में गहरी पैठ के साथ अति-आधुनिक जापान की आत्मा को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने सुन्दर शब्द-चित्रों की सृष्टि की है...हिन्दी के यात्रा-संस्मरण साहित्य में एक नई उपलब्धि... पाँच रुपये सत्तर पैसे

काव्य

● **इन्द्रधनुष : अंधेरी रात के** ● रामनाथ शास्त्री

हिन्दी के कविता-क्षेत्र में एक नये हस्ताक्षर का उदय—एक लम्बी और मौन काव्य-साधना का प्रथम लोक दर्शन—किसी भी वाद अथवा दावे से मुक्त सीधी-सच्ची कविताएँ जो चौंकाती नहीं, छू जरूर जाती हैं... पाँच रुपये

हमारे प्रकाशनों के लिए सूचीपत्र के लिए लिखें

२२०३, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६

पारिवारिक विघटन और तनाव की प्रभावशाली कहानी

भीष्म साहनी के लेखन में आक्रान्त करने और झकझोरने वाले तत्त्व अपनी पीढ़ी के लेखकों में कदाचित् सबसे कम हैं। उनका सारा वैशिष्ट्य सुपरिचित सी थीम को बड़े सहज रूप में एक ऐसे कोण से प्रस्तुत कर देने में सन्निहित हैं जहाँ से वह समझते हैं कि उसका कोई तात्कालिक और सामयिक उपयोग हा सकता है। यही चीज है जो उनकी रचनाओं को सोद्देश्यता देती है, चिन्तन के धरातल पर उन्हें आधुनिक सन्दर्भों से जोड़ती है और शायद उन बहुतों से अलगाती भी है जो शिल्प की भूलभुलैया में भटकते रहने को ही उपलब्धि और दृष्टिहीनता को ही आधुनिकता का पर्याय समझते हैं।

अपने नये उपन्यास 'कड़ियाँ' १ में वह स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता के अभाव में पुरुष के निरंकुश हो उठने और उसके परिणामस्वरूप हुए पारिवारिक विघटन की कहानी कहते हैं। प्रमिला बहुत साधारण-सी शिक्षाप्राप्त अपने आर्यसमाजी पिता की छत्रछाया में पली निहायत घरेलू ढंग की स्त्री है। एक दिन जब अपने पति महेन्द्र से ही उसे पता लगता है कि वह अपने ही दफ्तर की एक लड़की सुषमा के यहाँ आता-जाता है तो उसे संस्कारगत धक्का-सा लगता है। उस पर हुई गहरी प्रतिक्रिया को देखकर महेन्द्र को उसे सारा कुछ बता देने पर पछतावा भी होता है। यहीं से एक गहरा और सांघातिक तनाव शुरू होता है जो क्रमशः पूरे परिवार पर छा जाता है और अन्ततः परिवार की सारी कड़ियों को छितरा देता है। प्रमिला की पड़ोसिन सतवन्त जब उसे महेन्द्र के मारने-पीटने का विरोध करके कड़ा रुख अपनाने की सलाह देती है तो वह उसके गले के नीचे नहीं उतरती। इसके मुकाबले उसे चाची की सलाह कहीं सहज और व्यावहारिक लगती है। चाची की सलाह का सार यह है...'यह तो मर्द की दुनिया है, यहाँ वही होगा जो मर्द चाहता है।...' और लेखक की टिप्पणी है, 'चाची बात कर रही थी जैसे एक दास दूसरे दास के साथ अपने मालिक के बारे में बात करता है।...हजारों वर्षों के नारी-अनुभव के निष्कर्ष बता रही थी।'...(पृ० सं० ९७) इस प्रकार लेखक ने सदियों से पुरुषशासित समाज में स्त्री के प्रति किये जाते रहे अन्याय और अत्याचारों की कहानी कह दी है।

—मधुरेश (समीक्षा से)

१. कड़ियाँ, ले० भीष्म साहनी, प्र० राजकमल प्रकाशन; आकार डबल क्राउन, पृ० सं० २३३। मूल्य ८.००,

लेनिन के देश में[1]

श्री अक्षय कुमार जैन वरिष्ठ एक पत्रकार हैं। पत्रकारिता के दीर्घ अनुभव ने उन्हें एक व्यापक दृष्टि प्रदान की है। अन्यथा सोवियत संघ की दो लघु यात्राओं के पश्चात, १९६३ और १९६८ में, बिना रूसी अथवा सोवियत संघ की अन्य भाषा की जानकारी के, प्रस्तुत पुस्तक का लेखन सम्भव नहीं था। लेखक ने सहज और ग्राह्यमयी भाषा में सोवियत संघ के कुछ प्रमुख नगरों और उनके दर्शनीय स्थलों का वर्णन किया है। सूचनाएँ ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक हैं...भारतीय पाठकों के हेतु दो अध्याय, जिनमें तोल्सतोय के मास्को तथा यासनया पोलयाना स्थित आवास का परिचय है, आकर्षण के विशेष केन्द्र हैं। —समीक्षा से

भरत और भारतीय नाट्यकला[2]

मुजफ्फरपुर के प्रो० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित साहित्यशास्त्र के अत्यन्त प्रगाढ़ और मार्मिक विद्वान हैं। काफी लम्बे अरसे से वे मौन साधना में रहे हैं। अभी-अभी 'भरत और भारतीय नाट्यकला' नामक उनका जो बृहत् ग्रन्थ निकला है वह भारतीय साहित्यशास्त्र का अपूर्व ग्रन्थ है। यह लेखक के केवल परिश्रम का ही नहीं, उनकी प्रतिभा का भी जाज्वल्यमान प्रमाण है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि विश्वविद्यालयों में नाट्यकल्य-विषयक यह ग्रन्थ बड़े ही सम्मान के साथ पढ़ा जायेगा।

—रामधारीसिंह दिनकर

---

१. लेनिन के देश में, ले० अक्षयकुमार जैन, प्र० राजकमल प्रकाशन; आकार क्राउन, पृ० सं० १११, मूल्य ४.००।

२. भरत और भारतीय नाट्यकला, ले० डॉ० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, प्र० राजकमल प्रकाशन; रॉयल आकार; पृ० सं० ५८८; मूल्य ३०.००।

छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तकों के प्रकाशन की योजना

भारत सरकार ने विश्वविद्यालय-स्तरीय छात्रों के लिए उपयोगी विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनाई है। इस योजना को कार्यान्वित करने का दायित्व नेशनल बुक ट्रस्ट को सौंपा गया है।

पश्चिम जर्मन नेहरू पुरस्कार

पश्चिम जर्मनी के राजदूत ने गत १६ फरवरी को दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो० शिशिरकुमार दास को पश्चिम जर्मन नेहरू पुरस्कार प्रदान किया। इस पुरस्कार का प्रवर्तन पश्चिम जर्मन सरकार द्वारा पाँच वर्ष पहले किया गया था। पुरस्कार के रूप में छह हजार रुपये की नकद राशि और एक प्रशस्ति-पट्ट अर्पित किया जाता है।

भारत में पहली बार पांच लाख प्रतियों का संस्करण

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि० ने लोकप्रिय कथाकार गुलशन नन्दा के नवीन उपन्यास 'झील के उस पार' का पहला संस्करण पाँच लाख प्रतियों का छापकर प्रकाशन-व्यवसाय के इतिहास में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

श्री विश्वनाथ अफ्रीकी देशों के दौरे पर

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के संचालक श्री विश्वनाथ पूर्व अफ्रीकी देशों के लिए प्रकाशकों के मिशन के साथ उसके सदस्य के रूप में चार सप्ताह की यात्रा के लिए गये हैं। यह मिशन केनिया, तंजानिया, मारिशस इत्यादि का भ्रमण करेगा।

काशी विद्यापीठ को अनुदान

काशी विद्यापीठ के उपकुलपति श्री राजाराम शास्त्री के अनुसार विद्यापीठ को उसकी स्वर्ण जयंती के अवसर पर ७।। लाख रुपयों का अनुदान मिला है। इस राशि से विद्यापीठ में धर्म एवं दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन विभाग के अलावा दक्षिण पूर्वी एशियाई अध्ययन तथा हिन्दी विभाग स्वर्ण जयंती वर्ष के दौरान खोले जाएँगे।

पहाड़ी शब्दकोश

अंतरराष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त भाषा-विशेषज्ञ डा० सिद्धेश्वर वर्मा ने पहाड़ी भाषाओं का एक शब्दकोश तैयार किया है। इसमें भद्रवाही सराजी, रामबनी, पठवारी जैसी भाषाएँ भी हैं। डा० वर्मा के अनुसार, समस्त पहाड़ी भाषाएँ विभिन्नता के बावजूद आपस में सम्बद्ध हैं। डा० वर्मा जम्मू के गाँधी मेमोरियल साइंस कालेज में ३० वर्ष तक संस्कृत के प्राध्यापक रह चुके हैं।

तरुण प्रकाशक का देहान्त

राजधानी के तरुण प्रकाशक श्री देवेन्द्र का गत माह इर्विन अस्पताल में देहान्त हो गया। वह २७ वर्ष के थे। लगभग एक माह पूर्व उन्हें पीलिया हुआ था। उनके निधन से हिन्दी पुस्तक व्यवसाय को भारी आघात पहुँचा है।

अ० भा० हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता के परिणाम

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के तत्वावधान में पिछले वर्ष अक्टूबर में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता में अजमेर केन्द्र के प्रतियोगी श्री कस्तूरमल कुमावत ने ८४.५ शब्द प्रति मिनट की गति से टाइप करके प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान दिल्ली के श्री भारत प्रकाश भाटिया तथा तृतीय स्थान लखनऊ

के श्री अशोक कुमार जग्गी और चतुर्थ स्थान दिल्ली के श्री चन्द्रदेव पाण्डेय को प्राप्त हुआ। उनकी गति क्रमशः ७८, ७६.३ और ७३·१ शब्द प्रति मिनट रही।

हिन्दी की प्रगतिशील कविता पर शोध प्रबंध

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अमृतराय ने डा॰ रणजीत के नव प्रकाशित शोधप्रबंध 'हिन्दी की प्रगतिशील कविता' का ग्रन्थ-विमोचन किया। विमोचित पुस्तक हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली-६ द्वारा प्रकाशित की गई है।

सोवियत संघ में मलयालम का अध्यापन

लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं की विभागाध्यक्ष श्रीमती वेरा ए॰ नोविकोवा के अनुसार सोवियत संघ में मलयालम और राजस्थानी पढ़ाने की व्यवस्था की जा रही है। उक्त विश्वविद्यालय में आठ भारतीय भाषाएँ पहले से ही पढ़ाई जा रही हैं। ये भाषाएँ हैं—हिन्दी, उर्दू, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती और पंजाबी।

'प्रकाशन समाचार' के स्वामित्व तथा अन्य ब्यौरे के विषय में विज्ञप्ति

पत्र ४ नियम ८ के अन्तर्गत

१. प्रकाशन का स्थान	दिल्ली
२. प्रकाशन की अवधि	मासिक
३. मुद्रक का नाम	श्रीमती शीला संधू
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-६
४. प्रकाशक का नाम	श्रीमती शीला संधू
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	राजकमल प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड ८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-६
५. सम्पादक का नाम	श्रीमती शीला संधू
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ८, फ़ैज़ बाजार, दिल्ली-६
६. उन व्यक्तियों के नाम और पते, जिनका पत्र पर स्वामित्व है तथा उन भागीदारों अथवा शेयर होल्डरों के नाम और पते, जो पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर रखते हों।	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ८, फ़ैज़ बाजार, दिल्ली-६

मैं, शीला संधू, इसके द्वारा घोषित करती हूँ कि ऊपर जो ब्यौरे दिये गए हैं, वे मेरी अधिक-से-अधिक जानकारी और मेरे विश्वास में सही हैं।

१ मार्च, १९७१

ह॰ शीला संधू
प्रकाशक

लन्दन में हिन्दी साहित्य सभा

महेशदास मूंधड़ा

आजकल यूरोप और अमरीका में भारतीय प्रवासियों के काफी संख्या में पहुंचने के कारण वहाँ हिन्दी का भी प्रचार हो रहा है। अगर एक विदेशी हिन्दी सीखता है तो उसके प्रभाव से उसके परिवार के लोग तथा उसके इष्ट-मित्र भी हिन्दी सीखने की तरफ आकर्षित होते हैं।

लन्दन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरिएण्टल एण्ड अफ्रिकन स्टडीज में डाक्टर श्याम मनोहर पाण्डेय हिन्दी पढ़ा रहे हैं। उनके मिलनसार स्वभाव के कारण ब्रिटेन में रहने वाले हिन्दी-प्रेमी भारतीयों एवं अंग्रेजों से इनका सम्पर्क बना रहता है। इन्होंने हमारा परिचय श्री जगदीश मिश्र कौशल से करवाया जो हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के बड़े समर्थक तथा प्रचारक हैं।

लन्दन के उपनगर साउथाल में जहाँ अनेक भारतीय परिवार रहते हैं, कौशल जी के उद्योग से हिन्दी साहित्य सभा, यू. के., की स्थापना हुई है। वे उसके महामंत्री हैं।

इस संस्था का पूरा पता निम्नलिखित है: हिन्दी साहित्य सभा, १७, सेंट क्रिसपिस क्लोज, साउथाल, मिडिलसेक्स, यूनाइटेड किंगडम।

कौशल जी का कथन है, हिन्दी साहित्य सभा का उद्देश्य हिन्दी न जानने वालों को हिन्दी पढ़ाना, साधारण साक्षरों की ज्ञान वृद्धि कराना तथा हिन्दी के मर्मज्ञ विद्वानों को उचित साहित्य उपलब्ध कराना है। कवि सम्मेलन एवं साहित्य गोष्ठियाँ करके हिन्दी भाषा का प्रचार करना भी इसके कार्यक्रम का एक अंग है।

ब्रिटेन के विभिन्न शहरों में इस संस्था की तरफ से हिन्दी सिखाने के लिए कक्षाएं खोलने की व्यवस्था की जा रही है तथा हिन्दी सीखने वालों को अनेक पुस्तकें मुफ्त दी गई हैं। लन्दन तथा दूसरे शहरों में यह संस्था हिन्दी के पुस्तकालय तथा वाचनालय खोलने का प्रयास कर रही है जिसके लिए इसे हिन्दी की पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की सख्त जरूरत है। ऐसी संस्थाएं अनेक व्यक्तियों के सहयोग से ही जीवित रह सकती हैं।

विभिन्न वस्तुओं के निर्यात की वृद्धि करने के लिए भारत सरकार बराबर अनेक शिष्टमंडल विदेशों में भेजती रहती है। हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के लिए भारत सरकार को हिन्दी के कवियों, लेखकों, पत्रकारों और प्रकाशकों को विदेश में भेजना चाहिए। कहावत है कि 'जहाँ न पहुंचे रवि, तहाँ पहुंचे कवि'। भारत से हिन्दी के कवियों के निर्यात को भारत सरकार को अपनी निर्यात योजनाओं में सर्वप्रथम स्थान देना चाहिए।

विदेशों में हिन्दी का प्रचार होगा तो उसके साथ-साथ वहाँ हिन्दी की पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की भी बिक्री बढ़ेगी। हिन्दी साहित्य के निर्यात से भारत समृद्धिशाली होगा। हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति का प्रचार होने से भारत की राजनैतिक मान्यता भी बढ़ेगी।

निराला की साहित्य साधना

●

इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार द्वारा सम्मानित

डॉ० रामविलास शर्मा
की महान ऐतिहासिक कृति

●

नए संशोधित-संवर्द्धित संस्करण में
नई साज-सज्जा के साथ उपलब्ध

●

डिमाई आकार
५५० से अधिक पृष्ठ
रैक्सिन की मजबूत जिल्द

●

मूल्य तीस रुपये

●

३१ मार्च १९७१ तक प्राप्त आठ प्रतियों
के नकद आर्डर पर ४०% की छूट

अबशीघ्र प्रकाशित
हो रहा है 'निराला
की साहित्य-साधना'
का द्वितीय खण्ड !

इस खंड में निराला की राजनीतिक, सामाजिक, दार्शनिक विचारधारा का विवेचन है जिससे विदित होगा कि निराला ने अपने युग की समस्याओं पर कितनी गहराई से विचार किया था !

●

महाकवि निराला के
व्यक्तित्व और कृतित्व को
समझने में सहायक एक
और महत्त्वपूर्ण कृति

निराला के पत्र

सं. आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

महाकवि के जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे गये पत्र, जानकीवल्लभजी की विस्तृत भूमिका और पादटिप्पणियों सहित ।

मूल्य १८.००

सुमित्रानदंन पंत
जीवन और साहित्य

शांति जोशी

सुश्री शांति जोशी द्वारा लिखित पंतजी की यह महत् जीवन-गाथा आधुनिक हिन्दी-काव्य की विकास-यात्रा का जीवंत अभिलेख है। कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझने के लिए परम अनिवार्य !

आर्ट पेपर पर कवि के अनेक दुर्लभ और अप्रकाशित चित्रों सहित सर्वथा संग्रहणीय ग्रन्थ

मूल्य २५.००

राजक[illegible]

श्री सुमित्रानंदन

लोकायतन (संक्षिप्त)	८.००
लोकायतन	२५.००
*अभिषेकिता	३.००
चिदम्बरा	१५.००
रश्मिबन्ध	२.५०
अतिमा	४.००
स्वर्णधूलि	५.००
कला और बूढ़ा चांद	६.५०
युगवाणी	४.००

*तारांकित पुस्तकें अप्राप्य हैं।

राष्ट्र के सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

श्री सुमित्रानंदन पंत

की

कालजयी काव्यकृति

प्रकाशित
अन्य काव्य-कृतियां

पल्लव	६.००
पल्लविनी	११.००
शिल्पी	४.००
पौ फटने के पहिले	८.००
किरण वीणा	८.००
*पुरुषोत्तम राम	३.५०
पुरुषोत्तम राम (पेपरबैक)	३.००
*संयोजिता	१०.००

कवि के प्राय:
२० वर्षों की
विकास श्रेणी
का विस्तार

संग्रहणीय
पठनीय

मूल्य २०.००

शंखध्वनि

●

श्री सुमित्रानंदन पंत

●

युगकवि श्रीसुमित्रानन्दन पंत की नवीनतम कविताओं का यह संग्रह हिन्दी-काव्य-जगत को एक अनूठी भेंट है ! इसमें पंतजी के कवि-व्यक्तित्व के नये आयामों का उद्घाटन हुआ है !

डिमाई आकार में आकर्षक साज-सज्जा के साथ

कवि के जन्म-दिन पर
१ मई १९७१ को प्रकाश्य

अनुमानित मूल्य
५.००

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत राजकमल की अन्य पुस्तकें

भूले-बिसरे चित्र

प्रख्यात कथाकार भगवतीचरण वर्मा का अद्वितीय उपन्यास

मूल्य १५.००

रागदरबारी

श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य-प्रधान उपन्यास, जिसके हर पैराग्राफ में समाज किसी-न-किसी विसंगति को उजागर किया गया है।

मूल्य १६.००

कला और बूढ़ा चाँद

युग-कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत के परवर्ती काव्य-सृजन का प्रतिनिधि संग्रह।

मूल्य ६.५०

रंगमंच

अपने विषय के अधिकारी विद्वान बलवंत गार्गी की कलम से भारतीय रंगमंच के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष का गम्भीर विवेचन, अनेक रेखाचित्रों और छायाचित्रों से अलंकृत।

मूल्य २५.००

अन्य संस्थाओं तथा राज्य-सरकारों द्वारा पुरस्कृत राजकमल की श्रेष्ठ कृतियाँ

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

सुहाग के नूपुर	अमृतलाल नागर	६.००
कोहबर की शर्त	केशवप्रसाद मिश्र	५.००
वे दिन	निर्मल वर्मा	५.५०
हिरोशिमा की छाया में	भगवतस्वरूप चतुर्वेदी	४.००
मंजिल से दूर	डॉ० सत्यप्रकाश संगर	३.००
ठुमरी	फणीश्वरनाथ रेणु	४.५०
भारतीय पौराणिक कथाएँ	भोलानाथ तिवारी	३.५०
भटकती राख	भीष्म साहनी	५.००
शिक्षा विज्ञान कोश	डॉ० सीताराम जायसवाल	१६.००
सौन्दर्यशास्त्र के तत्त्व	डॉ० कुमार विमल	१०.००
आलोचना : इतिहास तथा सिद्धान्त	डॉ० एस. पी. खत्री, शिवदानसिंह चौहान	१०.००
हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष	शि० सिं० चौहान	३.५०
ज्ञान और सत्	यशदेव शल्य	६.००
भारतीय अर्थशास्त्र	जथार एवं बेरी	१५.००

बिहार सरकार द्वारा पुरस्कृत

मैला आँचल	फणीश्वरनाथ रेणु	१५.००
वे दिन वे लोग	शिवपूजन सहाय	४.५०

सोवियतलैण्ड नेहरू पुरस्कार

लोकायतन	सुमित्रानन्दन पंत	२५.००

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६
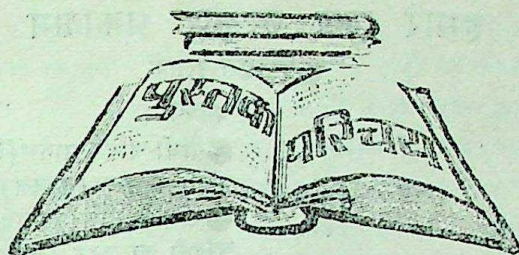
राका की मंजिल—ले० बलवन्तसिंह ; प्र० राजकमल प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६ ; आकार डिमाई ; पृष्ठ ३२३; मूल्य १८.०० ।

'राका की मंजिल' प्रख्यात कथाकार बलवन्तसिंह का नया उपन्यास है, जिसमें उन्होंने दो शताब्दी पुराने अफ्रीकी कबीलों की कहानी कही है । उपन्यास का केन्द्रीय पात्र राका है जिसके चारों ओर घूमते हुए ही कहानी आगे बढ़ती है । एक असहाय और कुण्ठित बच्चे से वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाता है, और अपनी वीर, अन्धविश्वासों में श्रद्धा रखने वाली, प्रेमपूर्ण परन्तु बर्बर जाति पर अतुलित प्रभाव डालता है ।

एक बार प्रकर्ष के चरम शिखर तक पहुँच कर राका का अधःपतन आरम्भ हो जाता है । इस अधःपतन का कारण वाह्य नहीं पूर्णतः आन्तरिक है । यह एक ऐसे पात्र की कथा है जो अपनी मौलिकता और नेतृत्व शक्ति का पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत करता है । वह अपनी जाति का पिता है । अपने हृदय की सुदूर गहराई में उसे एक स्त्री के प्रेम की चुभन का अनुभव होता है । वह इस पीड़ा को चेतनता के स्तर तक नहीं आने देता । यह एकमात्र घटना उसके जीवन की धारा को पलट देती है ।

यह कहानी यह बताती है कि कैसे शनैः-शनैः राका न्यूरोटिक हो गया ; कैसे उसे यह विचार हर समय पीड़ित करता रहता था कि संसार का हर बेटा, बल्कि उसके अपने बेटे गुप्त रूप से उसकी मृत्यु की कामना करते हैं; कैसे राका के मन में उनके प्रति जो कुण्ठा है वह उसे अपने स्नेही बन्धुओं, जाति और वातावरण के प्रति तटस्थ बना देती है । और अन्त में राका कैसे ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न कर देता है कि वे अपने (और अपनी जाति के) पिता की हत्या कर दें ।

यह थी राका की मंजिल—या तो यही मानव जाति का भाग्य है, या नये ज़माने का न्यूरोटिक लेखक कल्पना में भी राका जैसे पात्र को अपनी मानसिक स्थिति से प्रतिबिम्बित होने से नहीं रोक पाता ।

वास्तव में राका के व्यक्तित्व के दो पहलू थे । एक तो यह कि वह बाप होते हुए भी अनाथ-सा हो गया, क्योंकि उसके बाप ने उसे कायर बच्चा समझ कर अपने घर से निकाल दिया । राका ने निश्चय कर लिया कि वह यह सिद्ध कर देगा कि वह कायर नहीं है, और वह एक दिन बहुत बड़ा सेनापति और सरदार बन कर दिखा देगा । उसके व्यक्तित्व का दूसरा पहलू यह था कि छुटपन में वह प्रायः अपने इलाके में बहने वाली नदी के किनारे बैठा पानी के बहाव को चुपचाप देखता रहता था । पानी के इस बहाव का उसके मन पर बड़ा ही रहस्यपूर्ण प्रभाव पड़ता था । वह अक्सर सोचा करता कि इस नदी का उद्गम स्थान कहाँ है । इस रहस्य को जानना उसके जीवन का दूसरा लक्ष्य बना रहा । पहले लक्ष्य की पूर्ति हो जाने पर जब उसे मन की शान्ति नहीं मिली तो उसे महसूस हुआ कि उसके व्यक्तित्व का दूसरा पहलू दबा ही रह गया, क्योंकि उसकी प्यास बुझ नहीं पाई । नदी का उद्गम स्थान जानने की इच्छा फिर प्रबल हो उठी, और वह अपने दो जवान बेटों को साथ लेकर उधर को चल दिया जिधर से नदी का पानी आता था । समझाने वालों ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि उसका यह कदम बिल्कुल बेकार अर्थहीन है । लेकिन उसने किसी की नहीं सुनी । राका की इसी इच्छा और लक्ष्य को सम्मुख

हमारे कुछ उत्कृष्ट प्रकाशन

●पुरस्कृत पुस्तकें

उपन्यास-कहानी

सुबह के भूले (इलाचन्द्र जोशी)	७-५०
●मुक्तावली (बलभद्र ठाकुर)	१२-००
देवताओं के देश में (,,)	१०-००
घने और बने (,,)	११-००
लहरों की छाती पर (बलभद्र ठाकुर)	११-००
●जमींदार का बेटा (दयानाथ झा)	७-५०
मूक तपस्वी (कंचनलता सब्बरवाल)	६-००
युग-संदेश (पृथ्वीनाथ शर्मा)	५-५०
उजाले के उल्लू (महीप सिंह)	३-००
केलाबाड़ी (नित्यानन्द वात्स्यायन)	२-५०

एकांकी संग्रह तथा नाटक

●आज का आदमी (उदयशंकर भट्ट)	३-७५
सरस एकांकी नाटक (रामकुमार वर्मा)	३-००
आठ एकांकी नाटक (रामकुमार वर्मा)	३-५०
नेताजी तथा अन्य एकाँकी (गोपीनाथ तिवारी)	३-००
उद्घाटन मंत्री तथा अन्य एकांकी (कृष्णकिशोर श्रीवास्तव)	३-७५
इन्द्र धनुष (सत्येन्द्र शरत)	६-००
चमकते नज़ारे (दयानाथ झा)	२-५०
धरती की महक (रामावतार चेतन)	४-५०
●पार्वती (उमाशंकर भट्ट)	२-५०
सेवापथ (सेठ गोविन्ददास)	३-००
●कर्मपथ (दयानाथ झा)	३-५०
●वत्सराज (लक्ष्मीनारायण मिश्र)	३-५०
मुकुट (नित्यानन्द वात्स्यायन)	२-५०
दुबिधा (पृथ्वीनाथ शर्मा)	१-५०
पाप का फल (रेसीन अनु० आर० एम० डोगरा)	१-००
प्रताप-प्रतिज्ञा (जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द)	२-५०
अमर आन (हरिकृष्ण प्रेमी)	२-५०
●विदा ,,	३-५०
प्रकाश-स्तम्भ ,,	३-५०
रक्षाबन्धन ,,	३-००
प्रतिशोध ,,	३-५०

काव्य

●गांधी-चरित-मानस (विद्याधर महाजन)	८-००
पहिये के ऊपर (कुन्तलकुमार जैन)	५-००
●चाँद के नीचे (रामावतार चेतन)	४-००
चाँदनी का ज़हर (नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी)	४-००

साहित्यिक ग्रन्थ

पद्मावत का अनुशीलन (इन्द्रचन्द्र नारंग)	६-००
●आधुनिक कविता का मूल्यांकन (डॉ० मदान)	१०-००
हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास (रामबहोरी शुक्ल, भगीरथ मिश्र)	१०-००
हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास (सोमनाथ गुप्त)	६-००
●भारतेन्दुकालीन नाटक साहित्य (गोपीनाथ तिवारी)	१६-००
पूर्व भातेन्दु नाटक साहित्य (सोमनाथ गुप्त)	८-००
गुरु ग्रंथ साहब : एक परिचय (डॉ धर्मपाल मैनी)	५-००
प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन (नन्ददुलारे वाजपेयी)	४-५०
प्रसाद काव्य विवेचन (डॉ० हरदेव बाहरी)	५-००
शरतचन्द्र चिन्तन व कला (इन्द्रनाथ मदान)	४-५०
साहित्य समालोचना (रामकुमार वर्मा)	३-००
काव्य-प्रदीप (रामबहोरी शुक्ल)	४-००
आलोचना प्रवेश (स्व० प्यारेलाल शर्मा)	४-५०
प्रबन्ध प्रभाकर (गुलाबराय)	८-००
कॉलेज निबन्ध (रोशनलाल सिंहल)	५-००
तुलसी (रामबहोरी शुक्ल)	५-००
आचार्य शुक्ल (सुधा शुक्ल)	६-००
हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास (जगन्नाथप्रसाद शर्मा)	४-००

परीक्षोपयोगी

कामायनी आलोचनात्मक अध्ययन (बटुक)	२-५०
आषाढ का एक दिन : वस्तु और शिल्प (बटुक)	४-२५
दिनकर और उनकी उर्वशी (बटुक)	४-८०
इलाचन्द्र जोशी और जहाज का पंछी (बटुक)	४-५०
तुलसी रसायन एक अध्ययन (डॉ० वासुदेव शर्मा)	६-००
तार सप्तक : परिवेश : संदर्भ : व्यालूया (प्रो० रजनीकान्त)	५-२५

हिन्दी भवन

माईहीरा गेट, जालन्धर-१ : ६३, टैगोर टाउन, इलाहाबाद-२

रखते हुए उपन्यास के आरम्भ वाले दो उद्धरणों में से एक सुप्रसिद्ध कवि Fernando Pessoa के नीचे दिये शब्दों का हिन्दी में अनुवाद दे दिया गया है :

Between sleep and dream
Between me and what is in me
... ...
Flows a river without end.

लद्दाख की छाया—ले. भवानी भट्टाचार्य; रूपान्तर: प्रभाकर माचवे; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; आकार पाकेट; पृ. २४३; मूल्य ३.०० ।

भवानी भट्टाचार्य उन भारतीय लेखकों में हैं जिन्होंने अंग्रेज़ी भाषा को लेखन का माध्यम बनाया है। उनके अनेक उपन्यास अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। 'शेडो फ्रॉम लद्दाख,' प्रस्तुत उपन्यास जिसका हिन्दी रूपान्तर है, साहित्य अकादमी से पुरस्कृत किया जा चुका है। उपन्यास की कथा-भूमि १९६२ में भारत पर चीनी आक्रमण के पूर्वकाल की है। यद्यपि कथानक बहुत विस्तृत और तत्कालीन राजनीति से सम्बद्ध है, परन्तु मूलतः उपन्यास गाँधीवादी सिद्धान्तों और औद्योगीकरण के आपसी मुकाबले की कहानी है। गाँधीवादी सत्यजीत पत्नी सुरुचि और पुत्री सुमिता के साथ गाँधीग्राम में गाँधीजी के आदर्शों को साकार करने में प्रतनशील हैं और गाँधीग्राम के समीप ही नव-निर्मित इस्पातनगर का चीफ इंजीनियर भास्कर राव अपने कारखाने को बढ़ाकर देश की अनेक समस्याओं का हल ढूँढने में संलग्न।

पुस्तक के रूपान्तरकार का नाम आवरण व टाइटल आदि पर न देकर केवल प्रकाशकीय वक्तव्य में उसका जिक्र किया गया है जो भ्रमोत्पादक हो सकता है। देशी-विदेशी भाषाओं से अनूदित रचनाओं की सबसे बड़ी कमी उनके अनुवाद में रहती है। प्रस्तुत पुस्तक का अनुवाद यद्यपि हिन्दी के एक विद्वान ने किया है किन्तु सारा कथानक अस्पष्ट और असम्बद्ध प्रतीत होता है और न ही भाषा और शैली प्रवाहपूर्ण हैं।

बोरबन क्लब—ले. कृश्न चन्दर; प्र. राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली; आकार क्राउन; पृ. १४८; मूल्य ५.०० ।

'बोरबन क्लब' उपन्यास होते हुए भी एक श्रृंखलाबद्ध 'कैरेक्टर स्टडी' अधिक हैं। इसमें कथा का तारतम्य न जीवित पात्र जोड़ते है न ही उनसे सम्बद्ध घटनाएँ, बल्कि बम्बई के दो क्लब—बोरबन क्लब और ओल्ड याट क्लाब सारे घटना सूत्र को बांधे हैं। उनमें तरह-तरह के सदस्य आते हैं, और उन्हीं सदस्यों का परिचय लेखक एक सफल सूत्रधार की तरह कराता जाता है। क्लबों के बड़े लोगों की दुहरी जिन्दगी, खूबसूरत चेहरों के पीछे छिपे फरेबी दिलों और उनके खोखलेपन को बेनकाब करने वाली घटनाएं मगर उनके साथ-साथ काशीबाई और चचा महरू जैसे गरीब परन्तु सबल और जूली जेस्कां व मिस लोविट जैसे अलौकिक व्यक्तित्व भी इन्हीं क्लबों में कृश्नचन्दर को मिले हैं। कृश्नचन्दर की कलम जादू की उस छड़ी की तरह है जो मामूली से मामूली चीज़ को भी धूप-छाँव की तरह रंगीन और चाँदनी की तरह कोमल-स्वप्निल बना देती है। पुस्तक का प्रकाशन श्लाघनीय है।

आलोचना

छायावाद—ले० डा० रवीन्द्र भ्रमर; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, फैज बाजार, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ १९९; मूल्य १२.०० ।

छायावाद हिन्दी-कविता की महत्त्वपूर्ण काव्य-प्रवृत्ति रही है। न सिर्फ शैली-शिल्प में बलिक भावों-विचारों के क्षेत्र में भी इस युग के कवियों ने अभूतपूर्व क्रान्ति की थी। अतः छायावादी काव्य केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि स्वतन्त्र रूप से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, उसी मात्रा में उस पर आलोचनाएँ भी लिखी गई हैं। प्रस्तुत पुस्तक में जो राजकमल की सर्वेक्षणमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुई है, डा० भ्रमर ने इस महत्त्वपूर्ण काव्य-प्रवृत्ति को अपने तरीके से पुनर्मूल्यांकित करने का प्रयास किया है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि एक ओर तो यह छायावाद को उसकी समग्रता में समारे सामने रखती है और दूसरी ओर विवेचन को यथासम्भव सुबोध रखा गया है।

छायावाद पर इतने बड़े परिमाण में आलोचना-साहित्य लिखा गया है कि यह सवाल अनायास ही मन में आता है कि इस पर और क्यों लिखा जा रहा है। इस सम्बन्ध में प्रस्तुत ग्रन्थमाला के सम्पादक डा० इन्द्रनाथ

मदान का कथन बहुत तर्कसंगत प्रतीत है। उन्होंने लिखा है, "युगबोध जब बदलने की गवाही देने लगता है तो स्थापित साहित्य को फिर से आँकने की आवश्यकता महसूस होने लगती है। डा० रवीन्द्र भ्रमर की यह पुस्तक इसका परिणाम है।"

पुस्तक का मुद्रण-प्रस्तुतीकरण आदि साफ-सुथरा और आकर्षक है।

नयी समीक्षा : नये संदर्भ—ले० डा० नगेन्द्र, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; आकार डिमाई ; पृ० १०६, मूल्य ७.०० ।

आलोच्य कृति में डा० नगेन्द्र के पिछले दो-तीन वर्ष के लेख संग्रहीत हैं। पुस्तक के दो-भाग हैं। पहले भाग में, नयी समीक्षा नामक ५८ पृष्ठों का एक लम्बा लेख है, जिसको लेखक ने लघु प्रबन्ध की संज्ञा दी है। इस लेख में, विद्वान लेखक ने नयी-समीक्षा के उदय तथा विकास के इतिहास की संक्षिप्त साहित्यिक पृष्ठभूमि अंकित करते हुए इलियट तथा रिचर्ड्स की काव्य-विषयक मान्यताओं का विश्लेषण किया है। आधुनिक समीक्षा की ऐतिहासिक तथा रूपात्मक प्रवृत्तियों की व्याख्या की है। साथ ही, रूपात्मक समीक्षा से निःसृत नयी-समीक्षा के अन्तः स्वरूप-विश्लेषण के संदर्भ में एलन टेट तथा एम्पसन की मान्यताओं का स्पष्टीकरण किया है। इस तात्विक विश्लेषण के संदर्भ में, नगेन्द्र जी की मौलिकता, 'टेट' के श्लेष तथा अनेकार्थता और अर्थविडम्बना वाले सिद्धान्त के साथ भारतीय काव्य-शास्त्र के सभंग तथा अभंग श्लेष की समता स्थापित करने में निहित है।

आलोच्य कृति के दूसरे भाग के पहले निबंध में, आधुनिकता विषयक उपलब्ध मतों का आकलन तथा मूल्यांकन किया गया है। दूसरे निबन्ध में, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, अकविता तथा नवगीत के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है; विश्लेषण के आधार प्रस्तुत किये गये हैं और कविता के वाद-मुक्त होने की कामना की गई है। तीसरे लेख में बताया गया है कि आज का सांस्कृतिक विघटन क्या है, वह किन परिस्थितियों की देन है और सांस्कृतिक विघटन से युक्त साहित्य का क्या मूल्य है? चौथे लेख में, भारतीयता के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। पाँचवे लेख में, छायावादी कविता का पुनर्मूल्यांकन किया गया है। संग्रह के छठे लेख में, जीवनानुभूति के संदर्भ में, पंत जी की काव्यचेतना का मूल्यांकन किया गया है।

नगेन्द्र जी की मान्यताओं से अनेक स्थानों पर विरोध हो सकता है, किन्तु उनकी टकसाली भाषा, विषय प्रतिपादन की क्षमता और शैलीगत कौशल को स्वीकार करना ही पड़ेगा। प्रस्तुत कृति में, विद्वान् लेखक ने, आज के ज्वलन्त प्रश्नों का विश्लेषण किया है। अतः यह कृति पठनीय एवं महत्वपूर्ण है।

रामायण और महाभारत में प्रकृति ले० डा० कान्तिकिशोर भरतिया; प्र० सुशील निवास, ५६, नरोना रोड़, छावनी, कानपुर-४०; आकार डिमाई; पृष्ठ ३६५, मूल्य १०.२५ ।

समालोच्य ग्रन्थ 'रामायण और महाभारत में प्रकृति' डा० कान्ति किशोर भरतिया का प्राकृतिक धवलिमा के नैकट्याध्ययन का प्रमाण है। रामायण एवं महाभारत हिन्दू धर्म के प्राण स्वरूप ग्रन्थ हैं जिनमें उनके देवी-देवताओं एवं उनकी अलौकिक क्रियाओं का कथात्मक वर्णन है। इनके नायक-नायिका आदि मानवीय धरातल पर अवतरित हुए थे एतदर्थ उनका नैसर्गिक तन्तुओं से साहचर्य स्थापित हो जाना स्वाभाविक है।

प्रस्तुत ग्रन्थ १४ अध्यायों में विभक्त है तथा प्रारंभ में रामायण एवं महाभारत की पृष्ठभूमि के रूप में संस्कृत और वैदिक साहित्य में हुए प्रकृति-चित्रण का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। इन वृहत् ग्रन्थों की प्राकृतिक छटा—पर्वत, नदी, समुद्र, सरोवर, झील, तड़ाग, वन, उद्यान, वापी, ऋतु, सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्र-ज्योत्सना, आंधी, वायु, अग्नि की प्रचण्डता का दृष्टान्तपरक एवं तुलनात्मक वर्णन है। डा० भरतिया के इस ग्रन्थ में दोनों उपजीव्य ग्रन्थों का मन्थन करने से जो विमल नवनीत प्रस्तुत किया गया है, वह निश्चय ही श्लाध्य एवं अनुकरणीय है। लेखक ने पशु, पक्षी, जलचर आदि का भी प्रज्ञात्मक अध्ययन किया है। लेखक ने इन सबका मानव के प्रति सहयोग किस प्रकार का रहा, इसका सम्यक् चित्रांकन किया है। प्राकृतिक पक्षधरता राम, पाण्डव, रावण, कौरवादि के साथ किस प्रकार की थी, यह इस पुस्तक की अपनी निजी एवं मौलिक

सजीवता है। डा० भरतिया ने नर, वानर, यक्ष, राक्षस को तर्क के निकष पर कसकर उन्हें मानव की संज्ञा दी है।

पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर देवी-देवताओं का आकाश-मार्ग से गमन, फिर उनसे पृथ्वी की सुषमा का अवलोकन किस प्रकार आधुनिक युग के वायुयान की यात्रा की याद दिलाता है, यह सहज ही इस पुस्तक में अवलोकित किया जा सकता है। हमारे देश की प्राचीन प्राकृतिक निधि और उनका उपयोग क्या है? आदि इस पुस्तक के वर्ण्य विषय हैं। साथ ही डा० भरतिया ने इसे आधुनिक युग से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु भौगोलिक स्थानों के परिवर्तित नाम तथा स्थिति भी दे दिए हैं जिससे वर्तमान युग में उसका सही आकलन किया जा सके और उसकी प्राचीनता भी उद्घोषित की जा सके। इन सबका परवर्ती साहित्य और समाज पर क्या प्रभाव पड़ा, यह भी लेखक ने स्पष्ट रूप से रूपायित किया है।

हिन्दी-साहित्य का अद्यतन इतिहास—ले० डॉ० मोहन अवस्थी, प्र० सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद; पृ० सं० २१६, आकार डिमाई; मूल्य-छः रुपए।

साहित्य के छात्रों के हित को दृष्टि में रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। लेखक ने प्राक्कथन में दावा किया है कि प्रस्तुत कृति छात्रों को साहित्यकारों के नामों, ग्रंथों या तिथियों के दुरूह जाल से मुक्त करके साहित्य की वास्तविक गतिविधि से अवगत कराती है। पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ने के उपरान्त, इस आश्वासन में आंशिक सत्य ही उपलब्ध होता है। साहित्य की विवादग्रस्त धाराओं पर संतुलित मत प्रस्तुत किए जाने का आश्वासन भी लेखक ने

नये प्रकाशन जो हमारे यहां उपलब्ध हैं

पुस्तक	लेखक	मूल्य
उपन्यास :		
यात्राएँ	गिरिराज किशोर	४.५०
वियतनाम को प्यार	एदिता मॉरिस	५.००
काल रात्रि	ताराशंकर वन्द्योपाध्याय	८.००
प्यार और प्यास	कृश्न चंदर	५.००
प्यार एक खुशबू	,, ,,	५.००
विक्रम और मदालसा	कुमार श्री	७.००
कहानी संकलन :		
अपराधिनी	शिवानी	५.००
मेरी प्रिय कहानियाँ	निर्मल वर्मा	५.००
पाँचवाँ दस्ता एवं अन्य कहानियाँ	अमृतलाल नागर	५.५०
काव्य संकलन :		
नंगे पैर	विपिन कुमार अग्रवाल	६.००
जो नितान्त मेरी है	बालस्वरूप राही	६.५०
अणिमा (पु० मुद्रण)	निराला	४.००
दीपशिखा—सचित्र (पु० मु०)	महादेवी	५१.००
शोध एवं आलोचना :		
आदिकालीन हिन्दी साहित्य	डा० शम्भूनाथ पाण्डेय	२०.००
हिन्दी नाटकों की शिल्पविधि का विकास	डा० शांति मल्लिक	४०.००
पाश्चात्य निबन्ध कला	कैलाश चन्द्र माथुर	११.००
हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास	धनराज मानधाने	३०.००
हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास	रामनारायण सिंह मधुर	२५.००
हिन्दी नाटक पुनर्मूल्यांकन	डा० सत्येन्द्र तनेजा	२५.००
आधुनिक हिन्दी गद्य शैली का विकास	डा० श्याम वर्मा	२५.००
बिहारी सतसई का भाषावैज्ञानिक अध्ययन	राम कुमारी मिश्र	१२.००
हिन्दी साहित्य प्रमुख वाद	डा० गणपतिचंद्र गुप्त	७.००
कबीर वाणी	डा० पारसनाथ सिंह	५.००
इतिहास : राजनीति : कानून :		
गुप्त साम्राज्य	डा० परमेश्वरीलाल गुप्त	३०.००
इंगलैंड का सांविधानिक विकास	डा०लक्ष्मण प्र० चौधरी	१६००
हिन्दू विधि	पं० गिरजाशंकर मिश्र	१७.००
जीवनी : संस्मरण		
मेरी यात्राएँ	डा० देवराज उपाध्याय	५.००
यौवन के द्वार पर	,, ,, ,,	५.००
निराला के पत्र	जानकी वल्लभ शास्त्री	१८.००
रूसी सफरनामा	बलराज साहनी	७.५०

हिन्दी में प्रकाशित सभी प्रकार के साहित्य के लिए हमें लिखें—

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०

साइंस कालेज के सामने

पटना-६

दिया है। इस दिशा में, निश्चय ही लेखक को सफलता मिली है।

पुस्तक के प्रारम्भ में, चौबीस पृष्ठों में, साहित्य के इतिहास के विविध कालों के नामकरण की समस्या पर विचार किया गया है। तत्पश्चात् साहित्य के समस्त इतिहास को आधारकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल आदि अध्यायों में विभाजित करके आवश्यक सामग्री का संकलन तथा विवेचन किया गया है। पुस्तक की सामग्री तथा विषय-विवेचन में विशेष मौलिकता न होते हुए भी उपयोगिता का अभाव नहीं है। पुस्तक निश्चय ही उपयोगी है। हिन्दी-साहित्य की गतिविधि का संक्षिप्त ज्ञान प्राप्त करने वाला छात्र पुस्तक पढ़कर निराश न होगा।

निबंध

भारत में इस्लामः आचार्य चतुरसेन; प्र० प्रभात प्रकाशन, २०५ चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ ; आकार डिमाई; पृ०३४६; मूल्य १६.००।

समीक्ष्य कृति 'भारत में इस्लाम' ऐतिहासिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में आचार्य चतुरसेन के समन्वयात्मक दृष्टिकोण की अनुपम प्रदर्शिका हैं। इसमें भारत में इस्लाम के आगमन से लेकर मु० अली जिन्ना तक का एक सम्पूर्ण सर्वेक्षण है। लेखक ने पुस्तक के प्रारंभ में इस्लामों के पैगम्बर, रसूल आदि तथा उनके धार्मिक सिद्धान्तों को कुरान-ए-शरीफ़ के परिप्रेक्ष्य में नींव से पाठक को समझाने का सफल प्रयास किया है। सम्पूर्ण भारत में इस्लाम ने 'एकेश्वरवाद' की जो तरंगिनी प्रवाहित की, उसके मूल में यहां बहुदेववाद तथा भारतीय नृपों का अनेकत्व रूप है। लेखक ने पुस्तक के बीच-बीच में धार्मिक-जागरण, सामाजिक-चेतना एवं प्राकृतिक-परिवर्तनों का भी वर्णन किया है। किन्तु इसे 'तुलनात्मक दृष्टि' की संज्ञा तो नहीं दी जा सकती वरन् यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि लेखक अपनी कृति के परिवेश से पूर्णतया सचेत है। काल-बोध उसका सहज गुण है। पर किसी प्रकार के मत-मतान्तरों का खण्डन-मण्डन ध्येयार्थ नहीं है।

ऐतिहासिक उपजीव्य ग्रन्थों की आधार-शिला पर रचित प्रस्तुत कृति शैली एवं भाषा की दृष्टि से रोचक तो है किन्तु कथा-तत्व के ह्रासत्व के कारण इसको ऐतिहासिक

एवं वर्णनात्मक कृति कहना ही अलम् न्याय-संगत है। इस्लाम के प्रकोण में तत्कालीन भारतीय सामाजिक परिवेश को समझने के लिए प्रस्तुत पुस्तक निश्चय ही श्रेष्ठ है और लेखक समस्त पुस्तक में पूर्वाग्रह, दुराग्रह, रूढ़िवादिता एवं साम्प्रदायिकता से बचकर चला है और घटना के तथ्यातथ्य को नूतन अभिव्यंजनात्मक शैली में प्रस्तुत करना ही उसका लक्ष्य है। पर इतना सब होते हुए भी स्थल-स्थल पर मुद्रण की भूलें पाठक को झुंझलाती रहती हैं।

नाटक

तीन आयाम—ले० रामकृष्ण कौशल; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, फैज बाजार, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृ० १०४; मूल्य ४.००।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के तीन मंचोपयोगी एकांकी संग्रहीत हैं। जैसा कि पुस्तक के नाम से प्रकट होता है, तीनों नाटकों में तीन समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है और ये तीन समस्यायें एक वृहत्तर समस्या के तीन पहलुओं के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। वृहत्तर समस्या है हमारे राष्ट्रीय जीवन की, और उसके तीन पहलू हैं औद्योगिक संस्कृति के विकास के साथ-साथ मालिक और मजदूर के बीच निरन्तर बढ़ता हुआ तनाव, साम्प्रदायिक वैमनस्य तथा जड़ नैतिक मान्यताओं के प्रति आग्रहशीलता। लेखक ने इन तीन समस्याओं का क्रमशः 'सत्याग्रह', 'इकाई', और 'नर्तकी' में बहुत ही प्रभावशाली चित्रण किया है। लेखक की मान्यता है कि आज राष्ट्र के सामने वर्तमान विषम परिस्थितियों का निदानग गाँधीवाद में ही सम्भव है, इसलिए 'तीन आयाम, के नाटकों पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव प्रत्यक्ष है। नाटक पठनीय होने के साथ ही साथ अभिनेय भी हैं और किशोरों तथा वयस्कों दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं।

जीवनी

भगिनी निवेदिता—ले. परमेश्वर प्रसाद सिंह; प्र. सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली; आकार क्राउन; पृ.१२२; मूल्य ४.००।

जिन विदेशी नर-नारियों ने भारत के लिए अपना जीवन समर्पित किया उनमें आयरलैण्ड की मिस मार्गरेट नोबुल का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। स्वामी विवेकानन्द की शिष्या के रूप में वह भगिनी निवेदिता के नाम से

प्रसिद्ध हुईं और उन्होंने अपना सारा जीवन भारत के जन-साधारण को मानवता और धर्म का बोध कराने तथा राजनैतिक चेतना लाने में बिताया। उन्होंने हमारे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और भारत में ही अपने पार्थिव शरीर का त्याग किया। लेखक ने भगिनी निवेदिता के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं को प्रामाणिक रूप से जुटाकर हिन्दी साहित्य का उपकार किया है। पाठकों को उनके जीवन से प्रेरणा और प्रकाश प्राप्त हो सकेगा।

बाल साहित्य

माया देश का रहस्य भाग ३—ले० प्रताप नारायण श्रीवास्तव; प्र० ज्ञान भारती बाल पाकेट बुक्स, लखनऊ; पृ० १२७; मूल्य १.००।

ज्ञान भारती बाल पाकेट बुक्स बच्चों के लिए अत्यन्त मनोरम नन्हीं-मुन्नी व सस्ती पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है। इनका मुद्रण, आवरण और पाठ्य साम्रग्री सभी उच्च-स्तरीय एवं प्रशंसनीय हैं। देवकीनन्दन खत्री ने एक जमाने में चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्ता सन्तति, व भूतनाथ की जीवनी आदि तिलिस्म व ऐयारी की पुस्तकों द्वारा हिन्दी जगत में धूम मचाई थी उसी प्रकार की कथा 'माया देश का रहस्य' में वर्णित है। कथा इतनी रोचक है कि एक बार शुरू करके पाठक इसे छोड़ेंगे नहीं। धारावाहिक रूप से छपने के कारण आगे के भाग की प्रतीक्षा उत्सुकता से बनी रहती है।

बाल महाभारत भाग १—ले० अमृतलाल नागर, प्र० ज्ञान भारती बाल पाकेट बुक्स, लखनऊ, पृ० १२८; मूल्य १.००।

हिन्दी के यशस्वी कथाकार अमृतलाल नागर ने बच्चों के लिए अपनी कहानी सहित महाभारत को जिस सरल व रोचक रूप में प्रस्तुत किया है उससे इस नन्हीं-सी पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। हमारे किशोर पाठक इससे अपने महान ग्रन्थों का सरस रूप में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। प्रकाशक का यह अत्यन्त सार्थक कार्य हिन्दी के प्रति बच्चों की रुचि की वृद्धि करेगा।

अन्धे कुंए का देव—ले. राजेश शर्मा, प्र० सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहरनगर, दिल्ली-६ आकार क्राउन, पृ. ९६, मूल्य २.५० ।

अन्धे कुंए का देव एक बाल उपन्यास है जिसमें एक रोचक कहानी के द्वारा बच्चों को चरित्र-उत्थान की शिक्षा दी गई है । लेखक ने इस शिक्षा के लिए जो मार्ग अपनाया है वह वास्तव में सराहनीय है—बाबा अपने नातियों को नन्हे राजू की कहानी सुनाते हैं जिसने अपने साहस, सद्व्यवहार और नेकी के कारण सबको अपना मित्र बनाया और हरे देव व लाल जिन जैसे शत्रुओं को परास्त किया और नन्दू ने अपने बुरे और झगड़ालू स्वभाव के कारण सदैव दूसरों को तकलीफ़ें दीं और स्वयं भी दुख उठाया। बच्चों की उत्सुकता कहानी में निरन्तर बनी रहती है। पुस्तक का प्रकाशन सावधानी की अपेक्षा रखता था। मुद्रण की भूलें स्थान-स्थान पर खटकती हैं ।

विविध

राजस्थान पुस्तक उद्योग निर्देशिका—सं० चम्पालाल राँका, प्र० चम्पालाल राँका, अटल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३; आकार डिमाई; मूल्य १०.०० ।

"राजस्थान पुस्तक उद्योग निर्देशिका' में बहुत परिश्रम पूर्वक राजस्थान के पुस्तक उद्योग का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है, और राजस्थान में या राजस्थान के बाहर पुस्तक व्यवसाय के क्षेत्र में काम करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए अधिक से अधिक बुनियादी बातों की जानकारी इसमें सुलभ हो जाती है । पूरी निर्देशिका तीन खण्डों में विभाजित है । पहले खण्ड में राजस्थान के पुस्तक उद्योग के बारे में बुनियादी बातों की जानकारी दी गई है, दूसरे खण्ड में पुस्तक-व्यवसाइयों का परिचय है और तीसरे खण्ड में पुस्तक-व्यवसाइयों की वर्गीकृत सूची है जिसे काटकर अलग निकाला जा सकता है । निर्देशिका सम्बद्ध व्यक्तियों के लिए अतीव उपयोगी है इसमें दो मत नहीं हो सकते ।

आलोचना

डा० रवीन्द्र भ्रमर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६	१२.००
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना एवं मलयज, शमशेर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली-६	८.००
डा० सत्येन्द्र, लोकसाहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा-३	१६.००
डा० रामविलास शर्मा, निराला, ,, ,, ,,	१०.००
डा० भगवानसहाय पचौरी, ब्रज साहित्य का मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	२०.००
डा० तारकनाथ बाली, साधारणीकरण संप्रेषण और प्रतिबद्धता, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	४.००
डा० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां, ,, ,, ,,	१०.००
डा० राजकिशोर सिंह, संस्कृत भाषा विज्ञान, ,, ,, ,,	७.००
डा० रामप्रकाश. समीक्षा सिद्धांत, आर्य बुक डिपो, दिल्ली-५	५.००
डा० मंजुलता सिंह, हिन्दी उपन्यासों में मध्य वर्ग, ,, ,, ,,	३०.००
डा० दिनेश, सूरति मिश्र ग्रन्थावली प्रथम खण्ड, उमेश पुस्तक प्रकाशन, उदयपुर	१२.५०
डा० रणजीत, हिन्दी की प्रगतिशील कविता, हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली	३०.००

उपन्यास

बलवंतसिंह, राका की मंजिल, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० दिल्ली-६	१५.००
विश्वेश्वर कोइराला तीन अध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली-६	३.५०
मैक्सिम गोर्की, माँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली-६	३.५०
भैरवप्रसाद गुप्त, बांदी, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६	१०.००
रांगेय राघव, लोई का ताना, ,, ,, ,,	५.००
अलैक्जेण्डर सोलनिस्तीन, कैंसर वार्ड, नेशनल एकेडेमी, दिल्ली-६	८.००
अलैक्जेण्डर सोलनिस्तीन, उद्देश्य की दृष्टि से, ,, ,,	५.००
मैक्सिम गोर्की, माँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६	१२.००
भगवतीप्रसाद वाजपेयी, एक स्वर आँसू का, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६	६.००
चुन्नीलाल मड़िया, कालचक्र, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर	१५.००

कहानी

कृश्नचन्दर, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६	५.००
रामनिवास शर्मा मयंक, धुँधली स्मृतियों के चित्र, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर	५.००

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

लायब्रेरियों के लिए श्रेष्ठ प्रकाशन

शोध प्रबंध

प्रेमचन्द और हरिनारायण आप्टे
डॉ० प्रमिला गुप्ता २५.००

हिन्दी में शब्दालंकार विवेचन
डॉ० देशराज सिंह भाटी २०.००

राहुल सांकृत्यायन का कथासाहित्य
डॉ० प्रभाशंकर मिश्र १५.००

हिन्दी कहानी उद्भव और विकास
डॉ० सुरेश सिनहा २०.००

मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी
डॉ० रामसागर त्रिपाठी १५.००

आधुनिक काव्य में वात्सल्य रस
डॉ श्री निवास शर्मा १२.५०

जायसी की बिम्ब योजना
डॉ० सुधा सक्सेना १५.००

प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धान्त
प्रो० नरेन्द्र कोहली १०.००

प्रयोगवाद और अज्ञेय प्रो० शैल सिनहा १०.००

कामायनी की भाषा प्रो० रमेशचन्द्र गुप्त ७.५०

काव्यशास्त्रीय

पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त
डॉ० शान्ति स्वरूप गुप्त १२.००

भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्त
डॉ० कृष्णदेव झारी १२.००

समीक्षा शास्त्र के भारतीय मानदण्ड
डॉ० रामसागर त्रिपाठी १५.००

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ० देशराज सिंह भाटी ८.००

भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन
डा० सत्यदेव चौधरी एवं गुप्त २०.००

पाश्चात्य काव्य समीक्षा
प्रो० ब्रजभूषण शर्मा ४.००

भारतीय काव्य समीक्षा
डॉ० श्रीनिवास शर्मा ३.००

साहित्यिक

हिन्दी काव्य के आलोक स्तम्भ
डा० शान्तिस्वरूप गुप्त १०.००

भारतीय नाट्यशास्त्र और रंगमंच
डा० रामसागर त्रिपाठी १२.००

हिन्दी साहित्य : प्रकीर्ण विचार
डा० शान्तिस्वरूप गुप्त ८.००

प्रसाद के नाटक एवं नाट्य शिल्प
डा० शान्तिस्वरूप गुप्त ६.००

उपन्यासकार प्रेमचन्द
डा० सुरेशचन्द एवं रमेशचन्द १२.५०

बिहारी मीमांसा डा० रामसागर त्रिपाठी १०.००

हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां
डा० शिवकुमार शर्मा १०.००

युगकवि निराला डा० कृष्णदेव झारी १०.००

संस्कृत साहित्य का इतिहास प्रो० श्याम मिश्र ३.५०

निबन्ध

बृहत साहित्यिक निबन्ध
डा० रामसागर त्रिपाठी एवं गुप्त १५.००

साहित्यिक निबन्ध डा० शान्तिस्वरूप गुप्त १०.००

संस्कृत निबन्ध सागर
डा० शिवप्रसाद शास्त्री १५.००

अशोक निबन्ध सागर
प्रो० विजयकुमार एम.ए. ६.००

अशोक निबन्ध माला प्रो० शिवप्रसाद एम. ए. ४.००

सटीक काव्य

सूर का कूट काव्य : डा० देशराजसिंह भाटी १५.००
बिहारी भाष्य : डा० देशराजसिंह १५.००
कबीर ग्रंथावली : प्रो० पुष्पपाल सिंह १२.००
जायसी ग्रंथावली : डा० श्रीनिवास शर्मा १२.००
केशव और उनकी रामचंद्रिका : प्रो० भाटी ८.००
मीराबाई पदावली : प्रो० देशराजसिंह ५.००
विद्यापति पदावली : प्रो० कृष्णदेव शर्मा ६.००
सूरदास और उनका भ्रमरगीत : डा० श्रीनिवास ८.००
रसखान ग्रंथावली : प्रो० देशराजसिंह ६.००
बिहारी सतसई : प्रो० विराज एम. ए. ४.००
घनानन्द कवित्त : प्रो० लक्षमणदत्त गौतम ४.००
कबीर साखी : प्रो० पुष्पपालसिंह ३.५०

अशोक प्रकाशन
नई, दिल्ली

आर्य बुक डिपो, करौल बाग, दिल्ली-५

— निराला का गद्य साहित्य (शोध प्रबंध), डॉ० निर्मल जिन्दल

— भक्तिकालीन कवियों के काव्य-सिद्धान्त (शोध प्रबन्ध), डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त

— रामनरेश त्रिपाठी और उनका काव्य (शोध प्रबंध), डॉ० राममूर्ति शर्मा

— प्राणदण्ड (ऐतिहासिक नाटक), शत्रुघ्नलाल शुक्ल

कृष्णा ब्रदर्स, कचहरी रोड, अजमेर

— गीता मनन (आलोचना), राव नारायण साहब

— महान राष्ट्रों का आर्थिक विकास (अर्थशास्त्र), हरिश्चन्द्र सक्सैना

— शिक्षा के बढ़ते चरण (अभिनन्दन ग्रन्थ), भट्ट एवं पंचोली

— लुकल (उपन्यास), परमहंस प्रमोद

— नीरजा (उपन्यास), बंसीलाल यादव

प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

— नाना साहब पेशवा (जीवनी), शंकर बाम

— वीर सिपाही देश के (जीवनी), रामकृष्ण शर्मा

— लद्दाख का लहू (नाटक), रामनारायण शास्त्री

— सिद्धार्थ (उपन्यास), हरमन हेस

— आदर्श कार्यालय पद्धति (विविध), मन्नूलाल द्विवेदी

राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

— नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (आलोचना), गजानन मा० मुक्तिबोध

— हिन्दी लघु-उपन्यास (आलोचना), डॉ० घनश्याम मधुप

— आखिरी खेल (नाटक), सैमुअल बैकेट

— हिन्दी भाषा का विकास (आलोचना), देवेन्द्रनाथ शर्मा

(पृष्ठ ३१ का शेष)

कविता

सुरेन्द्र तिवारी. जूझते हुए, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली-६	५.५०
डा० गुण्डप्पा, मूढ़ तिम्म दर्शन, कृष्ण ब्रदर्स, अजमेर	४.००
डा० दिनेश, आहं मेरा गेय, उमेश पुस्तक प्रकाशन, उदयपुर	६.००

नाटक

रामकृष्ण कौशल, तीन आयाम, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६	४.००

जीवनी-संस्मरण

बलवंतसिंह गुजराती, सिखों के दस गुरु, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६	३.५०
बनारसीदास चतुर्वेदी, अमर शहीद अशफाकउल्लाखाँ, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा	५.००
स० स० चौधरी, अमर विभूतियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६	३.५०
काका कालेलकर, गांधी युग के जलते चिराग, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर	५.००

विविध

डा० गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा	२०.००
श्रीमन्नारायण, बिन माँगे मोती मिले, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली	४.००
जितेन्द्र कुमार मित्तल, थाईलैंड ,, ,,	३.००
आनंद जैन, इस्रायल, ,, ,, ,,	३.००

डा० सत्यप्रकाश संगर

का आठवाँ कहानी-संग्रह

लहरों का निमंत्रण

डॉ० संगर की इस नवीनतम पुस्तक में डेढ़ दर्जन कहानियाँ सम्मिलित हैं जो अपनी अनुपम शैली और टकसाली भाषा, मौलिक विषयों तथा चुभते व्यंग्यों के कारण पाठक के मन पर अमिट छाप छोड़ती हैं।

कलात्मक आवरण और आकर्षक सज्जा : मूल्य : ६-००

अन्य रचनाएं

उपन्यास

कली मुसकराई (तीसरा संस्करण)	५.००
घर की आन ,, ,,	६.००
परित्यक्ता	४.५०
बरगद की छाया (दूसरा संस्करण)	४.००
मंजिल से दूर ,, ,,	३.००
चाँद रानी ,, ,,	४.००

कहानी-संग्रह

मुझे टिकट दो	५.००
हमदमे देरीना का मिलना (दूसरा संस्करण)	३.००
अफ्रीका का आदमी ,, ,,	२.७५
लम्बे दिन जलती रातें ,, ,,	४.००
नया मार्ग	२.५०
अवगुण्ठन (तीसरा संस्करण)	४.००
कितना ऊँचा कितना नीचा	२.२५

नाटक संग्रह

दामाद का चुनाव	४.५०
काफी हाउस वाली लड़की	३.००

विविध

मिनिस्टर की डायरी	४.००
उदयाचल के आँचल में	३.००
मुगल भारत में अपराध और दण्ड (अंग्रेज़ी)	२५.००

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

राजकमल द्वारा १९७० में प्रकाशित श्रेष्ठ साहित्य

आलोचना

फ़िलहाल : अशोक वाजपेयी ८.००
हिन्दी आलोचना : डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी १२.००
हिन्दी की शब्द सम्पदा : डॉ. विद्यानिवास मिश्र ८.००
सुमित्रानन्दन पंत तथा आधुनिक हिन्दी कविता में परम्परा और नवीनता : डॉ. ई. चेलिशेव १०.००
भरत और भारतीय नाट्कला : डॉ. सुरेन्द्रनाथ दीक्षित ३०.००
छायावाद का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन : डॉ. कुमार विमल १४.००

निबन्ध

प्रसंगवश : भारतभूषण अग्रवाल ४.५०

उपन्यास

सबहिं नचावत राम गुसाईं : भगवतीचरण वर्मा १४.००
ओस की बूंद : राही मासूम रज़ा ५.००
राजाबदल : विमल मित्र ७.००
और नदी बहती रही : अभिमन्यु अनत 'शबनम' ४.००
कड़ियाँ : भीष्म साहनी ८.००
घर और रास्ता : गुरुदयाल सिंह १०.००
नदी और सीपियाँ : शानी ३.५०
एक करोड़ की बोतल : कृश्न चन्दर ६.००

कहानी

चिलमन : बलवन्त सिंह ६.००
परिन्दे : निर्मल वर्मा ६.००
फूल और पत्थर : कृश्न चन्दर ६.००
लहरों का निमंत्रण : डॉ. सत्यप्रकाश संगर ६.००

नाटक

रुपया तुम्हें खा गया : भगवतीचरण वर्मा ३.००

जीवन चरित्र

सुमित्रानन्दन पंत : जीवन और साहित्य : शान्ति जोशी २५.००
व्यक्तित्व की झाँकियाँ : लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' ३.५०

व्यंग्य

शिकायत मुझे भी है : हरिशंकर परसाई ५.००

बाल साहित्य

तेक्कडी का राजा : एम. पी. सुब्रह्मण्यम ३.००
अनोखी मुलाकातें : डॉ. हरिकृष्ण देवसरे २.५०
बहता पानी कहे कहानी : डॉ. हरिकृष्ण देवसरे २.५०
अन्तर्राष्ट्रीय लोककथाएँ-१ : डॉ. कुसुम सेठ २.५०
अन्तर्राष्ट्रीय लोककथाएँ-२ : डॉ. कुसुम सेठ २.५०

विविध

अंतरिक्ष युग में संचार (विज्ञान) : यूनेस्को के तत्त्वावधान में ९.००
लेनिन के देश में (यात्रा-विवरण) : अक्षय कुमार जैन ४.००

श्रेष्ठ • सुरुचिपूर्ण • संग्रहणीय

हर पुस्तकालय के लिए अपरिहार्य

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६
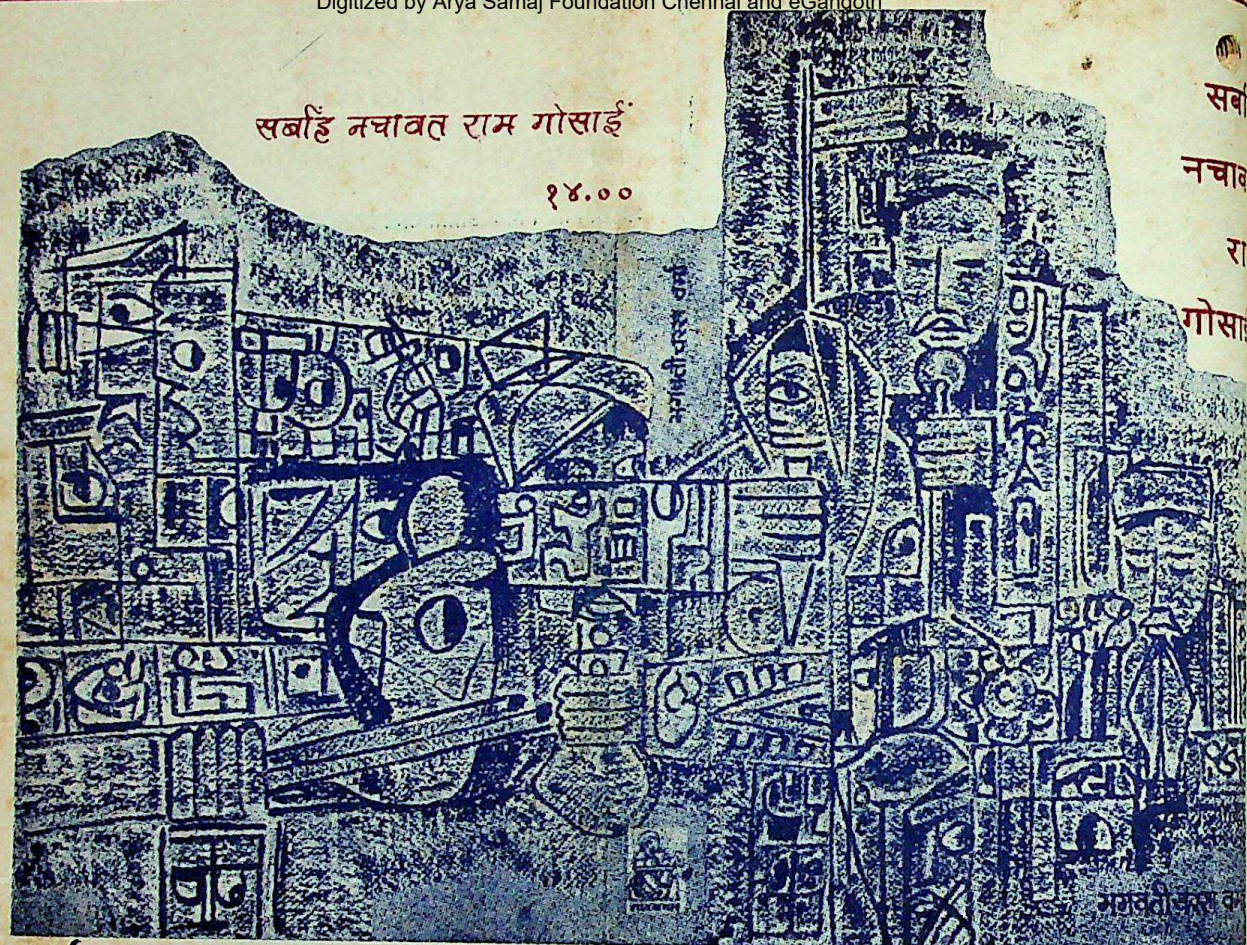
साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता उपन्यास

श्री भगवतीचरण वर्मा की

अद्वितीय व्यंग्यप्रधान कृति

पहला संस्करण पाटकों ने हाथों-हाथ लि

और अब प्रस्तुत है दूसरा संस्क

उपन्यास की लोकप्रियता का अकाट प्र

आदि से अंत तक रोचक ● आज की भ्रष्ट राजनी

की जीती-जागती कथा ● हर प्रबुद्ध पाठक

मर्म को छूने वाली घट

वर्माजी के अन्य प्रसिद्ध उपन्यास

- सीधी सच्ची बातें ... २०.००
- भूले बिसरे चित्र ... १५.००
- वह फिर नहीं आई ... ३.००
- सामर्थ्य और सीमा ... ८.००
- रेखा ... १२.००

Edited and published by Smt. Sheila Sandhu, Rajkamal Prakashan Pvt. Ltd., Delhi-6 and printed at Navin Press, unit 2, 70 Okhla Industrial Estate, New Delhi.

प्रकाशन समाचार

अप्रैल १९७१

वर्ष १९७० के
साहित्य अकादमी पुरस्कार
द्वारा सम्मानित
महान ऐतिहासिक कृति

•

हिन्दी के जीवनी-साहित्य
में अद्वितीय

निराला की साहित्य-साधना

•

डॉ० रामविलास शर्मा

•

निराला की जीवन-साधना और साहित्य-साधना के गहनतम स्तरों के भीतर से उनके विराट व्यक्तित्व का उद्घाटन करने वाली बेजोड़ कृति !

•

नए संशोधित-संवर्द्धित संस्करण में नई साज-सज्जा के साथ उपलब्ध

•

डिमाई आकार
५५० से अधिक पृष्ठ
रैक्सिन की मजबूत जिल्द

•

मूल्य ३५.००
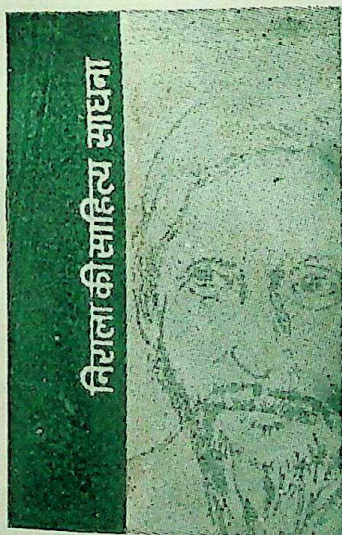
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

शीघ्र प्रकाश्य

निराला की साहित्य-साधना का द्वितीय खण्ड

इस खंड में निराला की राजनीतिक, सामाजिक, दार्शनिक विचारधारा का विवेचन है जिससे विदित होगा कि निराला ने अपने युग की समस्याओं पर कितनी गहराई से विचार किया था !

●

महाकवि निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने में सहायक एक और सद्यः प्रकाशित कृति

निराला के पत्र

सं० आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

महाकवि के जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे गये पत्र, जानकीवल्लभजी की विस्तृत भूमिका और पादटिप्पणियों सहित ।

मूल्य १८.००
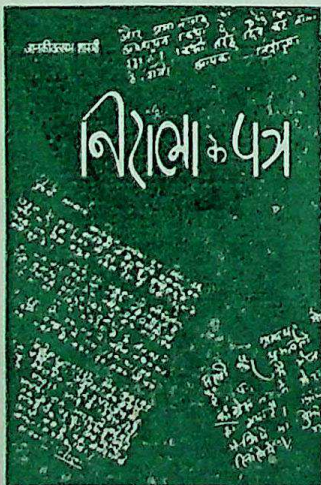
राजनीति कोश

डा० सुभाष काश्यप एवं

विश्वप्रकाश गुप्त

राजनीति शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों, शब्दबंधों का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद और भारतीय सन्दर्भों में उनकी विस्तृत व्याख्या ।

राजनीतिशास्त्र पर हिन्दी में यह विश्वकोश के ढंग की पहली और अत्यन्त प्रामाणिक कृति है ।

शीघ्र प्रकाश्य

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

कबीर-विषयक
आलोचना-साहित्य में
मील का पत्थर !

हजारीप्रसाद द्विवेदी

कबीर

लगभग दस वर्ष तक अप्राप्य रहने के बाद अब राजकमल से संशोधित-संवर्धित रूप में नई साज-सज्जा के साथ उपलब्ध !

मूल्य : सजिल्द १६.००
पेपरबैक १०.००

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली-६ पटना-६

इस मास के नये प्रकाशन

षड्यंत्र (उपन्यास) : श्री मन्मथनाथ गुप्त के नये उपन्यास षड्यंत्र में देश की राजनीतिक स्थिति का बहुत ही सजीव चित्रण हुआ है। 'षड्यंत्र' में उस 'षड्यंत्र' का उद्घाटन हुआ है जो राष्ट्र के निर्माण को गलत दिशा में मोड़ने में प्रयत्नशील है।

मूल्य ७.००

कांचघर (उपन्यास) : श्री रामकुमार भ्रमर के इस आंचलिक उपन्यास में महाराष्ट्र के लोकनर्तकों और नर्तकियों के पर्दे के पीछे का जीवन चित्रित हुआ है। अपने अभिनय से लोगों का मनोरंजन करने वाले पात्रों की दुःखान्त कहानी मार्मिक रूप से प्रस्तुत।

मूल्य ७·००

मेरी प्रिय कहानियाँ (कहानियाँ) : हिंदी के जाने-माने कहानीकार श्री अमृतराय की अपनी मनपसंद कहानियों का संकलन कहानी साहित्य पर उनकी विचारोत्तेजक भूमिका के साथ।

मूल्य ५.००

समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (किशोरोपयोगी उपन्यास) : सुप्रसिद्ध फ्रैंच उपन्यासकार जुले वर्ने की लोकप्रिय कृति 'ट्वेण्टी थाउजैण्ड लीग्स अण्डर दी सी' का सरल रूपान्तर। विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में यह उपन्यास अनुवादित होकर लोकप्रिय हो चुका है। मूल्य २.००

देश-विदेश की लोकप्रिय रोचक कहानियाँ सरल भाषा में। प्रत्येक पुस्तक में अनेकों रंग-बिरंगे चित्र हैं। इन सभी पुस्तकों के लेखक हैं : श्री भगवतशरण उपाध्याय

शेर बड़ा या मोर १.५०
बुद्धि का चमत्कार १.५०
बिना विचारे जो करे १.५०

राजपाल एण्ड सन्ज,
कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित

सम्पादक : शीला संधू

वर्ष १८ ● अंक ८ ● अप्रेल १९७१

वार्षिक ४.००; विदेशों में ८.००; एक प्रति ०.४०

हिन्दी-भाषियों में पठन-रुचि और क्रय-शक्ति का प्रश्न

हिन्दी के सामान्य प्रकाशनों की मुद्रण-संख्या एक हजार और दो हजार से आगे नहीं बढ़ पाई है। बहुत कम पुस्तकें होती हैं जो तीन हजार छपती हैं और तीन हजार से ज्यादा छपने वाली पुस्तकें तो गिनी-चुनी ही होती हैं। नतीजा इसका यह होता है कि एक तरफ तो पाठकों को पुस्तकों का मूल्य ज्यादा चुकाना पड़ता है और दूसरी तरफ प्रकाशकों का प्राप्यांश भी बहुत कम रह जाता है। मुद्रण-संख्या कम होने के अक्सर दो कारण बताए जाते हैं—जनता में पठन-रुचि का अभाव और क्रय-शक्ति की कमी। लेकिन पाकेट-बुक प्रकाशनों का जिस तेजी से विस्तार हो रहा है उसे देखते ये दोनों तर्क असंगत प्रतीत होते हैं। यदि पाकेट-बुक प्रकाशनों के मुद्रण और बिक्री के आंकड़ों को सामने रखकर इस प्रश्न पर विचार करें तो जो तथ्य प्रकाश में आता है वह यह कि कम से कम एक लाख हिन्दीभाषी पाठक प्रतिमास औसतन दस रुपये पाकेट बुक्स खरीदने पर व्यय करते हैं। आज के युग में भी जब कि रुपये की कीमत बहुत घट गई है, दस रुपये कुछ कम नहीं हैं। यानी हिंदी में पाठक भी हैं, उनके पास पढ़ने के लिए वक्त भी है और किताबें खरीदने के लिए, सीमित परिमाण में ही सही, पैसा भी है और उस पैसे को वे किताबों पर खर्च भी करते हैं। अन्तर सिर्फ इतना है, और यह अन्तर बहुत बड़ा है, कि उनकी रुचि सस्ते, अस्थायी मूल्यवाले साहित्य में अधिक है, श्रेष्ठ और स्थायी मूल्य वाले साहित्य में कम।

जहाँ तक हम समझते हैं, पाठकों में इस तरह की रुचि विकसित होने के दो कारण हैं—पहला यह कि पाकेट बुक प्रकाशकों ने पुस्तकों के प्रचार पर सूझबूझ के साथ रुपया खर्च करके पाठकों के दरवाजे तक उन्हें पहुँचाया और दूसरा कारण, जो ज्यादा महत्वपूर्ण है, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों से सम्बन्धित है। अपनी भाषा, अपने साहित्य और अपनी सांस्कृतिक परम्परा से परिचित होना आज के व्यक्ति के लिए गौरव की बात नहीं रह गई है और इसीलिए वह श्रेष्ठ साहित्य को पढ़ना आवश्यक नहीं समझता। सिर्फ समय बिताने के लिए उसे कोई किताब चाहिए और उसकी इस जरूरत को पाकेट बुक्स पूरा कर देती हैं।

निष्कर्ष यह निकलता है कि जब तक हम ऐसा वातावरण न उत्पन्न कर दें जिसमें हर हिन्दीभाषी प्रसाद, पन्त, निराला, अज्ञेय, मुक्तिबोध, यशपाल आदि से परिचित होना अपने लिए उसी तरह जरूरी समझे, जिस तरह एक बंगाली रवीन्द्रनाथ, शरत, ताराशंकर, बुद्धदेव से परिचित होना जरूरी समझता है तब तक श्रेष्ठ साहित्य का प्रसार नहीं हो सकता। इसके लिए कई दिशाओं से सतत प्रयत्न करना होगा और प्रकाशक बन्धु विज्ञापन तथा प्रचार-प्रसार के द्वारा इस कार्य में योग दे सकते हैं। पुस्तक को अच्छे गेट-अप में प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक समझकर जो व्यय किया जाता है उसी प्रकार उसके प्रचार पर भी एक निश्चित धनराशि आवश्यक समझकर खर्च की जानी चाहिए। इसका फल तत्काल प्रकाशकों को नहीं मिलेगा लेकिन बाद में पुस्तकों की बिक्री में निश्चित रूप से अन्तर आयेगा।

प्रकाशन व्यवसाय : समस्यायें और समाधान

कृष्णचन्द्र बेरी

वैज्ञानिक तरीके के अभाव में अपेक्षित सीमा तक नहीं पहुँच सकने के बावजूद यह निर्विवाद है कि स्वतन्त्रता के बाद देश में प्रकाशन-व्यवसाय समुन्नत हुआ है। इसमें सन्देह नहीं कि आज देश में पाठकों की संख्या करोड़ों में कूती जाती है। समाचारपत्र, मासिकपत्र और पाकेट-बुक का प्रचलन घर-घर में हो गया है, परन्तु जिस अनुपात से शिक्षा का प्रसार हुआ है उस अनुपात से सत्साहित्य पढ़ने की रुचि का विकास नहीं दीखता। वैसे प्रतिवर्ष देश में पचास लाख नये शिक्षार्थी हो रहे हैं, परन्तु आज की दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली और सामाजिक परिवेश में अधिकांश लोग नौकरी करने के लिए ही शिक्षा-प्राप्ति को अपना लक्ष्य मानते हैं। परिणामतः प्रकाशन-व्यवसाय का पाठ्य-पुस्तक वाला अंग तो परिपुष्ट हो रहा है, परन्तु साहित्य के विक्रय-क्षेत्र में खोखलापन परिलक्षित है।

प्रकाशन-व्सयाय की कमियों की ओर ध्यान दिये बिना हम समस्याओं का समाधान नहीं खोज सकते। मेरे व्यक्तिगत विचार से पठनाभिरुचि का अभाव, छात्र आन्दोलन, आर्थिक संक्रमण, प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता-सम्बन्ध, प्रकाशन सम्बन्धी सूचना व आँकड़ों का अभाव, साहित्य-प्रकाशन में पूंजी नियोजित करने वाले प्रकाशकों की कमी और प्रकाशकों के व्यवस्थित संगठनों का अभाव ऐसे कारण हैं जिन पर हमें विचार करना होगा।

पठनाभिरुचि का प्रश्न वस्तुतः बहुत जटिल है। यह आन्दोलन सीधे समाज से सम्बन्धित है। इस आन्दोलन को चलाने के लिए केवल प्रकाशक और लेखकों के प्रयास से ही काम नहीं चलेगा। राष्ट्रीय स्तर पर इस दिशा में अथक प्रयास की तब तक आवश्यकता है, जब तक सामाजिक परिवेश पठन-रुचि के अनुकूल न बन जाये। अच्छे साहित्य के प्रति रुचि दिनोंदिन गिरती जा रही है। यथार्थवाद के नाम पर बाजार में विद्यार्थियों से लेकर प्रौढ़ों तक को सैक्स-साहित्य पढ़ाया जा रहा है। इस क्षेत्र में ऐसी विकृति आ गयी है कि कोई भी प्रकाशक नैतिक जीवन से सम्बन्धित साहित्य के प्रकाशन का साहस नहीं करता। माँ-बाप बच्चों को प्रारम्भ से ही ऐसे साहित्य को पढ़ने से नहीं रोकते जो कि उनमें विकार पैदा करता है। साहित्य में रुचि लेने वाले सौ में से एक ही पाठक के घर में देश के उत्कृष्ट लेखकों की कृतियाँ आपको मिलेंगी। कुछ कारण यह भी हैं कि जहाँ हमारे विद्यार्थियों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है वहाँ ऐसे अधिकांश अध्यापक मिलेंगे जो साहित्य से स्वयं अनभिज्ञ हैं। परिणामतः बच्चों में पढ़ने की रुचि जाग्रत करने में वे कोई दिलचस्पी नहीं लेते। स्कूलों और कालेजों में लाइब्रेरियाँ नाम मात्र के लिए हैं। खोजबीन करने पर पता लगेगा कि अच्छी पुस्तकों पर धूल जमी रहती है, उनको कोई पढ़ने वाला नहीं है। ऐसी स्थिति में सत्साहित्य प्रकाशित करने का साहस कौन करेगा ?

देश में राजनीतिक वातावरण एक नया मोड़ ले रहा है। आज का छात्र आन्दोलनकारी हो गया है। उसके दिल-दिमाग में यह बात घर कर गयी है कि उसे देश के विषय में पूरी जानकारी रखनी चाहिए और नये समाज के निर्माण में योग देना चाहिए। ऐसे समय इन कोमलमति छात्रों को विज्ञान, तकनीक, वीरगाथाओं, चरित्र-निर्माण, अनुशासन-सम्बन्धी विषयों की पुस्तकें सुन्दर कलेवर में दी जायें तो उनकी रुचि सत्साहित्य पढ़ने की ओर हो सकती है।

कहा जाता है कि आर्थिक संक्रमण के कारण पठनाभिरुचि का विकास नहीं हो पा रहा है, परन्तु यह बात

अपने आप में ही खण्डित हो जाती है। जहाँ केरल और बंगाल में साहित्य पढ़ने के प्रति आम जनता की रुचि बहुत अधिक है, वहाँ हिंदी भाषी क्षेत्र में यह रुचि बहुत ही कम है। मेरे एक मित्र ने इस सम्बन्ध में एक अनूठा तर्क पेश किया कि दक्षिण विदेशी आक्रमणों से बचा रहा और उत्तर सदैव रणभूमि बना रहा, इसीलिए उत्तर की जनता की रुचि पठन-पाठन में परिष्कृत नहीं हो पाई। साथ ही उत्तर के लोग आर्थिक दृष्टि से अभी उतने सम्पन्न भी नहीं हो पाये हैं कि वे पुस्तकें खरीदकर पढ़ सकें। मूल समस्या यह है कि अच्छे और कम मूल्य के प्रकाशन सुलभ नहीं हो रहे हैं। पुस्तकों के मूल्य इस तेजी से बढ़ते जा रहे हैं कि सामान्य जनता उसे खरीदने में अपने को असमर्थ पाती हैं। प्रकाशकों का तर्क है कि पुस्तकें कम बिकती हैं, लिहाजा दाम अधिक रखना पड़ता है। पाठकों का मत है कि सत्साहित्य इतना महँगा है कि उनके पारिवारिक बजट के बूते के बाहर है। प्रकाशकों और लेखकों को परस्पर सहयोग करना होगा। लेखक अपनी रायल्टी की दरें कम करें और प्रकाशक पुस्तकों के मूल्य कम रखें।

विदेशों में भारतीय वंशज बहुत अधिक संख्या में हैं। भारतीय भाषाओं की पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं। उन्हें समय-समय पर उचित मूल्य पर साहित्य सुलभ हो तो इस व्यवसाय का बहुत लाभ हो सकता है।

सरकारी और अर्द्ध-सरकारी संस्थाएँ भी प्रकाशन का कार्य कर रही हैं परन्तु उनकी वितरण और प्रचार-प्रणाली इतनी दूषित है कि करोड़ों रुपयों की पुस्तकें गोदाम में सड़ रही हैं। अच्छा हो सरकार इस सम्बन्ध में अपनी नीतियों में परिवर्तन करे और प्रकाशकों को ही इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करे।

प्रकाशन व्यवसाय के न पनपने का एक मुख्य कारण है कम पूँजीवाले लोगों का इस व्यवसाय में बहुत अधिक संख्या में होना। वे पुस्तक-विक्रय-आन्दोलन को घबड़ाहट में पनपने नहीं देते। जिन कमीशनों पर प्रकाशक पुस्तक-विक्रेताओं को पुस्तकें देते हैं, उन्हीं कमीशनों पर साधारण ग्राहकों और पुस्तकालयों को बेच आते हैं। परिणाम यह हुआ है कि सारे देश में साहित्य का विक्रय करने वाले पुस्तक-विक्रेताओं का एकदम अभाव है। नकद मूल्य पर साहित्य मँगाकर रखने वाले पुस्तक-विक्रेताओं की संख्या नगण्य-सी है। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने इस सम्बन्ध में नैट बुक समझौता लागू किया था, जिसके अनुसार कमीशन सम्बन्धी नियम बनाये गये थे। उस समझौते को पुनः लागू करने की आवश्यकता है।

आँकड़ों और सूचनाओं के अभाव में भी सत्साहित्य के विक्रय में बाधा पड़ रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रकाशन व्यवसाय से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाएँ अनेक निकलती हैं, परन्तु उनकी संख्या अँगुलियों पर गिनने लायक है। इतने विराट बहुभाषाभाषी देश में करोड़ों शिक्षित व्यक्तियों के बीच नये प्रकाशनों की सूचना देना और प्रचार करना आज के प्रकाशक के लिए व्यक्तिगत रूप से सम्भव नहीं है। इसके लिए प्रकाशकों को अपने संगठन का सहारा लेना होगा और ऐसा प्रयत्न करते रहना होगा कि नयी पुस्तकों के सम्बन्ध में जनता को समय-समय पर जानकारी मिलती रहे। विज्ञापन के इस युग में जहाँ फिल्मों के माध्यम से सिगरेट, दवाइयों, कपड़े आदि का विज्ञापन हो रहा है, वहाँ बिना विज्ञापन के पुस्तकों की माँग होना और साधारण जनता का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट होना सम्भव नहीं दीखता। इस दिशा में नेशनल बुक ट्रस्ट, फ़ैडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन, अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ आदि संस्थाओं की ओर से समय-समय पर प्रदर्शनियों की व्यवस्था और अन्य माध्यमों का उपयोग हो रहा है। नेशनल बुक ट्रस्ट प्रति-वर्ष राष्ट्रीय पुस्तक मेले भी लगा रहा है, परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यह राष्ट्रीय पुस्तक मेला भारतीय भाषाओं के प्रचार का केन्द्र न बनकर अंग्रेजी भाषा के प्रचार का केन्द्र बन रहा है। नेशनल बुक ट्रस्ट की कार्यप्रणाली पर विचार होना चाहिए जिससे भारतीय भाषाओं के प्रचार में ट्रस्ट का योग मिले।

अन्त में मैं प्रकाशकों से अनुरोध करूँगा कि वे अपने संगठनों के माध्यम से प्रकाशन-व्यवसाय की समस्याओं का समाधान खोज निकालें जिससे पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय समुन्नत हो सके।

लायब्रेरियों के लिए श्रेष्ठ प्रकाशन

शोध प्रबंध

प्रेमचन्द और हरिनारायण आप्टे
डॉ० प्रमिला गुप्ता २५.००

हिन्दी में शब्दालंकार विवेचन
डॉ० देशराज सिंह भाटी २०.००

राहुल सांकृत्यायन का कथासाहित्य
डॉ० प्रभाशंकर मिश्र १५.००

हिन्दी कहानी उद्भव और विकास
डॉ० सुरेश सिनहा २०.००

मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी
डॉ० रामसागर त्रिपाठी १५.००

आधुनिक काव्य में वात्सल्य रस
डॉ श्री निवास शर्मा १२.५०

जायसी की बिम्ब योजना
डॉ० सुधा सक्सेना १५.००

प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धान्त
प्रो० नरेन्द्र कोहली १०.००

प्रयोगवाद और अज्ञेय प्रो० शैल सिनहा १०.००

कामायनी की भाषा प्रो० रमेशचन्द्र गुप्त ७.५०

काव्यशास्त्रीय

पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त
डॉ० शान्ति स्वरूप गुप्त १२.००

भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्त
डॉ० कृष्णदेव झारी १२.००

समीक्षा शास्त्र के भारतीय मानदण्ड
डॉ० रामसागर त्रिपाठी १५.००

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ० देशराज सिंह भाटी ८.००

भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन
डा० सत्यदेव चौधरी एवं गुप्त २०.००

पाश्चात्य काव्य समीक्षा
प्रो० ब्रजभूषण शर्मा ४.००

भारतीय काव्य समीक्षा
डॉ० श्रीनिवास शर्मा ३.००

साहित्यिक

हिन्दी काव्य के आलोक स्तम्भ
डा० शान्तिस्वरूप गुप्त १०.००

भारतीय नाट्यशास्त्र और रंगमंच
डा० रामसागर त्रिपाठी १२.००

हिन्दी साहित्य : प्रकीर्ण विचार
डा० शान्तिस्वरूप गुप्त ८.००

प्रसाद के नाटक एवं नाट्य शिल्प
डा० शान्तिस्वरूप गुप्त ६.००

उपन्यासकार प्रेमचन्द
डा० सुरेशचन्द एवं रमेशचन्द १२.५०

बिहारी मीमांसा डा० रामसागर त्रिपाठी १०.००

हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां
डा० शिवकुमार शर्मा १०.००

युगकवि निराला डा० कृष्णदेव झारी १०.००

संस्कृत साहित्य का इतिहास प्रो० श्याम मिश्र ३.५०

निबन्ध

बृहत साहित्यिक निबन्ध
डा० रामसागर त्रिपाठी एवं गुप्त १५.००

साहित्यिक निबन्ध डा० शान्तिस्वरूप गुप्त १०.००

संस्कृत निबन्ध रत्नाकर
डा० शिवप्रसाद शास्त्री १२.००

अशोक निबन्ध सागर
प्रो० विजयकुमार एम.ए. ६.००

अशोक निबन्ध माला प्रो० शिवप्रसाद एम. ए. ३.५०

सटीक काव्य

सूर का कूट काव्य : डा० देशराजसिंह भाटी १५.००

बिहारी भाष्य : डा० देशराजसिंह १५.००

कबीर ग्रंथावली : प्रो० पुष्पपाल सिंह १२.००

जायसी ग्रंथावली : डा० श्रीनिवास शर्मा १२.००

केशव और उनकी रामचंद्रिका : प्रो० भाटी ८.००

मीराबाई पदावली : प्रो० देशराजसिंह ५.००

विद्यापति पदावली : प्रो० कृष्णदेव शर्मा ६.००

सूरदास और उनका भ्रमरगीत : डा० श्रीनिवास ८.००

रसखान ग्रंथावली : प्रो० देशराजसिंह ६.००

बिहारी सतसई : प्रो० विराज एम. ए. ४.००

घनानन्द कवित्त : प्रो० लक्ष्मणदत्त गौतम ४.००

कबीर साखी : प्रो० पुष्पपालसिंह ३.५०

अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली

सरल भाषा में आकर्षक बाल-पुस्तकें

अन्तर्राष्ट्रीय लोक कथाएँ—भाग १, २*

प्रस्तुत संकलनों में २३ देशों की कहानियां संकलित हैं। (जापान की दो कहानियाँ हैं) कहानियों की भाषा सरल है। कहानियों का चुनाव करते हुए लेखिका ने रोचकता का पूरा ध्यान रखा है। दोनों पुस्तकों की छपाई और साजसज्जा आकर्षक है। कहानियों को प्रस्तुत करते हुए बड़ी सहज और सरल भाषा का उपयोग किया गया है।

—मनोहर वर्मा

अनोखी मुलाकातें**

डा० हरिकृष्ण देवसरे हिन्दी बाल-साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने न केवल गल्प-प्रधान, बल्कि शिक्षाप्रद और ज्ञान प्रदान करने वाली रचनाएँ भी की हैं। उसी क्रम में उनकी यह पुस्तक बच्चों के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी। कोयल अपने बच्चों को खुद नहीं पालती। कोयल के अंडे तो कौवी को सेने पड़ते हैं। खरगोश का नाम खरगोश पड़ने का कारण क्या था—ऐसी रोचक बातों तथा अपने परिचित पक्षियों और जानवरों के विषय में जानकारी प्राप्त करने में यह पुस्तक काफी सहाकता होगी। तोता, मैना, कुत्ता, बिल्ली, खरगोश, चूहा, कोयल आदि से लेखक की काल्पनिक मुलाकातें पुस्तक पढ़ने पर बच्चों की मुलाकातें बन जायेंगी।

बहता पानी कहे कहानी***

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी वसीयत में लिखा था—"...मुझे बचपन से ही गंगा और यमुना से लगाव रहा है, और जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता गया। मैंने मौसमों के बदलने के साथ इसके बदलते हुए रंग और रूप को देखा है, और कई बार मुझे याद आयी उस इतिहास की, उन परम्पराओं की, पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और कहानियों की, जो कि कई युगों से उनके साथ जुड़ गई हैं और उनके बहते पानी में घुल-मिल गई हैं..."

'बहता पानी कहे कहानी' पुस्तक के लेखक ने नदियों की उन्हीं कहानियों को, इतिहास और जनश्रुतियों के आधार पर लिपिबद्ध किया है। पुस्तक में तेरह नदियों की कहानियाँ हैं—कर्णवती, गंगा, गोदावरी, चम्बल, तुंगभद्रा, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र (पुस्तक में इस नदी का नाम 'ब्रह्मपुत्रा' लिखा है), वेत्रवती, यमुना, साबरमती, शोणभद्रा, क्षिप्रा और कावेरी। नदियों की इन कहानियों की भाषा और शैली में नदी के बहते जल की रवानगी है। कहीं पर ठिठकने-अटकने की गुंजाइश नहीं। पुस्तक बेहद रोचक है। छपाई-सफाई का तो कहना ही क्या। पुस्तक पढ़ने के बाद पाठक को लगेगा, उसके सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई है। हमारे बाल-पाठक इस पुस्तक का स्वागत करेंगे, ऐसी आशा है।

—सत्यदेवनारायण सिन्हा
(पुस्तक परिचय से)

---

* लेखिका : कुसुम सेठ : प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६; मूल्य : प्रत्येक २.५०

** लेखक : डा० हरिकृष्ण देवसरे; प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६; मूल्य : २.५०

*** लेखक : डा० हरिकृष्ण देवसरे; प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६; मूल्य २.५०

हिन्दी, उर्दू और संस्कृत की रचनाएं पुरस्कृत

उत्तर प्रदेश सरकार ने (७०-७१) हिन्दी, उर्दू और संस्कृत की निम्नलिखित पुस्तकों पर पुरस्कारों की घोषणा की है। कुल ६६ पुस्तकों को पुरस्कृत किया गया है। दस हज़ार रुपये का विशिष्ट पुरस्कार गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' को और २।। हजार रु. का रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार 'प्रिया नीलकंठी' पर श्री कुबेरनाथ राय (असम) को मिला है। दो-दो हज़ार रु० के पांच, १।। हजार रु. के तीन और एक हजार रुपये के छह पुरस्कार दिये गये हैं। इन पुरस्कारों की कुल राशि ६१,२५०रु० है। निराला और कालिदास पुरस्कार में कोई पुस्तक नहीं चुनी गयी।

रवीन्द्र पुरस्कार : (१,५०० रु०) हिन्दी उपन्यास कोश : डा. गोपाल राय, पटना। हिन्दी वैष्णव साहित्य में रस परिकल्पना : डा. प्रेमस्वरूप, आगरा। **पन्त पुरस्कार** : (दो हजार रु.) भारतीय कृषि अर्थशास्त्र : डा. मधुकर महादेव थालेराव, वाराणसी। (एक हजार रु.) समाज कार्य-दर्शन एवं प्रणालियाँ : डा. मिर्जा रफीउद्दीन अहमद, लखनऊ। आर्थिक विचारों का इतिहास : विनीत मिश्र, रिवाड़ी। हिन्दू समाज व्यवस्था : विश्वनाथ शुक्ल, लखनऊ। **मालवीय पुरस्कार** : (दो हजार रु.) प्रज्ञा के पथ पर : रोहित मेहता, वाराणसी। चार्वाक दर्शन : आचार्य आनंद झा, लखनऊ। (एक हजार रु.) प्रयोगात्मक मनोविज्ञान : रामऋषि त्रिपाठी, वाराणसी। **भाल पुरस्कार** : (दो हजार रु.) भू-आकृति विज्ञान : रविन्द्र सिंह, इलाहाबाद। नृतात्विक भूगाल : राजीवलोचन शर्मा, कानपुर। (एक हजार रु.) शैवाल : दिनेश कुमारसिंह चौहान, लखनऊ। **प्रेमचन्द पुरस्कार** : (दो हजार रु.) जल टूटता हुआ : रामदरश मिश्र, दिल्ली। पुष्पहार, कृष्णकली : श्रीमती गौरा पंत शिवानी, लखनऊ। **प्रसाद पुरस्कार** : (७५० रु.) मृत्युंजय : लक्ष्मीनारायण मिश्र, वाराणसी। आधे अधूरे : मोहन राकेश, दिल्ली। जुही के फूल : डा. रामकुमार वर्मा, प्रयाग। **नरेन्द्रदेव पुरस्कार** : (१५०० रु.) पूर्वी और पश्चिमी एशिया : डा. बुद्धप्रकाश, कुरुक्षेत्र। **विविध पुरस्कार** (५०० रु.) पृथ्वीराज रासो के पात्रों की ऐतिहासिकता : डा. कृष्णचंद्र अग्रवाल, लखनऊ। महाकवि स्वयम्भू : डा. संकटाप्रसाद उपाध्याय, पिथौरागढ़। साकेत : एक अध्ययन : दानबहादुर पाठक 'वर', लखनऊ। कबीर-काव्य का भाषाशास्त्रीय अध्ययन : डा. भगवत प्रसाद दुबे, दिल्ली। महानगर की मीता : श्रीमती रजनी पनिक्कर, दिल्ली। विजय वरण : रघुवीर शरण 'मित्र', मेरठ। भगवान राम मध्यचरित तपोवनविहार : मनबोधन लाल, इलाहाबाद। शिवाजी (महाकाव्य) : श्याम नारायण पाण्डेय, आजमगढ़। कैकेयी : चांदमल अग्रवाल 'चंद्र', औरंगाबाद। चेतना के स्वर : शिवसिंह 'सरोज', लखनऊ। काश्मीर समस्या और पृष्ठभूमि : गोपीनाथ श्रीवास्तव, दिल्ली। महाभारत में राज्य-व्यवस्था : डा. प्रेम कुमारी दीक्षित, लखनऊ। मालवी लोक साहित्य : डा. श्याम परमार, दिल्ली। गांधी युग दशा दिशा : डा. राजानंद, बीकानेर। बीस साल के देश में बीस दिन की यात्रा : आर. शौरिराजन, मद्रास। कला के प्रणेता : शचीरानी गुर्टू, दिल्ली।

श्रेष्ठ हिन्दी पुस्तकें

शोध तथा समीक्षा

आलोचक और आलोचना — डॉ. बच्चन सिंह ८.००
आदिकालीन हिन्दी साहित्य — डॉ० शम्भूनाथ पाण्डेय २०.००
आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास (१९२०-६०) — डॉ० आशाकिशोर ३०.००
संत शिवनारायण और उनका हिन्दी काव्य — डॉ० रामचन्द्र तिवारी ३०.००
काव्यशास्त्र — डॉ० भगीरथ मिश्र १०.००
पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव — डॉ० रवीन्द्र सहाय वर्मा ६.००
साहित्य का मूल्यांकन — डॉ० रामचन्द्र तिवारी ३.००
समीक्षालोक — भगीरथ दीक्षित २०.००
मध्ययुगीन काव्य साधना — डॉ० रामचन्द्र तिवारी ४.५०
भारतेन्दुकालीन हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि — श्रीमती डॉ० कमला कानोडिया २५.००
हिन्दी का गद्य-साहित्य — डॉ० रामचन्द्र तिवारी १६.००
छायावादोत्तर हिन्दी गद्य साहित्य — डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी १६.००
कवि प्रसाद आँसू तथा अन्य कृतियाँ — डॉ० विनयमोहन शर्मा ३.००
प्रसाद तथा मिश्र के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन — डॉ० शशिशेखर नैथानी २०.००
कामायनी विमर्श — भगीरथ दीक्षित १०.००
हिन्दी रंगमंच और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' — डॉ० सौ० विद्यावती नम्र ४०.००
साहित्य और संस्कृति — सं० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल २०.००
दादूयाल : जीवन, दर्शन और काव्य — डॉ० सन्तनारायण उपाध्याय २०.००
यूरोप और अमेरिका में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ — डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ४.००
रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त — डॉ० सूर्यनारायण द्विवेदी १६.००
काव्य में अन्योक्ति — डॉ० सूर्यनारायण द्विवेदी ७.५०
राष्ट्रभारती को केरल का योगदान — डा० एन० ई० विश्वनाथय्यर ३.००
हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास — डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी ४.००

काव्य

मिरगावती (कुतुबन कृत) — डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त १६.००
अनुपूर्वा — रामेश्वर शुक्ल अंचल ५.००
चीजों को देखकर — डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी ५.००
त्रिविधा — वेदप्रकाश 'वटुक' ४.००
पंख और पाश — ज्वालाप्रसाद खेतान ३.००

उपन्यास

चौदह फेरे — शिवानी ७.५०
मंगला — अनन्तगोपाल शेवड़े ३.००

कहानी

हारूँगी नहीं — द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण ४.५०
कला का अनुवाद — पं० माखनलाल चतुर्वेदी २.२५
स्वयंवर — विनोदचन्द्र पाण्डेय २.२५
लाल हवेली — शिवानी ४.००
स्वर्ग में परिवार नियोजन — ना० वि० सप्रे ३.००

संस्मरण-यात्रा-रेखाचित्र

मनीषी की लोक यात्रा (पद्मविभूषण म० म० डॉ० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) — डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह २५.००
मुगल बादशाहों की कहानी उनकी जबानी — अयोध्याप्रसाद गोयलीय ६.००

शिक्षा

महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त — आर० आर० रस्क ७.५०
शिक्षा सिद्धान्त एवं दर्शन — सत्यदेव सिंह ७.५०

संस्कृत

रचनानुवाद कौमुदी — डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ४.५०
प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी — ,, १२.५०
संस्कृत व्याकरण — ,, १२.५०
अलंकार प्रस्थान विमर्शः — डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह १२.५०

इतिहास, संस्कृति और कला

गुप्त साम्राज्य — डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ३०.००
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा — पृथ्वीकुमार अग्रवाल ४.००
भारतीय संस्कृति — डॉ० लल्लनजी गोपाल, ब्रजनाथसिंह यादव ५.००
अतीत का अभिनवालोक — मायाप्रसाद त्रिपाठी ३.००
कथाशेष — ,, ४.००
हिन्दू समाज : संगठन और विघटन — डॉ० पु० ग० सहस्रबुद्धे ७.५०

संदर्भ

प्रकाशन वार्षिकी १९६९ — राघव तथा पाण्डेय १६.००

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी-१

संसदीय समिति प्रथा : हरिगोपाल परांजपे, कोहिमा । रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा : डा. खुशी राम शर्मा, लखनऊ । गांधी का सामाजिक धर्म : शम्भुरत्न त्रिपाठी, कानपुर । रसचिकित्सा-विमर्श : सोमदेव शर्मा सारस्वत, पीलीभीत । समाचार संपादन : प्रेमनाथ चतुर्वेदी, शाहदरा दिल्ली । महापुरुषों के साथ : धनराज विद्यालंकार, लखनऊ । रामायण और महाभारत में प्रकृति : डा. कांतिकिशोर भरतिया, लखनऊ । मध्यप्रदेश के मध्यकालीन साहित्यकार : डा. ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श,' भोपाल । काश्मीर कीर्ति कलश : रघुनाथ सिंह, दिल्ली । पहाड़ी चित्रकला : किशोरीलाल वैद्य, शिमला । विश्रुत नारियां : शांति मेहरोत्रा, उमाराव, इलाहाबाद । गुरु गोविन्द सिंह और उनकी हिन्दी कविता : डा. महीपसिंह, दिल्ली । नेहरू—न जानी हुई बातें : पी. डी. टंडन, इलाहाबाद । हिन्दी साहित्य एक ऐतिहासिक समीक्षा : पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, जबलपुर । विश्व-शांति की खोज : बृज नारायण मेहरोत्रा, वाराणसी । तेलुगुभाषी हिन्दी नाटककार (पं. पुरुषोत्तम कवि) : डा. भीमसेन 'निर्मल, हैदराबाद । **उर्दू पुरस्कार** : (९०० रु.) मौलाना अब्बुल कलाम आजाद 'फिक्र-व-फन' : डा. मलिक जादा मंजूर अहमद, लखनऊ । (८०० रु.) प्रेमचन्द कहानी का रहनुमां : डा. जाफर रजा, इलाहाबाद । (६०० रु.) फारसी अदब बअहदे औरंगजेब : डा. नूरुल अन्सारी, दिल्ली । उर्दू और बंगाल : डा. शांतिरंजन भट्टाचार्य, कलकत्ता । कुदरत के भेद : मोहम्मद इशाक सिद्दीकी, लखनऊ । (५०० रु.) लकीरें : नाजिश प्रतापगढ़ी प्रतापगढ़ । गालिब की तखलीकी तखय्युल : शहीद सफीपुरी, लखनऊ । इकबाल के इबतदाई अपुकार : डा. अब्दुल हक, दिल्ली । अन्दाज-ए-बयां और : बशीर अफसर नकवी, लखनऊ । गालिब का तनकीदी शहर : इखलाक हुसैन आरिफ, लखनऊ । **संस्कृत पुरस्कार : गंगानाथ झा पुरस्कार** :(१००० रु.) वैदिक स्वप्न विज्ञानम् : पं. भगवत दत्त वेदालंकार । कांगड़ी राष्ट्रतंत्रम : लक्ष्मीनारायण शुक्ल, गोरखपुर । गांधी गौरवम् : डा. रमेशचन्द्र शुक्ल, अलीगढ़ । गांधी-गरिम्-काव्यम् : रघुनाथप्रसाद चतुर्वेदी, मथुरा । लघुकाशिका : जयदत्त उप्रेती ।

कुलपति का साहित्य-प्रेम

बिहार विश्वविद्यालय के अहिन्दी-भाषी कुलपति डा० ताराभूषण मुखर्जी की अध्यक्षता में सम्पन्न विद्वत परिषद् की बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त १०० अंकों का उच्च-स्तरीय हिन्दी का एक पत्र हिन्दी-भाषी छात्रों के लिए तथा उतने ही अंकों का निम्नस्तरीय हिन्दी का एक पत्र हिन्दीतर छात्रों के लिए अनिवार्य कर दिया गया है । अब छात्र अपनी मातृभाषा भी १०० अंकों की पढ़ेंगे । डा० मुखर्जी ने अंग्रेजी के साथ ही अन्य पाश्चात्य भाषाओं, दक्षिण भारत की भाषाओं तथा मैथिली, भोजपुरी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के पाठ्यक्रम की भी व्यवस्था की है ।

इसके पूर्व कला, विज्ञान एवं वाणिज्य की सम्मिलित निकायों ने हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं कला निकाय के अधिष्ठाता डा० श्याम नन्दन किशोर की अध्यक्षता में इस आशय का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया था ।

उप-राज्यपाल डा० आदित्यनाथ झा को 'राधास्वामी सम्प्रदाय और साहित्य' समर्पित

गत ३० मार्च को नयी दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में हुए एक भव्य समारोह में दिल्ली के उपराज्यपाल डा० आदित्यनाथ झा को 'राधास्वामी सम्प्रदाय और साहित्य' नामक ग्रंथ उसकी लेखिका डा० सरल कुमारी द्वारा समर्पित किया गया । समारोह की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के मंत्री डा० प्रभाकर माचवे ने की । ग्रंथ का प्रकाशनोद्घाटन करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के रीडर डा० विजयेन्द्र स्नातक ने राधास्वामी सम्प्रदाय के विकास और उसकी साधना शैली पर संक्षेप में प्रकाश डाला । डा० झा ने भारतीय दर्शन और रहस्यवाद की समृद्ध परम्परा में 'राधास्वामी सम्प्रदाय और साहित्य' की अभिवृद्धि का स्वागत किया ।

इस समारोह में ओरिएन्टल पब्लिशर्स के श्री राजेन्द्र शर्मा ने डा० आदित्यनाथ झा को अंग्रेजी की मूल्यवान पुस्तक 'ट्री एंड सर्पेन्ट वर्शिप' (वृक्ष और सर्प उपासना) का प्रथम भारतीय संस्करण भी भेंट किया । उक्त पुस्तक लगभग १०३ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी । इस दुर्लभ ग्रंथ के पुनः प्रकाशन के लिए डा० झा ने प्रकाशकों की सराहना की ।

सुमित्रानंदन पंत
जीवन और साहित्य

शांति जोशी

सुश्री शांति जोशी द्वारा लिखित पंतजी की यह महत् जीवन-गाथा आधुनिक हिन्दी-काव्य की विकास-यात्रा का जीवंत अभिलेख है। कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझने के लिए परम अनिवार्य !

आर्ट पेपर पर कवि के अनेक दुर्लभ और अप्रकाशित चित्रों सहित सर्वथा संग्रहणीय ग्रन्थ

मूल्य २५.००

राजकमप्र

श्री सुमित्रानंदन

लोकायतन (संक्षिप्त)	८.००
लोकायतन	२५.००
*अभिषेकिता	३.००
चिदम्बरा	१५.००
रश्मिबन्ध	२.५०
अतिमा	४.००
स्वर्णधूलि	५.००
कला और बूढ़ा चांद	६.५०
युगवाणी	४.००

*तारांकित पुस्तकें अप्राप्य हैं।

राष्ट्र के सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

श्री सुमित्रानंदन पंत

की कालजयी काव्यकृति

...प्रकाशित

...अन्य काव्य-कृतियां

पल्लव	६.००
पल्लविनी	११.००
शिल्पी	४.००
पौ फटने के पहिले	८.००
किरण वीणा	८.००
*पुरुषोत्तम राम	३.५०
पुरुषोत्तम राम (पेपरबैक)	३.००
*संयोजिता	१०.००

कवि के प्राय: २० वर्षों की विकास श्रेणी का विस्तार

संग्रहणीय

पठनीय

मूल्य १५.००

शंखध्वनि

●

श्री सुमित्रानंदन पंत

●

युगकवि श्रीसुमित्रानन्दन पंत की नवीनतम कविताओं का यह संग्रह हिन्दी-काव्य-जगत को एक अनूठी भेंट है ! इसमें पंतजी के कवि-व्यक्तित्व के नये आयामों का उद्घाटन हुआ है !

डिमाई आकार में आकर्षक साज-सज्जा के साथ

कवि के जन्म-दिन पर
१ मई १९७१ को प्रकाश्य

अनुमानित मूल्य
५.००

कुंवरनारायण हिन्दुस्तानी एकेडेमी द्वारा पुरस्कृत

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, के अध्यक्ष डॉ० बालकृष्ण राव ने अकादमी के द्विदिवसीय वार्षिक सम्मेलन में हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री कुँवरनारायण को उनकी सर्वोत्कृष्ट निर्णीत पुस्तक के लिए एकेडेमी का २००१ रुपये का पुरस्कार प्रदान किया।

दुर्लभ पुस्तकों की प्रदर्शनी

लाला हरदयाल (हार्डिंग) म्युनिसिपल लाइब्रेरी में पिछले दिनों दुर्लभ पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी, उर्दू, अरबी और फारसी की लगभग ६०० महत्त्वपूर्ण प्राचीन पुस्तकें प्रदर्शित की गई। इस अवसर पर लाइब्रेरी प्रवंध समिति के सचिव श्री रवीन्द्रकुमार सेठ ने लाइब्रेरी के संबंध में प्रकाश डालते हुए कहा कि यह संस्था पिछले ८५ वर्षों से दिल्ली की जनता की सेवा कर रही है।

हिन्दी में वैज्ञानिक पत्रिका

इन्वेंशन प्रोमोशन वोर्ड के अँग्रेजी मासिक इन्वेंशन इन्टेलिजेंस' का हिन्दी संस्करण 'आविष्कार' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका में न सिर्फ मशीनों आदि से सम्बन्धित समस्याओं के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन रहेगा बल्कि विज्ञान और प्रविधि में विद्यमान प्रवृत्तियों पर लेख भी प्रकाशित किये जायेंगे।

भारत के लिए सस्ती विदेशी पुस्तकें

स्कूल-कालिजों के लिए सस्ती पाठ्य-पुस्तकें सुलभ कराने के उद्देश्य से दो ब्रिटिश प्रकाशक मिलकर भारत में एक नये प्रकाशन-संस्थान की स्थापना कर रहे हैं, जिसका नाम होगा—आर्नोल्ड-हाइनेमान ऐजूकेशनल बुक्स (इण्डिया) लि०। यह संस्थान न सिर्फ विदेशी पुनर्मुद्रण निकालेगा बल्कि भारतीय वैज्ञानिकों और विद्वानों की पुस्तकें भी प्रकाशित करेगा।

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह का निधन

पिछले महीने हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह का निधन हो गया। वे पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि रचनाकार थे। उन्होंने अपने साहित्य में विशुद्ध भारतीयता का निर्वाह किया। उनके दर्जनों उपन्यास और कहानियाँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।
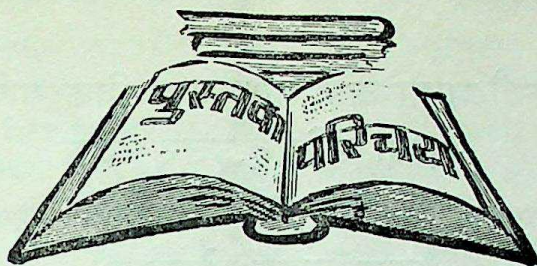
अलोचना

कबीर—ले० आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, ८ फैज बाजार, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ ३६८; मूल्य १६.०० ।

कबीर-विषयक आलोचना साहित्य में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की यह कृति मील का पत्थर मानी जाती है। पिछले लगभग १० वर्षों से यह अप्राप्य थी और कबीर के अध्येताओं को इसकी तलाश में पुस्तकालयों में मारे-मारे फिरना पड़ता था। इस दृष्टि से राजकमल द्वारा इसके नये संशोधित संस्करण का प्रकाशन स्वागत-योग्य है।

आचार्य द्विवेदी की प्रस्तुत कृति प्रकाश में आने से पूर्व कबीर पर जितनी भी आलोचनाएँ लिखी गईं वे प्रायः एकांगी थीं। स्वयं द्विवेदीजी के शब्दों में, "कबीर धर्मगुरु थे। इसलिए उनकी वाणियों का आध्यात्मिक रस ही आस्वाद्य होना चाहिए, परन्तु, विद्वानों ने नाना रूप में उन वाणियों का अध्ययन और उपयोग किया है। काव्य रूप में उसे आस्वादन करने की प्रथा ही चल पड़ी है, समाज-सुधारक के रूप में, सर्व-धर्म-समन्वयकारी के रूप में, हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य-विधायक के रूप में, विशेष सम्प्रदाय के प्रतिष्ठाता के रूप में और वेदान्त-व्याख्याता दार्शनिक के रूप में भी उनकी चर्चा कम नहीं हुई है। यों तो 'हरि अनन्त हरि-कथा अनन्ता, विविध भाँति गावहिं श्रुति-सन्ता' के अनुसार कबीर-कथित हरि-कथा का विविध रूपों में उपयोग होना स्वाभाविक ही है, पर कभी-कभी उत्साहपरायण विद्वान गलती से कबीर को इन्ही रूपों में किसी एक का प्रतिनिधि समझ कर ऐसी-ऐसी बातें करने लगते हैं जो असंगत कही जा सकती हैं।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पहले विद्वान हैं जिन्होंने इस प्रकार के एकांगी दृष्टिकोण से बचकर कबीर के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र रूप में सन्तुलित और सम्यक् मूल्यांकन किया है। उनका मत है कि कबीरदास में इन सब रूपों का समन्वय था किन्तु उनका वास्तविक रूप भक्त ही था और अन्य सारे रूपों को उन्होंने भक्ति के साधन के रूप में स्वीकार किया था।

द्विवेदीजी ने अपनी इस पुस्तक में कबीर, उनके साहित्य और उनके दार्शनिक विचारों की विस्तृत व्याख्या की है। अवधूत कौन है, नाथपंथियों के सिद्धान्त और कबीरदास का मत, हठयोग की साधना, निरंजन कौन है, योगपरक रूपक और उलटबाँसियाँ, ब्रह्म और माया, निर्गुण राम, बाह्याचार, कबीर की भक्ति का स्वरूप, भगवत्प्रेम का आदर्श, आदि सारे विषयों का उन्होंने सांगोपांग विवेचन किया है जिससे कबीर के अध्येता को कबीर के बहुमुखी साधक और कवि-व्यक्तित्व का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है। दो पृथक् अध्यायों में कबीर का व्यक्तित्व-विश्लेषण और भारतीय धर्म-साधना में उनके स्थान का निर्धारण किया गया है। पुस्तक के अन्त में उपयोगी समझकर कबीर वाणी नाम से कुछ चुने हुए पद्य संग्रह किये गये हैं। उनके शुरू के सौ पद आचार्य क्षितिमोहन सेन के संग्रह के हैं। इन्हीं को कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अंग्रेजी में अनूदित किया था।

आचार्य द्विवेदी की प्रस्तुत कृति आज भी कबीर-विषयक आलोचना-साहित्य में अद्वितीय मानी जाती है और कबीरदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को समग्र रूप में हृदयंगम करने के लिये यह अकेली पुस्तक पर्याप्त है ऐसा विद्वानों का मत है।

हिन्दी भाषा और वांग्मय के विकास में
हिन्दी समिति उत्तर प्रदेश
का
असाधारण योगदान

अनूदित प्रकाशन

मनुष्य जाति की कहानी	डा० रामफेर त्रिपाठी	१२-००
(दि स्टोरी आफ मेनकाइण्ड)	(हैण्ड्रिक विलेम वान लून)	
शुद्ध गणित की पाठचर्या	डा० ब्रज मोहन	१२-५०
(ए कोर्स आफ प्योर मैथेमेटिक्स)	(जी० एच० हार्डी)	
समाज कल्याण परिचय	डा० सुरेश चन्द्र वर्मा	१७-००
(इन्ट्रौडक्शन टू सोशल वैलफेयर)	(फ्रिडलेण्डर)	
ब्रिटिश उपनिवेश नीति	डा० एस० के० सिन्हा	१५-००
(ब्रिटिश कालोनियल पालिसी)	(ए० बी० कीथ)	
पूंजीवाद समाजवाद और जनतंत्र	डा० राम विनायक सिंह	१६-००
(कैपिटलिज्म, सोशलिज्म एन्ड डिमोक्रेसी)	(जोसेफ सुम्पिटर)	
रंगमंच	श्री श्रीकृष्ण दास	११-५०
(दि थियेटर)	(शैल्डन चैनी)	
विश्व मानवता की ओर	श्री इलाचन्द्र जोशी	७-००
(टुवर्ड्स यूनिवर्सल मैन)	(रवीन्द्र नाथ टैगोर)	
भारतीय ज्योतिष	श्री शिवनाथ झारखण्डी	८-००
(भारतीय ज्योतिष)	(श्री शंकर बाल कृष्ण दीक्षित)	
धर्म शास्त्र का इतिहास तीन खण्ड	श्री अर्जुन चौबे कश्यप	५४-००
(हिस्ट्री आफ़ धर्म शास्त्र)	(श्री पी० वी० काणे)	
भारतीय आर्य भाषाएं	डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय	१०-५०
(ल आंदा एरिया)	(ज्यूल ब्लाख)	

हिन्दी समिति के ग्रन्थ अपनी विषय वस्तु, साज-सज्जा और उचित मूल्य के कारण उत्तरोत्तर लोकप्रिय हो रहे हैं। यह समिति ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी एवं कला से सम्बन्धित विविध विषयों पर अब तक लगभग दो सौ उच्चस्तरीय ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है।

सूची पत्र देखकर कृपया क्रयादेश निम्नलिखित पते पर भेजें।

सचिव,
हिन्दी समिति, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश शासन
लखनऊ

आलोचक और आलोचना —ले० डॉ० बच्चनसिंह ; प्र: विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; आकार डिमाई; पृष्ठ २०६; मूल्य ८.०० ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्लेटो से लेकर क्रोचे तक और उसके बाद प्रगतिवादी, मनोविश्लेषणवादी तथा नई आलोचना के सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए पाश्चात्य समीक्षा का एक संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट रूप सामने रखा गया है। इसी प्रकार भारतीय संदर्भ में अलंकार सम्प्रदाय, रस सम्प्रदाय, रीति सम्प्रदाय और औचित्य सम्प्रदाय का विवेचन करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ० नगेन्द्र तथा नई आलोचना की समीक्षा-पद्धतियों पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक का विचार है कि पौर्वात्य और पाश्चात्य समीक्षा के क्षेत्र में जितनी पद्धतियाँ आज तक विकसित हुई हैं उनमें से किसी एक को आलोचना के प्रतिमान का दर्जा नहीं दिया जा सकता। अतः उसने सारी समीक्षा-पद्धतियों की एक खास नजरिए से छानबीन की है और वह नजरिया है "आधुनिक मानवीय स्थिति के संदर्भ में भाषिक संरचना का विश्लेषण और मूल्यांकन।" इस कार्य में पुरानी आलोचना-पद्धतियाँ किस सीमा तक हमारी सहायता करती हैं यह देखना ही प्रस्तुत पुस्तक के लेखक का उद्देश्य है। इस क्रम में उसने पुरानी आलोचनाओं और साहित्यिक रचनाओं के बहुत-कुछ को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार किया है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि नई आलोचना-प्रणाली में जो-कुछ नया है वह सब उसे ग्राह्य है। असल में इसके प्रति भी वह उतना ही संशयशील (स्केप्टिक) है जितना पुरानी पद्धतियों के प्रति।

पाश्चात्य और भारतीय समीक्षा-पद्धतियों को समझने और आलोचनात्मक संगति की तलाश में यह पुस्तक निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगी।

उपन्यास

पहचानी हुई शक्लें—ले० श्रीराम शर्मा 'राम'; प्र० सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाड़ा, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार क्राउन, पृ० २४२, मूल्य ७.०० ।

"पहचानी हुई शक्लें" मधुकर नाम के एक परम आदर्शवादी साहित्यकार की कहानी है। मधुकर जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए कहीं भी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं करता। उसकी प्रेयसी शारदा फिल्मी जीवन की चकाचौंध से आकर्षित होकर बम्बई चली जाती है और विख्यात अभिनेत्री बन जाती है लेकिन मधुकर के साथ उसका सम्बन्ध हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। आखिर उसे अपनी भूल का एहसास होता है और वह बम्बई छोड़कर मधुकर के पास लौट आती है। धर्मशाला का मैनेजर शास्त्री, बूढ़ा हलधर, सन्तू चौधरी ऐसे चरित्र हैं जिनमें मधुकर को आदर्श का एक सूत्र समान रूप से पिरोया हुआ मिलता है। समाज की बुराइयों को वह प्रेम, सेवा और त्याग से दूर करने का प्रयत्न करता है और कोरी साहित्य-रचना न करके कर्मसंकुल जीवन में प्रवृत्त होता है और गाँव के पथभ्रष्ट लोगों को नव-जीवन का सन्देश देता है।

पुस्तक का आवरण अत्यन्त सुरुचिपूर्ण और कलात्मक है।

परत-दर-परत—ले० अन्नपूर्णा; प्र० अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १८६; मूल्य ७.०० ।

व्यक्ति के मन की कुछ भीतरी परतें होती हैं जो उसके बाह्य आचरण को प्रभावित करती हैं। यह प्रभाव कई बार तो व्यक्ति सचेत मन से अनुभव करता है और कई बार वह स्वयं भी उससे बेखबर रहता है। वह अपने मन की भीतरी परतों को नहीं पहचान पाता। ऐसी स्थिति में वह कुछ अनभीष्ट आचरण कर बैठता है और तब उसकी भीतरी परतें और अधिक सक्रिय हो उठती हैं जिससे उसके पूरे आचरण में एक द्वन्द्व और तनाव पैदा हो जाता है। उपन्यास की नायिका कुमुद और नायक राजन दोनों ही इस तनाव के शिकार हैं। मूल समस्या वैवाहिक जीवन के ऐडजस्टमेंट्स की है। राजन जिस समय कुमुद के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है तो कुमुद उस प्रस्ताव का विरोध करती हुई कहती है: "अब कोई लक्ष्य तो है जिसके बारे में सोचा जा सकता है, कोई बिन्दु तो है जहाँ पहुँचने की बात की जा सकती है। लेकिन शादी के बाद क्या होगा···बस एक विशिष्ट ठहराव,

एक खास रुटीन। हर राज ऐडजस्टमेंट्स के नाम पर एक-दूसरे पर किये जाने वाले कुछ एहसान, या अपने-अपने निजत्व को बचाने में एक-दूसरे पर उछाले जाते कुछ आरोप, कुछ आघात, कुछ प्रहार।"

पारिवारिक सम्बन्धों की यह समस्या सिर्फ कुमुद और राजन के सामने ही नहीं बल्कि उन दोनों के माँ-बाप भी उसके शिकार रहे हैं और कुमुद जब कुछ दिनों के लिए अपने भैया के पास रहने जाती है तो भाभी और भैया के जीवन में भी वैसा ही ठहराव और रुटीन पाती है। लेकिन समाधान शायद कहीं ऐडजस्टमेंट्स में ही है यह ध्वनि उपन्यास के अन्त तक स्पष्ट हो जाती है।

उपन्यास में मानसिक तनावों और वाह्य आचरण के साथ उनकी संगतियों का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। लेकिन बीच-बीच में अंग्रेजी शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग खटकता है।

कोयला और आकृतियाँ—ले० लक्ष्मीकान्त वर्मा; प्र० साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद; आकार क्राउन; पृष्ठ ३४१; मूल्य १२.५०।

'कोयला और आकृतियाँ' लक्ष्मीकान्त वर्मा का नवीनतम उपन्यास है। लेखक ने यौन-सम्बन्धों में उच्छृंखलता और अनुत्तरदायित्वपूर्ण आचरण की समस्या को इस उपन्यास का विषय बनाया है लेकिन एक घटिया किस्म के प्रयोग के चक्कर में फँसकर वह कथा के प्रवाह को सहज नहीं रहने देता। प्रकाशकीय वक्तव्य में कहा गया है : "उपन्यास के पाठक जल्दबाजी में उपन्यास का प्रारम्भ और अन्त पढ़कर फिर बीच-बीच से कुछ अंश पढ़ने के आदी हो गए हैं, अतः लेखक ने पाठकों को 'शार्टकट' रास्ता अपनाने की यहाँ सुविधा नहीं दी। कथा का आरम्भ और अन्त बीच में खोया हुआ है, और पाठक पूरी पुस्तक ध्यान से पढ़ने से अपने को बचा नहीं सकेगा।" यही है वह प्रयोग पाठकों को छकाने का, जिसने पूरी कहानी को एक भूल-भुलैया बना दिया है और सिर-पैर कुछ पाठकों की समझ में नहीं आता। पात्रों की भी इतनी ज्यादा और असम्बद्ध किस्म की भरमार है कि लेखक का प्रतिपाद्य उनमें खो जाता है और बहुत प्रभावशाली ढंग से उभरकर सामने नहीं आ पाता। मुद्रण की अशुद्धियों से भी पुस्तक भरी हुई है, जिससे एक सजग पाठक को बड़ी झुंझलाहट होती है। कुल मिलाकर पुस्तक निराश करने वाली है और लक्ष्मीकान्त जी की प्रतिष्ठा को यह किसी भी रूप में आगे नहीं बढ़ाती।

जंगली कबूतर—ले० इस्मत चुग़ताई; प्र० हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२; आकार पॉकेट बुक; पृष्ठ १४३; मूल्य २.००।

उर्दू की सुप्रसिद्ध लेखिका इस्मत चुग़ताई बहुत कम लिखती हैं, पर जब लिखती हैं तो पाठक उनकी लेखनी पर मुग्ध हो जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में दो लघु उपन्यास संग्रहीत हैं— 'जंगली कबूतर' और 'बाँदी'। पहले उपन्यास में एक पुरुष और दो स्त्रियों के प्रेम की मार्मिक कहानी कही गई है। एक पुरुष जब अपनी पत्नी के जीवित रहते दूसरी स्त्रियों के साथ यौन-सम्बन्ध रखता है तो उसकी पत्नी पर क्या बीतती है, वह कैसा अनुभव करती है इसका प्रभावशाली चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है। दूसरे उपन्यास 'बाँदी' में नवाबों की रंगरेलियों और बाँदियों के निरीह जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है। इस विषय पर यद्यपि और भी कई उपन्यस लिखे गये हैं लेकिन 'बाँदी' में इस्मत चुग़ताई की कलम का वैशिष्ट्य स्पष्ट है। भाषा में उर्दू के कुछ कठिन शब्द बीच-बीच में आये हैं लेकिन पाद-टिप्पणियों में उनके अर्थ दे दिये गये हैं जिससे पाठकों को असुविधा नहीं होती।

सात हिन्दुस्तानी—ले० ख्वाजा अहमद अब्बास; प्र० हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२; आकार पॉकेट बुक; पृष्ठ १४४; मूल्य २.००।

ख्वाजा अहमद अब्बास उर्दू के होते हुए भी हिन्दी-पाठकों के लिए सुपरिचित हैं। कथाकार, पत्रकार और फिल्म-निर्देशक के रूप में उन्होंने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। उनके विषय अधिकतर समाज में वर्तमान आर्थिक विषमता, साम्प्रदायिक वैमनस्य, सामाजिक विसंगतियाँ आदि रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने राष्ट्रीय एकता का प्रतिपादन करने वाला कथानक चुना है। मारिया गोआ की रहने वाली एक ईसाई लड़की है। वह पुर्तगालियों के बर्बर अत्याचारों की शिकार बनती है क्योंकि उसके मन में अपने देश और देशवासियों के प्रति अगाध प्यार है।

लेकिन वह उन अत्याचारों के सामने झुकती नहीं और बहादुरी के साथ अपना काम करती है। वह अपने आचरण से राष्ट्रीय एकता का अद्भुत उदाहरण पेश करती है। इस उपन्यास के कथानक को आधार बनाकर फिल्म भी बनाई जा चुकी है जिसे भारत सरकार ने पुरस्कृत किया था।

जो नितान्त मेरी है—ले० बालस्वरूप राही; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, अन्सारी रोड, दिल्ली-६; आकार डिमाई, पृष्ठ ८७; मूल्य ६-५०।

बालस्वरूप राही हिन्दी के उन कवियों में हैं जो पिछले दस सालों से कविता-जगत के नित नये आन्दोलनों से अपने को बचाते हुए निरन्तर काव्य-सृजन करते रहे हैं। उनके प्रस्तुत संग्रह में अनुभूति और अभिव्यक्तियों के विभिन्न स्तर देखने को मिलते हैं। इन कविताओं में एक ओर रूप, यौवन और रोमैन्टिकता है तो दूसरी ओर राही जी ने जीवन के राजनीतिक पहलू पर भी नजर रखी है—

हर जुलूस कुछ नारों का अनुगामी है
भीड़ों का कोई व्यक्तित्व नहीं होता
सबसे अधिक सुनी जाती हैं अफ़वाहें
बहुमत में सच का अस्तित्व नहीं होता

यह पंक्तियाँ अकेले राही की न रहकर हर उस भारतीय नागरिक की अनुभूति बन गई हैं जो भारतीय राजनीति के चमत्कार प्रतिदिन देखता चला आ रहा है।

राही जी में अनुभूति को सहज रूप से शब्दों में व्यक्त कर देने की क्षमता है। वे शब्दों का चमत्कार नहीं दिखाने चाहते और न ही नये शब्दों को गढ़ने का चाव! निरर्थकता-बोध अमूर्त आयामों से हट कर जीवन के दर्द को यथार्थवादी दृष्टि से देखते हुए सहज मन से कुछ कहना चाहते हैं। यहाँ राहीजी के व्यक्तित्व में निखार आया है!

परन्तु आगे राहीजी का ऊबा और थका रोमान्स इन बातों को देखते हुए अखरता है। इस लिजलिजे रोमान्स में इस तरह की पंक्तियाँ जिनका निराशावाद से सीधा सम्बन्ध होता है, मन को छू नहीं पातीं—

दुःखों का कहना ही क्या
सुख भी हमें उदास लगे।

और सिर्फ कहने भर को रह जाती हैं! राही स्वयं कल्पनाओं को झूठ और स्वप्नों को बातूनी मान कर भी कल्पना और स्वप्नों में जीने की बात करते हैं!

निबंध

भारतीयकरण—ले० बलराज मधोक; प्र० राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १६४; मूल्य ५-००।

'भारतीयकरण' सुपरिचित राजनीतिज्ञ बलराज मधोक की 'इंडियनाइजेशन' शीर्षक से अंग्रेजी में लिखी गई पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। पिछले कुछ समय से जनसंघ यह नारा लगा रहा है कि राष्ट्रविरोधी तत्त्वों का भारतीयकरण किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में श्री मधोक ने उसी नारे की विस्तार से व्याख्या की है—भारतीयकरण से क्या आशय है, वह क्यों आवश्यक है और उसे कार्यरूप में परिणत किस प्रकार किया जा सकता है। परिशिष्टों में संकलित हैं—जनसंघ के भारतीयकरण-सम्बन्धी प्रस्ताव; भारत सरकार के गृह-मंत्रालय द्वारा किया गया साम्प्रदायिक दंगों का एक सर्वेक्षण; इण्डियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली, के स्थानिक सम्पादक श्री नन्दन कगल द्वारा किया गया अहमदाबाद में दंगों के कारणों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन; श्री हमीद दलवाई द्वारा 'मुस्लिम सम्प्रदायवाद' शीर्षक से मुस्लिम दिमाग में झाँकने का एक प्रयास; भारतीयकरण पर हुई बहस के दौरान राज्यसभा में श्री मुहम्मद करीम छागला द्वारा दिया गया भाषण और भारतीयकरण पर श्री बदरुद्दीन तैयबजी के विचार। इस सामग्री से पाठकों को यह सुविधा होगी कि वे श्री मधोक द्वारा प्रस्तुत किये गये विचारों की जाँच-पड़ताल कर सकें।

श्री मधोक के भारतीयकरण सम्बन्धी विचारों के औचित्य पर सुधी पाठक पुस्तक पढ़कर स्वयं विचार करेंगे। यहाँ सिर्फ एक बात की ओर हम संकेत करना चाहते हैं कि हिन्दी का सबसे बड़ा समर्थक होने का दावा करने वाले दल के भूतपूर्व अध्यक्ष ने अपनी पुस्तक मूलतः अँग्रेजी में लिखी यह उसके लिए लज्जा की बात है, विशेष रूप से इसलिए भी पुस्तक लिखने का उद्देश्य जनसाधारण

तक अपना दृष्टिकोण पहुँचाना है और यह काम जितने बड़े पैमाने पर हिन्दी के माध्यम से किया जा सकता था उतने बड़े पैमाने पर अंग्रेजी के माध्यम से नहीं ।

व्यंग्य

ठिठुरता हुआ गणतन्त्र—ले० हरिशंकर परसाई; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, अंसारी रोड, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १३४; मूल्य ४.५० ।

परसाई जी व्यंग्यकार के रूप में अपना जवाब नहीं रखते, उन्होंने हिन्दी व्यंग्य लेखन को एक नयी दिशा दी है। 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' हरिशंकर परसाई की नयी पुस्तक है जिसमें २४ हास्य-व्यंग्य लेख हैं ।

परसाई जी ने जीवन के हर पहलू पर छोटी से छोटी वस्तु पर बड़े सूक्ष्म और विलक्षण व्यंग्य किये हैं । इस पुस्तक में संग्रहीत राजनीतिक व्यंग्य लेखों 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' और 'हम विहार से चुनाव लड़ रहे है' में नेताओं की एक-दूसरे पर छींटाकसी और बातें बना कर जनता को धोखा देने की प्रवृत्ति पर उन्होंने बड़ा तीखी व्यंग्य किया है । "कर कमल हो गये" में हिन्दी के मुहाविरों के साथ जो खेल परसाई जी ने स्वयं ही के व्यक्तित्व को लेकर खेला वह भी साधारण हास्य से परे की बात है । बीच-बीच में सामाजिक परम्पराओं, रीति रिवाजों आदि पर व्यंग्य करते हुए उनकी लेखनी आगे बढ़ती जाती है । 'इंस्पैक्टर मातादीन चाँद पर' लेख में पुलिस की कार्यवाहियों पर तीखी चोट परसाई जी ने की है और उसका प्रभाव अब मशीनी युग में क्या है वह भी परसाई जी की दृष्टि से बच नहीं पाया है । 'प्रेमपुजारी—अगर मैं फिल्म बनाता' में परसाईजी की कल्पना वास्तविक फिल्म उद्योग की तरह से चली है जिसमें कोई भी घटना सहज रूप से घट सकती है । इन दोनों लेखों में परसाई जी अपने स्तर से नीचे आते दिखाई देते हैं । और इस स्तर की कमी को उन्होंने 'ग्रांट अभी नहीं आई' और 'तटस्थ' लिख कर पूरा कर दिया । "छोटी सी बात" में छात्र आंदोलन को लेकर बीच में राजनीति का पुट देते हुए एक पेशाबघर न बन पाने की आलोचना व्यंग्य रूप में करते हैं । उसी प्रकार 'बारात की वापसी' में क्रान्ति के लिए ताकत को सुरक्षित रखने का सुझाव विद्यार्थियों को भी पसन्द आयेगा ।

पूर्ण पुस्तक की सज्जा सुन्दर है । छपाई भी उत्तम है ।

कविता

चिन्ता—ले० अज्ञेय; प्र० राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ १४७; मूल्य १०.०० ।

'चिन्ता' अज्ञेय की एक प्रारम्भिक कृति है, जिसमें १९३२ से १९३६ के बीच लिखी गई कविताएँ 'विश्वप्रिया' और 'एकायन' शीर्षक दो खण्डों के अन्तर्गत संग्रहीत हैं । इन कविताओं का विषय पुरुष और स्त्री का—पति और पत्नी का नहीं, चिरन्तन पुरुष और चिरन्तन स्त्री का—संघर्ष है । "पुस्तक के दो खण्डों में क्रमशः पुरुष और स्त्री के दृष्टिकोण से मानवीय प्रेम के उद्भव, उत्थान, विकास, अन्तर्द्वन्द्व, ह्रास, अन्तर्मंथन, पुनरुत्थान, और चरम सन्तुलन की कहानी कहने का प्रयत्न किया गया है । कहानी वर्ण्य विषय की भाँति ही अनगढ़ है और जैसे प्रेम-जीवन के प्रसंग गद्य-पद्यमय होते हैं वैसे ही यह कहानी भी गद्य-पद्यमय है ।"

कई वर्षों से अप्राप्य इस पुस्तक का यह नवीन संस्करण अज्ञेय के अध्येता के लिए अध्ययन-सामग्री के रूप में तो महत्वपूर्ण है ही, इस कृति की विशिष्टता को देखते हुए भी सार्थक है ।

बाल साहित्य

हे बच्चों ! तुम्हें प्रणाम—ले० व्यथित हृदय; प्र० राष्ट्र-भाषा प्रकाशन, ५१८।६बी, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२; आकार डिमाई; मूल्य (पेपर बैक) ३.०० ।

बच्चों के लिए उपयोगी इस पुस्तक में श्री व्यथित हृदय ने १६ महापुरुषों के बचपन की प्रेरक घटनाओं का वर्णन किया है । इनमें चार महापुरुष—अष्टावक्र, मार्कण्डेय, एकलव्य और सुकर्मा—पौराणिक हैं और बाकी ऐतिहासिक तथा वर्तमान काल के नेता, वैज्ञानिक एवं विचारक आदि हैं । हर अध्याय के प्रारम्भ में आठ-आठ पंक्तियों की एक-एक कविता दी गई है जिसमें उस अध्याय में वर्णित चरित्र का मूल सूत्र अंकित हुआ है । भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है । पुस्तक निस्सन्देह बच्चों के लिए प्रेरिक सिद्ध होगी ।

साहसी बालक—ले० डा० नवल बिहारी मिश्र ; प्र० ज्ञान भारती पाकेट बुक्स, लखनऊ; पृ० १२२; मूल्य १.००।

यूराप के साहित्य में ऐसे अनेक साहसी नाविकों की कथाएं हैं जिन्होंने अपने जहाज़ के डूब जाने पर किसी निर्जन टापू में वर्षों जीवन यापन किया। हमारे देश से भी प्राचीन काल में जल मार्ग द्वारा व्यापारी आया-जाया करते थे किन्तु उन पर काम करने वाले नाविकों को लेकर साहित्य-रचना यहाँ नहीं हुई। प्रस्तुत उपन्यास के लेखक ने बच्चों के लिए रोचक व शिक्षाप्रद एक ऐसे उपन्यास की कल्पना की है जिसमें भारत के विभिन्न प्रदेशों के रहने वाले चार लड़कों सुन्दरम्, चन्द्रशेखर, रामप्रसाद व मणीभाई के एक निर्जन टापू पर बस जाने का रोचक वर्णन है। ये चारों दोस्त एक जहाज शंकर पर नाविक का काम सीख रहे थे। उन्हीं दिनों इनका जहाज तूफान में फंस कर चट्टानों से टकरा कर डूब जाता है और वे बहते हुए निर्जन टापू पर पहुँच जाते हैं।

आपसी एकता, सहयोग एवं उद्यम से कठिन से कठिन परिस्थितियों पर भी काबू पाया जा सकता है यही इस कथा का सार है। किन्तु कथा अधूरी प्रतीत होती है और आशा है इसके आगे भी चलेगी।

हाजीबाबा भाग २—ले० जेम्स मारियर; रूपान्तरकार अशोक मिश्र, प्र० ज्ञान भारती बाल पाकेट बुक्स, लखनऊ; पृ० १२७, मूल्य १.००।

अरब प्रदेशों की जीवन गाथाएं प्राचीन काल से साहित्य में प्रसिद्धि पाती रही हैं। 'अरेबियन नाइट्स,' 'किस्सा हातिमताई', 'चार दरवेश,' आदि की तरह 'हाजी बाबा, भी साहसिक वर्णनों से भरपूर उपन्यास है जिसमें हाजा बाबा नामक हज्जाम अपने साथी दरवेशों की और अपनी आपबीती सुनाता है। चूँकि इस भाग में कहानी का अन्त नहीं होता अतः बच्चे इसके अगले भाग की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे।

हमारे छात्रोपयोगी आलोचनात्मक प्रकाशन

ग्रंथि : एक अध्ययन : नागेश्वर लाल १.५०
पथिक : एक अध्ययन : शशिभूषण बख्शी १.५०
प्रतिज्ञा : एक अध्ययन : रामचन्द्र वर्मा १.५०
संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : शांति जैन ३.००
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास :
बच्चन पाठक 'सलिल' ३.००
हिन्दी भाषा का इतिहास : लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा ३.००
गबन : एक अध्ययन : कपिल देव सिंह १.५०
विजेता : एक अध्ययन : " " २.००
रश्मिरथी : एक अध्ययन : रामचन्द्र शर्मा २.००
अम्बपाली : एक अध्ययन : उर्मिला सिंह २.००
मानसरोवर (भाग-६) : एक अध्ययन :
गंगाधर पान्डेय ३.५०
कहानी विविधा : एक अध्ययन : " " ३.००
दस तस्वीरें : एक अध्ययन : शशिभूषण बख्शी २.५०
शाहजहां के आँसू : एक अध्ययन ब्रजकिशोर पाठक ३.००
भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना :
एक अध्ययन : शेष आनन्द 'मधुकर' २.५०
अयोध्याकान्ड : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.००
त्रिवेणी : एक अध्ययन : उमेशचन्द मिश्र २.००
गल्प समुच्चय : एक अध्ययन : शंभु बादल २.५०
कुरुक्षेत्र : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.५०
अशोक के फूल : एक अध्ययन : शीलधर सिंह २.००
सिन्दूर की होली : एक अध्ययन : " २.००
रश्मिबन्ध : एक अध्ययन : रामसुभग सिंह २ ५०
साहित्य प्रवेश : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह २.००
साहित्य सौरभ : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह २.००
सरदार पूर्ण सिंह के निबन्ध :
एक अध्ययन : सदानन्द सिंह १.००
संक्षिप्त हिन्दी नवरत्न : एक अध्ययन : " १.००

हिन्दी निबन्धावली : एक अध्ययन :
रामनारायण सिंह ३.००
ऋतम्बरा : एक अध्ययन : नागेश्वरदास 'अनल' २.००
कादम्बिनी : एक अध्ययन : " " ३.००
२३ हिन्दी कहानियां : एक अध्ययन :
गंगाधर पान्डेय १.५०
चिन्तामणि भाग-१: एक अध्ययन : जगमोहन मिश्र ३.००
नारी : एक अध्ययन : गंगाप्रसाद गुप्त २.५०
आषाढ़ का एक दिन : एक अध्ययन :
बृजकिशोर पाठक २.५०
एकांकी संकलन : एक अध्ययन : एस. एल. गौतम ४.००
काव्यांग परिचय (रस, छन्द और अंधकार)
राजेन्द्रराय 'राजेश' : २.००
काव्य संगम : एक अध्ययन : गङ्गाधर पान्डेय ३.००
विराटा की पद्मिनी : एक अध्ययन : प्रवीण नायक ३.००
त्यागपत्र : पक अध्ययन : स्वर्ण किरण ३.००
रूपान्तर : एक अध्ययन : महेन्द्र किशोर २.५०
पंचवटी : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' १.५०
विष्णुप्रिया : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह ३.००
चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन : रामचन्द्र शर्मा २.००
स्कन्दगुप्त : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह २.५०
ध्रुवस्वामिनी : एक अध्ययन : शशि भूषण बख्शी १.५०
पुर्नमिलन : एक अध्ययन : रामकृष्ण मिश्र ३.००
चारुचन्द्रलेख : एक अध्ययन : ब्रजकिशोर पाठक २.००
मैं छोटानागपुर में हूँ : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय १.००
यशोधरा : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' ३.५०
मध्यकालीन काव्य :
एक अध्ययन : शिवनन्दन प्रसाद सिंह २.५०
रामचर्चा : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' १.५०

हमारे यहाँ हिन्दी की सभी पाठ्य-पुस्तकें तथा गाइडें मिलती हैं। हिन्दी अध्यापकों और प्रचारकों को उचित कमीशन दिया जाता है। वी० पी भेजने का सुप्रबन्ध है।

कमल प्रकाशन, हिन्दपिढ़ी, राँची-१ [बिहार]

आलोचना

डा० रवीन्द्र भ्रमर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ — १२-००
डा० चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद — १२-००
डा० कान्तिकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य का विकास, नवयुग प्रकाशन, भोपाल — २०-००

उपन्यास

बलवन्तसिंह, राका की मंजिल, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ — १५-००
मन्नू भंडारी, आपका बंटी, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ — १५-००
अन्नपूर्णा, परत-दर-परत, " " " — ७-००
भैरव प्रसाद गुप्त, बाँदी, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट दिल्ली-६ — १०-००
रांगेय राघव, लोई का ताना, " " " — ५-००
सुधाकर, हीरे की डकैती, प्रिंस पाकेट बुक्स, रूप नगर, दिल्ली-६ — २-००

कहानी

कृशनचन्दर, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६ — ५-००

कविता

महादेवी वर्मा, दीपशिखा, सेतु प्रकाशन, झाँसी — ५१-००
रामकुमार वर्मा, कविश्री रामकुमार वर्मा, सेतु प्रकाशन, झाँसी — ३-००
महेन्द्र भटनागर, कविश्री महेन्द्र भटनागर, " " — ३-००
जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, कविश्री मिलिन्द, " " — ३-००
नजीर अकबराबादी, कविश्री नजीर, " " — ३-००

नाटक

रामकृष्ण कौशल, तीन आयाम, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ — ३-००

व्यंग्य : ललित निबन्ध

कृशनचन्दर, काँच के टुकड़े, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ — ६-००
श्रीमन्नारायण, बिन माँगे मोती मिले, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६ — ४-००

जीवनी-संस्मरण

बलवन्तसिंह गुजराती, सिख धर्म के दस गुरु, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६ — ३-५०
देवराज उपाध्याय, मेरी यात्राएँ, सौभाग्य प्रकाशन, उदयपुर — ५-००
देवराज उपाध्याय, यौवन के द्वार पर " " — ५-००
५-००

विविध

शशिशेखर तिवारी, भोजपुरी लोकोक्तियाँ, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना-४ — १०-००
जगदीश त्रिगुणायत, बाँसुरी बज रही, " " " — १७-००
जितेन्द्र कुमार मित्तल, थाईलैंड, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६ — ३-००
आनन्द जैन, इसराइल, " " " — ३-००
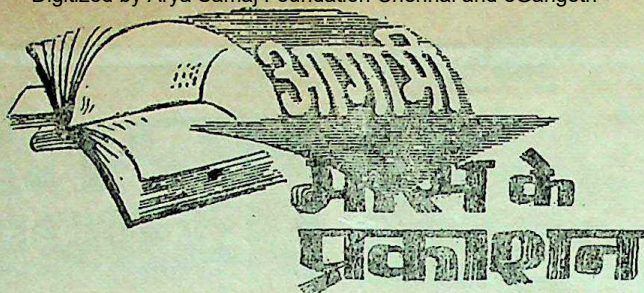
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना-४

—बौद्ध धर्म दर्शन (दर्शन), आचार्य नरेन्द्र देव

—विधिविज्ञान का स्वरूप (विधि), सतीशचन्द्र मिश्र

—अब्दकोश १९७१ (समान्यज्ञान), संकलित

राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

—कांचघर (उपन्यास), रामकुमार भ्रमर

—षड्यन्त्र (उपन्यास), मन्मथनाथ गुप्त

—समुद्री दुनिया की सैर (किशोरोपयोगी उपन्यास), श्रीकान्त व्यास

—शेर बड़ा या मोर (किशोरोपयोगी कहानियाँ), भगवतशरण उपाध्याय

—बुद्धि का चमत्कार (किशोरोपयोगी कहानियाँ), भगवतशरण उपाध्याय

—बिना बिचारे जो करे (किशोरोपयोगी कहानियाँ), भगवतशरण उपाध्याय

—कश्मीर (भारतदर्शन), जीवनलाल प्रेम

—नागालैंड (,, ,,), जयन्त वाचस्पति

सौभाग्य प्रकाशन, कालेज रोड, उदयपुर

—देवराज उपाध्याय ग्रन्थावली द्वितीय खण्ड, डॉ० देवराज उपाध्याय

सबहिं नचावत राम गोसाईं

साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता उपन्यासकार
श्री भगवतीचरण वर्मा की इस
अद्वितीय व्यंग्यप्रधान कृति का
पहला संस्करण पाठकों ने हाथों-हाथ लिया है
और अब प्रस्तुत है दूसरा संस्करण
उपन्यास की लोकप्रियता का अकाट प्रमाण
आदि से अंत तक रोचक ● आज की भ्रष्ट राजनीति
की जीती-जागती कथा ● हर प्रबुद्ध पाठक के
मर्म को छूने वाली घटनाएं

वर्माजी के अन्य प्रसिद्ध उपन्यास

सीधी सच्ची बातें	...	२०.००
भूले बिसरे चित्र	...	१५.००
वह फिर नहीं आई	...	३.००
सामर्थ्य और सीमा	...	८.००
रेखा	...	१२.००

Edited and published by Smt. Sheila Sandhu, Rajkamal Prakashan Pvt. Ltd., Delhi-6 and printed at Navin Press, Unit 2, 70 Okhla Industrial Estate, New Delhi.

प्रकाशन समाचार

मई १९७१

हजारीप्रसाद द्विवेदी

कबीर

कबीर विषयक आलोचना-साहित्य में मील का पत्थर!

लगभग दस वर्ष तक अप्राप्य रहने के बाद अब राजकमल से संशोधित-संवर्धित रूप में नई साज-सज्जा के साथ उपलब्ध !

मूल्य : सजिल्द १६.००
पेपरबैक १०.००

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली

सद्यः प्रकाशित
तीन
विशिष्ट प्रकाशन

राका की मंजिल

बलवंत सिंह

प्रख्यात कथाकार बलवंत सिंह का एक सर्वथा अछूते विषय पर अत्यन्त रोचक और मार्मिक उपन्यास। १५-००

छायावाद
डॉ० रवीन्द्र भ्रमर

छायावाद

डा. रवीन्द्र भ्रमर

छायावाद के अधिकारी विद्वान द्वारा हिन्दी कविता की इस महत्वपूर्ण धारा का परीक्षण-विवेचन १०-००
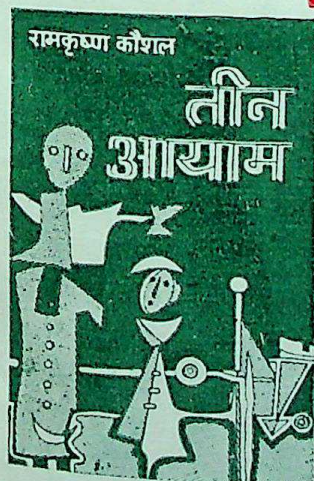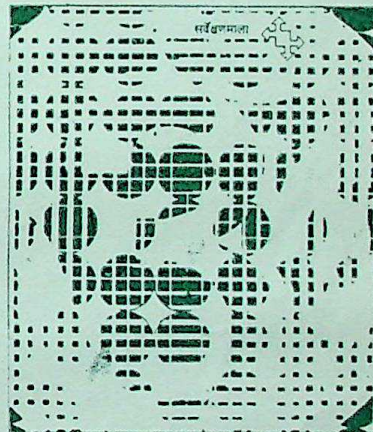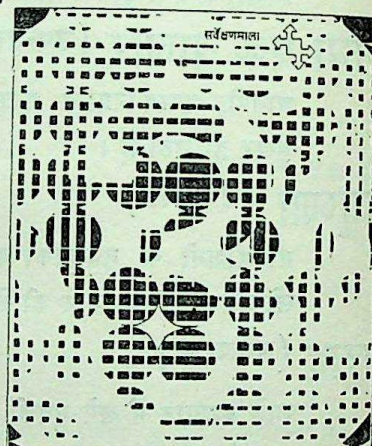
तीन आयाम

रामकृष्ण कौशल

नए युग के नए आदर्शों का उद्घोष करने वाले तीन मंचोपयोगी नाटक।

४-००

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

सम्पादक : शीला संधू

वर्ष १८ ● अंक ९ ● मई, १९७१

वार्षिक ४.००; विदेशों में ८.००; एक प्रति ०.४०

सरकारी विभागों का निंदनीय आचरण

ग्वालियर संभागीय पुस्तक विक्रेता एवं प्रकाशक संघ की ओर से एक परिपत्र प्राप्त हुआ है, जिसमें मध्यप्रदेश शासन के पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा पाठ्यपुस्तकों की सप्लाई के लिए माँगे गये टेन्डर के सम्बन्ध में कुछ शिकायतें की गई हैं। परिपत्र के अनुसार टेन्डर विभिन्न पाठ्यपुस्तकों की ७२ लाख प्रतियाँ सप्लाई करने के लिए है और प्रकाशकों को पुस्तकें तैयार करने के लिए कुल एक महीना पाँच दिन का समय मिलता है। इस अवधि में पुस्तकों की छपाई तथा जिल्दबंदी और रेल द्वारा विभिन्न स्टेशनों पर पुस्तकें पहुँचने में लगने वाला समय शामिल है। संघ की शिकायत है कि इतने लंबे काम के लिए इतना कम समय देना प्रकाशकों के साथ अन्याय करना है। इसके अतिरिक्त दो शिकायतें और हैं जो विचारणीय हैं। पहली यह कि प्रकाशक किसी प्रेस से अनुबंध करके टेन्डर के साथ भेजें और दूसरी यह कि टेन्डर के साथ सिक्योरिटी डिपाजिट की रकम और टेन्डर स्वीकार हो जाने पर रायल्टी की रकम अग्रिम जमा करानी होगी। इन शर्तों पर संघ की बहुत ही उचित आपत्ति है कि जब तक टेन्डर स्वीकार न हो जाये तब तक प्रेस के साथ अनुबंध कैसे किया जा सकता है और टेन्डर स्वीकार होने से पहले सिक्योरिटी की रकम जमा कराना तथा रायल्टी की रकम अग्रिम लेना अनुचित है। रायल्टी के विषय में यह सर्वमान्य नियम है कि उसका भुगतान बिकी हुई पुस्तकों के आधार पर होता है, अनबिकी प्रतियों पर रायल्टी नही दी जाती।

परिपत्र में टेन्डर की और भी कई अनियमितताओं एवं अनुचित बातों का उल्लेख किया गया है और निष्कर्ष रूप में यह आशंका व्यक्त की गई है कि किन्हीं "प्रकाशकों के साथ पाठ्यपुस्तक निगम के अधिकारी संबंधित हैं और यह कार्य पहले से ही चल रहा हे, टेन्डर नोटिस जारी करना केवल दिखावा मात्र है।"

संघ की उपरोक्त आशंका कहाँ तक सही है इस सम्बन्ध में निश्चय के साथ कुछ कहना कठिन है, किन्तु इसके समानान्तर एक दूसरी घटना हमारे सामने है जो वस्तुस्थिति को समझने में कुछ सहायक हो सकती है। पिछले साल हरियाणा बोर्ड ने उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए पुस्तकें आमंत्रित की थीं, जिसके उत्तर में ११० प्रकाशकों ने विभिन्न विषयों के लिए उनके पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकें/पांडुलिपियाँ तैयार कराकर विचारार्थ प्रस्तुत कीं, साथ में हर प्रकाशक ने १००० रुपरे सिक्योरिटी की रकम जमा कराई। लेकिन बोर्ड ने हिन्दी के लिए तो उनमें से किसी की भी पुस्तक स्वीकार नहीं की और उनके स्थान पर एन सी ई आर टी की पुस्तकें ले ली और दूसरे विषयों, जैसे गणित आदि, के लिए उनकी पुस्तकें स्वीकार भी कीं तो सहायक पुस्तकों के रूप में जबकि पुस्तकें आमंत्रित करते समय परिपत्र में कहा गया था कि ये अनिवार्य पाठ्य-पुस्तकों के रूप में रखी जाएँगी। ये दोनों बातें ही अनुचित हैं। हिन्दी के लिए अगर बोर्ड को एन सी ई आर टी की पुस्तकें ही लेनी थीं

तो प्रकाशकों को क्यों बेकार किया गया ? इसी तरह, अन्य विषयों की पुस्तकें अगर सहायक पुस्तकों के रूप में स्वीकार करनी थीं तो परिपत्र में वह स्पष्ट होना चाहिए था ताकि बहुत से प्रकाशक, जिनकी रुचि सहायक पुस्तकों के रूप में पुस्तकें प्रस्तुत करने में नहीं थी, बेकार की परेशानी से बच जाते।

लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हो जाती है कि प्रकाशकों को इस तरह परेशान किया गया। जिन प्रकाशकों की पुस्तकें स्वीकार नहीं की गयी हैं उनकी सिक्योरिटी की रकम लौटा दी जानी चाहिए थी लेकिन खेद का विषय है कि संबंधित प्रकाशकों को आज तक भी सिक्योरिटी वापस लेने के विषय में कोई सूचना नहीं दी गयी। जिन प्रकाशकों की पुस्तकें अनिवार्य पाठ्यपुस्तकों के लिए परिपत्र भेजकर सहायक पुस्तकों के रूप में स्वीकार की गयीं उनके साथ भी एक दूसरा अन्याय यह किया गया कि बोर्ड ने आवरण अपनी ओर से मुद्रित कराकर देने की बात कही और कुल प्रतियों पर १५ प्रतिशत अग्रिम रौयल्टी की माँग की है। स्पष्ट ही बोर्ड की यह माँग अनुचित है, क्योंकि सब जानते है कि जो पुस्तकें सहायक पुस्तकों के रूप में निर्धारित होती हैं वे बहुत कम बिकती हैं और बोर्ड की यह शर्त स्वीकार करने का अर्थ अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है।

बताया जाता है कि हरियाणा बोर्ड को उस समय रुपये की आवश्यकता थी और सिक्योरिटी के नाम पर वह रुपया इकट्ठा करने के लिए ही पुस्तकें आमंत्रित करने का ढोंग किया गया था। अगर सचमुच यह बात सही है तो बोर्ड अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल माना जायेगा, क्योंकि ११० प्रकाशकों से उसे १ लाख १० हज़ार रुपये सिक्योरिटी के रूप में मिल गये।

इन घटनाओं से स्पष्ट है कि निजी प्रकाशकों के साथ कितना अन्यायपूर्ण और सौतेला व्यवहार किया जाता है। विभिन्न राज्यों के शिक्षा बोर्ड जरूरत होने पर सहायता के लिए उनके पास दौड़ते भी हैं और उन्हें हेय दृष्टि से भी देखते हैं। समाजवाद के नाम पर चलने वाली सरकारी क्षेत्र की यह पक्षपातपूर्ण और अन्याय की नीति वास्तव में समाजवाद के नाम पर कलंक ही है।
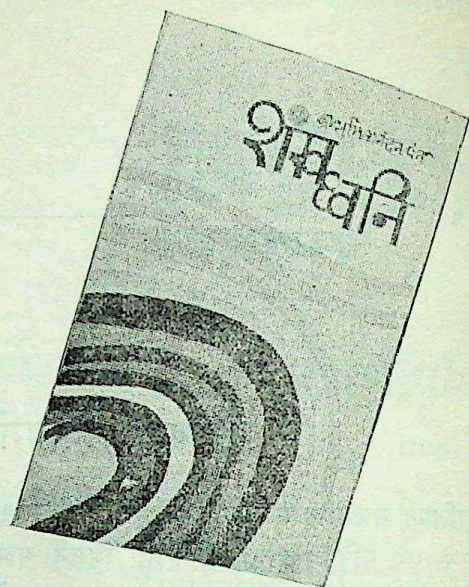
२० मई जन्म-दिवस के अवसर पर

महाकवि सुमित्रानन्दन पंत के सम्बन्ध में कुछ विचार : जर्मन अध्येता के दृष्टिकोण से

डा० इरेने जाहरा

पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में सुमित्रानन्दन पंत के जीवन, काव्य और साहित्यिक अवदान पर निबंधों, शोध प्रबंधों और अन्य पुस्तकों की बड़ी संख्या लिखी गयी है, न केवल भारत में किंतु विदेश में भी। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है : भारतीय और विशेषकर हिन्दी साहित्य में उनका स्थान विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। तुलनात्मक दृष्टि से पंत हिन्दी साहित्य के रवीन्द्रनाथ ठाकुर अथवा योहन्न वोल्फ़गंग गेटे (Goethe) हैं। अपने देश के पुरुषों और स्त्रियों को मध्यकालीन नैतिक संस्कारों तथा रूढ़ि-रीतियों की शृंखलाओं से मुक्त करने का काम, नवीन युग की धरा-चेतना के अनुसार जन के आधुनिकीकरण और मानवीयकरण का सक्रिय और निरंतर कार्य जो कविवर पंत अपने सारे जीवन में अपनी रचनाओं के माध्यम से कर रहे थे, वह न केवल समकालीन पीढ़ी के लिए सच और भला है (एक ऐतिहासिक आवश्यकता है), परंतु भावी पीढ़ियों के वैचारिक और नैतिक विकास के लिए भी अमूल्य है और रहेगा।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में कवि पंत के उचित स्थान और उनके समस्त कृतित्व के वास्तविक मूल्य को ठीक-ठीक समझने के लिए, देश-काल की परिस्थितियों का ध्यान रखना आवश्यक है। पंतजी के जीवन-काल में जो परिस्थितियाँ उत्तर प्रदेश में आर्थिक, सामाजिक, दार्शनिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक और शिक्षा-संबंधी क्षेत्रों में विद्यमान थीं, वे जर्मनी में हेर्देर (Herder), शिल्लेर (Schiller), गेटे (Goethe) और हेल्देर्लीन (Holderlin) के जीवन-काल की परिस्थितियों के बहुत बराबर और अनुरूप हैं। इसी कारण आश्चर्य का विषय नहीं, कि पंतजी के कलात्मक, नैतिक तथा सांस्कृतिक और शिक्षा-संबंधी उच्च आदर्श और ध्येय जर्मन क्लासिक लेखकों के श्रेष्ठ मानवतावादी आदर्शों के बहुत निकट हैं।

अपनी सुप्रसिद्ध कविता 'देवत्व' में गेटे ने लिखा है:—

> शरीफ़ हो मानव,
> सहायता-दायक और अच्छा !
> क्योंकि केवल इसी से वह
> सब प्राणधारियों से
> --जो हम जानते हैं—
> भिन्न है। (इत्यादि)

उपर्युक्त मानववादी शिक्षा-आदर्श को पंतजी भी, दूसरे शब्दों में, अपनी रचनाओं में बार-बार अभिव्यक्त कर रहे थे। (अन्य उदाहरणों के लिए इस लेख में, दुर्भाग्य से, जगह नहीं है)

पंत के कवि-जीवन, काव्य तथा के दर्शन-विकास-क्रम के विषय में प्रायः तीन-चार सोपानों की चर्चा की जाती है : छायावाद-युग, प्रगतिवाद-युग, स्वर्ण-चेतना और आधुनिक युग। सन् १९४४ में कवि के प्रगतिवाद से स्वर्ण-चेतना में जाने का मोड़ अनेक आलोचकों के लिए आश्चर्य की और समझ में न आने वाली बात है, और, उनकी परवर्ती कविता के संबंध में प्रायः यह लिखा जाता है कि कवि छायावाद में लौट गये या रहस्यवादी हो गये।

इतना ही निश्चित रूप से कहा जा सकता है, कि पंतजी रहस्यवादी नहीं हैं। रहस्यवादी होने के लिए उनका जीवन-दर्शन अत्यंत स्वस्थ और धरा-केंद्रित है। जहाँ तक स्वर्ण-चेतना का या छायावाद में लौटने का सवाल है, मेरी दृष्टि में कवि के कुल कृतित्व और उनकी निरंतर बदलती एवं विकसित होती हुई काव्य-चेतना को ठीक-ठीक समझने की कुंजी उनके तथाकथित छायावादी-काव्य में है, विशेषकर 'परिवर्तन' में और 'परिवर्तन' के पश्चात की रचनाओं में।

अपने शोधप्रबंध में मैंने पंतजी के छायावादी सौंदर्य-

इस मास के नये प्रकाशन

रायकमल (उपन्यास) : श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्याय ने अपने लघु उपन्यास रायकमल में मानो जीवन का मर्म ही प्रस्तुत कर दिया है। थोड़े से थोड़े शब्दों और मामूली-सी घटनाओं को लेकर प्रेमानुभूतियों का जिस रूप में यहाँ चित्रण हुआ है वह गद्य में होते हुए भी काव्य के उच्चतम स्तर को छूता है।

५.००

आँख की चोरी (उपन्यास) : श्री कृश्न चन्दर की अपनी अनूठी शैली में रहस्य-रोमांच से भरपूर उपन्यास।

५.००

मेरी प्रिय कहानियाँ (कहानियाँ) : श्री बलवंतसिंह की अपनी ही कहानियों में से उनकी मनपसंद कहानियों का संकलन, जिसमें ऐसा जादू है जो सर चढ़ बोले…। ये कहानियाँ प्रियतम क्यों हैं, उन्हीं की लिखी भूमिका में पढ़िए।

५.००

रेडार (ज्ञान-विज्ञान) : द्वितीय महायुद्ध के आसपास रेडार का आविष्कार हुआ। तब से लेकर रेडार में अब तक हुए परिष्कार तथा प्रयोगों का सरल भाषा में सचित्र और प्रामाणिक परिचय इस पुस्तक में श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव ने देने का सफल प्रयास किया है।

२.५०

ईशोपनिषद् (सत्यभूषण योगी) : उपनिषदों में सर्वप्रमुख ईशोपनिषद् की सरल हिन्दी टीका मूल मंत्रों सहित।

३.००

राजपाल एण्ड सन्ज,
कश्मीरी गेट, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

आदर्श और दार्शनिक विचारों के विकास का विश्लेषण किया है। इसके फलस्वरूप यह प्रकट हुआ कि १९१८ से लेकर १९३५ तक कवि का मुख्य सौंदर्य-आदर्श क्रमशः बदलता और विकसित होता गया। प्रारंभ में उनका आदर्श था 'सुंदर प्रकृति', जो उनकी दृष्टि में सब (बाह्य और आंतरिक) गुणों—सौंदर्य, करुणा, पावनता, सूक्ष्मता, सरलता, शुभ्रज्योति आदि का मूर्तिमान रूप थी। 'परिवर्तन' के बाद उनका प्रारंभिक सौंदर्य-आदर्श 'सुंदर प्रकृति' क्रमशः 'सुंदर मानव' के आदर्श में बदल गया और यह आदर्श अंत में 'सुंदर मानव जाति' में अपने उत्कर्ष तक पहुँचा।

आदर्श 'सुंदर मानव' के संबंध में कवि ने जनवरी १९३२ में लिखा :—

तुम मेरे मन के मानव,
....

सीखा तुम से फूलों ने
मुख देख मंद मुसकाना,
तारों ने सजल नयन हो
करुणा किरणें बरसाना

और अप्रैल १९३५ में :—

सुंदर हैं विहग, सुमन सुंदर
मानव ! तुम सबसे सुंदरतम,
निर्मित सबकी तिल सुषमा से
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम !

ऊपर वाले उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि कवि के प्रकृति से संबंध घनिष्ठ रह गये और इससे अधिक यह कि उनकी दृष्टि में मानव प्रकृति का सबसे सुंदर पुत्र है (हेल्देर्लीन ने 'मानव' नामक काव्य में मानव को 'माता भू का सबसे सुन्दर पुत्र' कहलाया है); परंतु उपर्युक्त से यह भी स्पष्ट है कि अभी प्रकृति के स्थान पर मानव सब (बाह्य और आंतरिक) गुणों का मूर्तिमान रूप, अस्तु उनका सौंदर्य-आदर्श हो गया है।

उसी काल की सबसे महत्वपूर्ण कृति 'ज्योत्स्ना' रूपक है, जिसमें कवि ने 'सुंदर मानव' और 'सुंदर मानव जाति' के संबंध में (जो उनके शब्दों में नवीन मानव और 'नवीन मानव जाति' हैं) अपने श्रेष्ठ आदर्शों और विचारों को कलात्मक रूप से व्यक्त किया है। 'ज्योत्स्ना' में कुछ आदर्श और विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उदाहरणतः कवि अपने नवीन स्वर्ण युग के मानव और मानवजाति के बारे में कहते हैं :—'मानव प्रेम के नवीन प्रकाश में राष्ट्रीयता, अंतर्राष्ट्रीयता, जाति और वर्ण के भूतप्रेत सदैव के लिए तिरोहित हो गये हैं। इस समय देश-जाति के बन्धनों से मुक्त मनुष्य केवल मनुष्य है। स्त्री-पुरुष का संबंध भी अब पाँवों की बेड़ी या जीवन का बन्धन नहीं रहा। वह एक स्वाभाविक आत्मसमर्पण और जीवन की मुक्ति बन गया है। निरंतर साहचर्य, परस्पर सद्भाव और सहशिक्षा के कारण आधुनिक युवक-युवती का प्रेम देह की दुर्बलता न रहकर हृदय का बल एवं मन का संयम बन गया है।" और दूसरे स्थान पर :—"मानवीय सत्य लोक-निरपेक्ष नहीं हो सकता।" और "शिक्षा हृदय की साधना बनकर विश्व-संस्कृति को आत्मसात कर रही है।"..."जन्म-मरण, सुख-दुःख जीवन के सहज विरोधों एवं प्रतीप आविर्भावों के बीच मनुष्य को अपनी सहज बुद्धि से काम लेकर एक बार सामंजस्य स्थापित करना ही पड़ता है।"—कवि हर प्रकार की एकांगिता के विरुद्ध है, सामंजस्य (हार्मोनी) उनका आदर्श है।

डा० इरेने जाहरा

'ज्योत्स्ना' का लक्ष्य महान् है। वह मानव-मन को जड़ता से चैतन्य की ओर, शरीर से आत्मा की ओर, रूप से भाव की ओर, नीचे से ऊँचे की ओर अग्रसर करता है, और साथ ही इस भू पर केन्द्रित रहता है। रूपक का क्षेत्र इतना विराट है कि प्रस्तुत लेख में उसका समग्र वर्णन और तुलना नहीं दिये जा सकते हैं। किन्तु इतना ही कहा जा सकता है कि 'ज्योत्स्ना' में अंतर्निहित आदर्श और विचार जर्मन क्लासिक कवियों के आदर्शों और विचारों के लिए लाक्षणिक हैं। इस सम्बन्ध में फिर एक उदाहरण। जैसे पंतजी ने कहा, "नवीन आदर्शों का जन्म होने एवं व्यवहार में आने से पहले अथवा लोक समाज का बाह्य विकास होने के पूर्व ही उसकी मानसिक अवस्था में एक मानसिक परिवर्तन पैदा हो जाता है। इसी प्रक्रिया में मनोजगत या

मनस्तत्व स्वयं ही एक सूक्ष्म ग्रान्तरिक विकास के कारण बदल जाता है", वैसे ही जर्मन क्लासिक कवि सोचते थे, और इसमें ही उनकी "ग्राध्यात्मिकता" तथा आदर्शवाद निहित है।

'ज्योत्स्ना' के पश्चात पंतजी के 'सुन्दर मानव' तथा 'सुन्दर मानव जाति' सम्बन्धी आदर्श और उनकी क्लासिकी-मानवतावादी विचारधारा क्रमशः विकसित और पुष्ट हो रही थी। उनके विकास-क्रम का पहला चरण था तथाकथित प्रगतिवाद। उस समय, प्रबुद्ध होते हुए, कवि ने बड़ी वेदना से देखा कि भारतीय वास्तविकता उनके उच्च मानववादी ग्रादर्शों एवं स्वप्नों के अनुकूल नहीं थी और स्वभावतः उनको अपने युग और अपने समाज से घोर असंतोष रहा था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि १६३६ से १६४० तक कवि का मुख्य ध्यान जीवन के बाह्य पक्ष पर केन्द्रित था, परंतु आंतरिक पक्ष भी दृष्टि से ओझल नहीं था! प्रगतिवाद-काल के बाद उनका मुख्य ध्यान ग्रांतरिक पक्ष पर हुआ, परन्तु बाह्य पक्ष भी दृष्टि से ओझल नहीं हुआ। विशेषकर, उनके सामंजस्य, संतुलन, रागात्मकता की ओर निरन्तर प्रयत्न, जो प्रकृति-मनुष्य, जड़-चेतन, बहिरन्तर, बुद्धि-हृदय, पुरुष-स्त्री, व्यक्ति-समाज, भौतिकता-ग्राध्यात्मिकता, यथार्थ-आदर्श, रूप-भाव, देह-ग्रात्मा, सुख-दुःख, पूर्व-पश्चिम, शांति-क्रांति आदि के समन्वय में प्रकट होते हैं, इस बात का समर्थन करते हैं कि पंतजी तत्वतः एक क्लासिकी कवि हैं। और उनका नव मानवतावाद तथा यथार्थवाद एक क्लासिकी मानवतावाद तथा यथार्थवाद है।

इसी कारण प्रगतिवाद में कवि ने 'मज़दूरनी के प्रति' में कहा :—"स्त्री नहीं, आज मानवी बन गई तुम निश्चित!" और 'मार्क्स के प्रति', 'साम्राज्यवाद', 'धनपति', 'श्रमजीवी', 'मूल्यांकन', 'वे आंखें', आदि के साथ 'बापू', 'समाजवाद—गांधीवाद', 'तुम ईश्वर', 'संस्कृति का प्रश्न,' 'कवि कृषक' आदि रचनाएँ लिखीं। इसी कारण उन्होंने प्रगतिवाद के पश्चात 'व्यक्ति और विश्व', 'स्वर्णोदय', 'शांति और क्रांति', 'रूपांतर' आदि के साथ 'पतिता', 'लोक सत्य', 'आजाद', 'यह धरती कितना देती है,' 'लोकायतन' आदि रचनाएँ कीं। इसी कारण कविवर पंत का आजकल भी कहना है, "समस्त सत्य धरा-केन्द्रित अथच मानव-केन्द्रित है।" (यही गेटे का कहना भी था!) और "हमें विज्ञान और अध्यात्म दोनों ही धरातलों में दृष्टि-वैभव को नवीन मानव के निर्माण तथा विकास के लिए प्रयुक्त करना चाहिए कि वह भविष्य में देशों-राष्ट्रों की सीमाओं से उभरी हुई इस धरती पर एक नवीन सांस्कृतिक एकता का अनुभव अपने भीतर कर सके—सांस्कृतिक एकता जो उसकी ईश्वरीय अथवा ग्राध्यात्मिक एकता की भी प्रतिनिधि बन सके।" (यही गेटे का विचार भी था)।

प्रगतिवाद के विषय में यह भी देखना और समझना चाहिए कि, जो आदर्श और विचार पंतजी ने उस समय मार्क्स और गाँधी से अपनाये और जिनका विशिष्ट संस्कार उन्होंने अपने काव्य में किया है, वे उनकी क्लासिकी-मानवतावादी विचार-धारा के प्रतिकूल नहीं थे। (उनके लिए) वे केवल एक सत्य के दो पक्ष थे।

अंत में फिर एक बात। १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, जागृति और क्लासिसिज्म (द्विवेदी-युग की जर्मन अनुकूलता) के बाद, जर्मनी में जैसे हेर्देर, शिल्लेर, गेटे और अन्य कवियों ने तथाकथित श्तुर्म उन्द द्रन्ग (विप्लव और उत्साह) के युग में साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और व्यापक (भाव, चेतना, रूप और भाषा) की क्रांति की थी वैसे ही पंत, निराला और अन्य हिन्दी कवियों ने उत्तर प्रदेश में छायावाद तथा प्रगतिवाद के युग में साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण और व्यापक क्रांति की। परन्तु तत्कालीन जर्मनी में और तत्कालीन उत्तरप्रदेश में राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में केवल कुछ सुधार सम्पन्न हो सके, क्रांति नहीं हुई! निश्चय ही, राजनीतिक और सामाजिक क्रांति का अभाव गेटे और शिल्लेर या पंत और निराला का दोष नहीं था! फिर भी, इस क्रांति के अभाव के कारण, जर्मन और हिन्दी कवियों के श्रेष्ठ आदर्श और नवीन मूल्य, उस समय, कल्पना में आदर्श रह गये, जीवन और व्यवहार में नहीं आ सके।

यह सब होते हुए भी, निष्कर्ष में यह कहना चाहिए, कि जर्मन और हिन्दी क्लासिक कवियों का महत्व और गुण इसी में है, कि उन्होंने श्तुर्म-उन्द-द्रन्ग या छायावाद-प्रगतिवाद के बाद अपने देश-काल की वास्तविकता

डा० सत्यप्रकाश संगर

का आठवाँ कहानी-संग्रह

लहरों का निमंत्रण

डॉ० संगर की इस नवीनतम पुस्तक में डेढ़ दर्जन कहानियाँ सम्मिलित हैं जो अपनी अनुपम शैली और टकसाली भाषा, मौलिक विषयों तथा चुभते व्यंग्यों के कारण पाठक के मन पर अमिट छाप छोड़ती हैं।

कलात्मक आवरण और आकर्षक सज्जा : मूल्य : ६-००

अन्य रचनाएं

उपन्यास

कली मुसकराई (तीसरा संस्करण)	५.००
घर की आन " "	६.००
परित्यक्ता	४.००
बरगद की छाया (दूसरा संस्करण)	४.००
मंजिल से दूर " "	३.००
चाँद रानी " "	४.००

नाटक संग्रह

दामाद का चुनाव	४.५०
काफी हाउस वाली लड़की	३.००

कहानी-संग्रह

मुझे टिकट दो	५.००
हमदमे देरीना का मिलना (दूसरा संस्करण)	३०.०
अफ्रीका का आदमी " "	२.७५
लम्बे दिन जलती रातें " "	४.००
नया मार्ग	२.५००
अवगुण्ठन (तीसरा संस्करण)	४.००
कितना ऊँचा कितना नीचा	२.२५

विविध

मिनिस्टर की डायरी	४.००
उदयाचल के आँचल में	३.००
मुगल भारत में अपराध और दण्ड (अंग्रेज़ी)	२५.००

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

की दुर्दशा के विपरीत सर्वजन के लिए श्रेष्ठ मानव जीवन के एवं श्रेष्ठ नवीन मानव जाति के आदर्श और लक्ष्य स्थापित किये हैं और भावी पीढ़ी की अवस्था में सब पतनशील, पलायनवादी, रोमांटिक, प्रकृतिवादी और I' art pour I 'art प्रवृत्तियों के विरुद्ध एक स्वस्थ, यथार्थवादी (क्लासिक के अर्थ में), मानव-केंद्रित और धरा-केन्द्रित साहित्य की रचना की।

जैसा पंतजी ने स्वयं कहा : "सम्भव है, जो नया मूल्य मानव की अन्तश्चेतना में अवतीर्ण हो चुका है उसकी परिणति मानव जाति के जीवन में सौ दो सौ साल बाद हो और विगत अभ्यासों तथा रीति मर्यादाओं में पथराई हुई मानव चेतना को नया रूप ग्रहण करने के पूर्व अनेक संघर्ष, संग्राम आदि करने पड़ें।" इन शब्दों के सत्य का जर्मन इतिहास समर्थन करता है, क्योंकि जो श्रेष्ठ आदर्श और नूतन मानवतावादी मूल्य हेर्डेर, गेटे, शिल्लेर और अन्य जर्मन क्लासिक लेखकों ने १८वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा १९वीं शताब्दी के प्रथम तीस वर्षों में सर्वजन के लिए स्थापित किए हैं, वे आजकल, उनके देहांत के एक सौ पचास एक सौ साठ वर्षों के बाद, जर्मनी के जनवादी प्रजातंत्र में एक नयी पीढ़ी द्वारा क्रमशः जीवन और व्यवहार में लाये जाते हैं।

मेरे लेख का अर्थ यह नहीं है कि महाकवि सुमित्रानन्द पंत ने जर्मन क्लासिक कवियों का अनुकरण किया है। मेरा कहना यही है, कि उन के जीवन-काल में आधुनिक हिन्दी साहित्य (और दर्शन) अपने राष्ट्रीय विकास में अपनी क्लासिकी-मानवतावादी समृद्धि तक पहुँच गया, जिसमें कवि पंत का एक केंद्रीय स्थान है। प्रसाद, निराला, दिनकर और अन्य महान हिन्दी कवियों की समकालीन रचनाओं में अंतर्निहित समान श्रेष्ठ आदर्श और विचार इस मेरे मत का समर्थन करते हैं।

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए संग्रहणीय साहित्य

आलोचना तथा शोधप्रबन्ध

१. महाभारत का आधुनिक हिन्दी प्रबन्ध काव्यों पर प्रभाव : डा० विनय २५.००
२. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास : डा० बेचन २०.००
३. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य ,, १५.००
४. व्यक्ति और व्यक्तित्व : सुहृद ८.००
५. बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व : डा० जीवन प्रकाश जोशी १५.००
६. गोविन्द रामायण : डा० विनोद कुमार ८.००
७. रामचरित मानस की पाश्चात्य समीक्षा : सुखवीर सिंह १०.००
८. बचचन पत्रों में : डा० जीवनप्रकाश जोशी ६.००

निबन्ध

१. भारत और विश्व : डा० राधाकृष्णन १५.००
२. भारत और चीन : ,, ७.००
३. आधुनिक निबन्ध भारती : डा० ओमप्रकाश शर्मा ८.००

जीवनोपयोगी साहित्य

१. राष्ट्र विभूति भगिनि निवेदिता : परमेश्वरसिंह ४.००
२. महान मां की महान पुत्री श्री व्यथित हृदय २.५०
३. डा० जाकिर हुसैन नरेन्द्र पाठक २.५०
४. गुरु नानक देव ,, २.५०
५. विशाल हिमाचल हंसराज दर्शक २.५०
६. बादशाह खान जयप्रकाश शर्मा २.५०

बाल उपन्यास

१. रानी वीरमती कमल शुक्ल २.५०
२. नौ महले का शेर ,, २.५०
३. सूरी सम्राट शेरशाह ,, २.५०
४. चित्तौड़ का चिराग ,, २.५०
५. अन्धे कुएं का देव राजेन्द्र शर्मा २.५०

सन्मार्ग प्रकाशन की नई भेंट,
पंत बच्चन साहित्य के प्रेमियों के लिए

श्री सुमित्रानन्दन पन्त के व्यक्तित्व और कृतित्व के पाठकों को बच्चन के नाम लिखे पत्रों का तीसरा खण्ड प्रस्तुत है—

पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम

बिल्कुल निजी पत्र, पंतजी के सृजन, जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हैं।

मूल्य १० रु०

निबन्ध

१. निबन्ध नवनीत : डा० जीवनप्रकाश जोशी १५.००

संस्मरण

१. भारत-नेपाल सुहृद १२.५०

उपन्यास

१. गहराइयां श्रीराम शर्मा राम ८.००
२. मां भारती सन्तदेव भारती १०.००
३. सिन्दूर दान त्रिभुवनपति सिंह ७.००

शायरी

१. बहादुरशाह जफ़र और उनकी शायरी सम्पादक डा० संसारचन्द्र ३.००

कविता

१. हम भी तुम्हारे हैं : डा० जीवनप्रकाश जोशी ५.००

सन्मार्ग प्रकाशन

१६-यू, बँगलो रोड, दिल्ली-७

महाकवि निराला के पत्रों का एक महत्त्वपूर्ण संग्रह

डा० श्रीराम शर्मा

श्री जानकीवल्लभ शास्त्री के नाम लिखे गए क्रान्तदर्शी कवि महाप्राण निराला के १०६ पत्रों का यह संग्रह[1] हिन्दी के पत्र-साहित्य की अनुपम निधि है। इस ग्रन्थ में जानकीवल्लभजी ने केवल पत्रों का संकलन ही नहीं कर दिया अपितु उन पत्रों में जिन संदर्भों (घटनाओं, ग्रन्थों, अवसरों आदि) का उल्लेख हुआ है, उनका विस्तृत परिचय टिप्पणियों में दे दिया है। इससे सभी संदर्भ स्पष्ट हो गये हैं।

प्रत्यक्ष रूप से निराला जी के पत्रों का संकलन-मात्र दिखाई देने वाला यह ग्रन्थ अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। एक तो यह कि जानकीवल्लभजी की बहुचर्चित रचनाएँ भी पाद-टिप्पणियों के रूप में उपलब्ध हैं, जिससे पाठकों को निराला के साथ उनके निर्देश में निखरी हुई प्रतिभा (जानकीवल्लभजी) की काव्य-कला का परिचय मिल जाता है। इसके अतिरिक्त निरालाजी की अनेक अति अल्पाकारीय रचनाओं के मर्मांश भी उनके पत्रों में उद्धृत हैं और इन छोटी रचनाओं के पीछे कवि निराला के हृदय की उछाल एवं तरंगायित भावच्छटा के दर्शन होते हैं।

निरालाजी के प्रस्तुत १०६ पत्रों में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनसे कवि की काव्यादर्श विषयक धारणाओं एवं मान्यताओं का परिचय प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए पृष्ठ ६०-६१ पर अशास्त्रीयता के विरोधी निराला की भाषा-विषयक यह मान्यता कि उर्दू का सम्यक् ज्ञान न होने पर शब्द के नीचे बिन्दी न लगाई जाए, उनकी गंभीर भाषा-निष्ठा एवं साहित्यिक ईमानदारी की परिचायिका है। इसी प्रकार साहित्यिक क्षेत्र में प्रचारादि में निराला की विशेष आस्था नहीं थी। पृष्ठ १०४ पर उनका यह वाक्य इस तथ्य को स्पष्ट करता है—"साहित्य अपना रास्ता अपने आप निकाल लेता है।" इसी प्रकार सरल हिन्दी और हिन्दुस्तानी की हिमायत करने वालों को उत्तर देते हुए निराला ने पृष्ठ १२०-२१ पर लिखा है—"जो गहन भाव सीधी भाषा, सीधे छन्द में चाहता है वह धोखेबाज है: उसे भाषा का ज्ञान नहीं, वह भाव क्या समझेगा?"

काव्य-सर्जना में भावों की महत्ता पर भी निरालाजी ने कहा है—"काव्य में हर मनोभाव की छाप रहनी चाहिए इसलिए आजकल ऐसा लिखता हूँ।" (पृष्ठ १२६) काव्य में संगीत की महत्ता एवं आवश्यकता पर निराला बहुत बल देते थे। इस तथ्य को स्वयं सम्पादक ने भी भूमिका में बड़े विस्तार से उद्घाटित किया है कि निराला का स्वर एवं शास्त्रीय संगीत का ज्ञान अभूतपूर्व एवं अनुपम था। निरालाजी ने लिखा है—" 'मैं हूँ केवल पल्लव-आसन' कर लीजिएगा। किसलय ठीक नहीं, जब भी संगीत इसमें अधिक है इसके आइडिया की इसने तारीफ नहीं की।" (पृ. १३०) काव्य-सर्जना में वे मूल भाव के हिमायती थे, उसमें सुधार करने के पक्ष में नहीं थे। पृष्ठ १६७ पर उन्होंने अपना मत व्यक्त किया है— "सुधार मैं कविता में नहीं करता या नहीं कर सकता। सुधार से कविता में सुधारक की छाप पड़ती है जो मुझे अभीप्सित नहीं।"

अनेक पत्रों में निराला की व्यक्तिगत अभिरुचि के संकेत मिलते हैं। उन्हें आम बहुत प्रिय थे, वे गंगा-स्नान में अधिक रुचि रखते थे, घनघोर वृष्टि में बहुत आनन्दित होते थे। अनेक काम घनघोर वर्षा प्रारंभ होने तक छोड़े रखते थे। अपने संस्कृत ज्ञान पर साधिकार स्वाभिमान के स्वर में कहना उनके पत्रों से उद्भासित होता है। पृ. ६४ पर 'भूँकें स्वान हजार' कह कर उन्होंने आलोचकों की चिन्ता न करने का परिचय दिया है। काव्यानंद के लिए निराला में एक विचित्र छटपटाहट द्रष्टव्य है पृ. १०६ पर एक पत्र में, जिसमें वे जानकीवल्लभजी के गीतों का आस्वाद करने के लिए उत्सुक हैं—"मैं सचेष्ट हूँ। केवल आपके हिन्दी गीत मुझे यहां नहीं मिल रहे।" अपनी साहित्य-सर्जना के प्रति उनमें अटूट विश्वास एवं स्वाभिमान था—"मैं वैसा बैठा

१. निराला के पत्र: सम्पादक—आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री; प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६; मूल्य १८-००

हमारे छात्रोपयोगी आलोचनात्मक प्रकाशन

ग्रंथि : एक अध्ययन : नागेश्वर लाल १.५०
पथिक : एक अध्ययन : शशिभूषण बख्शी १.५०
प्रतिज्ञा : एक अध्ययन : रामचन्द्र वर्मा १.५०
संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : शांति जैन ३.००
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : बच्चन पाठक 'सलिल' ३.००
हिन्दी भाषा का इतिहास : लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा ३.००
गबन : एक अध्ययन : कपिल देव सिंह १.५०
विजेता : एक अध्ययन : " " २.००
रश्मिरथी : एक अध्ययन : रामचन्द्र शर्मा २.००
अम्बपाली : एक अध्ययन : उर्मिला सिंह २.००
मानसरोवर (भाग-६) : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.५०
कहानी विविधा : एक अध्ययन : " " ३.००
दस तस्वीरें : एक अध्ययन : शशिभूषण बख्शी २.५०
शाहजहां के आँसू : एक अध्ययन ब्रजकिशोर पाठक ३.००
भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना : एक अध्ययन : शेष आनन्द 'मधुकर' २.५०
अयोध्याकान्ड : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.००
त्रिवेणी : एक अध्ययन : उमेशचन्द मिश्र २.००
गल्प समुच्चय : एक अध्ययन : शंभु बादल २.५०
कुरुक्षेत्र : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.५०
अशोक के फूल : एक अध्ययन : शीलधर सिंह २.००
सिन्दूर की होली : एक अध्ययन : " २.००
रश्मिबन्ध : एक अध्ययन : रामसुभग सिंह २.५०
साहित्य प्रवेश : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह २.००
साहित्य सौरभ : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह २.००
सरदार पूर्ण सिंह के निबन्ध : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह १.००
संक्षिप्त हिन्दी नवरत्न : एक अध्ययन : " १.००
हिन्दी निबन्धावली : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह ३.००
ऋतम्बरा : एक अध्ययन : नागेश्वरदास 'अनल' २.००
कादम्बिनी : एक अध्ययन : " " ३.००
२३ हिन्दी कहानियां : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय १.५०
चिन्तामणि भाग-१: एक अध्ययन : जगमोहन मिश्र ३.००
नारी : एक अध्ययन : गंगाप्रसाद गुप्त २.५०
आषाढ़ का एक दिन : एक अध्ययन : बृजकिशोर पाठक २.५०
एकांकी संकलन : एक अध्ययन : एस. एल. गौतम ४.००
काव्यांग परिचय (रस, छन्द और अंधकार) राजेन्द्रराय 'राजेश' : २.००
काव्य संगम : एक अध्ययन : गङ्गाधर पान्डेय ३.००
विराटा की पद्मिनी : एक अध्ययन : प्रवीण नायक ३.००
त्यागपत्र : पक अध्ययन : स्वर्ण किरण ३.००
रूपान्तर : एक अध्ययन : महेन्द्र किशोर २.५०
पंचवटी : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' १.५०
विष्णुप्रिया : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह ३.००
चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन : रामचन्द्र शर्मा २.००
स्कन्दगुप्त : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह २.५०
ध्रुवस्वामिनी : एक अध्ययन : शशि भूषण बख्शी १.५०
पुर्नमिलन : एक अध्ययन : रामकृष्ण मिश्र ३.००
चारुचन्द्रलेख : एक अध्ययन : ब्रजकिशोर पाठक २.००
मैं छोटानागपुर में हूँ : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय १.००
यशोधरा : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' ३.५०
मध्यकालीन काव्य : एक अध्ययन : शिवनन्दन प्रसाद सिंह २.५०
रामचर्चा : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' १.५०

हमारे यहाँ हिन्दी की सभी पाठ्य-पुस्तकें तथा गाइडें मिलती हैं। हिन्दी अध्यापकों और प्रचारकों को उचित कमीशन दिया जाता है। वी० पी भेजने का सुप्रबन्ध है।

कमल प्रकाशन, हिन्दपिढ़ी, राँची-१ [बिहार]

बनिया नहीं कि जिन्दगी भर इस कोठे का धान उस कोठे करता रहूँ।" (पृष्ठ १२६) अच्छी-खासी धन-राशि पर कवि सम्मेलनों और रेडियो कार्यक्रमों में न जाना उनके स्वाभिमानी होने का प्रमाण है। सामाजिक क्षेत्र में उनकी क्रान्तिकारिता का परिचय मिलता है अपने पुत्र का दहेज रहित विवाह करने की घटना से। इसी प्रकार खड़ी बोली के प्रति निराला की आस्था का परिचय भी इन पत्रों से मिलता है। निराला के दुर्द्धर्ष साधक और अक्खड़ रूप का परिचय इस एक ही वाक्य से मिल जाता है—"रही बात सीख देने की, जो इस पत्र में आपने लिखी है, सो मैं खुद जब कि दूसरों की सीख नहीं ले सका तब आपको क्या सीख दूँ।" (पृ.१६७)

अपनी रचनाओं की लोकप्रियता के विषय में निश्चिन्त रहने वाले निराला की साहित्यिक ईमानदारी और दस-दस पाँच-पाँच रुपयों के लिए अर्थसंकट भोगते हुए भी मनोबल को दृढ़ बनाए रखने की दुर्दमनीय क्षमता का बड़ा सजीव चित्र इन पत्रों में देखने को मिलता है। इस प्रकार निराला के व्यक्तित्व को हृदयंगम करने में ये पत्र अत्यंत सहायक हैं।

तीन आयाम : आदर्शवादी एवं कलापूर्ण एकांकी-संग्रह

गणपतिचन्द्र गुप्त

श्री रामकृष्ण कौशल की प्रस्तुत कृति[1] में उनके तीन एकांकी संगृहीत हैं। प्रथम एकांकी का शीर्षक "सत्याग्रह" ही इसकी आदर्शवादी भूमिका का द्योतक है। एकांकी का आरम्भ एक इन्टरव्यू के रोचक दृश्य के साथ होता है, जिसमें "न्यू इंडिया इंडस्ट्रीज के डायरेक्टर" विभिन्न उम्मीदवारों से प्रश्न पूछते हुए अपनी पैनी दृष्टि का परिचय देते हैं। इन उम्मीदवारों में डा० संजय अपने उत्कट आत्मविश्वास, सुस्पष्ट दृष्टिकोण, सुचिन्तित विचार-धारा एवं वाक्‌चातुर्य द्वारा न केवल कम्पनी के संचालकों को अपितु पाठकों को भी प्रभावित करता है। कम्पनी के संचालन में वह सर्वत्र एक नूतन दृष्टि का परिचय देता हुआ आज के मिल-मालिक एवं मजदूरों के संघर्ष की समस्या का मौलिक समाधान प्रस्तुत करता है। मजदूरों द्वारा आये दिन होने वाली हड़तालों एवं वेतन-वृद्धि की मांगों का वह एक ऐसा समाधान प्रस्तुत करता है जो आदर्शमूलक होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी है। आज गांधीवाद को एक ऐसे आदर्शवाद के रूप में ग्रहण किया जाने लगा है जो अपनी अतिवादिता के कारण जनसामान्य के लिए अव्यावहारिक एवं असामान्य प्रतीत होता है। किन्तु डा० संजय के माध्यम से इस एकांकी में लेखक ने गांधीवाद के उस पक्ष का उद्घाटन किया है जो आज भी यथार्थोन्मुख, व्यावहारिक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

इसी प्रकार दूसरे एकांकी, "इकाई" में राष्ट्र की भावात्मक एकता का आदर्श इसके नायक रामदास के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। रामदास स्वयं हिन्दू है, उसकी पत्नी सिक्ख परिवार से सम्बन्धित है और उसकी फर्म का मैनेजर एक मुस्लिम है। दूसरी ओर रामदास की पत्नी का भाई हरचरणसिंह तथा उसकी फर्म के मैनेजर मीरसाहब का लड़का मसऊद—दोनों साम्प्रदायिकता से ग्रस्त दिखाये गये हैं। एकांकी में ऐसी परिस्थितियों का आयोजन किया गया है जिससे साम्प्रदायिकता एवं प्रान्तीयता का विषैला रूप भली-भांति स्पष्ट हो जाता है, किन्तु अन्त में रामदास की सहिष्णुता के द्वारा इसका शमन भी सफलता-पूर्वक दिखाया गया है। "राष्ट्रीय एकता" को प्रतिपादित एवं ध्वनित करने की दृष्टि से यह एकांकी अत्यन्त महत्व-पूर्ण है।

अन्तिम एकांकी का शीर्षक "नर्तकी" है जिसमें स्वामी विवेकानन्द के जीवन से संबंधित एक घटना को अत्यन्त रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया है। कहा जाता है कि एक बार स्वामी जी जब खेतड़ी के महाराजा के यहां ठहरे हुए थे तो उनसे एक पेशेवर गायिका का गीत सुनने का अनुरोध किया गया। प्रारम्भ में तो उन्होंने अपनी अरुचि प्रदर्शित की किन्तु बाद में वे मान गये। गायिका ने सूरदास का प्रसिद्ध पद "प्रभु जी मोरे अवगुण चित न धरो" इस

१. तीन आमाम : रामकृष्ण कौशल; प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६; मूल्य ४.००

तन्मयता से गाया कि स्वामीजी भी उसमें तल्लीन हो गये। गीत की अगली पंक्ति—"समदर्शी प्रभु नाम तिहारो" ही समस्त एकांकी का केन्द्रीय विचार-सूत्र है। वस्तुतः कोई भी व्यक्ति नीच नहीं है—यही इस एकांकी का प्रतिपाद्य है जो भली-भांति प्रतिपादित हुआ है।

संक्षेप में तीनों एकांकी हमारे राष्ट्रीय जीवन के तीन—आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक—पक्षों की तीन व्यापक समस्याओं को चित्रित करते हुए उनका व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। किन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि कलात्मक दृष्टि से इनका महत्व कम है। थोड़ी सी ही रेखाओं से विभिन्न पात्रों के व्यक्तित्व को सजीव रूप प्रदान कर देने की कला में लेखक सिद्धहस्त है इसका प्रमाण प्रस्तुत एकांकियों के विभिन्न पात्रों के चित्रण में उपलब्ध होता है। "सत्याग्रह" के डा० संजय, विनीता और नीलिमा के व्यक्तित्व को जो सजीव एवं आकर्षक रूप प्रदान किया गया है, वह भुलाया नहीं जा सकता। इसी प्रकार "इकाई" में सेठ रामदास एवं सईदा का तथा अंतिम एकांकी में "नर्तकी" का व्यवितत्व लेखक की सूक्ष्म चरित्रांकन-कला को प्रमाणित करता है। साथ ही विभिन्न दृश्यों के आयोजन, वातावरण के निर्माण एवं संक्षिप्त किन्तु सशक्त संवादों के प्रयोग में भी लेखक ने एक सफल एकांकीकार की प्रतिभा एवं कुशलता का परिचय दिया है। अभिनेयता की दृष्टि से भी ये एकांकी सफल हैं।

(आकाशवाणी, शिमला, के सौजन्य से)

अहिन्दीभाषी राज्यों के हिन्दी लेखकों को पुरस्कार

अहिन्दीभाषी राज्यों के हिन्दी लेखकों को, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा उनकी हिन्दी कृतियों पर नकद पुरस्कार दिया जाता है। यह योजना १९६६-६७ में शुरू की गई थी और तब से १००० रुपये प्रत्येक के १३ प्रथम पुरस्कार तथा ५०० रुपये प्रत्येक के १३ द्वितीय पुरस्कार प्रति वर्ष दिये जाते हैं।

वर्ष १९७०-७१ के लिए ३६ पुस्तकें विचारार्थ प्राप्त हुई थीं, जिनमें से ग्यारह पुस्तकें पुरस्कार-योग्य निर्णीत हुई हैं—छह प्रथम पुरस्कार के लिए और पाँच द्वितीय पुरस्कार के लिए। पुरस्कृत पुस्तक, लेखक तथा उसकी मातृभाषा का विवरण क्रमशः निम्न प्रकार है: **प्रथम पुरस्कार**—कवच, श्री तरुण आजाद देका, असमी; भारतरत्न, श्री परेशनाथ बनर्जी, बांगला; देवयानी, डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर, मलयालम; सन्त नामदेव, श्री के० जी० वांखीद, मराठी; कविश्री सुब्रह्मण्य भारती, डॉ० पी० जयरामन, तमिल; सहस्रफण, श्री पी० वी० नरसिंहाराव, तेलुगु; **द्वितीय पुरस्कार**—इस हम्माम में, श्री हरिकृष्ण कौल, कश्मीरी; मिट्टी के फूल, श्री पी० वी० वज्रमट्टी, कन्नड़; नील कमल, डा० के० कुड्डुन्ना, कन्नड़; नौ साल छोटी पत्नी, रवीन्द्र कालिया, पंजाबी; अंतराल, डॉ० पी० आदेश्वर राव, तेलुगु।

लेखकों के लिए वि० वि० अनुदान आयोग द्वारा मासिक वृत्ति

भारतीय लेखकों द्वारा श्रेष्ठ विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तकों के लेखन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एक योजना स्वीकृत की है, जिसके अन्तर्गत पूर्व-स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के निमित्त विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, प्रविधि एवं अन्य विषयों पर पुस्तकें लिखने के लिए लेखकों को मासिक वृत्ति दी जायेगी। यह वृत्ति ५०० रुपये मासिक और प्रारम्भ में तीन वर्ष की अवधि के लिए होगी।

मैसूर में राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकें

मैसूर राज्य में अनिवार्य शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत ८,१५,००० से अधिक प्राइमरी स्कूल के बच्चों को राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकें निश्शुल्क दी जायेंगी। इस कार्यक्रम से, जिस पर ९.७ लाख रुपये व्यय होंगे, गरीब तथा अनुसूचित एवं आदिम जातियों के बच्चे लाभान्वित होंगे और पहली चार कक्षाओं में पढ़ने वाले कुल बच्चों का लगभग २७ प्रतिशत इस योजना के अन्तर्गत आ जायेगा।

केरल का पुस्तकालय संघ

केरल के पुस्तकालय संघ (ग्रन्थशाला संघम्) ने पिछले दिनों अपनी रजत जयन्ती मनाई। इस समय कुल मिलाकर ३,७०० पुस्तकालय संघ के सदस्य हैं, जिनमें मामूली साधनों वाले पुस्तकालयों से लेकर विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय तक हैं। संघ ने अपनी ओर से करीब २००० पुस्तकालय चालू किये हैं, जिनके पास १.२५ करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की ६७ लाख पुस्तकें हैं। केरल के हर

कस्बे में कम से कम दो और प्रति ३००० व्यक्तियों पर एक पुस्तकालय है।

भारतीय ग्रन्थसूची केन्द्र

इण्डियन बिब्लियोग्राफिक सैन्टर, बी-२ बिरदूपुर, वाराणसी-१, 'इण्डियन बुक्स १९७०' शीर्षक से एक ग्रन्थसूची प्रकाशित कर रहा है, जिसमें १९७० के दौरान भारत में अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित समस्त पुस्तकों का विवरण रहेगा।

सूरति मिश्र-ग्रन्थावली के प्रथम खण्ड का विमोचन

सूरति मिश्र रीतिकाल के प्रमुख कवि और आचार्य हैं। इनका एक भी ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं था। डॉ० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' ने उनके सभी ग्रन्थों का अन्वेषण किया है और सूरति मिश्र ग्रन्थावली चार भागों में संपादित की है। प्रथम खण्ड में उन्होंने 'भक्ति-विनोद' का सटिप्पण पाठालोचन पूर्वक सम्पादन किया है। दिल्ली विश्व-विद्यालय में हिन्दी के आचार्य डॉ० विजयेन्द्र स्नातक के करकमलों से उक्त ग्रन्थ का उदयपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० देवराज उपाध्याय की अध्यक्षता में विमोचनोत्सव सम्पन्न हुआ।

भाषा-विभाग पंजाब द्वारा डॉ० कृष्ण भावुक का शोध-कार्य पुरस्कृत

भाषा विभाग पंजाब ने डॉ० कृष्ण भावुक के स्वतन्त्र शोध-कार्य 'आधुनिक हिन्दी कवियों के शब्द-प्रयोग' शीर्षक पुस्तक को सन् १९७०-७१ की 'सर्वोत्तम साहित्यिक कृति' के ११०० रुपयों के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

डी० लिट्० की उपाधि

डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय को जबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा उनके शोधप्रबंध 'हिन्दी प्रेमाख्यान काव्यों के रचना निर्माण में प्रयुक्त लोकवार्ता तत्त्वों का स्वरूप विश्लेषण' पर डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की गयी है।

मौरीशस को पुस्तक-निर्यात की संभावनाएँ

मौरीशस स्थित भारतीय उच्चायुक्त के कार्यालय ने एक सर्वेक्षण कराया है जिससे प्रकट हुआ है कि मौरीशस में पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के निर्यात की काफी संभावनाएँ हैं। जो प्रकाशक मौरीशस को निर्यात में रुचि रखते हों वे इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए स्टेटिस्टीकल आफीसर, कैमीकल्स एण्ड एलाइड प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट प्रमोशन कौंसिल, वर्ल्ड ट्रेड सैन्टर, १४/१-बी, एजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-१ से पत्रव्यवहार कर सकते हैं।

अमरीकी पुरस्कार

अमरीकी राष्ट्रीय पुस्तक समिति द्वारा सौल बैलो को उनकी कथाकृति 'मि सैम्लर्स प्लैनेट' के लिए पुरस्कृत किया गया है। काव्य-पुरस्कार मोना वान डुयन को उनके काव्य संग्रह 'टु सी, टु टेक' के लिए प्रदान किया गया। जेम्स मैकग्रेगर बर्न्स की कृति 'रूजवेल्ट : दँ सोल्जर ऑफ फ्रीडम' को और फ्रांसिस स्टीगमुलर की फ्रांसीसी कलाकार, फिल्म निर्माता और लेखक के जीवन से सम्बन्धित कृति 'कॉकटो' को पुरस्कृत किया गया। बाल-साहित्य पुरस्कार लॉयड अलेक्जेंडर की पुस्तक 'द मारवलस मिसएडवेंचर्स ऑफ़ सेबेश्चियन' पर दिया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले

तीसरा ब्रसेल्स अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला इस वर्ष मार्च में सम्पन्न हुआ। पहली अप्रैल से चार अप्रैल तक बोलोंगा में बाल पुस्तक मेला सम्पन्न हुआ। जेरूसलेम में १९ से २५ अप्रैल तक पाँचवाँ जेरूसलेम अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला जेरूसलेम नगरपालिका द्वारा आयोजित किया गया था। पैरिस में २६ मई से ३१ मई तक 'नाइस फैंस्टिवल इन्टरनेशनल ड्यूलिवर' का आयोजन हो रहा है।

एक झलक

'नेशनल' के आगामी आकर्षण

विष्णु प्रभाकर / मेरे श्रेष्ठ रंग-एकांकी

प्रख्यात नाटककार श्री विष्णु प्रभाकर के आठ चुने हुए मंचीय एकांकी-नाटकों का संग्रह।

चम्बल की रक्तकथा / रामकुमार भ्रमर

चम्बल के बीहड़ों और खूंख्वार अपराधियों की रक्तरंजित कथाएँ...संस्मरण...डाकू-समस्या पर गंभीर विवेचना...तीखी आलोचना...और रोमांचक घटनाएँ। उपन्यास से भी अधिक रोचक। अपनी तरह की अनूठी पुस्तक।

यादवेन्द्रदत्त दुबे / आखेट

सुप्रसिद्ध शिकारी राजा जौनपुर श्री यादवेन्द्रदत्त दुबे के रोचक शिकार-संस्मरण। रविशंकर पंडित के रोमांचक एवं सजीव चित्रों से युक्त।

कृष्ण, मेरा पर्याय / मोहन निराश

पैंतीस चुनी हुई सशक्त कविताएं।

डा० सुषमा पाल / छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि

दिल्ली विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत महत्त्वपूर्ण शोध-ग्रन्थ।

भाषा-शिक्षण : कुछ नये विचार-बिन्दु / इन्दिरा नूपुर

भाषा-शिक्षण से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण पुस्तक।

श्रीकृष्ण / तोताराम

बच्चों के लिए रंगमंच पर खेलने योग्य चार मजेदार हास्य नाटक—हिरण्यकश्यप मर्डर केस, मरखना बैल, मांगपत्र और तोताराम।

हिमालय की लोककथाएं / किशोरीलाल वैद्य

हिमालय-प्रदेश की सात चुनी हुई रोचक लोक-कथाएं।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
अंसारी रोड, दिल्ली-६
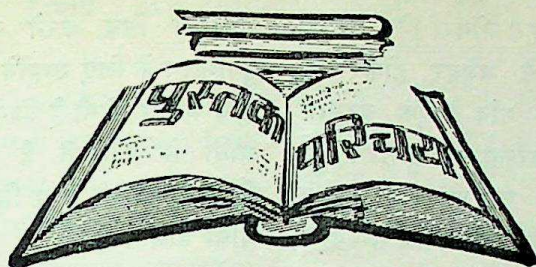
आलोचना

राधास्वामी सम्प्रदाय और साहित्य—ले. डॉ. सरलकुमारी; प्र. ओरिएन्टल पब्लिशर्स, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ २६५; मूल्य २५.०० ।

राधास्वामी मत का प्रवर्तन आगरे के लाला शिवदयालसिंह सेठ ने किया था । नाम से लगता है कि राधावल्लभ सम्प्रदाय के समान यह भी सगुणभक्ति को मानने वाला पंथ होगा । लेकिन वास्तव में यह सगुण और निर्गुण उपासना के मिले-जुले रूप को स्वीकार करके चला है । डॉ० रामकुमार वर्मा के शब्दों में, "एक ओर गुरु के आदर्शपूर्ण व्यक्तित्व के प्रति जो समर्पण का भाव है वह रागानुगा भक्ति की परम्परागत भावना से अधिक दूर नहीं है और दूसरी ओर 'सुरत-शब्द-योग, का सम्पूर्ण तथा व्यावहारिक वर्णन पुरातन योग की प्रत्येक धारा को स्पर्श करता चलता है ।"

राधास्वामी सम्प्रदाय के अनुयायी प्रायः सम्पूर्ण भारत में मिलते हैं और अनेक लोगों ने इस मत के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए विपुल साहित्य की रचना की है, लेकिन उस साहित्य के विवेचन-विश्लेषण की ओर अब तक किसी विद्वान का ध्यान आकर्षित नहीं हुआ था । डॉ० सरलकुमारी ने अपने प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में, जिस पर उन्हें आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की गयी है, इस सम्प्रदाय की दार्शनिक विचारधारा का विवेचन करते हुए इसके प्रभाव में रचे गये साहित्य का सम्यक् मूल्यांकन किया है । सारा शोधप्रबन्ध छह अध्यायों में विभक्त है । पहला अध्याय राधास्वामी मत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा उसके क्रमिक विकास से सम्बन्धित है । दूसरे अध्याय के अन्तर्गत इस मत के दार्शनिक तत्त्वों—जीव, जगत, ब्रह्म तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध का सम्यक् विवेचन है । तीसरे अध्याय में साधना-संबंधी कतिपय मुख्य सिद्धांतों की व्याख्या है जिनसे इस मत का वास्तविक स्वरूप समझने में सहायता मिलती है । चतुर्थ अध्याय में काव्यगत विवेचन और पंचम अध्याय में गद्य का स्वरूप विवेचित है । छठे तथा अन्तिम अध्याय में विस्तृत अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त निष्कर्ष द्वारा राधास्वामी मत का सम्यक् चित्र प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है ।

शोधप्रबंध का महत्त्व इस बात में है कि वह एक समसामयिक सम्प्रदाय का, जो सारे भारत में प्रचलित है, पहली बार सांगोपाग परिचय पाठकों को देता है । इस मौलिक कार्य के लिए डॉ० सरलकुमारी बधाई की पात्र हैं ।

उपन्यास

मोंगरा—ले० शिवशंकर शुक्ल; प्र० राजपाल एण्ड संस, कशमीरी गेट, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ ६६; मूल्य ३.५० ।

'मोंगरा' उपन्यास मूलतः छत्तीसगढ़ी बोली में लिखा गया है, जिसका हिन्दी रूपान्तर डॉ० नरेन्द्रदेव वर्मा ने प्रस्तुत किया है । उपन्यास की प्रज्ञापिका के अनुसार, 'गाँव-देहात में रहने वाले किसानों के सुखःदुख और उनके जीवन-संघर्ष का यहाँ बहुत ही आत्मीयतापूर्ण चित्रण हुआ है, जो कई अर्थों में पूरे भारत के गाँवों का चित्रण कहा जा सकता है ।' कथा के पूर्वार्द्ध में सचमुच ग्राम्य जीवन की वास्तविक स्थितियों को उभारा गया है परन्तु उत्तरार्द्ध में स्वतंत्र भारत की जनता की तथाकथित आशा-आकांक्षा उत्साह और खुशी का चित्रण करने के लिए एक ऐसा यूटोपिया प्रस्तुत किया गया है जो किसी भी प्रकार भारत के ग्राम्य जीवन का यथार्थ नहीं कहा जा सकता । मंगलू

ऊँची जाति का पढ़ा-लिखा एक गरीब गृहस्थ है, परिवार में पत्नी है, बच्चे हैं और जवान बहन मोंगरा है। बेकारी के फलस्वरूप कमरतोड़ गरीबी से मजबूर होकर वह मोंगरा का विवाह फिरन्ता नामक गाँव के एक बदमाश व्यक्ति से कर देता है। मोंगरा फिरन्ता को सुधारने का प्रयत्न करती है और बहुत हद तक उस प्रयत्न में सफल भी होती है। यहाँ तक उपन्यास की कथा यथार्थ से नाता जोड़े रखती है। लेकिन इसके आगे जिस तरह मंगलू को सुखी-सम्पन्न बना दिया गया है वह एक चमत्कार से ज्यादा कुछ नहीं लगता जिसका गाँवों की वास्तविकता से कोई ताल्लुक नहीं है। फिर भी उपन्यास रोचक है इसमें कोई सन्देह नहीं। आंचलिक प्रभाव को बनाये रखने के चक्कर में अनुवादक ने जो छत्तीसगढ़ी के कुछ शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है वह अवश्य खटकता है और पाठकों को उनका अर्थ समझने में कठिनाई होती है।

एक चौराहा चार मंजिल—ले० रामकुमार भ्रमर; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस; अंसारी रोड़, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १४४; मूल्य ४.५०।

प्रस्तुत उपन्यास, जिसे प्रकाशक द्वारा प्रतीकात्मक बताया गया है, वास्तव में तीन भिन्न आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति वाले जोड़ों की प्रेमकहानी है। इन कहानियों में घटनाएँ कुछ इस ढंग से घटित होती हैं कि जोड़े बिछुड़ जाते हैं और फिर कुछ ऐसी स्थितियाँ सामने आती हैं कि वे जोड़े दिली तौर पर या तो एक-दूसरे के नजदीक आ जाते हैं या, जैसा कि चावली और सेठ गोविन्दराम की कथा में होता है, हमेशा के लिए एक-दूसरे से कट जाते हैं। इस उपन्यास में अगर कुछ प्रतीक है तो सिर्फ यह कि समाज को चौराहा बनाया गया है जिस पर प्रेमी मिलते हैं, बिछुड़ते हैं और फिर मिलते हैं।

इस उपन्यास के बारे में एक दिलचस्प बात यह भी है कि लेखक ने, बकौल खुद, इस उपन्यास की रचना ख्वाजा अहमद अब्बास के उपन्यास 'चार दिल : चार राहें' पर वैचारिक मतभेद को लेकर लिखा है। अब्बास साहब ने जहाँ प्रेमियों के बिछोह के लिए किन्हीं सामाजिक विषमताओं, कुरीतियों और परम्पराओं के अन्याय को दोषी ठहराया था वहाँ भ्रमर जी ने चौराहे से एक वक्तव्य दिलवाकर समाज को निरपराध और व्यक्ति को ही अपराधी सिद्ध करने की कोशिश की है। प्रेमियों के पुनर्मिलन के लिए उन्होंने जिन स्थितियों की अवतारणा की है वे अवश्य ऐसी है जिन्हें सहज कहा जा सकता है। भाषा में रवानगी है लेकिन कहीं-कहीं उर्दू के चलते-फिरते शब्दों की जगह हिन्दी के शब्दों का प्रयोग प्रवाह में बाधा डालता है।

आत्मकथा : संस्मरण

नीड़ का निर्माण फिर—ले. डा. हरिवंशराय बच्चन; प्र. राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ ३६४, मूल्य १२.००।

'नीड़ का निर्माण फिर' बच्चन की आत्मकथा का दूसरा भाग है। पहला भाग क्या 'भूलूँ क्या याद करूँ' काफी चर्चित रहा है, जो १९३६ तक की घटनाओं-रचनाओं पर समाप्त हुआ था। प्रस्तुत खण्ड में नवम्बर १९३६ से १९५१ तक की घटनाएँ-रचनाएं समाहित हैं। पहली पत्नी श्यामा की मृत्यु और उसके बाद निराशा तथा अवसाद का भयावह अंधकार, जिसने कवि से 'निशानिमन्त्रण' के मार्मिक गीत लिखवाये, इस खण्ड की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं। फिर बच्चन अवसाद के अंधकार से उबरते हैं और तेजी उनके जीवन में आती है—नीड़ का फिर से निर्माण हो जाता है। इन सब घटनाओं की कवि के मन पर जो प्रतिक्रिया हुई और उस प्रतिक्रिया ने कवि के भावों-विचारों को जिस तरह प्रभावित किया उसकी बहुत ही निश्छल अभिव्यक्ति 'नीड़ का निर्माण फिर' में मिलती है। इस आत्मकथा में उन मनस्थितियों का विशद अंकन हुआ है जो इस काल की कविताओं का प्रेरणा-स्रोत रहीं। यों तो हर साहित्यकार की जीवनी उसकी कृतियों से अविच्छिन्न होती है और उसके जीवन की घटनाओं से उसकी रचनाओं की पृष्ठभूमि स्पष्ट होती चलती है लेकिन यह कार्य बच्चन की इस आत्मकथा में जितने सहज और मार्मिक ढंग से सम्पन्न हुआ है वह कम ही आत्म-कथाओं में देखने को मिलता है। पहले खंड के विषय में कई विद्वानों-साहित्यकारों ने कहा था कि उसमें कथा-जैसी रोचकता है। यह बात 'नीड़ का निर्माण फिर' के बारे में भी पूरी तरह सच है।

यौवन के द्वार पर—ले. डा. देवराज उपाध्याय; प्र. सौभाग्य प्रकाशन, उदयपुर; आकार डिमाई; पृष्ठ १२६, मूल्य ५.०० ।

प्रस्तुत पुस्तक में डा. देवराज उपाध्याय के आत्म-कथात्मक संस्मरण हैं। लेखक यौवन के द्वार पर खड़ा होकर एक नजर अपने बचपन पर डालता है और एक नजर भावी जीवन पर डालता है। यह समय 'जीवन के समरक्षेत्र में संकटों एवं अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने के लिए शक्ति-संचय करने की तैयारी' का होता है। साथ ही भावी जीवन के प्रति एक उमंग, एक उल्लास व्यक्ति के मन में रहता है। उपाध्यायजी के प्रस्तुत आत्म-कथात्मक संस्मरणों में यह विशेषता पूरी तरह उजागर हुई है। इसमें कहीं भी निराशा या अवसाद की बात नहीं है। 'यदि आई भी है तो वह विकसित होने वाली जवानी की धूमधाम में छिप गयी है।' किशोरावस्था में ही उपाध्यायजी राष्ट्रीय आन्दोलन के सम्पर्क में आ गये थे और वैयक्तिक आचरण में वे आदि से अन्त तक शुद्धतावादी रहे हैं लेकिन साहित्यकार होने के कारण सौन्दर्यप्रेम का भी उनमें अभाव नहीं रहा। यही कारण है कि प्रस्तुत संस्मरणों में संयमित आचरण की अभिव्यक्ति है लेकिन साथ ही रस का एक अविरल स्रोत भी प्रवाहित है। भाषा-शैली पर लेखक के गम्भीर व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट है। पुस्तक सर्वथा पठनीय है।

नौमहले का शेर—ले० कमल शुक्ल; प्र० सन्मार्ग प्रकाशन, १६ यूवी, बँगलो रोड, दिल्ली-७; आकार क्राउन; पृष्ठ ८०; मूल्य २.५० ।

मुगल बादशाहों ने अपनी सैनिक शक्ति को मजबूत करने और शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित करने में राजपूतों से जबरदस्त सहायता ली थी और वे अपने इन सहायकों को नाराज करके अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहते थे। राजपूत भी मुगल बादशाहों की खैर-ख्वाही में जान की बाजी लगा देते थे, लेकिन उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाई जाती थी तो खूँख्वार हो उठते थे। प्रस्तुत पुस्तक में शाहजहाँ और उसकी सेना के एक उच्च पदाधिकारी अमरसिंह राठौर के बीच हुई ऐसी ही एक टक्कर का वर्णन है। अपने स्वाभिमान पर चोट लगती देखकर अमरसिंह ने मुगल बादशाह को वह चुनौती दी कि बड़े-बड़े मुगल सरदार भी परास्त हो गये और अन्त में चाहे अमरसिंह मारा गया लेकिन उसने मुगल सेना के दाँत खट्टे कर दिये और शाहजहाँ को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ी। पुस्तक शूरवीरता के भावों से ओतप्रोत और पठनीय है।

रानी वीरमती—ले० कमल शुक्ल; प्र० सन्मार्ग प्रकाशन, १६ यूवी, बँगलो रोड, दिल्ली-७; आकार क्राउन; पृष्ठ ७२; मूल्य २.५० ।

प्रस्तुत पुस्तक में धारा नगरी के राजकुमार जगदेव और उसकी पत्नी रानी वीरमती, जो टोंकटोंडा की राजकुमारी थी, की कहानी वर्णित है। राजकुमार जगदेव ने अपने पिता के दुर्व्यवहार से अप्रसन्न होकर धारा नगरी को छोड़ दिया और धन कमाने के लिए पाटन चला गया। रानी वीरमती भी उसके साथ गई, जहाँ अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए उसने अपूर्व शूरवीरता का परिचय दिया। उसकी उस शूरवीरता के कारण ही पाटन के राजा ने प्रसन्न होकर उसके पति को अपने दरबार में एक उच्च पद पर नियुक्त कर लिया और उसे अपनी धर्म की बेटी बना लिया। पुस्तक आदि से अन्त तक रोचक है और प्रेरणा देने वाली है।

बाल साहित्य

अमर शहीद ऊधम सिंह—ले० आचार्य दिङ्.नाग; प्र० ज्ञान भारती बाल पाकेट बुक्स, लखनऊ; पृ० १२८, मूल्य १.०० ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारी शहीद ऊधम सिंह की जीवनी को लेखक ने आत्मकथा शैली में एक रोचक उपन्यास के रूप में लिखा है। आज के बच्चों के लिए भारत की आजादी के लिए लड़ने और बलिदान होने वाले लोग इतिहास की सामग्री मात्र हैं किन्तु हम लोग उन्हें शिवाजी, राणा प्रताप, झाँसी की रानी की तरह अमर और चिरस्मरणीय बनाए रख सकते हैं। जलियांवाला बाग के नृशंस हत्याकाण्ड के मुख्य नायक जनरल डायर को मारने के लिए पंजाब का एक युवक ऊधम सिंह नाम से लन्दन पहुँचा और बीस वर्ष बाद उसने शेर की

माँद में अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

इन नन्ही-मुन्नी पाकेट बुक्स का स्तर ऊँचा और प्रशंसनीय है।

रामकृष्ण परमहंस – ले० पं० राज; प्र० राष्ट्रभाषा प्रकाशन, दिल्ली-३२; आकार क्राउन; पृष्ठ ८३; मूल्य २.०० ।

प्रस्तुत पुस्तक में स्वामी रामकृष्ण परमहंस का संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत की गयी है। भाषा-शैली सरल और प्रवाहपूर्ण है और घटनाक्रम रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बच्चे अवश्य ही इस पुस्तक को पसन्द करेंगे और भारत के महान साधक तथा भक्त स्वामी रामकृष्ण के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

बुद्धि का चमत्कार, ले० भगवतशरण उपाध्याय प्र० राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली; पृ० ३५, आ० १७×२७/८, मूल्य १.५० ।

शेर बड़ा या मोर, ले० भगवतशरण उपाध्याय, प्र० उपरोक्त; पृ० २२, आ० १७×२७/८, मूल्य १.५०।

बिना विचारे जो करे, ले० भगवतशरण उपाध्याय, प्र० उपरोक्त; पृ० २८, आ० १७×२७/८, मूल्य १.५०।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध समालोचक, लेखक व इतिहासज्ञ डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का बाल-साहित्य में भी उतना ही विशद योगदान है जितना गम्भीर विषयों और शोध कार्यों में। उपरोक्त तीनों पुस्तकों में उन्होंने प्राचीन आख्यानों से कुछ प्रचलित, अप्रचलित कथाएं चुन कर सरल व सरस रूप में प्रस्तुत की हैं। अनेक कहानियाँ ऐसी हैं जो पहले पढ़ने में नहीं आई किन्तु बार-बार दोहराई जाने वाली कथाओं को पुनः चुनना अच्छा नहीं लगता।

तीनों पुस्तकों के रंगीन चित्रों, छपाई की सफाई और कमनीय आवरणों की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। पुस्तकों के मूल्य भी अखरने वाले नहीं है।

विविध

भारतीय चाय—ले० भगवान सिंह; प्र० उपरोक्त; आकार क्राउन; पृष्ठ १३५; मूल्य ३.७५ ।

चाय भारत के महत्त्वपूर्ण उत्पादनों में से एक है और पूर्व तथा पश्चिम के प्रायः सभी देशों का लोकप्रिय पेय है। देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने में जूट सबसे आगे है और चाय का दूसरा नम्बर है। इतना होने पर भी चाय के उत्पादन, व्यापार और आर्थिक महत्त्व से परिचित करानेवाली कोई पुस्तक हिन्दी भाषा में नहीं थी। इस दृष्टि से श्री भगवान सिंह ने प्रस्तुत पुस्तक लिखकर हिन्दी का बड़ा उपकार किया है। दो-तीन साल पहले वे भारतीय चाय बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके हैं और इस विषय के विशेषज्ञ हैं। फलतः उनकी यह पुस्तक अत्यन्त प्रामाणिक है और चाय से सम्बन्धित हर तरह की जानकारी इसमें मिल जाती है। 'चाय की कहानी' शीर्षक पहला अध्याय तो, जिसमें चाय के उद्भव और विकास का इतिहास प्रस्तुत किया गया है, किसी कहानी से कम रोचक नहीं है। अगले अध्याय में उन क्षेत्रों के भूगोल और जलवायु आदि का पूर्ण परिचय दिया गया है जहाँ चाय पैदा होती है। फिर चाय की खेती के तरीकों, चाय-प्रक्रियायन की विधियों, चाय की किस्मों आदि पर प्रकाश डालते हुए चाय मशीनरी के विकास और चाय की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी प्रस्तुत की गई है। एक अध्याय में विभिन्न देशों में चाय की जो आदतें प्रचलित हैं उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इस प्रकार अपने लघु आकार में यह पुस्तक सचमुच हिन्दी के एक अभाव की पूर्ति करती है।

प्रकाशक-बन्धुओं से

'प्रकाशन समाचार' का जुलाई अंक 'दक्षिण भारत अंक' के रूप में प्रकाशित किया जायेगा, जिसमें दक्षिण भारतीय लेखकों द्वारा हिन्दी में लिखी गई कृतियों और दक्षिणी भाषाओं से हिन्दी में अनूदित कृतियों का परिचय प्रस्तुत किया जायेगा। यदि आपने ऐसी पुस्तकें प्रकाशित की हों तो उनके और लेखकों-अनुवादकों के नाम तथा मूल्य लिखकर यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें। १५ जून १९७१ के बाद प्राप्त होनेवाली सूचियों को 'प्रकाशन समाचार' में स्थान देना सम्भव न हो सकेगा।

—सम्पादक
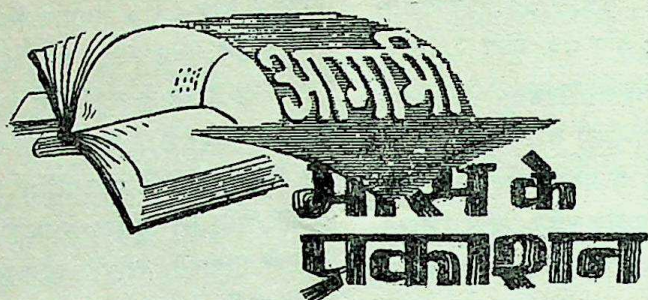
भारत प्रकाशन मन्दिर, सुभाष रोड, अलीगढ़

—भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र (आलोचना), राजनाथ शर्मा

—भाषाविज्ञान परिचय (भाषाविज्ञान), कुन्दन लाल उप्रेती

—साकेत (टीका एवं आलोचना), राजनाथ शर्मा

—कामायनी (टीका एवं आलोचना), राजनाथ शर्मा

राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

—आँख की चोरी (उपन्यास), कृश्नचन्दर

—रायकमल (उपन्यास), ताराशंकर वन्द्योपाध्याय

—मेरी प्रिय कहानियाँ (कहानी), बलवंतसिंह

—रेडार (ज्ञान-विज्ञान), गोपीनाथ श्रीवास्तव

—कश्मीर (भारतदर्शन), जीवनलाल प्रेम

—नागालैंड (भारतदर्शन), जयन्त वाचस्पति

रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा

—अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (राजनीति), डॉ० पीताम्बरदत्त कौशिक

—प्रायोगिक रसायन (रसायनशास्त्र), आर० के० स्याल एवं गुप्त

—परमाणु भौतिकी (भौतिकी), जगदीशचन्द्र उपाध्याय

—शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त (शिक्षा), दिनेशचन्द्र भारद्वाज

राष्ट्रभाषा प्रकाशन, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

—स्वामी रामतीर्थ (जीवनी), पं० राजकुमार

—इन्दिरा गाँधी (जीवनी), पं० राजकुमार

—स्वामी विवेकानन्द (जीवनी), पं० राजकुमार

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

—तुलनात्मक शिक्षा (शिक्षा), डॉ० सरयूप्रसाद चौबे

—भूगोल अध्यापन (शिक्षा), जगदीशप्रसाद वर्मा

—सामाजिक अध्ययन का शिक्षण (शिक्षा), सद्गुरुशरण

—मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी (शिक्षा), डॉ० प्रीति वर्मा

विवेक प्रकाशन, अमीनाबाद, लखनऊ

—रूस के महान उपन्यासकार (आलोचना), डॉ० प्रताप-नारायण टंडन

—संस्कृत साहित्य का इतिहास ("), डॉ० कमल-नारायण टंडन

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा० लि०, बम्बई-२

—ज्वालामयी (उपन्यास), गजेन्द्रकुमार मित्र

—स्त्री (उपन्यास), विमल मित्र

साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर-१

—भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और संविधान (राजनीति), डॉ० बी० एम० शर्मा

—प्राचीन भारत की कला (कला), डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

—उच्च शिक्षा के अभिनव आयाम (शिक्षा), प्रो० श्रीप्रकाश
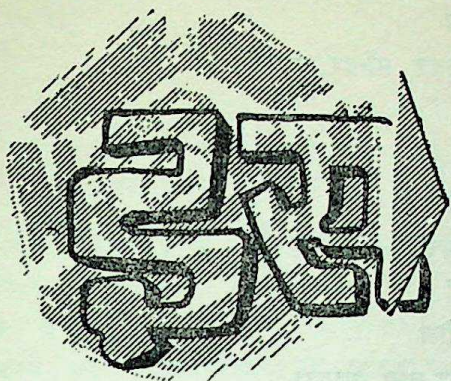
आलोचना

डॉ० कुन्दनलाल उप्रेती, लोक साहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मन्दिर, सुभाष रोड, अलीगढ़ १०.००
डॉ० नजीर मोहम्मद, कबीर के काव्य रूप, " " " " १५.००
डॉ० मालारविन्दम चतुर्वेदी, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा तथा गोविन्द गिल्ला भाई, भारत प्रकाशन मन्दिर, सुभाष रोड, अलीगढ़ १८.००
डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सैना, आँसू भाष्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ७.५०
विश्वम्भर अरुण, रहीम सतसई, " " " " १.५०

उपन्यास

मन्मथनाथ गुप्त, षड्यन्त्र, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली ७.००
रामकुमार भ्रमर, काँचघर, " " " " ७.००
भगवती प्रसाद वाजपेयी, दो बहनें, ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर ५.००
भगवती प्रसाद वाजपेयी, आज और अभी, " " " ७.००
विशेश्वर प्रसाद विशेश्वर, मुक्तामाल, " " " १०.००
कमल शुक्ल, नीलम पलेस, सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहरनगर, दिल्ली ५.००
बनारसीदास, अरमान, " " " " ५.५०
रघुनाथ वामन दिघे, माँ खेतों में बसती है, राष्ट्रभाषा प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली-३२ १५.००
धूमकेतु, पराधीन गुजरात, वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा० लि०, बम्बई-२ १०.५०

कहानी

अमृतराय, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६ ५.००

व्याकरण

श्यामबिहारी विरागी, हिन्दी सार, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा-३ २.५०
भूदेव शास्त्री, हिन्दी व्याकरण और रचना, " " " ३.७०

कला

राजेन्द्र वाजपेयी, आधुनिक कला, साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर ८.००

इतिहास

रमेशचन्द्र वर्मा, भारतीय संस्कृति का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा ५.००

शिक्षा

गुरुसरनदास त्यागी, सामाजिक अध्ययन का शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ४.००
डॉ० रामशकल पाण्डेय, शिक्षा दर्शन, " " " १०.००
केशवप्रसाद, विद्यालय व्यवस्था, " " " ४.००

मनोविज्ञान

भाई योगेन्द्रजीत, बाल मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ८.००
डॉ० एस० एस० माथुर, शिक्षा मनोविज्ञान, " " " १२.५०

भूगोल

विश्वनाथ तिवारी, भारत का भौगोलिक स्वरूप, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा १६.००

भौतिकी

जगदीशचन्द्र उपाध्याय, तकनीकी भौतिकी, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ८.००
राजेन्द्र सक्सेना एवं अवतारसिंह, आंकिक भौतिकी, " " " ६.००
जगदीशचन्द्र उपाध्याय, नवीन यांत्रिकी, " " " १०.००

बाल साहित्य

भगवतशरण उपाध्याय, शेर बड़ा या मोर, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६ १.५०
भगवतशरण उपाध्याय, बुद्धि का चमत्कार, " " " १.५०
भगवतशरण उपाध्याय, बिना बिचारे जो करे, " " " १.५०
व्यथित हृदय, हे बच्चो तुम्हें प्रणाम, राष्ट्रभाषा प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली-३२ ३.००
पं० राजकुमार, रामकृष्ण परमहंस, " " " " २.००

विविध

आचार्य विनयमोहन शर्मा, दीर्घायु के रहस्य, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा ४.००
हरिवंशराय बच्चन (सं०), बच्चन के नाम पंत के दो सौ पत्र, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-६ १०.००
हरिराम, हिमाचल गौरव, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७ २.००
प्रेमा अवस्थी एवं दयाशंकर शास्त्री, स्वप्नवासवदत्तम, साहित्य निकेतन, कानपुर-१ ६.५०

शीघ्र प्रकाश्य

निराला की साहित्य-साधना का द्वितीय खण्ड

इस खंड में राजनीतिक, सामाजिक, दार्शनिक विचारधारा का विवेचन है जिससे विदित होगा कि निराला ने अपने युग की समस्याओं पर कितनी गहराई से विचार किया था !

महाकवि निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने में सहायक एक और सद्यः प्रकाशित कृति

निराला के पत्र

सं० आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

महाकवि के जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे गये पत्र, जानकीवल्लभजी की विस्तृत भूमिका और पादटिप्पणियों सहित ।

मूल्य १८.००

डा० सुभाष काश्यप एवं विश्वप्रकाश गुप्त

राजनीति कोश

राजनीति शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों, शब्दबंधों का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद और भारतीय सन्दर्भों में उनकी विस्तृत व्याख्या ।

राजनीतिशास्त्र पर हिन्दी में यह विश्वकोश के ढंग की पहली और अत्यन्त प्रामाणिक कृति है ।

शीघ्र प्रकाश्य

दिल्ली-६ पटना-६

राजकमल प्रकाशन

श्रीमती शीला सन्धू, मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ८ फैज बाजार, दिल्ली, के लिए नवीन प्रेस यूनिट नं० २, इण्डस्ट्रियल एस्टेट ओखला, नई दिल्ली-२० में मुद्रित।

प्रकाशन समाचार

जून १९७१

आपकी प्रिय पुस्तकों के

चिर-प्रतीक्षित

अभिनव संस्करण

बाबा बटेसरनाथ

●

नागार्जुन

●

जमींदारी उन्मूलन के बाद उत्तर भारत के जीवन में पैदा होने वाली हिलोरों का सजीव, मनोरंजक और यथार्थ निरूपण इस उपन्यास में हुआ है। मूल्य ६.५०

जय सोमनाथ

●

क. मा. मुन्शी

●

प्रस्तुत उपन्यास भारतीय इतिहास के उस युग का संस्मरण है जब सोमनाथ के विश्वविख्यात मन्दिर का गज़नी के महमूद के हाथों पतन हुआ और इस तरह यवनों द्वारा हमारी संस्कृति को एक असह्य धक्का सहना पड़ा। साहित्य-जगत को मुंशीजी की अमूल्य देन। मूल्य १२.००

जलती झाड़ी

●

निर्मल वर्मा

●

'नई कहानी' के पाठकों के लिए एक अविस्मरणीय कृति। प्रस्तुत है यह तीसरा संस्करण, जो उसकी लोकप्रियता का अकाट्य प्रमाण है। मूल्य ६.५०

मेघदूत

●

वासुदेवशरण अग्रवाल

●

महाकवि कालिदास की अमर काव्य-कृति 'मेघदूत' की विवेचना, मूल और उसकी हिन्दी टीका सहित। मूल्य ८.००

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली-६ पटना-६

शीघ्र प्रकाश्य

मनोविज्ञान की विश्वविख्यात पुस्तक का

चिरप्रतीक्षित

नया संशोधित-परिवर्धित संस्करण

मनोविज्ञान

मानवी समायोजन के मूल सिद्धान्त

नारमन एल॰ मन

मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के लिए
सर्वथा अपरिहार्य पुस्तक

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६
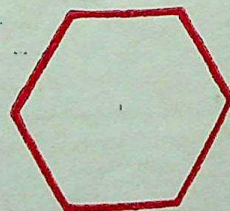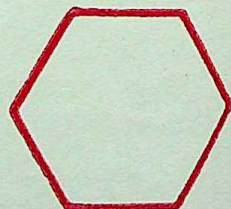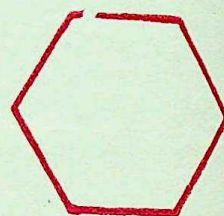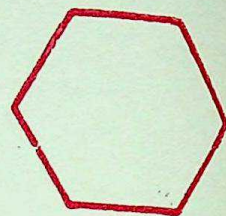
हमारे प्रकाशन
अगस्त, १९७१

व्यावहारिक पर्याय-कोश

सम्पादक

महेन्द्र चतुर्वेदी : ओम्प्रकाश गाबा

अकारादि क्रम से चुने हुए शब्दों के वर्गीकृत पर्यायों, विपर्यायों तथा उनसे सम्बन्धित विशिष्ट प्रयोगों मुहावरों, कहावतों, सूक्तियों, उद्धरणों इत्यादि का व्यवहारोपयोगी संकलन...

अनु० मूल्य : पन्द्रह रुपये

जोड़ादीघी के चौधरी

एक ऐतिहासिक बंगला-उपन्यास

प्रमथनाथ विशी

'लाल क़िला' और और 'कैरी साहब का मुंशी' के यशस्वी लेखक एवं बंगला के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यास-शिल्पी प्रमथनाथ विशी का बंगला में बहुचर्चित उपन्यास...ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दौर में बंगाल के ज़मींदारों की जघन्यताओं का हृदय-द्रावक चित्र...प्रतिशोध, हिंसा-प्रतिहिंसा से ओत-प्रोत एक कालजयी चरित्र-दीर्घा, प्लासी के युद्ध में बंगाल की आंतरिक व्यवस्था की दारुण गाथा...

अनु० मूल्य : दस रुपये

और साथ में

विमल मित्र का प्रसिद्ध उपन्यास

कगार और फिसलन

(द्वितीय संस्करण)

मूल्य : छः रुपये

२२०३, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६

इस मास के नये प्रकाशन

भारतपुत्र नौरंगीलाल (हास्य-व्यंग्य) : श्री अमृतलाल नागर की हास्य-व्यंग्य से भरपूर बहुचर्चित कहानियों का संकलन। इसमें लेखक ने पाठक-मन को गुदगुदाने वाली भाषा में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य किया है।

६.००

पाकिस्तानी जेलों में तीन वर्ष (संस्मरण) : सन् '६६ में पाकिस्तानियों ने एक निरपराध युवक श्री त्रिलोकचन्द का बलात् अपहरण कर तीन वर्ष तक जेलों में बन्द रखा। इन वर्षों में इन पर पाकिस्तानियों द्वारा किए गए जोर-जुल्म तथा अत्याचार की कहानी स्वयं इन्हीं की ज़बानी प्रस्तुत पुस्तक में अत्यन्त सशक्त तथा मार्मिक भाषा में वर्णित है।

६.००

सूखा सैलाब (उपन्यास) : निर्मला वाजपेयी का नवीनतम उपन्यास। यह आधुनिक विदेशी सभ्यता की मृगतृष्णा में फँसी एक आदर्श, सुशील, भारतीय नारी के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी है। भाषा-शैली की सुघड़ता तथा सुन्दर कथानक के कारण यह एक बेजोड़ कृति बन पड़ी है।

२.५०

समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (उपन्यास) : अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त लेखक जुले वर्न की कृति का सरल हिन्दी रूपान्तर। समुद्री दुनिया के जीव-जन्तुओं तथा रहस्यों की झाँकी अत्यन्त सुबोध भाषा में प्रस्तुत करता यह उपन्यास शुरू से अन्त तक रोचक है।

२.००

भारत-दर्शन माला की नई पुस्तकें

नागालैण्ड : जयन्त वाचस्पति ३.००

कश्मीर : जीवनलाल 'प्रेम' ३००

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली से प्रकाशित

सम्पादक : शीला संधू

वर्ष १८ ● अंक १० ● जून, १९७१
वार्षिक ४.००; विदेशों में ८.००; एक प्रति ०.४०

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला १९७२

वर्ष १९७२ अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस सिलसिले में भारत सरकार ने नई दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-मेला आयोजित करने का निश्चय किया है जिसके संयोजन का दायित्व नेशनल बुक ट्रस्ट को सौंपा गया है। यह मेला २२ जनवरी १९७२ से ६ फरवरी १९७२ तक चलेगा।

यह पहला अवसर है जब भारत में अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन किया जा रहा है। देश के पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय को इससे निश्चय ही बड़ी प्रेरणा मिलेगी किन्तु यह बात स्वीकार करने में किसी को भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि ऐसे अवसरों का राष्ट्रीय महत्त्व है अतः इनकी सफलता के लिए राष्ट्रीय प्रयत्न अपेक्षित है। अकेले किसी सरकारी अथवा अर्ध-सरकारी एजेंसी के बल पर, निजी क्षेत्र का सक्रिय सहयोग लिये बिना, इनकी सफलता संदिग्ध रह सकती है और इस सन्दर्भ में निजी क्षेत्र का छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा हर प्रकाशक महत्त्वपूर्ण है।

इस पुस्तक मेले के सन्दर्भ में एक बात यह ध्यान रखने की है कि आर्थिक दृष्टि से पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय की तुलना अन्य औद्योगिक व्यवसायों के साथ नहीं का जा सकती और दूसरे उद्योग इस प्रकार की प्रदर्शिनियों में विज्ञापन तथा साज-सज्जा एवं स्टाल के लिए जगह लेने पर जितना खर्च कर सकते हैं उतना पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय नहीं कर सकता। पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय के अन्तर्गत भी भारतीय और विदेशी प्रकाशकों में अन्तर है। भारतीय प्रकाशकों की तुलना में विदेशी प्रकाशक कहीं अधिक सम्पन्न हैं। अतः मेले के संयोजकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय प्रकाशकों के लिए किराये की दर ऐसी न हो जिसे वहन करने में वे असमर्थ हों। साथ ही साज-सज्जा आदि के लिए सलाह देने वाली एक एजेंसी भी स्थापित की जा सके तो बहुत अच्छा हो, क्योंकि भारतीय प्रकाशकों के लिए एक तो व्यक्तिगत रूप से इस मद पर ज्यादा खर्च करना सम्भव नहीं होगा और दूसरे इस क्षेत्र में उनका अनुभव भी ज्यादा नहीं हैं क्योंकि पुस्तक-मेलों की परम्परा भारत में अभी शुरू ही हुई है और अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-मेला तो यह पहला ही हो रहा है। लाइपजिग मेले में, जिसकी परम्परा बहुत पुरानी है, भाग लेने वाले अनुभवी और सम्पन्न प्रकाशक नई दिल्ली में आयोजित होने वाले इस मेले में भाग लेंगे और उनके सामने भारतीय प्रकाशकों का हीन प्रदर्शन नहीं होना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष-१९७२

दीनानाथ मल्होत्रा

उपसभापति, यूनेस्को अन्तर्राष्ट्रीय
पुस्तक वर्ष-संयोजन समिति

६ नवम्बर १९७० को यूनेस्को की साधारण सभा के सोलहवें अधिवेशन में सन् १९७२ को अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष घोषित करने का निर्णय किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष का उद्देश्य समाज में पुस्तकों के योगदान पर ध्यान केन्द्रित करना है। आज पुस्तकें जन-सम्पर्क का प्रधान माध्यम बन गई हैं। पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण और वितरण की तकनीक में इतना अधिक विकास हुआ है कि उसकी वजह से अच्छी से अच्छी पुस्तकें अधिक से अधिक पाठकों तक सस्ते मूल्य पर पहुँचा सकना उत्तरोत्तर सम्भव होता जा रहा है। इसका परिणाम वस्तुतः पुस्तक-क्रान्ति के रूप में हुआ है।

साथ ही पुस्तकों के पाठकों की संख्या में भी बहुत अधिक वृद्धि हुई है। जनसंख्या में अपार वृद्धि, शिक्षा के प्रसार और आराम के समय में वृद्धि के फलस्वरूप पुस्तकों का क्षेत्र व्यापक हुआ है: वितरण के नए-नए तरीकों का अनुकरण और साथ ही पुस्तकालयों के विस्तार, विशेषकर स्कूल और सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं के फलस्वरूप पुस्तकें अधिकाधिक उपलब्ध होने लगी हैं। जहाँ तक जन माध्यम का सम्बन्ध है, पुस्तक ज्ञान का एक अनिवार्य साधन सिद्ध हुई है। टोकियो (जापान) और विश्व के अन्य भागों में हुई यूनेस्को की क्षेत्रीय बैठकों में यह स्पष्ट हो गया है कि विकासशील विश्व में इस तरह की एक तीव्र इच्छा व्याप्त हो गई है कि आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए पुस्तकों के अधिकाधिक प्रभावी उपयोग की दिशा में एक नए सुनियोजित ढंग से प्रयास किया जाए। अस्तु, सन् १९७२ को अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष घोषित किया गया है और यह आशा की जाती है कि उसका गहन प्रभाव १९७२ की सीमाओं को भी लाँघ जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के दौरान पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण और वितरण के लिए आरम्भ किये गये उद्यमों को द्वितीय विकास दशाब्दी की योजनाओं से जोड़ा जा सकता है जिससे कि पुस्तकें १९७० के दशक में आर्थिक व सामाजिक प्रगति में अपना पूर्ण योगदान दे सकें।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के लिए उक्त प्रयोजन से यूनेस्को ने एक योजना समिति गठित की जिसकी बैठक यूनेस्को हाउस, पैरिस, में इस वर्ष १३ अप्रैल से १६ अप्रैल तक चली। इस बैठक में आठ स्वतन्त्र पुस्तकविशेषज्ञों ने भाग लिया। इन विशेषज्ञों का चयन यूनेस्को के महा-निदेशक ने अपनी व्यक्तिगत हैसियत में विश्व के विभिन्न भागों से किया। इस श्रेणी में इस लेख के लेखक को भी इस समिति में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया था। दूसरी श्रेणी में ६ तकनीकी सलाहकार सम्मिलित थे और तीसरी श्रेणी में वे विशेषज्ञ आते हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ, अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तकालय संघ, पुस्तक विक्रेता संघ समूह, अन्तर्राष्ट्रीय प्रलेख संघ और अन्तर्राष्ट्रीय लेखक तथा गीतकार महासंघ जैसे अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों से सम्बद्ध थे। परामर्शदाताओं की एक अन्य श्रेणी भी थी। इस बैठक में यूनेस्को का प्रतिनिधित्व उपमहानिदेशक और श्री जूलियन बेहरस्टाक, निदेशक, अबाध सूचना प्रसार कार्यालय, तथा श्री एफ० एस० स्मिथ, निदेशक, एशिया में पुस्तक विकास के लिए यूनेस्को में क्षेत्रीय केन्द्र के निदेशक ने किया। इस समिति को यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष यूनिट एवं अन्य अपेक्षित कर्मचारियों ने सहयोग प्रदान किया। बेल्जियम के रायल लाइब्रेरियन श्री हरमन लिबर्स, अन्तर्राष्ट्रीय योजना समिति के अध्यक्ष चुने गए।

समिति को अपने सदस्यों से उन योजनाओं के विषय में रिपोर्ट प्राप्त हुई जो सदस्य-राज्यों और पुस्तक-उद्योग के अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों ने अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक

जुलाई मास के प्रकाशन

आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान का विकास

(शोध प्रबन्ध) : डॉ० केदारनाथ सिंह . २०.००

नयी हिन्दी कविता के सुपरिचित कवि केदारनाथ सिंह की इस समीक्षात्मक कृति में पहली बार उस साहित्यिक तथा साहित्येतर पृष्ठभूमि की विस्तृत व्याख्या का गयी है, जिसके फलस्वरूप आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब का आगमन हुआ। आधुनिक हिन्दी कविता की मौलिक उद्भावनाओं को समझने के लिए, एक अनिवार्य सन्दर्भ-ग्रन्थ के रूप में पठनीय-संग्रहणीय।

कहीं कुछ और (उपन्यास) : डॉ० गंगाप्रसाद विमल : ७-००

डॉ० गंगाप्रसाद विमल का यह नवीनतम उपन्यास मात्र कथावस्तु की दृष्टि से ही नहीं, भाषागत सहजता तथा अपने समकालीनों से अलग एक विशेष परिवेश को रूपायित करने के कारण भी उपन्यासों की शृंखला में एक नयी कड़ी जोड़ता है।

सतह से उठता आदमी (कहानी संग्रह) : मुक्तिबोध : ६-००

'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'काठ का सपना', 'एक साहित्यिक की डायरी' और 'विपात्र' के बाद स्व० गजानन माधव मुक्तिबोध की एक और समर्थ कथाकृति 'सतह से उठता आदमी।'

मैं तट पर हूँ (कविता संग्रह) : अमृता भारती : ८-००

अमृता भारती की चुनी हुई कविताओं का एक विशिष्ट एवं सर्वप्रथम संकलन। ऐसी कविताएँ जो रहस्य और आध्यात्मिकता के स्पन्दनों को सहेजती, प्रेम की छायावादी प्रस्तुति से परे की अधुनातन अनुभूति हैं तथा प्रणयन और शैली में नयी एवं समसामयिक हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ,

२६२० । २१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

तार : 'ज्ञानपीठ' फोन : २७२५८२

वर्ष के लिए कुछ देशों में पहले से ही आरम्भ कर रखी थीं।

यह अनुभव किया गया कि यूनेस्को में इस उपक्रम के पीछे पुस्तकी दुनिया में एक ठोस एकता की आम भावना विद्यमान थी। अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष की परिकल्पित गतिविधियों का सम्बन्ध सरकारों, राष्ट्रीय आयोगों, राष्ट्रीय संघों, सरकारी और गैर-सरकारी अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्ततः स्वतः यूनेस्को की गतिविधियों से है। अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष की महान् सफलता के लिए विश्व भर के समस्त निकायों के सहयोग की अपेक्षा की गई थी। स्पष्ट था कि यूनेस्को तो एक प्रेरणा-स्वरूप थी, मुख्य उपक्रम तो राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना था। योजनाओं को प्रभावी बनाने के लिए वित्तीय साधनों की परिपूर्ति और विभिन्न स्रोतों के उपयोग की आवश्यकता अनुभव की गई। इस बात पर बल दिया गया कि जहाँ तक सम्भव हो सके विभिन्न देशों को अपनी योजनाओं के कार्यान्वियन और अपनी गतिविधियों के संचालन के लिए वित्तीय उत्तरदायित्व को मुख्यतः राष्ट्रीय स्तर पर वहन करना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष समारोह की प्रगति का समम-समय पर निरीक्षण करते रहने के लिए एक स्थायी सहायक समिति गठित की गई। यह भी निर्णय किया गया था कि अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के सम्बन्ध में विभिन्न देशों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की गतिविधियों के प्रसार-प्रचार के लिए जुलाई से एक मासिक अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-वर्ष 'न्यूजलेटर' प्रकाशित किया जाए। इससे विभिन्न देशों को अपने-अपने अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-वर्ष कार्यक्रमों में प्रेरणा देने के लिए सहायता मिलेगी। अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष का नारा है—'बुक्स फार आल' (सब के लिए पुस्तकें) और यूनेस्को के प्रधान कार्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-वर्ष के एक प्रतीक को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

यूनेस्को द्वारा गठित विभिन्न विशेषज्ञों व समितियों द्वारा सुझाए गए अनेकानेक कार्यक्रमों में से भारत के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम का प्रस्ताव किया गया है जिस पर हमें विचार करना है और एक उपयुक्त तरीके से उसे कार्यरूप देना है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ निजी क्षेत्र और सरकार दोनों ही पुस्तकों के विकास में अभिरुचि लेते हैं। इससे यहाँ के अधिकांश कार्यक्रम दोनों के ही द्वारा मिलेजुले रूप से आयोजित किए जाएंगे। भारत में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक 'अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष संयोजन समिति' शीघ्र ही बनेगी जिसमें सभी क्षेत्रों से योग्य व्यक्ति लिये जायेंगे।

उद्घाटन : यह प्रस्ताव किया गया है कि अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष का उद्घाटन जनसंपर्क के समस्त माध्यमों का उपयोग करते हुए एक जनवरी १९७२ को या तो राष्ट्रपति द्वारा या प्रधान मंत्री द्वारा कराया जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम

विश्व पुस्तक मेला : जनवरी १९७२ में नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता संघ के द्वारा संयुक्त रूप से एक विश्व पुस्तक मेले का आयोजन किया जा रहा है। तैयारियाँ जोरों की चल रही हैं। और चूँकि भारत में पहली वार ही इस अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन किया जा रहा है इसलिए यह स्वाभाविक है कि देश और विदेश की इसके प्रति गहरी दिलचस्पी हो।

एशियाई तथा अफ्रीकी पुस्तक-प्रकाशक सम्मेलन : विश्व पुस्तक मेले के दौरान एक एशिया तथा अफ्रीका प्रकाशक सम्मेलन करने का प्रस्ताव है। इस परियोजना के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने हेतु कुछ अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से सम्पर्क स्थापित किया जारहा है। यदि इसमें सफलता प्राप्त हो जाती है तो विकासशील देशों में पुस्तक प्रकाशन की गतिविधियों को इससे एक बड़ी प्रेरणा मिलेगी।

निर्यात उन्नयन दल : भारतीय पुस्तकों के विदेशों में निर्यात की सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए विश्व के विभिन्न भागों में पुस्तक निर्यात उन्नयन दल भेजे जाएंगे।

राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम

क्षेत्रीय पुस्तक समारोह : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास देश के विभिन्न भागों में पुस्तक समारोहों का आयोजन करेगा।

रेलगाड़ियों में चलते-फिरते पुस्तक मेले : ऐसा विचार है कि रेल मन्त्रालय के सहयोग से एक रेल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाए जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में पुस्तकों का प्रदर्शन करे। वर्ष की पहली तिमाही में यह प्रदर्शनी उत्तर भारत में, दूसरी तिमाही में दक्षिण में और

'नेशनल' के आगामी आकर्षण | जून १९७१

विष्णु प्रभाकर / मेरे श्रेष्ठ रंग-एकांकी

प्रख्यात नाटककार श्री विष्णु प्रभाकर के आठ चुने हुए मंचीय एकांकी-नाटकों का संग्रह। ६.००

चम्बल की रक्तकथा / रामकुमार भ्रमर

चम्बल के बीहड़ों और खूंख्वार अपराधियों की रक्तरंजित कथाएँ...संस्मरण...रोमांचक घटनाएँ। उपन्यास से भी अधिक रोचक। अपनी तरह की अनूठी पुस्तक। १२.००

यादवेन्द्रदत्त दुबे / आखेट

सुप्रसिद्ध शिकारी राजा जौनपुर श्री यादवेन्द्रदत्त दुबे के रोचक शिकार-संस्मरण। रविशंकर पंडित के रोमांचक एवं सजीव चित्रों से युक्त। ६.००

कृष्ण, मेरा पर्याय / मोहन निराश

पैंतीस चुनी हुई सशक्त कविताएं। ४.००

डा० सुषमा पाल / छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि

दिल्ली विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत महत्त्वपूर्ण शोध-ग्रन्थ। ४०.००

भाषा-शिक्षण : कुछ नये विचार-बिन्दु / इन्दिरा नूपुर

भाषा-शिक्षण से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण पुस्तक। २.५०

श्रीकृष्ण / तोताराम

बच्चों के लिए रंगमंच पर खेलने योग्य चार मजेदार हास्य नाटक। २.५०

हिमालय की लोककथाएं / किशोरीलाल वैद्य

हिमालय-प्रदेश की सात चुनी हुई रोचक लोक-कथाएं। २.५०

सन्तराम वत्स्य / मेरी क्यूरी

विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक मेरी क्यूरी की प्रेरक जीवनी। १.५०

नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
२३, दरियागंज दिल्ली-६

चौथी तिमाही में पश्चिम में दिखाई जाए। यह मात्र एक चलता-फिरता प्रदर्शन ही नहीं होगा बल्कि एक चलता-फिरता पुस्तक-मेला होगा और जहाँ-जहाँ भी यह प्रदर्शन-रेलगाड़ी ठहरेगी पुस्तकों की बिक्री की जाएगी जिससे कि इस पर होने वाले व्यय के एक बड़े ग्रंश की पूर्ति की जा सके।

पुस्तकालय ग्रौर पुस्तकालय सेवा विस्तार : चूंकि पुस्तकालय अध्ययन की आदत के विकास की दिशा में एक ग्रत्यन्त महत्वपूर्ण रोल ग्रदा करते हैं, इसलिए इनका विकास राष्ट्रीय, राज्य, जिला ग्रौर ग्राम सभी स्तरों पर किया जाएगा। राज्य सरकारों से ग्रनुरोध किया जाएगा कि वे प्रत्येक राज्य में स्थानीय पुस्तकालयों की संख्या के विकास एवं वृद्धि हेतु ग्रधिकाधिक निधि निर्धारित करें ग्रौर यह देखें कि प्रत्येक स्कूल में एक पर्याप्त ग्रच्छा पुस्तकालय हो।

ग्रामीण पुस्तकालयों का उद्घाटन : यह सुझाव है कि केन्द्रीय मंत्रालय विभिन्न राज्य-सरकारों से इस बात की सिफारिश करे कि वे राज्य में ऐसे व्यक्तियों की एक समिति बनाएँ जो ग्रपने-अपने राज्यों की पुस्तकों का ज्ञान रखते हों। यह समिति उन पुस्तकों की एक आधार-सूची तैयार करेगी जिनका मूल्य लगभग सौ रुपए होगा ग्रौर जो ग्रामीण पुस्तकालय आरम्भ करने की दिशा में अध्ययन सामग्री के एक केन्द्रबिन्दु का काम देंगी। साथ ही सम्बन्धित ग्रधिकारी को चाहिए कि वे एक ऐसी सरल पुस्तिका तैयार करवाएँ जिसमें ग्रामीण पुस्तकालय के संचालन के सम्बन्ध में मार्गदर्शन किया गया हो ग्रौर जो गाँव के उन लोगों के लिए एक मार्गदर्शिका का काम करे जोकि ऐसे पुस्तक-कक्ष के प्रभार में होंगे।

पुस्तक-क्लब खोलने के लिए प्रोत्साहन : भारत में पुस्तक-क्लबों की संख्या बहुत ही कम है। पुस्तक-क्लब संघ ग्रर्थात 'घरेलू पुस्तकालय योजना समिति' देश के विभिन्न भाषा-क्षेत्रों में पुस्तक क्लब खोलने की योजना बना रहा है जिनके द्वारा पुस्तक-क्लब चलाने की प्रक्रिया का ज्ञान कराया जाएगा ग्रौर भावी पुस्तक क्लब संचालकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

ग्रन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में पुस्तक प्रकाशन ग्रौर पुस्तक विक्रय के विभिन्न पहलुग्रों पर गोष्ठियों ग्रौर वर्कशाप का ग्रायोजन किया जाएगा। यह पाठ्य-पुस्तक लेखकों ग्रौर सम्पादकों, जनरल पुस्तकों ग्रौर पेपरबैक सम्पादकों तथा बाल पुस्तक सम्पादकों के लिए होंगी, जिनमें पुस्तक प्रस्तुतीकरण सहायक ग्रौर पुस्तकों की डिज़ाइन, पुस्तक प्रकाशन प्रबन्ध विषयक गोष्ठियाँ, पुस्तक दूकान सहायकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम वर्कशाप ग्रादि का समावेश किया जाएगा।

देश की विभिन्न भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक-प्रस्तुतीकरण और डिजाइन के लिए पुरस्कार

ग्रधिकतम पुस्तक निर्यात के लिए पुरस्कार : यह पुरस्कार तीन सर्वश्रेष्ठ पुस्तक-निर्यातकों ग्रर्थात् उन लोगों को दिए जा सकते हैं जिन्होंने ग्रधिकतम रुपयों की पुस्तकें निर्यात की हों।

सरकार ऐसी नीतियाँ अपनाएगी जिससे पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण ग्रौर निर्माण के लिए कच्ची सामग्री ग्रबाध रूप से सुलभ हो सके। सरकार अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष के दौरान प्रकाशित पुस्तक की न्यून डाक दर की विशेष श्रेणी निश्चित करने पर विचार करे जिससे कि पुस्तक क्लबों की योजना को ग्रारम्भ किया जा सके, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लाभार्थ।

सभी भारतीय भाषाग्रों की पत्र-पत्रिकाग्रों से ग्रनुरोध किया जाएगा कि वे ग्रन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के सम्बन्ध में विशेषांक निकालें जिसके लिए उन्हें लेख ग्रौर ग्रन्य सामग्री प्रदान की जाएगी।

शिक्षण संस्थानों को 'समाज में पुस्तकों का स्थान' पर भाषण प्रतियोगिता ग्रायोजित करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

शिक्षा मंत्रालय प्रकाशक ग्रौर पुस्तक विक्रेता संघ के सहयोग से पुस्तक प्रकाशन संस्थान खोलेगा।

दिल्ली विश्वविद्यालय में ग्रगले शिक्षा सत्र से स्नातक स्तर पर पुस्तक प्रकाशन पाठ्यक्रम चालू करने की योजना को ग्रन्तिम रूप दिया जा रहा है।

ग्रन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के लिए स्मारक डाक टिकट जारी करने पर विचार किया जा रहा है।

श्रेष्ठ एवं संग्रहणीय हमारे प्रकाशन

हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव

दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी. एच. डी. उपाधि के लिए स्वीकृत यह शोध-ग्रंथ अपने ढंग का अनूठा है। केवल इसीलिए नहीं कि इसका विषय नया है, वरन इसलिए भी, यह नयी हिन्दी कविता के एक मूर्धन्य हस्ताक्षर भारत भूषण अग्रवाल की कृति है। फलस्वरूप यह शोध-ग्रंथ एक ऐसी गहरी दृष्टि से समन्वित हो गया है जो केवल कृतिकारों को ही प्राप्त होती है।

बड़ी ही तटस्थ निष्ठा और समग्र दृष्टि से लेखक ने प्रेमचन्द और प्रेमचन्द परवर्ती हिन्दी उपन्यासकारों के कृतित्व का अध्ययन किया है और उन सभी प्रभावों का सम्यक् अनुशीलन किया है जिनसे उनके व्यक्तित्व की विशिष्टता चरितार्थ हुई। इस शोध-ग्रंथ में लेखक ने पश्चिम के उपन्यास के प्रभाव का अध्ययन करके ही संतोष नहीं किया है वरन् वह हिन्दी उपन्यास की सफलता और सार्थकता की भी पड़ताल कर सका है। सुमुद्रित, मजबूत जिल्द एवं अत्यन्त आकर्षक रूपसज्जा। मूल्य ४५-००।

उदात्त के विषय में

लोंजाइनस (लोंगिनुस) की कालजयी कृति 'पेरि इप्सुस' का सर्वथा नवीन हिन्दी अनुवाद है जिसे डा० (श्रीमती) निर्मला जैन ने प्रायः सभी उपलब्ध अंग्रेजी अनुवादों की सहायता से अत्यन्त प्रामाणिक अनुवाद के रूप में प्रस्तुत किया है। उद्धृत कविताओं का यशस्वी कवि भारतभूषण अग्रवाल कृत पद्यानुवाद प्रस्तुत पुस्तक का अतिरिक्त आकर्षण है। बारह अनुच्छेदों की लम्बी भूमिका में विदुषी लेखिका ने मूल लेखक द्वारा प्रतिपादित 'उदात्त' तथा 'आनन्द' की अभिनव व्याख्या करने के साथ ही 'लोंगिनुस और नई समीक्षा' तथा 'लोंगिनुस और रोमांटिक आलोचना' प्रभृति विवेचन के द्वारा लोंगिनुस सम्बन्धी अध्ययन की नई दिशाओं का उद्घाटन किया है। नामकोश, पारिभाषिक शब्दकोश तथा नामानुक्रमणिका के द्वारा पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। सुमुद्रित एवं आकर्षक पुस्तक के विशेष संस्करण का मूल्य १५-००।

ऋषभचरण जैन एवं सन्तति

श्रेष्ठ हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशक

४६६२। २१, दरियागंज दिल्ली-६

इस वर्ष के दौरान भारतीय प्रकाशकों की एक परिचय पुस्तिका भी प्रकाशित की जाएगी।

लोगों में किताबें पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए रेडियो, टेलीविज़न, तथा अन्य व्यापक प्रचार माध्यमों का पूरा उपयोग किया जाएगा।

नए लेखकों को उनकी पहली पुस्तकों के लिए पुरस्कार दिए जाएँगे और उनकी पुस्तकें एक अग्रणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की जाएँगी।

लेखकों का राष्ट्रीय कन्वेंशन आयोजित करने का भी प्रस्ताव है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह आयोजित किया जाएगा।

जनता का ध्यान किताबों पर केन्द्रित रखने के हेतु सारे साल विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह मनाए जाएँगे—जैसे बच्चों की पुस्तकों, पेपरबैक पुस्तकों, पाठ्य-पुस्तकों, कला-पुस्तकों इत्यादि के सप्ताह।

निजी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्रों में कागज के कारखाने कायम करके सरकार द्वारा देश की कागज-सप्लाई को बढ़ाने के प्रयत्न किए जाएँगे। कागज के लिए कच्ची सामग्री पर एक गोष्ठी (सेमिनार) आयोजित करने का प्रस्ताव है।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के प्रचार-वाक्य—"सभी के लिए पुस्तकें"—के प्रचार के लिए सभी भारतीय भाषाओं में पोस्टर छापे जाएँगे।

प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के संघों द्वारा पुस्तक कूपन जारी किए जाएँगे।

सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के फिल्म डिवीज़न द्वारा प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ के साथ सहयोग से 'पुस्तक की कहानी' विषय पर फिल्म का निर्माण विचाराधीन है।

एक पुस्तक 'पुस्तक-विक्रय' पर और 'प्रकाशन' पर विशेष रूप से लिखी जाने और देश की विभिन्न भाषाओं में अनूदित तथा प्रकाशित की जाने की पूरी संभावना है।

पुरस्कारों तथा पुस्तकों के विमोचन के लिए विशेष समारोह आयोजित किए जाएँगे।

विभिन्न भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के बीच अनुवाद कार्यक्रमों को प्रकाशक संघ की केन्द्रीय एक्सचेंज प्रकाशन यूनिट द्वारा प्रोत्साहन दिया जाएगा।

कुछ परियोजनाओं के वास्ते यूनेस्को के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग ने यूनेस्को से सहायता की माँग की है।

इन प्रस्तावों की मोटी रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। इसकी तफ़सील तैयार की जा रही है। इनमें अतिरिक्त कार्यक्रम भी जोड़े जा सकते हैं।

सुझाव है कि यूनेस्को के कुछ शीर्षस्थ अधिकारी देश के दौरे पर आएँ और उनके व्याख्यान आयोजित किए जाएँ। साथ ही, यूनेस्को के तत्वावधान में इस क्षेत्र के विभिन्न भागों को तथा संसार के विभिन्न भागों को प्रकाशकों के दलों के आदान-प्रदान की संभावना पर भी विचार किया जाना चाहिए।

आशा है कि यह अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष सारी दुनिया में पुस्तक-प्रकाशन तथा व्यवसाय से संबंधित व्यक्तियों के लिए एक वरदान सिद्ध होगा और विद्या तथा ज्ञान के ध्येय को और भी आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा ; और इसके लिए, इस परियोजना से संबंधित सभी यूनेस्को अधिकारी संसार के सभी विचारशील वर्ग के कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद के पात्र हैं।

हमारे यहाँ से प्राप्य पुस्तकें

बाल साहित्य

कहानियाँ

बलिदान की कहानियाँ १.२५
देखी-सुनी कहानियाँ १.२५
साहित्यकारों की कथाएँ १.२५
तीन कहानियाँ १.२५
सच्ची घटनाएँ १.२५
सदाचार की कथाएँ १.२५
विविध कथाएँ ३.५०
महाभारत की कथाएँ (३ भाग) ७.५०
रामायण की कथाएँ (२ भाग) ५.००

नाटक

विष-परीक्षा १.२५
शीर्ष-दान १.२५
लाड़ले का बलिदान १.२५
मंच के दृश्य १.२५
होरी और हीरा १.२५
दुर्ग-विजय १.२५
नया युग १.२५
श्रद्धा और मनु १.२५
रूप और रक्त १.२५
किशोर अभिनय ३.५०
किशोरों का मंच ३.५०
किशोर रूपक ३.५०

बाल-उपन्यास

जादू की टहनी २.००
पोम्पू गुड्डा २.००
दो भाई २.००
रवि और देव २.००

कविता

सरस गीत १.२५
बबुआ के बोल १.२५
शिशु गान १.२५
गीत माधुरी १.२५
गीत भारती १.२५
बाल रागिनी १.२५
ओजभरे गीत १.२५
वर्ण गीतिका १.५०
रूस की जन कथाएं २.००
झाँकी हिन्दोस्तान की ४.००

विविध

इतिहास के पन्ने (२ भाग) २.५०
नक्षत्र-लोक (२ भाग) ५.००
समुद्र की कहानी २.००
सितारों की कहानी २.००
भूचाल और ज्वालामुखी २.००
महाभारत कथा ३.००

अन्य पुस्तकें

उपन्यास, कहानी, एकांकी

कान्ता (ओमप्रकाश शर्मा) ४.५०
अंधेरे के दीप " " ५.००
संगम (आदिल रशीद) ४.५०
स्वर्ग का फूल (" ") ४.५०
छोटी रात (" ") ६.००
मनमाने की बात (संतोष कौशल) ३.००
फिर याद आई (नरेन्द्र शर्मा) ४.५०
प्रतिनिधि कहानियाँ (प्रो० संत) ५.००
प्रतिनिधि एकांकी (" ") ५.००

पाकेट पुस्तकें

उपन्यास-कहानी

आँख की किरकिरी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर १.००
गोरा " १.००
नौका डूबी " १.००
पथ के दावेदार (शरतचन्द्र) १.००
माँ (गोर्की) १.००
सात सागर सात गागर (हरीवंश) १.००
पगडण्डी (रामप्रकाश गुप्त) १.००
संसार डूब रहा है (देवीप्रसाद धवन) १.००
ओ० हैनरी की श्रेष्ठ कहानियाँ १.००
कावेरी (शचीन्द्र उपाध्याय) १.००
मादाम बावरी १.००
आँख-मिचौली १.००
सुलगते फूल (हृदयेश कोहली) १.००
किनारों की क़ैद (सुदर्शन चोपड़ा) १.००
अभिशप्त (नानक सिंह) २.००
यह क्यों है ? (गुरुदत्त) २.००
फिर याद आई (नरेन्द्र शर्मा) २.००
संगम (आदिल रशीद) २.००

स्वास्थ्य

सुन्दर शरीर (योगराज थानी) १.००

शायरी

आदि कवि वली (शम्सुद्दीन वली) १.००
शेरे-हरम (राजेश शर्मा) १.००
नग्म-ए-वतन (रत्न हरयानवी) १.००
गुलिस्ताने कत्आ (राजेश शर्मा) १.००

जीवनोपयोगी

आगे बढ़ने की कला (स्वेट मार्डेन) १.००
ठीक विचारो " १.००

बाल सदन

४९ । १६, ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-८

'भस्मांकुर' समीक्षा के वातायन से

डा० श्रीराम शर्मा

प्रस्तुत खण्डकाव्य में जिस पौराणिक आख्यान को पद्य-बद्ध किया गया है, वह मदन-दहन की घटना से सम्बद्ध है। तारकासुर का वध कराने के लिए देवराज इन्द्र के इस आदेश को क्रियान्वित करने के लिए कि हेमांचल की सुता पार्वती और विषपायी शंकर से उत्पन्न होने वाले देव-पुत्र की उत्पत्ति का सुयोग जुटाया जाए, बेचारा कामदेव अपनी पत्नी रति और कुसुमाकर वसंत के साथ प्रस्थान करता है कैलास की ओर उस स्थल पर जहाँ समाधिस्थ शंकर ध्यान-मग्न बैठे हैं। अपने समग्र वैभव के प्रभाव से, वसन्त के सहयोग से एवं रतिरानी की भाव-लहरियों की तरंगों से तरंगायित वातावरण की सृष्टि करके कामदेव शंकर के मन में कामोद्भव कराने में कुछ सफल हो जाता है। किन्तु मन की कमजोरी के प्रति सजग होते ही और सामने कामदेव को देखते ही शिव क्रुद्ध होकर तीसरा नेत्र खोल देते हैं और रति-पति उसकी ज्वाला में भस्म हो जाता है। मदन-दहन की यह अत्यन्त प्रसिद्ध कथा ही प्रस्तुत काव्यकृति का आधारभूत कथा-सूत्र है, जिसे कवि ने नवीन कलेवर में उपस्थित किया है। इसके आगे कथानक-संयोजन में कार्य करने वाली कवि की दृष्टि को जाना जा सकता है उसी के निम्न कथन से—

"फिर पलभर में सारे दृश्य पलट जाते हैं...रति रो-रो उसे पुकारती है— 'मैं आत्म-दाह करूंगी'......इतने में जोरों का उद्घोष होता है...अरी बावरी तेरा पति मरा नहीं है। वह कभी मर नहीं सकता...कोई आग कामदेव के शरीर को भस्म नहीं कर पायेगी कभी। भस्म हो भी जाए तो अपने आप अंकुर बनकर उसी भस्मराशि से फूट पड़ेगा बार-बार...वह सृष्टि की कामना का अक्षय केन्द्र है।" ('भस्मांकुर' भूमिका भाग से)

कवि ने उक्त आकाशवाणी के द्वारा आधुनिक मनोवैज्ञानिकों की इस मान्यता का उद्घोष किया है कि 'काम' भावना मनुष्य की मूल मनोवृत्ति है।

एक बार शिव के द्वारा भस्म किये जाने के उपरान्त भी उसका अंकुर विश्व से समाप्त नहीं हुआ और पुनः अंकुरित हुआ स्वयं शिव के ही मन में। इसीलिए कवि ने कामदेव को ही भस्मांकुर कहकर पुकारा है और खण्डकाव्य का नाम नायक के नाम पर रखकर पुरातन परम्परा का पालन किया है।

चरित्रांकन की संभावनाओं पर विचार करते समय हमारा ध्यान सर्वप्रथम कामदेव की ओर जाता है। निश्चय ही वह ललित वृत्ति से परिपूर्ण नायक है जो अपनी प्रभाव-क्षमता एवं सामर्थ्य के संबंध में सजग है, पूर्ण आश्वस्त है, तभी तो योगीराज शिव के ध्यान को भंग करने के लिए तत्पर हो जाता है। शुद्ध कल्पना पर आधारित अशरीरी पात्र होने पर भी कवि ने सशरीरी पात्र के रूप में उसका मानवीकरण कर दिया है।

मदन, वसंत और रति—तीनों ही अशरीरी पात्र हैं किन्तु कवि ने इनमें मानवोचित हास, करुणा, उल्लास, शोक साहस, संशयादि का आरोप करके इनके व्यक्तित्व को बहुत स्वाभाविक उभार दिया है। कुछ स्थल द्रष्टव्य हैं। मदन पार्वती के प्रति शिव को आकर्षित जान जिस सहज उल्लास-सागर में अवगाहन करता है, उसका चित्र देखिए—

मन्मथ ने देखा यह सब साश्चर्य
पर तत्क्षण ही गया खुशी में डूब
लक्ष्य सिद्धि के प्रति होकर आश्वस्त
ठोकी उसने रति रानी की पीठ
फिर दोनों हँस पड़े साथ ही साथ

चरित्रांकन की दृष्टि से वसंत जैसे अशरीरी पात्र का मानवीकरण करके कवि ने प्रकृति पर चेतना आरोप करने में अभिनव कौशल का प्रदर्शन किया है। वसंत के अतिरिक्त रति और कामदेव जैसे पौराणिक एवं काल्पनिक पात्रों को प्रतिमायित करके कथानक में स्वाभाविकता एवं विश्वसनीयता जैसे विरल गुणों का समावेश किया है।

प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु आकर्षक रूप का चित्रण इस लघु काव्य की विशेषता है। काव्य का प्रारम्भ कामदेव द्वारा प्रेरित सुन्दरता के प्रेरक उपादानों के असमय अंकुरोदय के साथ हुआ है :

असमय अंकुर असमय लता वितान
वृद्ध वनस्पतियों का नव परिधान
गुंजित अलिदल कम्पित कलिकाकोर
असमय चंचल दखिन पवन चितचोर

प्रकृति की उद्दीपक रूप वाली छटा को पुनः दूसरे अनुच्छेद में चित्रित किया है :

शाखाएँ हो उठीं खूब छतनार
रोक न पायीं आलिंगन की चाह
लतिकाओं ने पकड़ी सुख की राह

इसी प्रकार छठे अनुच्छेद का प्रारम्भ पुनः वसन्त ऋतु के सौंदर्य के साथ हुआ है। यहाँ मानवीय संवेदनाओं की पृष्ठ-भूमि में प्रकृति का चित्र उभारा गया है।

'भस्मांकुर' के कवि ने प्रकृति को व्यापक पटल पर चित्रित किया है। आलम्बन और उद्दीपन रूपों के अतिरिक्त बिम्ब-प्रतिबिम्ब रूप में भी प्रकृति को चित्रित करना कवि का अभीष्ट है। एकबार तो शिवजी के हृदय में मचने वाली उथल-पुथल के कारण समस्त कैलास पर्वत के वातावरण में स्तब्धता छा गयी है :

सिर-सुरसरि निर्वीचि लुप्त हैं झाग
अनुशासित-सा सहज शुभ्र कैलास
गुप-चुप देता संयम का संकेत

इसी प्रकार शंकर का पूजन करने आई हुई पार्वती के प्रति स्वाभाविक आकर्षण शिव के हृदय में प्रणयांकुर के उदय का कारण बनता है और उनके हृदय के भावों की प्रतिच्छाया के कारण कवि ने महाधवल कैलास को भी थिरकन में डूबे प्रणयी के रूप में दिखाकर प्रकृति का बिम्ब-प्रतिबिम्ब रूप में चित्रण किया है :

महासमाधि का मध्यांतर। अभिराम—
काल खण्ड ! दुर्लभ क्षण ! उत्सव पूर्ण...
देखो देखो महाधवल कैलास,
थिरक उठा है पाकर दशगुण दीप्ति

रस सिद्धान्त की व्याख्या एवं स्वरूप के आधार पर प्रस्तुत काव्यकृति एक उच्चकोटि की सफल रचना कही जा सकती है। चाहे भरत मुनि के विभावानुभाव व्यभिचारि: संयोगाद्रस निष्पतिः को दृष्टिपथ में रखें अथवा अभिनवगुप्त प्रभृति विद्वानों की मान्यताओं को विवेचन का आधार बनाएँ, प्रस्तुत कृति में रस-चर्वणा के लिए पर्याप्त अवसर हैं, जहाँ कवि ने कहीं वसन्त-ऋतु जैसे उद्दीपन विभाव, पार्वती और रति जैसे आश्रय एवं कामदेव जैसे आलम्बन विभावों के कारण तथा इनकी (आश्रय तथा आलम्बनों की) अनुभाव योजना से पाठकों के हृदय में रसोद्रेक कराया है।

कवि ने अपनी कल्पना के बल पर पार्वती के स्वप्न की अवतारणा करके संयोग शृंगार का अद्भुत चित्र प्रस्तुत किया है। इस स्थल पर शिव पाठकों के हृदय के स्थायी भाव रति के आश्रय हैं, पार्वती आलम्बन। एकान्तिक मृगमदवासित गुफा उद्दीपन और आलम्बन के सिहरन आदि संचारी तथा आश्रय द्वारा मुस्करा कर देखना, गाल थप-थपाना आदि कायिक अनुभाव हैं। इसी प्रकार शिवशंकर के रूप को देखकर कामदेव के हृदय में उद्भूत होने वाले संशय-मिश्रित भयानक भाव को उभारने के दो स्थलों का उदाहरण दिया जा सकता है। पहले रति भयग्रस्त स्थिति में चित्रित की गयी है। यहाँ शंकर भयानक रस के आलम्बन हैं और भयावह वातावरण उद्दीपन; आश्रय है रति और भयानक रस को उद्दीप्त कराने में, स्वेद, रोमांच, वैवर्ण्य जैसे सात्विक अनुभावों से सहायता ली गयी है। जड़ता, संज्ञाशून्यता की स्थिति का एकदम सजीव चित्रण करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। इसी प्रकार ध्यानमग्न शिवजी का रूप देखकर कामदेव के हृदय में भयानक भाव की उद्रिक्ति हुई है :

डर के मारे अनजाने ही आप
शिथिल पड़ गई फूलों वाली चाप
आतंकित था निकट जाकर अंत
काँप-काँप जाते थे सारे अंग
फिर-फिर पुलकोद्गम फिर-फिर प्रस्वेद
आँखों के आगे थी फिर-फिर धुंध...

निराशा के घनीभूत भाव का सजीव चित्रण, संशय और शंका के सम्पुट से भयानक रस का सजीव एवं स्वाभाविक चित्रण करने वाली इस सिद्ध लेखनी का लोहा मानना पड़ता है।

इसी प्रकार शिवजी द्वारा कामदेव को भस्मीभूत कर देने पर उसकी पत्नी रति के करुण क्रंदन में पाठक शोक-सागर में निमग्न हो जाता है। जिस वातावरण में मदन-दहन के कारण हाहाकार मच जाती है वह शोक के स्थायी भाव का उद्दीपन करने में पर्याप्त सहायक है। रति-रानी आश्रय और आलम्बन कामदेव है जिसकी मृत्यु के कारण रति के हृदय में शोक की लहर व्याप्त हो गयी है। उसके रोदन का एक स्थल देखिए, जहाँ उसके संवादों के माध्यम से 'स्मृति' संचारी की सुंदर व्यंजना की गयी है :

बालम तुम पर हावी रहा हुलास
खुद पर था कितना ज्यादा विश्वास

शान्त रस का स्थायी भाव 'निर्वेद' भी कामदेव की मृत्यु के उपरान्त सांसारिक क्षणभंगुरता के संकेत के रूप में निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है :

स्वच्छ बर्फ की धवल मुलायम शाल
कौन गया है इस शहीद पर डाल।
इतनी जल्दी कैसे अपने आप
रचित हो गया अरे यहाँ हिम-स्तूप
कहाँ गई रति, किधर लुप्त ऋतुराज।
माया कानन के वे सारे दृश्य
आनन-फानन गायब हैं किस भाँति।

आश्रय या आलम्बनों की वेशभूषा का वर्णन भी रस प्रक्रिया की परिधि के अन्तर्गत नख-शिख-वर्णन शीर्षक से किया जाता है। आलोच्य कृति के सप्तम अनुच्छेद के प्रारम्भ में ही गिरिजा के नखशिख वर्णन को देखकर यह कहा जा सकता है कि कवि ने नखशिख वर्णन की पुरानी परिपाटी का पालन किया है।

भारतीय संस्कृति का सजीव चित्रण करने में भी कवि पीछे नहीं रहा। काव्य के अन्तिम स्थल पर जब पार्वती का अपने रूप-माधुर्य का दंभ शमित हो जाता है तभी वह शंकर को आकर्षित कर सकी है—

शमित हो चुका रूप सुधा का दंभ
(यदि तिलभर भी था उसका अस्तित्व)
तरुण तापसी का प्रशान्त सौन्दर्य
खींच सकेगा निश्चय अपनी ओर
महारुद्र की महिमा को इस बार॥

यहाँ कवि ने एक संदेश दिया है कि जब तक जीवात्मा अहंग्रस्त रहती है, तब तक परमप्रभु उससे प्रसन्न नहीं होते। इसी प्रकार एक स्थल पर शकुनापशकुन का वर्णन दृष्टव्य है :

रति हट गयी वहाँ से काफी दूर
रही देखती लेकिन पति की ओर
थी यद्यपि अब बाहर से आश्वस्त
किन्तु हृदय था संदेहों से ग्रस्त
बार-बार आते थे अशुभ विचार
फड़क-फड़क उठती थी दाईं आँख

प्रस्तुत काव्य में अवसर मिलते ही कवि ने अपने युग की ओर देखा है। यह युग-बोध आधुनिक नारी जागरण के रूप में देखा जा सकता है। कामदेव की यह इच्छा जानने पर कि पार्वती शंकर के साथ किसी भी प्रकार विवाह कर ले, नारी वर्ग के चेतना-लोक में डूबी हुई रति इस अनमेल-विवाह पर आपत्ति करती है—

बतलाओ, क्या रह जाता है शेष
जरठ हृदय में बिंदु-मात्र भी स्नेह ?
मुझको तो प्रिय लगता है बेकार
सारा नाटक। **आखिर वह सुकुमारि**
क्यों बूढ़े को करने लगी पसंद ?
क्या अनमेल समागम है अनिवार्य ?

यही नहीं वह समस्त नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हुई प्रतीत होती है जब वह देवताओं को धिक्कारती है, फटकारती है इस कुचक्र के लिए, सामाजिक अन्याय के लिए—

सुर समाज की बुद्धि हो गई भ्रष्ट !
करते है कैसे-कैसे खिलवाड़
नाहक ही ये ब्रह्मा-विष्णु-महेश

(क्रमशः)

भस्मांकुर—ले० नागार्जुन ; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६,

हमारे छात्रोपयोगी आलोचनात्मक प्रकाशन

ग्रंथि : एक अध्ययन : नागेश्वर लाल १.५०
पथिक : एक अध्ययन : शशिभूषण बख्शी १.५०
प्रतिज्ञा : एक अध्ययन : रामचन्द्र वर्मा १.५०
संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : शांति जैन ३.००
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : बच्चन पाठक 'सलिल' ३.००
हिन्दी भाषा का इतिहास : लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा ३.००
गबन : एक अध्ययन : कपिल देव सिंह १.५०
विजेता : एक अध्ययन : " " २.००
रश्मिरथी : एक अध्ययन : रामचन्द्र शर्मा २.००
अम्बपाली : एक अध्ययन : उर्मिला सिंह २.००
मानसरोवर (भाग-६) : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.५०
कहानी विविधा : एक अध्ययन : " " ३.००
दस तस्वीरें : एक अध्ययन : शशिभूषण बख्शी २.५०
शाहजहां के आँसू : एक अध्ययन ब्रजकिशोर पाठक ३.००
भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना : एक अध्ययन : शेष आनन्द 'मधुकर' २.५०
अयोध्याकान्ड : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.००
त्रिवेणी : एक अध्ययन : उमेशचन्द मिश्र २.००
गल्प समुच्चय : एक अध्ययन : शंभु बादल २.५०
कुरुक्षेत्र : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय ३.५०
अशोक के फूल : एक अध्ययन : शीलधर सिंह २.००
सिन्दूर की होली : एक अध्ययन : " २.००
रश्मिबन्ध : एक अध्ययन : रामसुभग सिंह २.५०
साहित्य प्रवेश : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह २.००
साहित्य सौरभ : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह २.००
सरदार पूर्ण सिंह के निबन्ध : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह १.००
संक्षिप्त हिन्दी नवरत्न : एक अध्ययन : " १.००
हिन्दी निबन्धावली : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह ३.००
ऋतम्बरा : एक अध्ययन : नागेश्वरदास 'अनल' २.००
कादम्बिनी : एक अध्ययन : " " ३.००
२३ हिन्दी कहानियां : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय १.५०
चिन्तामणि भाग-१: एक अध्ययन : जगमोहन मिश्र ३.००
नारी : एक अध्ययन : गंगाप्रसाद गुप्त २.५०
आषाढ़ का एक दिन : एक अध्ययन : बृजकिशोर पाठक २.५०
एकांकी संकलन : एक अध्ययन : एस. एल. गौतम ४.००
काव्यांग परिचय (रस, छन्द और अंधकार) राजेन्द्रराय 'राजेश' : २.००
काव्य संगम : एक अध्ययन : गंङ्गाधर पान्डेय ३.००
विराटा की पद्मिनी : एक अध्ययन : प्रवीण नायक ३.००
त्यागपत्र : पक अध्ययन : स्वर्ण किरण ३.००
रूपान्तर : एक अध्ययन : महेन्द्र किशोर २.५०
पंचवटी : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' १.५०
विष्णुप्रिया : एक अध्ययन : सदानन्द सिंह ३.००
चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन : रामचन्द्र शर्मा २.००
स्कन्दगुप्त : एक अध्ययन : रामनारायण सिंह २.५०
ध्रुवस्वामिनी : एक अध्ययन : शशि भूषण बख्शी १.५०
पुर्नमिलन : एक अध्ययन : रामकृष्ण मिश्र ३.००
चारुचन्द्रलेख : एक अध्ययन : ब्रजकिशोर पाठक २.००
मैं छोटानागपुर में हूँ : एक अध्ययन : गंगाधर पान्डेय १.००
यशोधरा : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' ३.५०
मध्यकालीन काव्य : एक अध्ययन : शिवनन्दन प्रसाद सिंह २.५०
रामचर्चा : एक अध्ययन : राजेन्द्र राय 'राजेश' १.५०

हमारे यहाँ हिन्दी की सभी पाठ्य-पुस्तकें तथा गाइडें मिलती हैं । हिन्दी अध्यापकों और प्रचारकों को उचित कमीशन दिया जाता है । वी० पी भेजने का सुप्रबन्ध है ।

कमल प्रकाशन, हिन्दपिढ़ी, राँची-१ [बिहार]

मोहन राकेश को नेहरू फेलोशिप

इस वर्ष में नेहरू फेलोशिप जिन चार भारतीय लेखकों को मिला है उनमें हिन्दी के श्री मोहन राकेश और बँगला के श्री बादल सरकार भी हैं।

श्री मोहन राकेश हिन्दी की नयी पीढ़ी के कथाकारों में और अब नाटककारों में भी काफी ऊँचा स्थान रखते हैं। इनके नाटक 'आधे-अधूरे' (१९६९) की पिछले दिनों बड़ी चर्चा रही है और उसको रंगमंच पर पच्चीसों बार अभिनीत किया जा चुका है। १९५८ में जब उनका पहला नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' प्रकाशित हुआ था तभी श्रीराकेश की नाटक जगत में चर्चा होने लगी थी।

इस फेलोशिप के तहत जिसकी अवधि दो वर्ष की है, श्री मोहन राकेश को नाटक साहित्य का गहन अध्ययन और शोध करने का सुअवसर और सुविधाएं मिलेंगी। 'नाटक में शब्द का स्वरूप' पर वे विशेष रूप से अध्ययन और शोध करेंगे। इस सिलसिले में वे अपने देश और विश्व के अनेक देशों, विशेषकर पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के देशों का भ्रमण करेंगे और मशहूर नाटककारों से भेंट एवं चर्चाएं करेंगे।

नाटक की तरह श्री राकेश के उपन्यासों ने भी ख्याति अर्जित की है। उन्होंने दो उपन्यास लिखे—'अँधेरे बन्द कमरे' (१९६१) और 'न आने वाला कल' (१९६४) जो काफी चर्चित रहे। इनके अतिरिक्त कई कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

हिंदी की पुस्तकों पर पुरस्कार

हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति हिंदी में साहित्य तथा दर्शन पर उच्च स्तर की मौलिक पुस्तकों के लेखकों को बड़ी रकमों के पुरस्कार प्रति वर्ष प्रदान करती है। १९७०-७१ की पुस्तकें पुरस्कार के लिये ३१ दिसंबर तक प्राप्त की जायेंगी। १९६९ के पुरस्कार विजेता ये हैं: डा० कुमार विमल, डा० महेन्द्र कुमार तथा श्री उदयवीर शास्त्री।

उत्तरप्रदेश में अँग्रेजी का व्यवहार बन्द करने का आदेश

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी ने राज्य के सरकारी कामकाज में 'अंग्रेजी का व्यवहार तुरन्त और पूर्णत: बन्द करने' का आदेश दिया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस आदेश की अवज्ञा को अनुशासनहीनता का कार्य माना जाएगा और उसके अनुसार ही कार्रवाई की जाएगी।

उत्तर प्रदेश सरकार ने यद्यपि २६ जनवरी १९६८ से राजकाज में हिन्दी का व्यवहार अनिवार्य घोषित कर दिया था लेकिन उसे समय-समय पर ऐसी शिकायतें मिल रही थीं कि अधीनस्थ कार्यालयों, स्थानीय निकायों और आम जनता से राजकीय पत्राचार में हिन्दी के व्यवहार के प्रति उदासीनता दिखाई जाती है।

चलते-फिरते हिन्दी-पुस्तकालय

राजधानी में हिन्दी साहित्य के पठन-पाठन को लोकप्रिय बनाने के लिए दिल्ली प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने चलते-फिरते पुस्तकालयों की एक नूतन योजना बनाई है जिसका उद्घाटन मुख्य कार्यकारी पार्षद- श्री विजयकुमार मल्होत्रा ने किया। इस योजना के अनुसार साहित्य सम्मेलन अपने २५ मंडलों द्वारा हिन्दी की श्रेष्ठ और नवीन पुस्तकें पाठकों को उनके मुहल्लों में ही उपलब्ध करेगा।

कृषि विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी

उ० प्र० के कृषि विश्वविद्यालय पन्तनगर ने जुलाई से आरम्भ होने वाले नए सत्र में शिक्षा का माध्यम हिन्दी करने का फैसला कर लिया है।

पन्तनगर सारे देश में पहला कृषि विश्वविद्यालय है जिसने अँग्रेजी बदलकर हिन्दी रखी है। मगर विदेशी और अहिन्दी भाषाभाषी छात्रों के लिए कक्षाएँ अँग्रेजी के माध्यम से चलेंगी।

हिन्दी के प्रसार के लिए १ करोड़ रु०

केन्द्रीय सरकार हिन्दी शिक्षकों की नियुक्ति के लिए अहिन्दीभाषी राज्यों की सरकारों को शत-प्रतिशत आधार पर वित्तीय सहायता दे रही है। १९७१-७२ के बजट प्रस्तावों में इस उद्देश्य से १ करोड़ रु० की व्यवस्था की गई है। इतनी ही राशि की व्यवस्था पिछले वर्ष भी की गई थी। इस समय लगभग ७००० हिन्दी शिक्षक इस योजना के अन्तर्गत विभिन्न गैर-हिन्दीभाषी राज्यों में काम कर रहे हैं।

संस्कृत के लिए पौने तीन करोड़ रु०

देश में संस्कृत शिक्षा के प्रसार के लिए चौथी योजना में दो करोड़ ७५ लाख रु० की व्यवस्था की गई है, जबकि तीसरी योजना में ७५ लाख रु० की व्यवस्था थी। यह जानकारी केन्द्रीय शिक्षा और समाज कल्याण उपमंत्री श्री डी० पी० यादव ने हाल ही में हुई राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की शासी परिषद् की बैठक में दी।

१७ पुस्तकों पर पुरस्कार

देश के प्रत्येक क्षेत्र के लोगों को अन्य क्षेत्रों की भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय ने एक पुरस्कार योजना तैयार की है। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक लेखक को अपनी मातृ-भाषा, हिन्दी अथवा संस्कृत के अतिरिक्त अन्य किसी भारतीय भाषा में लिखी गई पुस्तक या पांडुलिपि के लिए १००० रु० का पुरस्कार दिया जाता है।

१९७०-७१ में इसके लिए १०८ प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। उनमें से १७ प्रविष्टियों को एक-एक हजार रु० का नकद पुरस्कार देने के लिए चुना गया है। प्रविष्टियों तथा पुरस्कार पाने वालों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं :

१. अनाहुता—कविता (असमिया) : श्री भृगु मुनि कांगयुंग (मीरी-जन-जाति); २. पाथेर आलोच्य—कविता (बंगला) : श्री पारेश मल्ल बरुआ (असमिया); ३. अंथारा—उपन्यास (कन्नड) श्रीमती सावित्री देवी नायडू (कन्नड़); ४. श्रीमती ए. पंकज (तमिल), ५. दुराग्रही—नाटक (कन्नड़) श्री एन. एस. वेंकट सुब्बाराव (तेलुगु); ६. लेनिन-गांधी—निबंध (कन्नड़) श्री के. एस. शर्मा (तेलुगु); ७. गंगा कर्पी अटात नाही—नाटक (मराठी) श्रीकेशव महागोंकार (कन्नड़); ८. अबला—उपन्यास (मराठी) श्री सैयद अहमद अमीन (उर्दू); ९. सिंधु तीरे—नाटक (उड़िया) श्री अब्दुल हामिद खां नाशाद (उर्दू); १०. विद्रोही बहादुर—उपन्यास (उड़िया) श्री शेख मंजिफर रहमान (उर्दू); ११. रजनी—उपन्यास (उड़िया) श्रीमती नीलिमा दे (बंगला); १२. इरुपाद वारुशगल—उपन्यास (तमिल) श्री एम. एस. कल्याण सुन्दरम (तेलुगु); १३. मानसु जारी थे—नाटक (तेलुगु) श्री एन. डी. विजय बाबू (उड़िया); १४. आचार्य जगदीश चन्द्र बोस—कविता (तेलुगु) श्री प्रतिवादिभयंकर वेदांतचारी (तमिल); १५. जाकिर ओ फिकर—निबंध (उर्दू) श्री ब्रह्मनाथ दत्त (पंजाबी); १३. एक औरत-एक कयामत—उपन्यास (उर्दू) श्री रामजी दास पुरी (पंजाबी); और १७. आहंग-ए-जुज्ब—कविता (उर्दू) श्री राघवेन्द्र राव 'जुज्ब आलमपुरी' (कन्नड़)।

उच्च न्यायालयों में हिंदी प्रयोग की छूट

केन्द्रीय गृह मंत्रालय के गत वर्ष के प्रतिवेदन में बताया गया है कि राष्ट्रपति ने उत्तरप्रदेश और राजस्थान के राज्यपालों की इन सिफारिशों को मान लिया है कि वहाँ के उच्च न्यायालयों में अँग्रेजी के अलावा हिंदी में भी काम किया जाय। इसी प्रकार मध्यप्रदेश के राज्यपाल की इस सिफारिश को मंजूरी दे दी गयी है कि हाईकोर्ट की कार्यवाही के लिए हलफनामे और कागजात हिंदी में भी दाखिल किये जा सकेंगे। हिंदी के प्रयोग की अनुमति वैकल्पिक आधार पर दी गयी है। प्रतिवेदन में बताया गया है कि जो लोग अंग्रेजी का प्रयोग करना चाहें कर सकेंगे।

प्रतिवेदन में सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रसार के लिए उठाये गये कदमों का उल्लेख किया गया है। इसमें बताया गया है कि हिंदी में प्राप्त पत्रों में से ६० प्रतिशत का उत्तर हिंदी में दिया जा रहा है। ४०,००० कर्मचारियों को हिंदी शिक्षा के लिए नामांकित किया गया है। निर्धारित लक्ष्य से यह संख्या पाँच हजार ज्यादा है।

पंचायती राज पर शोधप्रबंध

'पंचायती राज का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव' शोध प्रबंध पर आगरा विश्वविद्यालय ने अलवर कालेज के प्राध्यापक श्री त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी को डाक्टरेट की उपाधि देना स्वीकार किया है। श्री त्रिभुवननाथ ने अपने शोध प्रबंध में यह सिद्ध किया है कि राजस्थान की पंचायती-राज-व्यवस्था का कृषि के उत्पादन पर तो अधिक प्रभाव नहीं पड़ा, पर उसका सामाजिक मान्यताओं को बदलने पर पर्याप्त असर रहा है। इसके कारण देहात की नयी नेतृत्व शक्ति को उभरने का मौका मिला तथा कृषि क्रांति के लिए वातावरण तैयार हुआ।

डा. राजबलि पांडेय का देहान्त

जबलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० राजबलि पांडेय का जबलपुर में दिल का दौरा पड़ने से देहान्त हो गया। ६४ वर्षीय डा. पांडेय प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रोफेसर के रूप में दस साल पहले जबलपुर विश्वविद्यालय में आए थे। १९६८ में वे विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने और इस साल अवकाश प्राप्त करने वाले थे।

गांधीजी पर रूस में नई पुस्तक प्रकाशित

सोवियत रूस में महात्मा गांधी पर एक नई पुस्तक प्रकाशित हुई है। पुस्तक का शीर्षक है: **मोहनदास करमचंद** गांधी के राजनीतिक विचार। सोवियत विद्वान ग्रो. वी. मोतीशिन ने अपनी इस पुस्तक में गांधीवाद को एक विश्व दर्शन बताते हुए कहा है कि उसकी सफलता का रहस्य भारतीय जनता, विशेषतः देहाती जनता, के मनोविज्ञान के बारे में गांधीजी की गहरी जानकारी है। उन्होंने भारतीय जनता को शताब्दियों की निष्क्रियता से जगाया, उसे नया जीवन दर्शन दिया और प्रारब्धवादी धारणाओं से झकझोर कर मुक्त कर दिया।

एक और अमरीकी लेखक लखपति बना

अमरीका में जब किसी लेखक की कोई कृति 'बुक ऑव दि मंथ क्लब' में चुन ली जाती है और उसके फिल्म अधिकार बिक जाते हैं, तब वह लखपति हो जाता है। इस श्रेणी में प्रवेश करने वाला सबसे नया लेखक जेम्स डिकी है जो पहले कवि था और किसी तरह कवि-सम्मेलनों में कविता-पाठ करके तथा विज्ञापन एजेंसी में काम करके रोज़ी कमाता था। उसका 'डिलीवरेंस' नामक उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि लगातार कई महीने बेस्टसेलर लिस्ट पर रहा। किताब की बिक्री से उसे जो आमदनी हुई वह तो अलग है, फिल्म कंपनी ने उसे एकमुश्त ५ लाख डालर दिए। लाभ में से भी उसका अंश तय हुआ है।

अमरीका में हिन्दी का अध्ययन

हाल ही में अमरीका की यात्रा से लौटने के बाद डॉ. नगेन्द्र ने चित्रकला संगम की ओर से आयोजित स्वागत समारोह में 'अमरीकी विश्वविद्यालयों में हिन्दी-अध्ययन' पर अपने अनुभव बताते हुए कहा कि पिछले दो दशक में अमरीकी विश्वविद्यालयों में हिन्दी साहित्य के अध्ययन में रुचि बढ़ी है। इस समय वहाँ १६ विश्वविद्यालयों में हिन्दी साहित्य पढ़ाया जाता है। चार विश्वविद्यालयों—कैलिफोर्निया, बर्कले, विस्कांसिन और शिकागो में हिन्दी साहित्य और भाषा विज्ञान का विशेष अध्ययन हो रहा है। एम. ए. के लिए हिन्दी पृथक् विषय के रूप में नहीं है लेकिन 'दक्षिण एशिया का अध्ययन' जो एम. ए. का विषय है, के अन्तर्गत आधुनिक हिन्दी साहित्य पढ़ाया जाता है।

यूनेस्को में हिन्दी

भारत ने यूनेस्को को यह सुझाव दिया है कि वह अपने भविष्य में होने वाले सम्मेलनों में हिन्दी का भी प्रयोग एक व्यवहार भाषा के रूप में करने के लिए कार्यक्रम तैयार करे।

प्रस्ताव में कहा गया है कि यूनेस्को अनेक भाषाओं का प्रयोग करता रहा है और उसने हाल ही में अरबी का भी प्रयोग करना शुरू कर दिया है। हिन्दी का प्रयोग करने सम्बन्धी निर्णय अगर अभी कर लिया जाता है तो १९७३-७४ तक इस भाषा के प्रयोग की व्यवस्था को अन्तिम रूप दे दिया जाएगा।
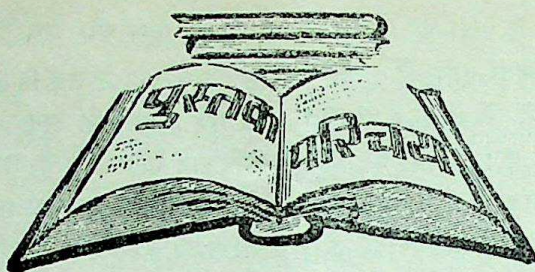
उपन्यास

बाबा बटेसरनाथ—ले० नागार्जुन; प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १५७; मूल्य ६.५० ।

नागर्जुन का यह उपन्यास, जो बहुत वर्षों से अनुपलब्ध था, भारतीय कथा-साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। समूची भारतीय भाषाओं में यह शायद अकेला उपन्यास है जिसका नायक कोई व्यक्ति नहीं बल्कि एक छतनार वट-वृक्ष है जिसे नागार्जुन की सृजनात्मक कल्पना ने जीवंत व्यक्तित्व दे दिया है।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के जमाने में ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों ने भारत की आंचलिक आत्मा को अपनी गिरफ्त में भली-भाँति जकड़ने के लिए स्वार्थी देशद्रोहियों का एक नया वर्ग पैदा किया था—जमींदार वर्ग। खेतिहरों और छोटे किसानों को अपने नृशंस नियन्त्रण में रखकर शोषण की चक्कियाँ अबाध गति से चलाते हुए भारत में अँग्रेजी सरकार का सुदृढ़ स्तंभ बने रहना ही इस वर्ग का मुख्य उद्देश्य था। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जाग्रत जनशक्ति के दबाव में स्वदेशी सरकार ने जमींदारी प्रथा का उन्मूलन कर दिया तब भी मिटते-मिटते यह वर्ग बेदखली का चक्र चालू कर गया। जमींदार के वंशधरों (बड़े किसानों) ने खेतिहरों में फूट डालकर भूमि के वृहत्तम अंश को अपने अधीन कर लिया।

एक शताब्दी से गाँव के बीचोबीच खड़ा वटवृक्ष यह सब देखता है और आत्मकथा के रूप में उसे पाठकों तक सम्प्रेषित करता है जो अपनी मार्मिकता में अद्वितीय है तो यथार्थ-चित्रण की दृष्टि से उसे ऐतिहासिक दस्तावेज़ कहा जा सकता है।

वट-वृक्ष के माध्यम से लेखक ने अकालग्रस्त मानव-समाज के प्रति अपनी संवेदना को बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति दी है, जो इन पंक्तियों में दृष्टव्य है: "मुसीबत में अगर किसी के काम न आया तो वह जीवन बेकार है बेटा! भूख ने लोगों की अंतड़ियों का रस सोख लिया और मैं बेहया हरा-भरा यह सब देखता रहा! बेचैनियों का तूफान उठा करता मेरे अन्दर; धरती पर काफी गुस्सा आता कि मेरी जड़ों को तो वह अब भी रस पहुँचाया करती है परन्तु अकालग्रस्त मानव-समाज की घोर उपेक्षा कर रही है।"

इस महत्वपूर्ण कृति के इस नये संस्कर णका पाठक स्वागत करेंगे ऐसी आशा की जानी चाहिए।

आँख की चोरी—ले० कृश्न चन्दर; प्र० राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; पृ० १५६, आ० क्राउन, मूल्य ५.०० ।

कृश्न चन्दर सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी हैं यह उनके सभी पाठक मानते हैं। चाहे मानव हृदय की कोमलतम भावनाओं का चित्रण हो, चाहे मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का क्रूर अंकन, व्यंग्य और सहृदयता दोनों में उनकी कलम बेजोड़ चलती है। इधर उन्होंने एक नए विषय को अपनी सृजन प्रतिभा के लिए चुना है—वह है जासूसी उपन्यास का क्षेत्र। किन्तु लगता है इस क्षेत्र में वह बुद्धिवादी एवं वैज्ञानिक पद्धति पर चलने वाले विदेशी उपन्यासों की अपेक्षा इआन फ्लेमिंग के "जेम्स बांड" की सफलता से अधिक प्रभावित हैं। तभी तो वह अपने सब नायकों को उसकी नकल में ढाल रहे हैं। सुरा-सुन्दरी और शारीरिक पौरुष का प्रदर्शन उनके जासूस नायकों की विशेषता है या कमजोरी यह तय कर पाना भी कठिन है। इस पुस्तक के ब्लर्ब पर लिखा है कि उपन्यास की घटनाएँ सच्चाई के निकट होने के कारण पाठक को अपनी ओर आकर्षित करती हैं और उसमें शुरू से अंत तक रोचकता बनाए रखती हैं। परन्तु पुस्तक का महत्व कथानक की सच्चाई

पर नहीं बल्कि लेखक द्वारा उस सच्चाई को प्रस्तुत करने के ढंग पर निर्भर करता है और इस दृष्टि से घटिया जासूसी उपन्यासों और कृश्न चन्दर की इस कृति में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता। शायद बम्बई के रंगीन वातावरण ने लेखक को घोर-यथार्थवादी बना दिया है। प्रस्तुत पुस्तक में कई स्थलों पर लक्ष्मी की 'मौसी की बहन' का जिक्र आया है। अभी तक मौसी की बहन या तो अपनी माँ होती थी या दूसरी मौसी। लेखक ने इस नए सम्बन्ध की कल्पना करके पाठक को एक और गोरखधन्धे में फंसा दिया है, यद्यपि इस रहस्य का उद्घाटन प्रकाशक द्वारा भी किया जा सकता था।

रायकमल—मूल: ताराशंकर वंद्योपाध्याय; अनु०: हंसकुमार तिवारी; प्र० राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६; आकार क्राउन, पृष्ठ १२८; मूल्य ५.००।

बंगला कथा साहित्य में तारा बाबू का नाम अब क्लासिक बन चुका है। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने अजय नदी के किनारे के जयदेव केंदुली से कटवा तक के अंचल को समेटते हुए अध्ययन की दृष्टि से वैष्णव वर्ग को चुना है। वैष्णवों का जीवन सम्पूर्ण भारत में अपने प्रकार का एक अपवाद है। अतिशय भावुकता और चरम रसोद्रेक उनके जीवन के एकमात्र सत्य हैं। उनका विश्वास है—'बिना कान्हा के गीत नहीं।' अर्थात बिना गीतमयता के जीवन नहीं और बिना 'राधा-कृष्ण' के गीत नहीं। लेकिन ऐसे स्वप्नाचारी जीवन के बावजूद वैष्णवों के चारों ओर कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जिनकी ओर आसपास के दूसरे वर्गों का ध्यान नहीं जाता। तारा बाबू ने 'रायकमल' में वैष्णवों की उन्हीं समस्याओं को स्पर्श किया है। उपन्यास में केन्द्रीय चरित्र है—रायकमल, जिसे स्थान-स्थान पर कमल, कमलिनी, आनन्दमयी और चीनी के नाम से भी पुकारा गया है। तारा बाबू का कैमरा रायकमल के चारों ओर बचपन से घूमना शुरू कर उसकी प्रौढ़ावस्था तक घूमता है। और इस बीच उसके जीवन में न जाने कितनी हलचल होती है, कितने प्रश्न उठते हैं लेकिन वह है कि कोई वैवर्ण्य नहीं, कोई कुंठा नहीं।

घटनाओं और पात्रों के अनुरूप भाषा पढ़ने में तारा बाबू अद्वितीय हैं। रायकमल की बाल्यावस्था के वर्णन तक तो ऐसा लगता है मानों हम कोई उपन्यास नहीं 'गीत

गोविन्द' की टीका पढ़ रहे हों। अनुवाद और प्रस्तुतीकरण सुन्दर है।

कहानी

मेरी प्रिय कहानियाँ : ले० बलवन्त सिंह; प्र० राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६; आकार क्राउन, पृष्ठ सं० १५४, मूल्य ५.००।

बलवन्त सिंह ने लेखन की शुरूआत उर्दू में की थी लेकिन अब एक लम्बे अरसे से वे हिन्दी में और केवल हिन्दी में लिख रहे हैं। पंजाब के लोक जीवन को, वहाँ की लोक संस्कृति को पूरी सजीवता के साथ हिन्दी पाठकों तक संप्रेषित करने वाले कथाकारों में बलवन्त सिंह का नाम प्रमुख रूप से आता है। अश्कजी के अनुसार "पंजाब के देहात के—यों कहें कि सिक्ख जाटों के—चित्रण में उनका कोई सानी नहीं।"

प्रस्तुत संकलन में लेखक की, अपनी रुचि से चुनी हुई, १२ कहनियाँ संकलित हैं। जैसा कि बलवन्तसिंह ने खुद अपनी भूमिका में भी स्वीकारा है, उनके जीवन की यायावरी वृत्ति उनके लेखन में भी पूरी तरह दिखाई देती है। लेखन के नाम पर कहीं कोई आभिजात्यता नहीं, कहीं कोई मुखौटा नहीं। बस पढ़ने वाले को ऐसे लगता है जैसे कोई खुले दिल वाला सरदार दोस्त सरदारों के ही लतीफे खूब रस ले-लेकर सुना रहा हो। बलवन्त के इस संग्रह में एक ओर एक ही नाव पर, जिन्दगी का खुशबूदार पेड़ और तीन देवियाँ जैसी रह-रह कर हँसाने वाली कहानियाँ हैं तो दूसरी ओर बनवास, कली की फरियाद, काली तित्तरी, तीसरा सिग्रेट जैसी गंभीर और कुछ सोचने पर मजबूर कर देने वाली कहानियाँ हैं। 'रंग' एक बिलकुल अलग तरह की कहानी है। सुविधा के लिए उसे धूपछाँही कपड़े जैसी कहानी भी कह सकते हैं। कभी स्केच लगने लगती है तो कभी लैंडस्केप। और कभी लगने लगता है जैसे हम रिपोर्ताज पढ़ रहे हों।

आलोचना

रीति कवियों की मौलिक देन—ले०-डा० किशोरी लाल, प्र० साहित्य भवन (प्रा०) लि०, इलाहाबाद; आकार डिमाई; पृ० ५५६, मूल्य-३२ रुपए।

आलोच्य ग्रन्थ प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध है। इसमें चार

अध्याय हैं जिनमें रीतिकाल के नामकरण की समस्या, स्रोत, उद्भव, स्वरूप विवेचन, शृंगारिक समीक्षा, कला और अलंकरण का कौशल बड़े ही विशद रूप से दिखाया गया है। लेखक ने अब तक रीतिकाल सम्बन्धी सभी मान्यताओं का विश्लेषण करते हुए अपना मौलिक चिन्तन दिया है जिसके कारण इस ग्रन्थ की उपादेयता निश्चय ही बहुत अधिक बढ़ गई है। एतदर्थ डा० किशोरी लाल हार्दिक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने रीति के उलझे हुए प्रश्नों को हल किया है। इसीलिए रीति कवियों के मौलिक जय-घोष के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अपना महत्व है।

विविध

रेडार—ले० गोपीनाथ श्रीवास्तव; प्र० राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ ८४; मूल्य २.५० पैसे।

रेडार आधुनिक विज्ञान का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यद्यपि हमारे सामान्य जीवन में उसकी उपयोगिता नहीं के बराबर है लेकिन जब विश्व की साम्राज्यवादी शक्तियां अपना उपनिवेशवादी जाल अत्यंत तीव्रता से फैलाती जा रही हों तब किसी भी राष्ट्र के अपने अस्तित्व की रक्षार्थ रेडार की उपयोगिता बहुत अधिक हो जाती है। उदारणार्थ शत्रु विमानों की गतिविधियों की सही जानकारी पाने, उन पर हमला करने, पीछा करने और सकुशल वापस लौट आने में रेडार का उपयोग होता रहा है। किन्तु पिछले महायुद्ध के सामरिक दिनों में आविष्कृत हुए इस वैज्ञानिक उपकरण की उपयोगिता की अन्य संभावनाएं भी अब खुलने लगी हैं। मसलन हवाई मैदानों में यातायात नियंत्रण, अविकसित एवं अगम्य स्थानों के सर्वेक्षण, भू-उपग्रह पथदर्शन तथा अंतरिक्ष की खोज के लिए रेडार का प्रयोग किया जाने लगा है। ज्ञान-विज्ञान सीरीज़ के अंतर्गत प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक को निम्नलिखित ६ भागों में बांटा गया है: (१) रेडार का इतिहास (२) सामान्य सिद्धान्त (३) दूरी और दिशा (४) रेडार सेट के भाग (५) चित्र लेने की विधि तथा (६) उपयोग। तथ्यों को सरल एवं बोधगम्य बनाते हेतु स्थान-स्थान पर चित्रों का प्रयोग भी किया गया है। कुल मिला कर प्रत्येक किशोर के लिए, चाहे विज्ञान विषय उसके पाठ्यक्रम में हो या न हो, इस पुस्तक का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

मेरी यात्राएँ : ले० देवराज उपाध्याय; प्र० सौभाग्य प्रकाशन, उदयपुर, पृष्ठ ११८; आकार डिमाई, मू० ५.०० ।

'मेरी यात्राएँ' देवराज उपाध्याय की ताजा कृति है। इसमें तीन यात्राओं (गुजरात, तमिलनाडु, दिल्ली) को लेकर उपाध्याय जी ने अपने संस्मरण प्रस्तुत किये हैं। 'मेरी गुजरात यात्रा' के अंतर्गत वे एक प्रसंग में कहते हैं 'मैं उदयपुर में अपने भाषणों की रोचकता की अतिमात्रा के लिए बदनाम हूँ।' लेकिन मेरी राय तो यह है कि केवल भाषणों की रोचकता ही नहीं लेखन की रोचकता भी उपाध्याय जी की अपनी विशेषता है। तीनों यात्राएं भाषा, शैली और प्रसंगों की दृष्टि से पाठक को गल्प की तरह बाँधती हैं। इन यात्रा संस्मरणों की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि ये अपने परिप्रेक्ष्य में केवल मात्र यात्रा संदर्भ ही नहीं बल्कि अनेकानेक विशिष्ट संदर्भों को भी समेटे हैं। उदाहरणार्थ-गुजरात यात्रा के अंतर्गत श्रीमती कृष्णा मजीठिया का प्रसंग लिया जा सकता है। श्रीमती मजीठिया के 'हिन्दी के तिलस्मी और जासूसी उपन्यास : एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन' शीर्षक शोध प्रबंध की अस्वीकृति का विवरण देकर उपाध्यायजी ने बड़ी ही शालीनतापूर्वक विश्वविद्यालयीय कूपमण्डूकता का पर्दाफाश कर दिया है। दिल्ली की यात्रा का विवरण भी काफी रोचक है। साहित्यकारों से सम्बन्धित संस्मरण बड़े ही तथ्यपूर्ण हैं।

गान्धी कथा : ले० उमाशंकर जोशी; अनु० सरोजिनी नानावटी; पृष्ठ १३६; आकार क्राउन; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली; मू० ५.०० ।

भारतीय वाङ्मय के एक सशक्त एवं प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में श्री उमाशंकर जोशी का नाम सर्वविदित है। गुजराती के एक महत्त्वपूर्ण साहित्यकार और एक महान् शिक्षाविद के रूप में उन्होंने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। सन् १९६८ में उनके 'निशाथ' नामक काव्यग्रंथ को वर्ष की (भारतीय भाषाओं की) सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया था। 'गांधी कथा' जोशी जी की नवीनतम रचना है। इसमें गांधी जी के जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों को रोचक भाषा-शैली द्वारा सर्वथा नए रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह कृति अपने मूलरूप में गुजराती मासिक पत्र 'संस्कृति' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हो चुकी है। गांधी शताब्दी वर्ष के दौरान रचे गये ढेर-सारे साहित्य की तुलना में यह कृति सर्वथा मौलिक और महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी अनुवाद एवं प्रस्तुतीकरण संतोषप्रद है।

बाल साहित्य

बुद्धू से बुद्धिमान, ले० बाल शौरी रेड्डी, प्र० ज्ञान भारती बाल पाकेट बुक्स, लखनऊ, पृ० १२७, मूल्य १.०० । **नन्हे राजकुमार**. ले० जगपति चतुर्वेदी, प्र० उपरोक्त; पृ० १२७, मूल्य १.०० । **बाल महाभारत भाग २**, ले० अमृतलाल नागर, प्र० उपरोक्त; पृ० १२६, मूल्य १.०० । **कुबडा शहजादा**, ले० प्रेमकिशोर 'पटाखा', प्र० उपरोक्त; पृ० १२३, मूल्य १.०० । **हाजी बाबा, भाग ३**, ले० अशोक मिश्र, प्र० उपरोक्त; पृ० १२८, मूल्य १.०० । **माया देश का रहस्य भाग ४**, प्रताप नारायण श्रीवास्तव, प्र० उपरोक्त; पृ० १२६, मूल्य १.०० ।

ज्ञान भारती बाल पाकेट बुक्स, लखनऊ की छः पुस्तकों का यह नया सेट भी उतना ही रोचक और बच्चों को पसन्द आने वाला है जितने इससे पहले सेट। किन्तु इस बार पुस्तकों में प्रूफ, छपाई व बाइंडिंग आदि की जितनी भयंकर भूलें छूट गयी हैं उनसे लगता है कि प्रकाशक यदि इनकी ओर समुचित ध्यान नहीं देते रहे तो इनका स्तर गिर कर सामान्य घटिया पुस्तकों जैसा हो जाएगा।

प्रकाशक बन्धुओं से

'प्रकाशन समाचार' का जुलाई अंक 'दक्षिण भारत अंक' के रूप में प्रकाशित किया जायेगा, जिसमें दक्षिण भारतीय लेखकों द्वारा हिन्दी में लिखी गई कृतियों और दक्षिणी भाषाओं से हिन्दी में अनूदित कृतियों का परिचय प्रस्तुत किया जायेगा। यदि आपने ऐसी पुस्तकें प्रकाशित की हों तो उनके और लेखकों-अनुवादकों के नाम तथा मूल्य लिखकर यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

—सम्पादक
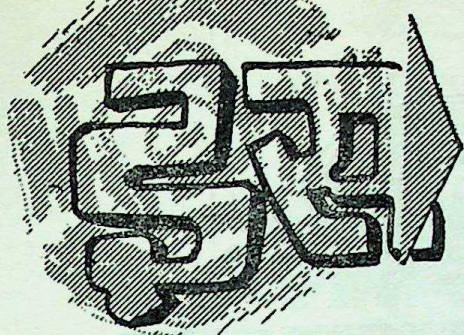
आलोचना

डॉ० सुषमा पाल, छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६ ३५.००
प्रो० भूषणस्वामी, अतीत के चलचित्र और महादेवी वर्मा, हिन्दी साहित्य संसार, पटना-४ २.००

उपन्यास

निर्मला वाजपेयी, सूखा सैलाब, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली २.५०
जुले वर्न, समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली २.००

कहानी

रामकुमार भ्रमर, चम्बल की रक्तकथा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १२.००
अमृतलाल नागर, भारतपुत्र नौरंगीलाल, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली ६.००

जीवनी-संस्मरण

सन्तराम वत्स्य, मेरी क्यूरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १.५०
त्रिलोकचन्द, पाकिस्तानी जेलों में तीन वर्ष, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली ६.००

नाटक

विष्णु प्रभाकर, मेरे श्रेष्ठ रंग-एकांकी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ६.००
रामेश्वरसिंह काश्यप, समाधान, हिन्दी साहित्य संसार, पटना ३.५०

कविता

मोहन निराश, कृष्ण मेरा पर्याय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ४.००

राजनीति

डा० श्यामलाल पांडेय, वेदकालीन राज्यव्यवस्था, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ ८.००

इतिहास

डॉ० ईश्वरी प्रसाद, क्रांतिकारी यूरोप, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ १२.००
डॉ० बुद्धप्रकाश, एशिया के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास की रूपरेखा, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ १३.००

बालोपयोगी

श्रीकृष्ण, तोताराम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली २.५०
किशोरीलाल वैद्य, हिमालय की लोककथाएँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली २.५०

(शेष अगले पृष्ठ पर)
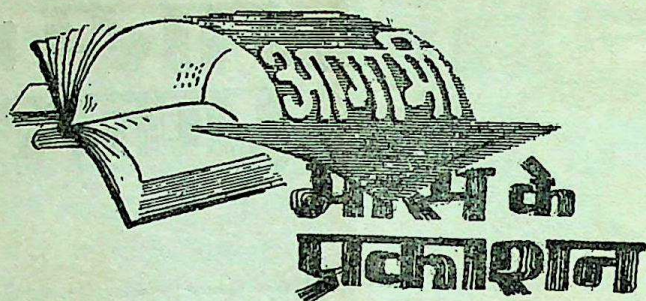
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, अंसारी रोड, दिल्ली-६
—आन्दोलन (उपन्यास), अभिमन्यु अनत शबनत
—कृष्णवाहन की कथा (व्यंग्य), रवीन्द्रनाथ त्यागी
—प्रसाद प्रतिभा (आलोचना), सं० : इन्द्रनाथ मदान
—अवधी का लोकसाहित्य (शोध), सरोजिनी रोहतगी
—संविधान की आत्मा (राजनीति), डॉ० सुभाष काश्यप
—चींटियों की समुद्र-यात्रा (बालोपयोगी), वीरकुमार अधीर
—बन्दरों का नाटक (बालोपयोगी), हरिकृष्ण देवसरे

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६
—भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन (आलोचना), गोपीनाथ तिवारी
—दीपक जलने से पहले (नाटक), चन्द्रशेखर भट्ट
—भस्मांकुर (कविता), नागार्जुन
—आधा गाँव (उपन्यास), राही मासूम रज़ा

राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६
—वैष्णव-भक्ति आन्दोलन (निबंध), डॉ० मलिक मोहम्मद
—प्रवास की डायरी (संस्मरण), बच्चन
—कोरा कागज (उपन्यास), अनन्त गोपाल शेवड़े
—तीन पहिए (उपन्यास), ख्वाजा अहमद अब्बास

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
—वर्जित देश तिब्बत में (यात्रा), रामदत्त पंत
—युगान्त (निबन्ध), इरावती कर्वे

हिन्दी साहित्य संसार, खजांची रोड, पटना-४
—मानस की अलंकार योजना (शोध), डॉ० वचनदेव कुमार
—संसार के प्रसिद्ध सेनापति (बालोपयोगी), हिमांशु श्रीवास्तव
—रोमांचकारी शिकारों के प्रसंग (बालोपयोगी), हिमांशु श्री वास्तव

(पिछले पृष्ठ का शेष)

विविध

जीवनलाल प्रेम, कश्मीर, राजपाल एंड संस, दिल्ली	३.००
जयन्त वाचस्पति, नागालैंड, ,, ,, ,,	३.००
बनारसीदास चतुर्वेदी (सं०), विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली	४०.००
सुरेशसिंह, शिकार के पक्षी, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ	१५.००
यादवेन्द्रदत्त दुबे, आखेट, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	६.००
इन्दिरा नूपुर, भाषा शिक्षण : कुछ नये विचार-बिन्दु, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	२.००

भारतीय संस्कृति

● शिवदत्त ज्ञानी

इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रत्येक पहलू पर पर्याप्त प्रकाश डालकर उसके आधार-भूत सिद्धान्तों का मौलिक विवेचन किया है। संस्कृति-विषयक परीक्षाओं के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य १०.००

●

'हिन्दू सभ्यता' विद्वान लेखक की अँग्रेजी पुस्तक 'हिन्दू सिविलिजेशन' का रूपान्तर है। इस संसारप्रसिद्ध ग्रन्थ का अनुवाद डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे विख्यात विद्वान ने किया है, यही इसकी उत्कृष्टता का पूरा-पूरा आश्वासन है। हिन्दू सभ्यता की प्रामाणिक जानकारी देनेवाला अन्य कोई ग्रन्थ इसके सिवा नहीं है। मूल्य १६.००

हिन्दू सभ्यता

● डा० राधाकुमुद मुखर्जी

तीन महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के नए संस्करण

विश्व अर्थव्यवस्था

एक परिचय

● ए० जे० ब्राउन

प्रो० ए० जे० ब्राउन संसार के सर्वप्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों में एक हैं। उनकी प्रस्तुत पुस्तक विश्वविद्यालय के उन सभी विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है जिन के अध्ययन का माध्यम हिन्दी है और इस विषय पर एक प्रामाणिक हिन्दी कृति के अभाव में जिन्हें बड़ी असुविधा का सामना करना पड़ता था। साथ ही उन विद्यार्थियों के लिए भी यह मूल्यवान सिद्ध हुई है जो संसार की आर्थिक गतिविधियों का गहन अध्ययन करना और उनके आधारभूत नियमों और सिद्धान्तों को समझना चाहते हैं। मूल्य ११.००

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

वर्ष १९७० के
साहित्य अकादमी पुरस्कार
द्वारा सम्मानित
महान ऐतिहासिक कृति

हिन्दी के जीवनी-साहित्य
में अद्वितीय

"निराला-जैसा साहित्यकार
सदियों में कभी एक होता है"

—महादेवी वर्मा

और
'निराला की साहित्य-साधना' भी
हजारों में एक सिद्ध हुई है !

निराला की साहित्य-साधना

डॉ० रामविलास शर्मा

निराला की जीवन-साधना और साहित्य-साधना के गहनतम स्तरों के भीतर से उनके विराट व्यक्तित्व का उद्घाटन करने वाली बेजोड़ कृति !

नए संशोधित-संवर्द्धित संस्करण में नई साज-सज्जा के साथ उपलब्ध

डिमाई आकार
५५० से अधिक पृष्ठ
रेक्सिन की मजबूत जिल्द

मूल्य ३०.००

शीघ्र प्रकाश्य
निराला की साहित्य-साधना का द्वितीय खण्ड

इस खंड में निराला की राजनीतिक, सामाजिक, दार्शनिक विचारधारा का विवेचन है जिससे विदित होगा कि निराला ने अपने युग की समस्याओं पर कितनी गहराई से विचार किया था !

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

श्रीमती शीला सन्धू, मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ८ फ़ैज बाजार, दिल्ली, के लिए नवीन प्रेस यूनिट नं० २, इण्डस्ट्रियल एस्टेट ओखला, नई दिल्ली-२० में मुद्रित ।

जुलाई अगस्त १९७

राजनीतिशास्त्र पर हिन्दी में
विश्वकोश के ढंग की पहली
और अत्यन्त प्रामाणिक कृति

प्रत्येक पुस्तकालय और हिन्दी-प्रेमी पाठक
के लिए सर्वथा संग्रहणीय

राजनीति कोश

डा० सुभाष काश्यप
एवं
विश्वप्रकाश गुप्त

राजनीतिशास्त्र के पारिभाषिक शब्द
शब्दबंधों का हिन्दी-अनुवाद और
भारतीय संदर्भों में उनकी विस्तृत
व्याख्या प्रस्तुत कोश-ग्रन्थ की विशेष
है।

डिमाई आकार में लगभग
साढ़े-पांच सौ पृष्ठ
रेक्सिन की मजबूत और
आकर्षक जिल्द
मूल्य ४०.००

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

हमारे पिछले मास के प्रकाशन

आधा गाँव

राही मासूम रज़ा

आंचलिक उपन्यास हिन्दी में बहुत-से लिखे गये हैं, लेकिन 'आधा गांव' पहला उपन्यास है जिसमें ग्रामीण जीवन अपने भरे-पूरे रूप में पूरी सच्चाई, तीव्रता और बेबाकी के साथ सामने आता है। साथ ही, शीआ मुसलमानों का जीवन भी हिन्दी-उर्दू में पहली बार ही इस उपन्यास में चित्रित हुआ है, और इस दृष्टि से 'आधा गांव' हिन्दी उपन्यास साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मूल्य १६-००

भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन

डा० गोपीनाथ तिवारी

भारतेन्दु जी अकेले ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने पश्चिमी तथा पूर्वी नाट्य-शास्त्र के उपयोगी सिद्धान्तों को हृदयंगम कर नाट्य-रचना की। अपने नाटकों में वे शास्त्र-अनुगामी भी हैं और शास्त्र-विरोधी भी। अतः उनके नाटकों का यह अनुशीलन उनके नाटकों को बोधगम्य कराने में सहायक होगा।

मूल्य १८-००
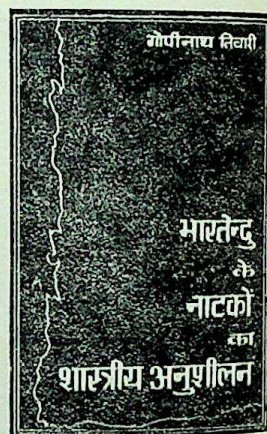
भस्मांकुर

नागार्जुन

महाकवि कालिदास के विख्यात काव्य 'कुमारसंभव' के मदन-दहन वाले प्रसंग पर आधारित यह लघु काव्य नागार्जुन के रचनाकार की अनूठी उपलब्धि है।

मूल्य ५-००

दीपक जलने से पहले

चन्द्रशेखर भट्ट

मंचोपयोगी एकांकियों का संग्रह। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत के नव-निर्माण की योजनाओं से जो उत्साह चारों ओर व्याप्त हुआ उसका बड़ा ही प्रभावशाली चित्रण इन नाटकों में हुआ है।

मूल्य ४.००

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

आठ नई हिन्द पॉकेट बुक्स

सारा आकाश (उपन्यास) आधुनिक युग के जाने-माने हिन्दी कथाकार **राजेन्द्र यादव** का, निम्न-मध्यवर्ग पर आधारित, एक सशक्त उपन्यास, जिस पर एक सफल फिल्म भी बनी है।

मूल्य : तीन रुपये

अनाड़ी (उपन्यास) हिन्दी के प्रख्यात उपन्यासकार **उपेन्द्रनाथ अश्क** के बहुचर्चित उपन्यास 'शहर में घूमता आईना' का लेखक द्वारा पॉकेट बुक्स के लिए संक्षेपित उपन्यास।

मूल्य : दो रुपये

प्यार एक खुशबू है (उपन्यास) अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त **कृश्न चन्दर** की, कश्मीर की घाटी के बकर-वालों के जीवन पर आधारित दो आत्माओं के सच्चे प्रेम की मर्मस्पर्शी दास्तान।

मूल्य : दो रुपये

बिन बरसा बादल (उपन्यास) रोमांटिक उपन्यासकार **शेखर** द्वारा लिखा अपनी तरह का पहला उपन्यास, जोकि एक सशक्त प्रणयकथा के साथ-साथ जागीरदारी समाज का मुँह बोलता चित्र है।

मूल्य : दो रुपये

ओ मेरे अपने (उपन्यास) लोकप्रिय उपन्यासकार **दत्त भारती** द्वारा लिखित महानगरों के आज के दोगले जीवन में घुट रहे प्रेम का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने वाला एक रोचक उपन्यास।

मूल्य : तीन रुपये

संगीन जुर्म रंगीन मुजरिम (अपराध कहानियाँ) हिन्दी के सुपरिचित नई पीढ़ी के कहानीकार **सुदर्शन चोपड़ा** द्वारा लिखी, हत्या और रोमांस की अत्यन्त सनसनीखेज, सच्ची कहानियां।

मूल्य : दो रुपये

रहस्यमयी रमणी (जासूसी उपन्यास) अत्यन्त लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार **कर्नल रंजीत** का, भ्रष्टाचार, बलात्कार और नृशंस अत्याचारों की रहस्यपूर्ण घटनाओं से भरपूर, नया जासूसी उपन्यास।

मूल्य : दो रुपये

सेक्स और यौवन (सेक्स-परिचय) यौन और स्वास्थ्य विषय के अधिकारी विद्वान लेखक **डा० लक्ष्मी नारायण शर्मा** द्वारा नवयुवक-नवयुवतियों को सेक्स की आवश्यक जानकारी देने वाली बेजोड़ पुस्तक।

मूल्य : दो रुपये

हमारे नियमित स्थायी ग्राहक बनकर अतिरिक्त कमीशन और बोनस आदि की अनेक सुविधाएं प्राप्त कीजिए

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड

जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

सम्पादक : शीला संधू

वर्ष १८ ● अंक ११ ● जुलाई-अगस्त, १९७१
वार्षिक ४.००; विदेशों में ८.००; एक प्रति ४.००

पुस्तकों के श्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण के लिए पुरस्कार की योजना

भारत में पुस्तक प्रकाशन उद्योग आजादी से पहले तक उपेक्षित अवस्था में रहा है। उस समय इस देश में न शिक्षा का अधिक प्रसार हुआ था और न लोगों में पढ़ने की रुचि थी। जो थोड़े-बहुत शिक्षित होते थे वे अंग्रेजी के मध्यम से पढ़ते थे और उनकी जरूरत पूरी करने के लिए अंग्रेजी पुस्तकें विदेशों से आयात हो जाती थीं। फलतः भारतीय भाषाओं में पुस्तक-प्रकाशन को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला।

आजादी के बाद स्थितियाँ बदलीं। शिक्षा के प्रसार के लिए घोर प्रयत्न हुआ, जिसके फलस्वरूप पुस्तकों की माँग बढ़ी। यह माँग पाठ्य-पुस्तकों के लिए भी थी और सामान्य पुस्तकों के लिए भी और इस माँग को पूरा करने के लिए दोनों प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करनेवाले नये-नये प्रकाशक सामने आये। इन लोगों के अनवरत प्रयत्नों से अब देश का प्रकाशन-उद्योग ऐसी स्थिति में आ गया है जहाँ से वह पीछे मुड़कर देखे बिना हौसले के साथ आगे बढ़ सकता है।

भारतीय प्रकाशकों का बराबर यह प्रयत्न रहा है कि विषय-वस्तु और सामग्री की दृष्टि से श्रेष्ठ पुस्तकें अधिक से अधिक संख्या में प्रकाशित हों और अपने इस प्रयत्न में उन्हें काफी हद तक सफलता मिली है। लेकिन इस उद्योग को गौरव दिलाने वाली एक दूसरी जरूरत है पुस्तकों के श्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण की। पुस्तकों में कागज अच्छा लगे, छपाई सुन्दर हो, जिल्द मजबूत और आकर्षक बने तो पठनीय सामग्री की श्रेष्ठता में चार चाँद लग जाते हैं। भारतीय प्रकाशक यद्यपि इस दिशा में भी आगे बढ़े हैं, लेकिन प्रस्तुतीकरण का अपेक्षित स्तर अभी तक प्राप्त नहीं किया जा सका है। विशेष रूप से भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण का सामान्य स्तर अच्छा नहीं है। हालाँकि इस उद्देश्य को पूरा करने में प्रकाशकों के सामने कई तरह की कठिनाइयाँ हैं, लेकिन उन पर विजय पानी होगी तभी भारत का प्रकाशन उद्योग दुनिया के दूसरे देशों के सामने सर ऊँचा उठा सकेगा।

श्रेष्ठ पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण पर भारत सरकार द्वारा हर साल जो पुरस्कार दिया जाता है उससे प्रकाशकों को काफी प्रोत्साहन मिला है। अब अखिल भारतीय प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता महासंघ ने भी राष्ट्रीय स्तर पर सुन्दर प्रस्तुतीकरण के लिए पुस्तकों को पुरस्कृत करने की एक योजना तैयार की है। यह पुरस्कार हर साल दिया जाया करेगा और इससे प्रकाशकों को निश्चय ही पुस्तकों का प्रस्तुतीकरण उन्नत करने की प्रेरणा मिलेगी।

प्रकाशकों तथा पाठकों से

'प्रकाशन समाचार' का यह अंक 'दक्षिण भारत अंक' के रूप में प्रकाशित करने की घोषणा की गई थी। लेकिन पठनीय सामग्री तथा सूचनाओं आदि की दृष्टि से जिस प्रकार का सर्वांग-पूर्ण अंक हम निकालना चाहते थे उसके लिए समय कम होने के कारण पूरी तैयारी नहीं की जा सकी, अतः इस बार विशेषांक के विचार को स्थगित रखना पड़ा। अब यह अंक दिसंबर १९७१ में प्रकाशित किया जायेगा। जिन प्रकाशकों ने अपने यहाँ से प्रकाशित दक्षिणभाषी लेखकों की कृतियों का विवरण अभी तक न भेजा हो वे अब शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

—सम्पादक

मॉरीशस और हिन्दी

अभिमन्यु अनत

मॉरीशस में हिन्दी की कहानी एक संघर्ष और त्याग की कहानी है। १५० वर्ष पहले जब भारत के कुछ पीड़ित और बेकार लोगों ने नये जीवन की उम्मीद से भारत छोड़ा था उस समय वे अपने साथ न तो हिमालय ला सके थे और न ही गंगा की धाराएँ, फिर भी उनकी झोलियों में तुलसी दास की रामायण की प्रतियाँ उनकी सबसे बड़ी निधि के रूप में आ गई थीं और उसी क्षण से मॉरीशस की ऊसर भूमि में हिन्दी का बीज बोया गया। उन भारतीय कुलियों को पत्थर के नीचे से सोना निकालने का प्रलोभन देकर मॉरीशस लाया गया था, पर उन्होंने अपनी आस्था और परिश्रम से इस बात को सच प्रमाणित कर दिया। १५० वर्ष पहले के उसी बंजर देश को आज पर्यटक एक स्वर में धरती का स्वर्ग कह जाते हैं।

भारतीयों ने जो संघर्ष इस देश के रूप को परिवर्तित करने में किया वही संघर्ष यहाँ हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए भी हुआ। तुलसीकृत रामचरितमानस के बाद यहाँ महाभारत, आल्हा खण्ड, कुंवर विजय, सूरसागर, क्षत्रिय घुघुलिया, हनुमान चालीसा, चन्द्रकान्ता जैसी पुस्तकें पहुंचनी शुरू हुई और बहुत बाद में प्रेमचन्द का बोलवाला भी शुरू हुआ। ये सभी पुस्तकें मॉरीशस में हिन्दी की नींव रहीं।

शुरू से आज तक इस द्वीप में हिन्दी की पढ़ाई निःशुल्क होती आयी है। आज भी सैंकड़ों की संख्या में ऐसे नौजवान पाये जाते हैं जो बेकारी और अभाव की जिन्दगी बसर करके भी हिन्दी की पढ़ाई मुफ्त में करते हैं। न जाने यह कौन-सी लगन है। द्वीप के हर गाँव में पाठशालाओं का होना और उनमें हर शाम हिन्दी की निःशुल्क पढ़ाई यहाँ के प्रवासी भारतीयों का सबसे बड़ा सिद्धान्त बन गयी है। पहले-पहल इन पाठशालाओं में केवल प्राथमिक पढ़ाई होती थी जबकि अब कुछ वर्षों से माध्यमिक पढ़ाई भी उसी रफ्तार के साथ चल पड़ी है। इस क्रान्ति के पीछे जो सेनानी थे और हैं उनके नाम इस प्रकार हैं—पण्डित वासुदेव विष्णु दयाल, श्री नेमन गुप्त, भगत परिवार, पं० जगदत्त, प्रो० रामप्रकाश, श्री जयनारायण राय, सोमदत्त बखोरी तथा और कुछ ऐसे लोग जिन के नाम इस छोटे से लेख में लाना कुछ कठिन है। इस कार्य में कुछ सभाओं का भी भारी योगदान रहा है। हिन्दी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा, हिन्दू महासभा तथा अन्य एक दो सभाओं ने भी सहयोग का हाथ बढ़ाया।

फलस्वरूप आज इस देश में हिन्दी चल पड़ी है। हर साल हजारों की संख्या में परीक्षार्थी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परिचय से लेकर उत्तमा तक की परीक्षाओं में सफल आ रहे हैं। ऐसे तो यहाँ के गाँवों की भाषा भोजपुरी है, फिर भी विशेष कार्यों की भाषा हिन्दी होती है। कथा-विवाह से लेकर सभी अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक कार्य हिन्दी में होते हैं।

इस १५० वर्ष के घोर परिश्रम के बाद आज हिन्दी सरकारी स्कूलों में भी पढ़ाई जा रही है और रेडियो-टेली-विजन से भी (चाहे वहाँ का स्तर कुछ भी क्यों न हो) प्रचारित और प्रसारित हो रही है।

यहाँ हिन्दी में संतोषजनक ढंग से साहित्य सृजन भी होने लगा है। पं० विष्णुदयाल, सोमदत्त बखोरी तथा बी. एम. भगत जैसे लेखक आज प्रवासी साहित्य को आगे बढ़ाने में हर प्रयोग और प्रयत्न कर रहे हैं। इस दिशा में हिन्दी परिषद और 'अनुराग' उभरते हुए लेखकों को प्रोत्साहन दे रहे हैं। हिन्दी प्रचारिणी सभा की ओर से वार्षिक साहित्यिक प्रतियोगिता भी नये लेखकों के हौसले बढ़ा रही है।

'नेशनल' के कुछ गौरवपूर्ण प्रकाशन

इतना कुछ होते हुए भी जो खटकने वाली बात है वह यह कि साहित्यिक रुचि और सृजन में यहाँ आधुनिकता की कमी है जिसका सबसे पहला कारण यहाँ आधुनिक साहित्य का अभाव है। आज भी हमारे लोग प्रेमचन्द, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त से आगे नहीं बढ़ पाये। आधुनिक साहित्य की कमी के कारण ही हमारे लेखक अपने विचारों का आधुनिकीकरण नहीं कर पा रहे हैं। 'अनुराग' में आने वाली रचनाओं को देखते हुए यही अभास होता है कि हमारे ये लेखक आज भी प्रेमचन्द और प्रसाद के नकाल हैं। फिर भी उनके प्रयासों को सराहे बिना हम नहीं रह सकते।

इन लेखकों को परिवेश से बाहर लाकर उनमें नई चेतना लाने के लिए भारत की सम्बन्धित संस्थाओं को कुछ न कुछ करना जरूरी है क्योंकि भारत की ओर से इस दिशा में जो कुछ हुआ है वह संतोषजनक नहीं माना जा सकता। इन लेखकों को प्रोत्साहन और नई दिशा देने के लिए उन्हें भारत के साहित्यकारों से मिलने और सीखने का अवसर देना चाहिए। यहाँ के भारतीय उच्चायोग द्वारा 'बाल भारती' और 'आजकल' की जो चन्द प्रतियाँ पाठशालाओं और सभाओं को पहुँचायी जाती हैं वे पर्याप्त नहीं हैं।

मॉरीशस में अगर हिन्दी पुस्तकों का मार्केट कमजोर है तो केवल इसलिए कि पाठकों को तैयार नहीं किया गया है। हमारे पाठकों की रुचि अगर आज भी फिल्मी पत्रिकाओं और सस्ते उपन्यासों पर टिकी हुई है तो केवल इसलिए कि मॉरीशस के दो-तीन हिन्दी पुस्तक-विक्रेताओं के यहाँ से यही चीजें उनके हाथ लग पाती हैं। पूरे मॉरीशस में इस समय एक भारी साहित्यिक भूख है पर ऐसा न हो कि वहाँ के हिन्दी-प्रेमी को केवल वही चीजें मिलती रहें जिनसे उसका साहित्यिक स्वास्थ्य बिगड़ कर रह जाये। इस दिशा में भारत सरकार के साथ प्रकाशकों की ओर से भी बहुत कुछ हो सकता है। थोड़े से विश्वास और संघर्ष के बाद यहाँ हजारों की संख्या में हिन्दी की अच्छी पुस्तकें खपायी जा सकती हैं। इसके लिए थोड़ी बहुत रियायत की भी जरूरत है।

ऐसे तो मॉरीशस में हिन्दी के अच्छे पाठक और लेखक आज भी हैं पर कम हैं। इस एक की संख्या को एक हजार करने के लिए भारत सरकार बहुत कुछ कर सकती है। अगर सचमुच ही उसे इस बात का गर्व हो कि सात समुद्र पार भी ये प्रवासी हिन्दी, हिन्दी साहित्य, हिन्दू, हिन्दू धर्म, संस्कृति को संजोये आ रहे हैं तब तो मॉरीशस भारत से बाहर एक दूसरा भारत है और अपने ढंग का एकमात्र है। इसको अपने उद्देश्य में सफल उतारने के लिए भारत सरकार और सम्बन्धित संस्थाओं को कुछ अधिक सजग होना जरूरी है क्योंकि राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद मॉरीशस में किसी दूसरी ओर से सांस्कृतिक साम्राज्य भी तो आ सकता है।

इस द्वीप में शुरू से अब तक निस्वार्थ भावना से हिन्दी की सेवा होती आती है। अपने निजी खर्च से और अपने निजी पैरों पर खड़े होकर हिन्दी को पाला पोसा गया है। और आज वही हिन्दी शैशव पार करके पूरे यौवन पर आ गयी है। इसी के बल पर आज इस देश के चप्पे-चप्पे में भारतीयता सजीव है। हिन्दी भाषा के साथ साथ हिन्दी साहित्य को सशक्तता प्रदान करने के लिए सभी कुछ किया जा रहा है। परिवेश से बाहर आकर नये आयामों की तलाश के लिए भी कुछ लेखकों की कोशिश शुरू हो चुकी है। यह प्रयास हताश न हो जाये इसके लिए भारत सरकार को भी कुछ सजग होना जरूरी है।

मॉरीशस में हिन्दी और हिन्दी साहित्य का उत्थान भारत सरकार की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। दोनों देशों के बीच के राजनीतिक झमेलों को उलझाने-सुलझाने के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रश्नों का भी तो उत्तर ढूंढ़ निकालना होगा।

इस समय मॉरीशस को अत्यधिक पुस्तकों की आवश्यकता है, प्रकाशकों और सम्पादकों का प्रोत्साहन चाहिए यहाँ के लेखकों को, प्रकाशन-गृहों को साधारण मुनाफ़े के ख्याल से इस ओर ध्यान देना होगा ताकि आगे चलकर मॉरीशस में हिन्दी पुस्तकों के ग्राहकों की संख्या तेज रफ़तार के साथ बढ़ सके। मॉरीशस के सभी अन्य देशों के

उच्चायोगों में कलचरल और साहित्यिक अताशे पाये जाते हैं। भारतीय उच्चायोग में इसका अभाव खटकने वाली बात है,

भारत की ओर से जरा से ध्यान और प्रोत्साहन से मॉरीशस में हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। यहाँ के दो शहरों को छोड़ कर, जहाँ हिन्दी कुछ शर्माती है, सभी गाँवों में लगभग सौ प्रतिशत हिन्दी बोली, समझी और पढ़ी जाती है। इस दिशा में तो भारत से भी बाजी मार ली गयी है।

अब तक मॉरीशस में भारत के प्रमुख विद्वानों, राज-नीतिज्ञों, साहित्यकारों, कलाकारों, औद्योगिक विशेषज्ञों, सलाहकारों और धार्मिक व्यक्तियों का आना-जाना प्रायः होता ही रहता है। अगर अभाव है तो अच्छी पुस्तकों और अच्छे साहित्य का। भारत अपने सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि —अच्छी पुस्तकें—मॉरीशस को भेजे, यही आशा है।

आज के सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक कथाकार

आनन्द प्रकाश जैन

का

नया और अनूठा उपन्यास

ताँबे के पैसे

डिमाई आकार ● पक्की जिल्द ● ३३६ पृष्ठ

मूल्य : रु० १६-५०

साप्ताहिक हिन्दुस्तान में धारावाहिक प्रकाशन के साथ ही पाठकों और साहित्य-समीक्षकों में समान रूप से लोकप्रिय और सम्मानित—आधुनिक कथा-साहित्य की एक महत्व-पूर्ण उपलब्धि।

●

आधुनिक साहित्य के साधक-समीक्षक स्व० गंगाप्रसाद पाण्डेय की अपने विषय की अद्वितीय पुस्तक

छायावाद के आधार स्तम्भ

प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी

के काव्य का सम्यक् मूल्यांकन

सजिल्द, डिमाई आकार, मूल्य : रु० १५-००

इस महत्वपूर्ण ग्रंथ में छायावाद के मूर्धन्य कवियों के काव्य के विशद विवेचन के साथ ही छायावाद के सम्बन्ध में पाण्डेयजी के चुने हुए निबन्ध भी संकलित हैं। साहित्य के अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ।

●

मैं अंग्रेजों का जासूस था

धर्मेन्द्र गौड़

केन्द्रीय गुप्तचर अधिकारी (अवकाशप्राप्त) श्री धर्मेन्द्र गौड़ की यह बहुचर्चित पुस्तक एक ऐसे ऐतिहासिक दस्तावेज का महत्व प्राप्त कर चुकी है जिसने संसार के सम्मुख पहली बार अंग्रेजों की एक रहस्यमय सैनिक गुप्तचर संस्था की भीषण गतिविधियों का सच्चा विवरण प्रस्तुत किया है। सचित्र, सजिल्द, मूल्य : रू० ६-५०

लिपि प्रकाशन

ई ५/२०, कृष्णनगर, दिल्ली-५१

भस्मांकुर—एक परिचय

प्रो० कमता कमलेश

'भस्मांकुर' कवि नागार्जुन की सद्यः प्रकाशित एक लघु काव्यकृति है। महाकवि कालिदास के 'कुमार संभव' के 'मदन-दहन' प्रसंग को इसमें पुनः उठाया गया है। किन्तु इसे उसका अविकल अनुवाद नहीं कहा जा सकता। नागार्जुनजी ने 'भस्मांकुर में कामदेव के ब्याज से जीवन-मूल्यों के अस्तित्व का प्रश्न उठाया है।

जब सारा सुर-समाज महाबली राक्षस तारक से परेशान हो उठा तब देवगण भगवान विष्णु को आगे करके चतुरानन ब्रह्मा से प्रार्थना करने पहुँचते हैं, तभी ब्रह्मा ने उन्हें उपाय बताते हुए कहा—"शिव यदि हिमालय की पुत्री उमा से विवाह कर लें तो उस दम्पत्ति से ऐसे शिशु का जन्म होगा जो इस महाबली दानवेश्वर को हरा सकेगा।"

ब्रह्मा के इस उपाय बताने के बाद भी देवगण चिन्तित रहे। क्योंकि शिव अपनी प्रथम पत्नी दक्षकुमारी की आत्म-हत्या के बाद ध्यानावस्था में लीन रहने लगे थे। उन्हें जीवन से विराग हो चुका था। एतदर्थ वैराग्य को समाप्त कर शिव को ध्यानविहीन कैसे किया जाये? यह एक टेढ़ी खीर थी। अन्ततः इन्द्र ने सारे देवताओं की एक आपात्कालिक बैठक बुलायी।

कामदेव सभा में बहुत दूर पीछे बैठा था। इन्द्र ने उसे संकेत से अपने पास बुलाया और वह आकर इन्द्र के पार्श्व में बैठ गया। फिर बड़ी मधुर वाणी में उसने अपने बुलाने का कारण पूछा—"प्रभु, वह कौन सा काम है जिसके लिए आपने मुझे याद किया है? आप बतला तो दो उसका नाम! वह कौन है जिसने आपको परेशान कर रखा है...आपकी आज्ञा हो तो मैं ध्यान मग्न शिव के भी छक्के छुड़ा दूँ...।"

कामदेव की इस मधुर एवं दृढ़ वाणी को सुनकर इन्द्र को आशा बँधी और उन्होंने कामदेव की ओर सतृष्ण-नेत्रों से देखा तथा कन्धे पर हाथ रखकर कहा—"मित्र, तुम सब कुछ कर सकते हो। वज्र की तरह तुम भी मेरे हथियार हो...तपोबल के मुकाबले वज्र कुंठित हो जाता है लेकिन तुम तो सदैव अचूक रहे हो! बस, अब तुम्हें करना यही है कि कैलास शिखर पर ध्यान मग्न शिव के मन को हिमाद्रिनन्दिनी गौरी के प्रति आकर्षित कर दो... यह काम बड़ा ही जरूरी है। इस काम में तुम अपने चिर-सखा बसन्त से भरपूर सहायता पाओगे ही। अनुपम सुन्दरी रति तो छाया की भाँति सदैव तुम्हारा अनुगमन करती है...जाओ भाई, जाओ! अब सुर-समाज की सारी आशाओं के एकमात्र केन्द्र-विन्दु तुम्हीं हो।"

इन्द्र की इतनी विनय और आज्ञा को सुनकर कामदेव बड़ी रुचि के साथ अपने कार्य की ओर अभिमुख हुआ। नागार्जुन द्वारा विरचित 'भस्मांकुर' की यही पृष्ठभूमि है किन्तु भस्मांकुर की मूल कथा इसके बाद से प्रारम्भ होती है जो कि संक्षेप में इस प्रकार है—

कामदेव अपनी पत्नी रति और चिर सखा बसन्त के साथ कैलास पर्वत की ओर चल पड़ा। बसन्त ने कैलास पर्वत के चारों ओर असमय ही अपने प्रभाव से बासन्ती जादू फैला दिया। समूची अधित्यका हरियाली एवं पराग से आच्छादित हो गयी। बसन्त की इस मदमाती बयार में हिमाद्रिनन्दिनी पार्वती ने अर्ध-रात्रि में एक स्वप्न देखा और उसकी चर्चा अपनी सखियों से की।

पार्वती का अपूर्व सौन्दर्य देखकर कामदेव आश्वस्त होते है कि शंकर अवश्य ही इस सुन्दरी की ओर आकर्षित

उपयोगी, पठनीय एवं संग्रहणीय १९७० के नये प्रकाशन

अज्ञेय की काव्य तितीर्षा / नन्दकिशोर आचार्य

कलाकार के रूप में अज्ञेय ने शिल्प की किन गहराइयों को छुआ है, उनकी शब्द चेतना कितनी सूक्ष्म है और उनका काव्यानुभव रचना को किस प्रकार रूपायित करता है आदि प्रश्नों की सतर्क एवं मौलिक विवेचना।

मूल्य १०-००

न्याय तीर्थ / श्रीगोपाल आचार्य

श्रीगोपाल आचार्य का नया उपन्यास 'न्याय तीर्थ' समकालीन समाज और न्याय-व्यवस्था को तो उघाड़ कर रखता ही है, उन प्रश्नों से सीधा साक्षात्कार भी करता है जो विधि तथा न्याय को लेकर निरन्तर व्यक्ति-मानस को उद्वेलित करते रहे हैं। मूल्य १२-५०

एक बड़ी मीनार : एक छोटी मीनार/सुमेरसिंह दईया

आधुनिकता के नाम पर कहानी जब कथा तत्व से दूर हटती जा रही है—सशक्त कथा-शिल्पी श्री दईया की कहानियों को पढ़ना एक सुखद अनुभव से गुजरना है।

मूल्य ७-००

गाँधी जीवन ज्योति / मेघराज मुकुल

प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय कवि श्री मुकुल की गाँधी जी के जीवन से सम्बन्धित ये कविताएँ जितनी भावपूर्ण हैं उतनी ही विचारपूर्ण। गाँधीजी के लगभग बीस अनूठे चित्रों सहित अपने प्रकार की अनूठी पुस्तक। मूल्य ३-००

पति परमेश्वर / दौलतराम कुकरेजा

नारी हृदय के द्वन्द्व और भावनाओं का प्रभावी एवं सूक्ष्म चित्रण इस प्रयोगधर्मी नाटक में हुआ है।

मूल्य ५-५०

औरत और जहर / करणीदान बारहठ

आज के भारतीय गाँव का तीखा व मार्मिक चित्रण।

मूल्य ७-००

गांधी युग : दशा दिशा / डा० राजानन्द

डा० राजानन्द के गाँधीजी की विचार-धारा से सम्बन्धित चिन्तन-पूर्ण लेख।

मूल्य २-००

गांधी-दर्शन और शिक्षा / डॉ० राजानन्द

इस पुस्तक में गाँधीजी के विचारों का निचोड़ रूप में प्रस्तुतीकरण हुआ है। हम गाँधी को पूरी तरह समझ सकें इसी दृष्टि से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

मूल्य ५-००

बर्फ की चट्टान / सुमेर सिंह दईया

समाज की विसंगतियों में एक भावुक नारी की असंतुलित प्रवृत्तियों के मनोवैज्ञानिक आकलन की पृष्ठभूमि पर एक अत्यन्त रोचक और मनोहारी उपन्यास।

मूल्य ५-००

सावन आंखों में / यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र

साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हिन्दी के अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यासकार की कलम से एक कुंआरी मां की लोमहर्षक कहानी पर आधारित सशक्त उपन्यास। मूल्य ५-००

उत्सुक गांधी : उदास भारत / अन्नाराम सुदामा

गांधी की काल्पनिक यात्रा के माध्यम से गांधी शताब्दी पर एक तीखी ललित व्यङ्ग रचना······देश की वर्तमान राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट।

मूल्य ३-००

ओबर्ज की रात / मालीराम शर्मा

हिन्दी कविता में एक कुछ नई बात······एक सर्वथा नई चीज···नई संवेदना और अधुनातन भाव-बोध के बिल्कुल अछूते नये स्वर······ मूल्य ७-५०

जाने हज़ीं / कामेश्वरदयाल हज़ीं

उर्दू के सुप्रसिद्ध शायर 'हज़ीं' की चुनी हुई गजल और कतए, जो जिगर में तीर की तरह चुभ जाते हैं।

मूल्य ४-००

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

होंगे। परन्तु भविष्य में अनिष्ट की कल्पना से कामदेव की पत्नी रति सदैव अड़चनें डालती है और कामदेव को समझाती है पर कामदेव पत्नी की सलाह की उपेक्षा करता है और अपने कार्य में संलग्न रहता है।

पार्वती अपनी दो सखियों जया और विजया के साथ शंकर की सेवा में संलग्न हैं। एक दिन पार्वती वसन्त-विस्फोट के साथ रक्तांशुक (लाल रेशमी परिधान) और फूल के आभूषण पहन कर शिव के पास आती हैं। योगेश्वर शिव इस आकर्षक वेश-भूषा से मन ही मन घायल हो जाते हैं। तदनन्तर वे प्रीति-स्निग्ध नेत्रों से पार्वती की ओर कामुक चेष्टाएं करते हुए देखते हैं। फलतः कैलास पर्वत का सारा परिवेश आनन्दित हो जाता है। यहाँ तक कि शंकर के गले के साँप तक इधर-उधर मस्त होकर सरकने लगते हैं।

शंकर अपने हृदय में इस अचानक परिवर्तन से विह्वल हो जाते हैं और अपने चारों ओर कोप-भरी दृष्टि से देखने लगते हैं। तभी लताओं की ओट में छिपा कामदेव दिखाई पड़ता है। वह शंकर की ओर 'पुष्पबाण' संधाने खड़ा था। फिर क्या था? उसे ऐसा देख प्रलयंकर शंकर का कोपानल भड़क उठा और कामदेव तत्क्षण वहीं जलकर भस्म की ढेर बन गया।

इसके बाद शंकर क्षण मात्र में ही वहाँ से अदृश्य हो जाते हैं। रति अपने पति कामदेव को भस्म हुआ देख मूर्छित हो जाती है। होश आने पर रति विलाप करने लगी है—"मैं आत्मदाह करूँगी। मुझे आग नहीं ला दोगे कहीं से? बसन्त, तुम खुद भी जलकर खाक हो गए हो क्या? उस परम क्रोधी महारुद्र ने जरूर ही तुम्हारे भी प्राण ले लिए हैं।"

इस हृदय-विदारक विलाप को सुन कुछ समयोपरान्त वसन्त आता है किन्तु वह मौन रहता है, कुछ बोल नहीं पाता। इसी बीच आकाशवाणी होती है—"अरी बावरी, तेरा पति मरा नहीं है। वह कभी मर ही नहीं सकता। कोई आग कामदेव को कभी भस्म नहीं कर पाएगी। यदि भस्म हो भी जाए तो अपने आप अंकुर बनकर उसी भस्म राशि से फूट पड़ेगा बार-बार। वह सृष्टि की कामना का

अक्षय केन्द्र है । तू नाहक आत्महत्या न कर। शंकर निकट भविष्य में पार्वती से विवाह करेंगे तब वे स्वयं मदन को सादर आमंत्रित करेंगे ।"

इस आकाशवाणी को सुनकर बसन्त एवं रति के प्राण मानों वापस आ जाते हैं और दोनों प्रसन्न-बदन कुछ देर तक एक दूसरे से लिपटे रहते हैं। कामदेव का भस्ममय शरीर बर्फ के अन्दर दब रहा था जिससे कामदेव का अंकुरोद्भव होने में विलम्ब न हो। इस दृश्य से सारा कैलास पर्वत का परिवेश आनन्द की लहरियों से स्नान किए हुए प्रतीत हो रहा था।

कवि नागार्जुन के भस्मांकुर की यही संक्षिप्त कथा है जिसमें कवि ने एक पौराणिक आख्यान को अपने विशिष्ट शब्द-विधान के आधार पर रचकर कामदेव की जिजीविषा को अक्षुण्ण बना दिया है। आदि से अन्त तक भस्मांकुर अपने वर्णनात्मक कथानक के लिए गतिमान रहता है। इसी से शायद काव्य का प्रारंभ बड़े ही मधुर एवं सरस भावों से होता है किन्तु मध्य में आकर प्रवाह शिथिल हो जाता है। कवि ने अपनी भस्मांकुर की शैली को 'बरवै' कहा है—"आदि से अन्त तक इसमें एक ही छन्द रखा गया है—बरवै—यह पुरानी हिन्दी के हमारे पूर्वज कवि-गुरुओं का बड़ा ही प्यारा (मनचीता) छन्द रहा है।" (भूमिका)

किन्तु, काव्यशास्त्र की कसौटी पर कसने पर भस्मांकुर का छन्द-विधान कहीं-कहीं बरवै की उपेक्षा कर स्वतन्त्रता को ग्रहण कर लेता है। बरवै में १२, और ७ मात्राओं पर यति होती है। यह मात्रिक अर्ध सम छन्द है। सम पादों के अन्त में प्रायः जगण या तगण आता है। यह नियम भस्मांकुर में सर्वत्र नहीं मिलता। भस्मांकुर के अधिकांश स्थल १९ मात्राओं के हैं तथा चौपाई में गुरु लघु जोड़कर इसे बनाया गया है। डा० पुत्तूलाल शुक्ल ने इस प्रकार के छन्द को 'तमाल छन्द' माना है (आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना,' पृष्ठ २७४)। अतएव मेरा भी यही दृष्टिकोण है कि भस्मांकुर का छन्द विधान बरवै और तमाल छन्दों से सगुंफित है। इतना होते हुए भी कवि नागार्जुन अपने काव्य-गठन में पूरे खरे उतरते हैं। तमाल को बरवै का दूसरा रूप भी माना जा सकता है क्योंकि बरवै हिन्दी के प्राचीन ग्रन्थों में नहीं मिलता। भिखारी दास के 'छन्दार्णव' ग्रन्थ में भी इसका उल्लेख नहीं है। इससे प्रतीत होता है कि यह लोकगीतों में प्रचलित था और बाद को साहित्य में अपनाया गया। तुलसीदास के 'बरवै रामायण' में सर्वप्रथम इसका प्रयोग है। फिर रहीम ने 'बरवै नायिका भेद' में इसका प्रयोग सफलता के साथ किया है। सुन्दर दास के 'पूर्वाभास बरवै', रघुराज सिंह के 'राम स्वयंबर' तथा सेवक के 'नख शिख' में इसका प्रयोग हुआ है। किन्तु कवि नागार्जुन ने अपनी कृति भस्मांकुर में बड़ी स्वतन्त्रता के साथ भावों और तुकों को जोड़ा घटाया है—

यह समाधि का मध्यांतर। अभिराम—
काल खण्ड। दुर्लभ क्षण। उत्सव पूर्ण...
देखो, देखो, महाधवल कैलास
थिरक उठा है पाकर दशगुण दीप्ति
लखकर शिव की यह मंजुल मुख कांति
महारुद्र को कौन करेगा याद ?

इसी प्रकार भस्मांकुर की भाषा कथन-प्रतिकथन के साथ चलती है। यद्यपि समग्र काव्य की भाषा शुद्ध हिन्दी ही है, किन्तु देशज तथा ग्रामीण शब्दों का निःसंकोच प्रयोग किया गया है जो काव्य की सरलता का द्योतक तो है ही साथ ही लोक-गीतों के प्यारे छन्द बरवै की प्रकृति के अनुकूल भी है। इससे प्रतीत होता है कि कवि नागार्जुन लोक-भावना के कितने निकट हैं। संस्कृत के शब्दों का भी वाग्जाल सरलता से देखा जा सकता है जो कथानक की पौराणिकता की रक्षा के लिए आवश्यक था। भस्मांकुर में पात्र अधिक नहीं हैं। इसमें पाँच प्रमुख पात्र हैं—मदन, बसन्त, रति, शंकर और पार्वती। इसके अतिरिक्त इन्द्र, जया, विजया आदि गौण एवं अप्रत्यक्ष पात्र हैं। कवि ने पात्रों की चरित्र संरचना में भारतीय संस्कृति का ध्यान रक्खा है। रति अपने पति कामदेव का सदैव साथ देती है तथा उसके भस्म होने पर स्वयं भी सती होने को तत्पर हो जाती है। रति सर्वदा कामदेव के कल्याण की कामना में रत रहते हुए उसके चतुर्दिक् छाया की भाँति व्याप्त रहती है। पार्वती शंकर को वरण करने के उद्देश्य से उनकी सेवा-अर्चना उचित रीति से करती है जिसमें वह

अन्ततः सफल होती हैं। कामदेव और बसन्त दोनों सखा हैं और उन्हें एकदूसरे का पूरक माना जा सकता है।

भस्मांकुर में शृंगार के वियोग एवं संयोग दोनों पक्षों की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है। रति का विलाप वियोग शृंगार की परिसमाप्ति है—

मूर्छित ही रह जाती मैं चिरकाल
रह जाती मैं निरवधि संज्ञाशून्य
है असह्य अब क्षण भर भी वैधव्य
क्यों न करूँ मैं आत्मदाह तत्काल

संयोग पक्ष में स्वप्न-कथन के माध्यम से शंकर और पार्वती का विलास उल्लेखनीय है—

हंसकर प्रिय ने थपकाए थे गाल
इतने-भर से मैं हो उठी निहाल

अतः काम-क्रीड़ाओं की प्रचुरता के कारण भस्मांकुर को शृंगार का ही काव्य कहा जा सकता है। साथ ही कामदेव ही इसका नायक हैं तथा रति नायिका जो कि शृंगार रस के अधिष्ठातृ देवी और देवता हैं।

मूल प्रवृत्ति 'काम' इस सृष्टि के सभी प्राणियों में समान रूप से पाई जाती है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मेग्डूगल मनुष्य में १४ मूल प्रवृत्तियों का पाया जाना स्वीकार करते हैं। इनमें काम को वे तीसरा स्थान देते हैं जबकि फ्रायड 'काम' को प्रथम स्थान देकर उसकी सत्ता को सर्वोच्च बताते हैं। भारतीय साहित्य में इन्हीं मूल प्रवृत्तियों को अधिकांशतया पौराणिक ताना-बाना पहनाकर चित्रित किया गया है क्योंकि पौराणिकता की ओट में ही इनका वर्णन सुरक्षित तथा अपेक्षित था। भस्मांकुर इसी ढाँचे का एक अंग है। प्रसाद की कामायनी का 'काम' सर्ग भावना एवं सृष्टि की उत्पत्ति का प्रतीक है तो भस्मांकुर का काम अत्याचार पर मानवता की विजय का ज्वलन्त उदाहरण है। इस दृष्टि से भस्मांकुर का स्थान आधुनिक साहित्य में बहुत आगे बढ़कर अपनी विजयश्री का जयघोष करता हुआ प्रतीत होता है—

कौन मदन, तुमको कर सकता नष्ट ?

जयति जयति भस्मांकुर, जयति अनंग...

हमारे प्रकाशन
अगस्त, १९७१

व्यावहारिक पर्याय-कोश

सम्पादक

महेन्द्र चतुर्वेदी : ओम्प्रकाश गाबा

अकारादि क्रम से चुने हुए शब्दों के वर्गीकृत पर्यायों, विपर्यायों तथा उनसे सम्बन्धित विशिष्ट प्रयोगों, मुहावरों, कहावतों, सूक्तियों, उद्धरणों इत्यादि का व्यवहारोपयोगी संकलन···

मूल्य : पन्द्रह रुपये

जोड़ादीघी के चौधरी

एक ऐतिहासिक बंगला-उपन्यास

प्रमथनाथ विशी

'लाल क़िला' और 'कैरी साहब का मुंशी' के यशस्वी लेखक एवं बंगला के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यास-शिल्पी प्रमथनाथ विशी का बंगला में बहुचर्चित उपन्यास···ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दौर में बंगाल के जमींदारों की जघन्यताओं का हृदय-द्रावक चित्र...प्रतिशोध, हिंसा-प्रतिहिंसा से ओत-प्रोत एक कालजयी चरित्र-दीर्घा, प्लासी के युद्ध में बंगाल की आंतरिक व्यवस्था की दारुण गाथा...

मूल्य : दस रुपये

और साथ में

विमल मित्र का प्रसिद्ध उपन्यास

कगार और फिसलन

(द्वितीय संस्करण)

मूल्य : छः रुपये

२२०३, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६

क्या सभी परिचित व्यक्ति मित्र हो सकते हैं ?
क्या सभी मुद्रित पुस्तकें श्रेष्ठ हो सकती हैं ??

यह चिह्न पुस्तकों की सर्वांगीण श्रेष्ठता का प्रतीक है !!

उपन्यास

(१) मसाले और मसीहा	नारायण गंगोपाध्याय	८-००
(२) भैरवी	शिवानी	५-५०
(३) वे देवता मर गये	माइका वल्तारी	१०-००
(४) हिम्मत जौनपुरी	राही मासूम रज़ा	४-२५
(५) कगार और फिसलन	विमल मित्र	५-००
(६) एक-दो-तीन	शंकर	५-००
(७) उपनिवेश	नारायण गंगोपाध्याय	१०-००
(८) एक चूहे की मौत	वदीउज़्ज़माँ	७-००
(९) हम तीनों	वीरेन्द्र नारायण	५-००

भाषा-विज्ञान

(१०) भाषा विज्ञान-प्रवेश (पु० सं०)	डॉ० भोलानाथ तिवारी	४-००
(छा० सं०)	,, ,,	३-००
(११) शब्दों का अध्ययन	डॉ० भोलानाथ तिवारी	८-००
(१२) कबीर की भाषा	डॉ० महेन्द्र	१६-००

आलोचना-जीवनी-आत्मकथा

(१३) मलाबार से मास्को तक	के० पी० एस० मेनन	१२-००
(१४) ग़ालिब : व्यक्तित्व और कृतित्व	नूरनबी अब्बासी, डॉ० नूरुल हसन नक़वी	१२-००

काव्य

(१५) मृत्युंजयी (गांधी-काव्य-संकलन)	सं० भवानीप्रसाद मिश्र, डॉ० प्रभाकर माचवे	१२-००
(१६) इन्द्रधनुष : अँधेरी रात के	रमानाथ अवस्थी	५-००

विविध

(१७) जंगल और आंगन	एम० कृष्णन	५-२५
(१८) गुड़ियों के देश में	प्रमोदचन्द्र शुक्ल	६-००

सूचीपत्र के लिए लिखें

२२०३, गली डकौतान, तुर्कमान गेट
दिल्ली-६

विश्व पुस्तक मेला

नई दिल्ली में अगले वर्ष २२ जनवरी से ६ फरवरी तक नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस मेले में जनवरी १९७० के बाद प्रकाशित पुस्तकें ही प्रदर्शित की जा सकेंगी। बाल-पुस्तकों तथा पेपरबैक पुस्तकों के लिए विशेष व्यवस्था रहेगी। मेले की समाप्ति पर श्रेष्ठ प्रदर्शकों को पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ अगस्त १९७१ है।

इस मेले के अवसर पर दिल्ली में पाँचवाँ राष्ट्रीय पुस्तक मेला भी आयोजित किया जायेगा और देश-भर में पुस्तक-सप्ताह मनाया जायेगा। इसके अतिरिक्त राजधानी में एक अंतर्राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन होगा, जिसमें विकसित देशों को अपने प्रकाशन का जायजा लेने तथा विकासशील देशों को उपयोगी जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

हिन्दी शब्द-सागर का आठवाँ खण्ड

केन्द्रीय निर्माण तथा आवास मंत्री श्री उमाशंकर दीक्षित ने पिछले दिनों काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द-सागर' के आठवें खण्ड का विमोचन किया। इस खण्ड में २०,००० शब्द संग्रहीत हैं, जिनका चयन १९६० तक प्रकाशित हिन्दी की महत्त्वपूर्ण कृतियों में से किया गया है। शब्दकोश में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली भी दी गयी है।

नई लिपि

बदायूँ (उत्तरप्रदेश) कालिज के एक हिन्दी अध्यापक श्री रामचन्द्र शरण ने समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक सामान्य लिपि तैयार की है जिसके बारे में उनका दावा है कि वह किसी भी दूसरी भारतीय भाषा की लिपि के मुकाबले सरल और सुगम है।

बम्बई की लेखिका को ब्रिटिश पुरस्कार

बम्बई की एक लेखिका श्रीमती एस० पी० सुब्रह्मनियन को, जो ब्रिटेन की सोसाइटी आफ वीमेन राइटर्स एण्ड जर्नलिस्ट्स की सदस्या हैं, थियोडोरा रोस्को पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार उक्त सोसाइटी की सदस्याओं द्वारा प्रकाशित सर्वोत्तम कहानी पर दिया जाता है।

पुस्तक-प्रस्तुतीकरण के लिए पुरस्कार

अखिल भारतीय प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता महासंघ ने इस साल से पुस्तकों के श्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण के लिए एक वार्षिक पुरस्कार चालू करने का फैसला किया है। यह पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर दिया जायेगा और वर्ष में एक बार पुरस्कार-समारोह आयोजित हुआ करेगा। योजना का विस्तृत रूप निर्धारित करने के लिए एक उप-समिति नियुक्त कर दी गयी है।

पुस्तक-व्यवसाय की निर्देशिका

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता महासंघ ने 'इंडियन बुक ट्रेड डायरेक्ट्री' का प्रकाशन किया है, जो रवीन्द्र मैंशन, रामनगर, नई दिल्ली-५५, से २० रुपये में उपलब्ध है।

जोशी जी की विदाई

हिंदी के सुविद्वान शोधकर्ता श्री शिव शर्मा जोशी की विदाई के उपलक्ष में डाक्टर श्याम मनोहर पाण्डेय की

प्रेरणा से लन्दन के भारतीय साहित्यिकों ने ३ अगस्त को एक सभा की जिसके अध्यक्ष थे सुप्रसिद्ध विद्वान डाक्टर सत्य रंजन बनर्जी ।

डाक्टर बनर्जी प्राचीन भारतीय तथा यूरोपीय भाषाओं के अधिकारी विद्वान हैं । इस सभा में इन्होंने अपने भाषण में कहा कि भाषा विज्ञान में अभी तक अमेरिकन और यूरोपियन स्कूलों का ही बोलबाला है लेकिन उन्हें आशा है कि जोशीजी भाषा विज्ञान में भारतीय स्कूल की स्थापना करेंगे । डाक्टर बनर्जी हिन्दी भाषा के बड़े प्रेमी हैं तथा उन्होंने मध्ययुगीन हिन्दी में शोधकार्य किया है ।

पटियाला की पंजाबी यूनिवर्सिटी में भाषा विज्ञान के लेक्चरर के पद पर नियुक्त होकर श्री शिव शर्मा जोशी ४ अगस्त को लन्दन छोड़ कर भारत चले गये ।

लन्दन प्रवास काल में जोशीजी का सम्बन्ध हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार से अत्यन्त घनिष्ट रहा है । यहाँ हिन्दी की सभी संस्थाओं में जोशीजी प्रमुख सलाहकार तथा प्रेरणा के स्रोत रहे हैं ।

शोध कार्य

लन्दन विश्वविद्यालय की स्कूल ऑफ ओरिएण्टल ऐण्ड अफ्रिकन स्टडीज में जोशीजी ने पंजाब की दोआबी नामक बोली पर बृहत अनुसंधान कार्य करके एम. फिल. की उपाधि प्राप्त की । इसके बाद इन्होंने केशवदास कृत रामचन्द्रिका के पाठ का वैज्ञानिक रूप से शोध करना शुरू किया और आशा है कि वे इस महत्वपूर्ण कार्य को भारत में भी चालू रखेंगे ।

जोशीजी अनेक भाषाओं और विषयों के मर्मज्ञ हैं । यहाँ ये अनेक अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को विभिन्न तरह से उनके शोधकार्य में बराबर सहायता दिया करते थे ।

रामचरितमानस समारोह

लन्दन में रामचरितमानस की चार-सौवीं वर्षगाँठ मनाने के लिए जो तैयारी की जा रही है उसमें जोशीजी सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे । वे स्वयं रामचरितमानस के बड़े प्रेमी हैं ।

आशा है कि भारत से भी उनका सहयोग लन्दन की हिन्दी की संस्थाओं को बराबर मिलता रहेगा ।

हमारे छात्रोपयोगी आलोचनात्मक प्रकाशन

पुस्तक	लेखक	मूल्य
ग्रंथि : एक अध्ययन :	नागेश्वर लाल	१.५०
पथिक : एक अध्ययन :	शशिभूषण बख्शी	१.५०
प्रतिज्ञा : एक अध्ययन :	रामचन्द्र वर्मा	१.५०
गोदान : एक अध्ययन		१.५०
सेवासदन : एक अध्ययन		१.५०
कर्मभूमि : एक अध्ययन		१.५०
निर्मला : एक अध्ययन		१.५०
गबन : एक अध्ययन :	कपिल देव सिंह	१.५०
विजेता : एक अध्ययन :	कपिल देव सिंह	२.००
रश्मिरथी : एक अध्ययन :	रामचन्द्र शर्मा	२.००
अम्बपाली : एक अध्ययन :	उर्मिला सिंह	२.००
मानसरोवर : एक अध्ययन :	गंगाधर पान्डेय	३.५०
कहानी विविधा : एक अध्ययन :	गंगाधर पान्डेय	३.००
दस तस्वीरें : एक अध्ययन :	शशिभूषण बख्शी	२.५०
शाहजहां के आँसू : एक अध्ययन :	ब्रजकिशोर पाठक	३.००
भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना : एक अध्ययन :	शेष आनन्द 'मधुकर'	२.५०
अयोध्याकान्ड : एक अध्ययन :	हिया लाल सिंह	३.००
त्रिवेणी : एक अध्ययन :	उमेशचन्द मिश्र	२.००
गल्प समुच्चय : एक अध्ययन :	शंभु बादल	२.५०
कुरुक्षेत्र : एक अध्ययन :	गंगाधर पान्डेय	३.५०
अशोक के फूल : एक अध्ययन :	कृष्णकुमार सिन्हा	२.००
कुटज : एक अध्ययन :	कृष्ण कुमार सिन्हा	२.००
रश्मिबन्ध : एक अध्ययन :	सावित्री सिंह	२,५०
साहित्य प्रवेश : एक अध्ययन :	सदानन्द सिंह	२.००
साहित्य सौरभ : एक अध्ययन :	रामनारायण सिंह	२.००
सरदार पूर्ण सिंह के निबन्ध : एक अध्ययन		१.००
संक्षिप्त हिन्दी नवरत्न : एक अध्ययन		१.००
हिन्दी निबन्धावली : एक अध्ययन		३.००
कामायनी : एक अध्ययन		३.००
चन्द्रावली नाटिका : एक अध्ययन		२.००
ऋतम्बरा : एक अध्ययन :	नागेश्वरदास 'अनल'	२.००
कादम्बिनी : एक अध्ययन :	नागेश्वर दास 'अनल'	३.००
२३ हिन्दी कहानियां : एक अध्ययन :	प्रो० पान्डेय	१.५०
साकेत : एक अध्ययन		३.००
चिन्तामणि भाग-१: एक अध्ययन :	जगमोहन मिश्र	३.००
नारी : एक अध्ययन :	गंगाप्रसाद गुप्त	२.५०
आषाढ़ का एक दिन : एक अध्ययन :	डा० पाठक	२.५०
आंसू : एक अध्ययन		२.५०
एकांकी संकलन : एक अध्ययन :	एस. एल. गौतम	४.००
काव्यांग परिचय (रस, छन्द और अलंकार)	राजेन्द्रराय 'राजेश'	२.००
काव्य संगम : एक अध्ययन :	गङ्गाधर पान्डेय	३.००
विराटा की पद्मिनी : एक अध्ययन :	प्रवीण नायक	३.००
त्यागपत्र : एक अध्ययन :	प्रवीण नायक	३.००
रूपान्तर : एक अध्ययन :	महेन्द्र किशोर	२.५०
पंचवटी : एक अध्ययन :	राजेन्द्र राय 'राजेश'	१.५०
विष्णुप्रिया : एक अध्ययन :	सदानन्द सिंह	३.००
चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन :	रामचन्द्र शर्मा	२.००
स्कन्दगुप्त : एक अध्ययन :	रामनारायण सिंह	४.००
ध्रुवस्वामिनी : एक अध्ययन :	शशि भूषण बख्शी	१.५०
तमसा : एक अध्ययन :	रामकृष्ण मिश्र	३.००
चारुचन्द्रलेख : एक अध्ययन :	ब्रजकिशोर पाठक	२.००
मैं छोटानागपुर में हूँ : एक अध्ययन :	गंगाधर पान्डेय	१.००
यशोधरा : एक अध्ययन :	राजेन्द्र राय 'राजेश'	३.५०
मध्यकालीन काव्य : एक अध्ययन		३.५०
रामचर्चा : एक अध्ययन :	राजेन्द्र राय 'राजेश'	१.५०

हमारे यहाँ हिन्दी की सभी पाठ्य-पुस्तकें तथा गाइडें मिलती हैं। हिन्दी अध्यापकों और प्रचारकों को उचित कमीशन दिया जाता है। वी० पी भेजने का सुप्रबन्ध है।

कमल प्रकाशन, हिन्दपिढ़ी, राँची-१ [बिहार]

उपन्यास

आधा गांव—ले० राही मासूम रज़ा; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ ३६१; मूल्य १६.०० ।

'आधा गाँव' हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यासों में से एक रहा है। इसका पहला संस्करण जिस समय प्रकाशित हुआ उस समय तक शीआ मुसलमानों के जीवन पर शायद कोई उपन्यास नहीं लिखा गया था और आज भी इस विषय-वस्तु पर यह अकेला उपन्यास है। देश के विभाजन का मुसलमानों पर क्या असर पड़ा ? भारत और पाकिस्तान के बारे में उनकी क्या धारणा है ? इन तथा विभाजन से उत्पन्न होनेवाले ऐसे ही और कई प्रश्नों को लेखक ने बड़े सहज ढंग से इस उपन्यास में उठाया है और उत्तर दिया है। भोजपुरी-भाषी पूर्वी उत्तरप्रदेश के शीआ-मुसलमानों और सम्बद्ध वातावरण और पात्रों को लेखक ने, स्वयं को उन पर लादे बिना, जो स्वतन्त्र, मुक्त और उन्मुक्त गतिशीलता दी है वह किसी भी भारतीय भाषा में दुर्लभ है। 'आधा गाँव' हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास है जिसमें ग्रामीण जीवन अपने भरे-पूरे रूप में पूरी सच्चाई, तीव्रता और बेबाकी के साथ सामने आता है। भोजपुरी का प्रयोग इस आंचलिकता को सहज बनाने में सहायक हुआ है।

"हिन्दी उपन्यासों की परम्परा में 'आधा गाँव' बहुत-सी नयी अवधारणाओं का स्रोत है। मुख्य बात प्रामाणिक अनुभव की है। यानी ज़िन्दगी के रवैये की। जो इस उपन्यास की ज़िन्दगी के रवैये को नहीं समझ पायेंगे, उन्हें इसमें शायद कुछ अशोभन और अशिष्ट भी लगे। अश्लीलता स्थितियों में होती है। और स्थितियों की दृष्टि से इस उपन्यास को किसी भी भाषा के समर्थतम उपन्यासों के साथ रखा जा सकता है।

"उपन्यास में सीधे-सीधे खुली गालियों का इस्तेमाल है, जिसे अभिव्यक्त ज़िन्दगी के सन्दर्भ में न तो परम्परानुसार डैश-डैश कहकर या बिन्दियाँ लगाकर ध्वनित ही किया जा सकता है और न छोड़ा ही जा सकता है क्योंकि जिस ज़िन्दगी को इस उपन्यास में उठाया गया है वह जितनी स्पष्ट, दोटूक और बेबाक है, उतनी ही सच्ची और खरी भाषा की वह माँग भी करती है, और इस माँग को पहली बार एक ज़िम्मेदार लेखक ने हिन्दी में पूरा किया है।"

पत्थरों का शहर—ले० सुरेश सिनहा; प्र० लोकभारती प्रकाशन, १५, ए-महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-१; आकार डिमाई; पृष्ठ ३२८; मूल्य १४.०० ।

'पत्थरों का शहर' नई पीढ़ी के सुपरिचित लेखक प्रमोद सिनहा का तीसरा उपन्यास है। पहले दो उपन्यास थे 'एक और अनजबी' तथा 'सुबह अँधेरे पथ पर'। प्रस्तुत उपन्यास दिल्ली पर आधारित समूचे देश की प्रतीक-कथा है। विगत दो दशाब्दियों में हमारे जीवन का बहुत कुछ बना और बिगड़ा है। अनेक नये मूल्य विकसित हुए हैं और पुराने मूल्य रूढ़ होकर जड़ बन गये हैं। यह काल हमारे इतिहास का सर्वाधिक संक्रान्ति और संक्रमण का रहा है और इस दौरान हमारी जीवन-पद्धति अनेक अग्नि-परीक्षाओं से गुजरी है। एक ओर जहाँ विभाजन की विषम प्रतिक्रिया ने हमारे जीवन को तहस-नहस कर दिया वहीं स्वार्थपरक राजनीतिक गतिविधियों ने देश के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह भी लगा दिया। 'पत्थरों का शहर' में इस काल

हमारे यहाँ से प्राप्य पुस्तकें

बाल साहित्य

कहानियाँ

बलिदान की कहानियाँ	१.२५
देखी-सुनी कहानियाँ	१.२५
साहित्यकारों की कथाएँ	१.२५
तीन कहानियाँ	१.२५
सच्ची घटनाएँ	१.२५
सदाचार की कथाएँ	१.२५
विविध कथाएँ	३.५०
महाभारत की कथाएँ (३ भाग)	७.५०
रामायण की कथाएँ (२ भाग)	५.००

नाटक

विष-परीक्षा	१.२५
शीर्ष-दान	१.२५
लाड़ले का बलिदान	१.२५
मंच के दृश्य	१.२५
होरी और हीरा	१.२५
दुर्ग-विजय	१.२५
नया युग	१.२५
श्रद्धा और मनु	१.२५
रूप और रक्त	१.२५
किशोर अभिनय	३.५०
किशोरों का मंच	३.५०
किशोर रूपक	३.५०

बाल-उपन्यास

जादू की टहनी	२.००
पोम्पू गुड्डा	२.००
दो भाई	२.००
रवि और देव	२.००

कविता

सरस गीत	१.२५
बबुआ के बोल	१.२५
शिशु गान	१.२५
गीत माधुरी	१.२५
गीत भारती	१.२५
बाल रागिनी	१.२५
ओजभरे गीत	१.२५
वर्ण गीतिका	१.५०
रूस की जन कथाएँ	२.००
झाँकी हिन्दोस्तान की	४.००

विविध

इतिहास के पन्ने (२ भाग)	२.५०
नक्षत्र-लोक (२ भाग)	५.००
समुद्र की कहानी	२.००
सितारों की कहानी	२.००
भूचाल और ज्वालामुखी	२.००
महाभारत कथा	३.००

अन्य पुस्तकें

उपन्यास, कहानी, एकांकी

कान्ता (ओमप्रकाश शर्मा)	४.५०
अंधेरे के दीप " "	५.००
संगम (आदिल रशीद)	४.५०
स्वर्ग का फूल (" ")	४.५०
छोटी रात (" ")	६.००
मनमाने की बात (संतोष कौशल)	३.००
फिर याद आई (नरेन्द्र शर्मा)	४.५०
प्रतिनिधि कहानियाँ (प्रो० संत)	५.००
प्रतिनिधि एकांकी (" ")	५.००

पाकेट पुस्तकें

उपन्यास-कहानी

आँख की किरकिरी रवीन्द्रनाथ ठाकुर	१.००
गोरा "	१.००
नौका डूबी "	१.००
पथ के दावेदार (शरतचन्द्र)	१.००
माँ (गोर्की)	१.००
सात सागर सात गागर (हरीवंश)	१.००
पगडण्डी (रामप्रकाश गुप्त)	१.००
संसार डूब रहा है (देवीप्रसाद धवन)	१.००
ओ० हैनरी की श्रेष्ठ कहानियाँ	१.००
कावेरी (शचीन्द्र उपाध्याय)	१.००
मादाम बावरी	१.००
आँख-मिचौली	१.००
सुलगते फूल (हृदयेश कोहली)	१.००
किनारों की क़ैद (सुदर्शन चोपड़ा)	१.००
अभिशप्त (नानक सिंह)	२.००
यह क्यों है ? (गुरुदत्त)	२.००
फिर याद आई (नरेन्द्र शर्मा)	२.००
संगम (आदिल रशीद)	२.००

स्वास्थ्य

सुन्दर शरीर (योगराज थानी)	१.००

शायरी

आदि कवि वली (शम्सुद्दीन वली)	१.००
शेरे-हरम (राजेश शर्मा)	१.००
नग्म-ए-वतन (रत्न हरयानवी)	१.००
गुलिस्ताने कतआ (राजेश शर्मा)	१.००

जीवनोपयोगी

आगे बढ़ने की कला (स्वेट मार्डेन)	१.००
ठीक विचारो "	१.००

बाल सदन

४९ । १६, ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-८

के जीवन का सार्थक एवं जीवन्त चित्र प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है। संस्कृतियों की टकराहट, मूल्यों में परिवर्तन, परम्परा तथा आधुनिकता के बीच चुनौती और सलीब पर टँगे प्रश्न तथा परिवर्तित मानव-सम्बन्धों की यथार्थ और रोचक कहानी इस उपन्यास में है।

लोई का ताना :—ले० रांगेय राघव; प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-६; मूल्य : ५.००; पृ० सं० १६४; आकार क्राउन।

कबीर का व्यक्तित्व और कृतित्व आज एकेडेमिक बन कर रह गया है जबकि कबीर किसी भी दृष्टि से कभी भी एकेडेमिक नहीं रहे। उनके साहित्य को देखकर यह बड़ी आसानी से जाना जा सकता है कि अपने समकालीन एकेडेमिक तत्वों पर कबीर ने कितने सांघातिक प्रहार किए हैं। बिल्कुल तिलमिला देने वाले। लेकिन यह कबीर की विडम्बना ही है कि आज उन्हें साहित्य के तथाकथित समीक्षकों और विश्वविद्यालयीय सीखचों ने अपनी बपौती मान लिया है। इस दुरभिसन्धि के विच्छेदन प्रसंग में डा० रांगेय राघव के उपन्यास 'लोई का ताना' की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसमें कथाकार ने कबीर के जीवन को रोचक और कथात्मक बनाने हेतु कमाल को प्रमुख उद्घोषक बनाया है। आमतौर से समीक्षक और किंवदंतियां कमाल को कबीर का नालायक पुत्र साबित करती हैं लेकिन उपन्यास में हम पाते हैं कि कबीर के मिशन के सच्चे समर्थक उनके युग में केवल दो ही थे—कमाल और लोई।

'लोई का ताना' का प्रारम्भ कबीर की मृत्यु के समाचार से होता है। कबीर की मृत्यु का समाचार कमाल पंडित-पंडों को, साधु-संन्यासियों को देता घूम रहा है। और बदले में उसे तरह-तरह के अपशब्द और गालियां अपने प्रति और कबीर के प्रति सुनने को मिल रही हैं। वह व्याकुल हो उठता है और ऐसी व्याकुलता में कबीर का सम्पूर्ण जीवन फिल्म की रील की तरह कमाल की आँखों के आगे घूमने लगता है। सम्पूर्ण कथावस्तु में रचनाकार ने कबीर को जनता के बीच का आदमी चित्रित किया है। और इसीलिए यह उपन्यास 'लोई का ताना' कबीर के सन्दर्भ में कम से कम, दस शोधग्रन्थों जितनी सामर्थ्य लेकर उपस्थित होता है।

रत्ना की बात—डा० रांगेय राघव; प्र० राजपाल एण्ड संज, दिल्ली; मूल्य ५.००; पृष्ठ १६८; आकार क्राउन।

'लोई का ताना' की श्रृंखला में डा० रांगेय राघव की दूसरी कथाकृति है—रत्ना की बात! रत्ना की बात में गोस्वामी तुलसीदास के जीवन को उपन्यास का बाना पहनाया गया है। इन दोनों ही कृतियों का, औपन्यासिक महत्त्व के साथ-साथ साहित्यिक और विश्वविद्यालयीय महत्त्व भी अद्वितीय श्रेणी का है। जिन प्रश्नों का समाधान तुलसी और कबीर को लेकर एक शोध छात्र को उसका निर्देशक नहीं दे पाता उसको इन कृतियों में देने का प्रयास किया गया है। 'रत्ना की बात' की कथावस्तु में जीवन्तता लाने के लिए मध्यकालीन सामाजिक और धार्मिक अन्तर्विरोधों को काफी गहराई के साथ उभारा गया है। कथाचक्र इस प्रकार घूमता है कि काशी के असीघाट पर बनी अपनी कुटी में तुलसी अपनी मृत्यु शैया पर लेटे हैं और स्मृति के सहारे उनका सम्पूर्ण जीवन आंखों के आगे आ रहा है।

'रत्ना की बात' औपन्यासिक दृष्टि से तो रोचक है ही लेकिन उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि तुलसी के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करने में वह अकेले ही पूर्णतः सक्षम है।

आलोचना

भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन—ले० डा० गोपीनाथ तिवारी; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ ३०९; मूल्य १८.००।

हिन्दी नाटक-जगत में भारतेन्दुजी का स्थान अद्वितीय है। वे कवि हैं, पत्रकार हैं, उन्होंने निबंध लिखे, कहानियों का भी प्रणयन किया किन्तु उनका नाटककार का रूप ही सबसे प्रमुख है। जब हिन्दी का नाटकीय भण्डार शून्य था, उन्होंने अनूदित तथा मौलिक नाटकों से इसे भरा। उनके नाटक अभिनेय हैं, और स्थान-स्थान पर उनका अभिनय हुआ है। वे स्वयं अच्छे अभिनेता थे। अतः उनके नाटकों में

हमारे महत्वपूर्ण प्रकाशन

डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय । **बीती बातें**

कुमायूं / गढ़वाल के कुण्ठित जन-जीवन को उजागर करने वाला एक सशक्त, बहुचर्चित आंचलिक उपन्यास। अपने आप में अद्भुत, अनूठी, अछूती रोमांचक कथा।
१२.००

डॉ० रवीन्द्र भ्रमर / **समकालीन हिन्दी कविता**

ख्यातिप्राप्त लेखक की एक और महत्वपूर्ण कृति। आधुनिक युगबोध, चेतना, बदलते प्रतिमान, उभरती कल्पना और टूटते व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। आधुनिक हिन्दी कविता की मौलिक उद्भावनाओं की निष्पक्ष, स्तरीय आलोचना। एक अनुपम सन्दर्भ ग्रन्थ...
१५.००

डॉ० रघुबरदयाल वार्ष्णेय / **आधुनिक हिन्दी कवि**

हिन्दी साहित्य के आधार स्तम्भ, सर्जक और युग-निर्माता सात कवियों—हरिऔध, रत्नाकर, गुप्त, प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की साहित्यिक प्रतिभा और कृतियों की गवेषणात्मक आलोचना; नया दृष्टिकोण, अब तक की साहित्यिक उपलब्धियों से बहुत आगे, सशक्त, मौलिक और अनुपम...।
२०.००

डॉ० देवेन्द्र आर्य / **हिन्दी सन्त काव्य में प्रतीक विधान**

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध। प्रतीकों के परम्परागत अध्ययन के सन्दर्भ में सन्तकाव्य में उपलब्ध प्रतीकों का सूक्ष्म वैज्ञानिक अध्ययन। कबीर, दादू, नानक, रैदास आदि बीस सन्तों के काव्य का प्रतीकात्मक दृष्टि से पूर्ण, महत्वपूर्ण विश्लेषण। विद्वानों द्वारा समादृत एक संग्रहणीय ग्रन्थ...डा० विजयेन्द्र स्नातक की तथ्यात्मक और गवेषणात्मक भूमिका—"इस गम्भीर गवेषणापूर्ण ग्रन्थ में विद्वान लेखक डॉ० देवेन्द्र आर्य ने जागरूक पाठक के लिए इतनी अधिक सामग्री जुटाई है कि उसे प्रतीक विधान के लिए किसी दूसरे ग्रन्थ के अवलोकन की आवश्यकता शेष नहीं रहती...।"
३५.००

आगामी आकर्षण

सूरदास: व्यक्तित्व और कृतित्व / डॉ० देवेन्द्र आर्य

हिन्दी समीक्षा कोश / डॉ० रघुबरदयाल वार्ष्णेय

हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली काव्य का उद्भव और विकास / डॉ० महावीरशरण जैन

राजेश प्रकाशन

एफ ८/२०, कृष्णनगर, दिल्ली-५१

अभिनय समाविष्ट हो सका। भारतेन्दुजी ने इसलिए नाटकों का निर्माण नहीं किया कि उन्हें नाटक लिखने ही थे। नहीं, वे हिन्दी जगत के सन्मुख पूर्वी और पश्चिमी नाटक शैलियों को रखकर कह रहे थे—हिन्दी साहित्यकारो, नाटक निर्माण में लगो। उनके हृदय में पीड़ित समाज के लिये, अपने कराहते देश के लिए टीस थी। उसे भी वे नाटकों द्वारा वाणी देना चाहते थे। समाज के सामने आदर्श रखकर वे उसे उठाना चाहते थे। अतः उन्होंने नाटकों का निर्माण किया। पहले अनूदित नाटकों द्वारा पूर्वी और पश्चिमी नाटक शैलियों का उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया। फिर मौलिक नाटकों की रचना इनके आधार पर की। फलतः भारतेन्दुजी अकेले ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने पश्चिमी तथा पूर्वी नाट्य-शास्त्र के उपयोगी सिद्धान्तों को हृदयंगम कर अपने नाटकों को जन्म दिया, जिसमें से कुछ में पश्चिमी नाट्य-शास्त्र प्राप्त होगा, कुछ में पूर्वी नाट्य-शास्त्र के अंग मिलेंगे और कुछ में दोनों का सामंजस्य। नाटकों में उनका जीवन प्रतिबिंबित है जो शास्त्र-अनुगामी भी है, और शास्त्र-विरोधी भी। ब्राह्मणों के प्रति उनके मन में आस्था भी है और विद्रोह भी। भारतेन्दुजी का जीवन ही विरोधाभास से पूर्ण है। उनके नाटकों में भी वह प्राप्त होता है।

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने पूर्व-भारतेन्दुयुगीन नाटकों और भारतेन्दुकालीन नाटकों का परिचय पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करते हुए भारतेन्दुजी की नाट्यकला का विस्तार के साथ विवेचन किया है। उसके बाद भारतेन्दुजी के नाटकों का अलग-अलग शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन है। हिन्दी साहित्य के इस युग-निर्माता की नाट्यकला को समझने में यह पुस्तक निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

लोक साहित्य के प्रतिमान—ले० डा० कुंदन लाल उप्रेती; प्र० भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़। मूल्य १०.००।

हिन्दी में लोक वार्ता पर बहुत कम लिखा गया है, अतः इस विषय पर डॉ० उप्रेती की यह पुस्तक निश्चित रूप से महत्वपूर्ण कही जाएगी। इसके १२ अध्यायों में लोक वार्ता और लोक साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन करते हुए लेखक ने लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा आदि लोक साहित्य के विभिन्न अंगों पर विस्तृत प्रकाश डाला है, लोक नाट्य तथा लोक सुभाषितों पर स्वतंत्र अध्याय लिखे गए हैं जो अन्य पुस्तकों में नहीं मिलते। एक स्वतंत्र अध्याय में ब्रज मंडल के लोक साहित्य का सोदाहरण परिचय दिया गया है एवं रस परिपाक व अलंकार योजना की दृष्टि से लोक वार्ता की परीक्षा की गई है। ध्वनिवाद की दृष्टि से लोक गीतों की परीक्षा स्तुत्य प्रयास है क्योंकि लोक साहित्य की काव्यशास्त्रीय समीक्षा अभी नहीं के बराबर हुई है। 'परिशिष्ट' में लोक साहित्य संबंधी पठनीय सामग्री के सूत्र उल्लेखनीय हैं जो इस विषय के जिज्ञासुओं को आगे काम दे सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक से इतना लाभ अवश्य है कि लोक साहित्य का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है जिसके आधार पर जिज्ञासु लोग विषय की गहराई में जाने के लिए प्रयत्नशील हो सकते हैं। मेरे विचार से लोक तत्व संबंधी सैद्धांतिक समीक्षा और जनपदीय लोकवार्ता पर स्वतंत्र पुस्तकें लिखी जानी चाहिए तभी इस विषय का शास्त्रीय विवेचन संभव है। यदा-कदा मुद्रण की अशुद्धियाँ भी रह गई हैं जैसे 'हजारी प्रमाद', 'ज्ञानाहं', 'सामात्री' आदि।

फिर भी मेरा विश्वास है कि सरल भाषा में लिखित यह पुस्तक निश्चय ही हिन्दी जगत् में समादरणीय होगी और लोक साहित्य का विद्यार्थी वर्ग इसे पाठ्य पुस्तक के रूप में ग्रहण करेगा।

भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन—प्रधान सम्पादक डा० ब्रजेश्वर वर्मा; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-३; आकार डिमाई; पृष्ठ २११; मूल्य ८-००।

प्रस्तुत पुस्तक में केवल तीन विस्तृत निबन्ध संकलित हैं, प्रथम प्रेमचन्द और नानक सिंह : सामाजिक समस्याएँ, द्वितीय प्रेमचन्द और तकषी शिवशंकर पिल्लै का नारी समाज, और तृतीय प्रेमचन्द का गोदान और शिवराम कारन्त का मरलि-मण्णिगे। इन तीनों निबन्धों के केन्द्र बिन्दु उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द हैं। पंजाबी, मलयालम और कन्नड़ से प्रेमचन्द की तुलना करने तथा उनके प्रभाव को आंकने के लिए प्रस्तुत पुस्तक के निबन्ध हिन्दी साहित्य के लिए एक निधि ही नहीं वरन् पथ प्रदर्शन भी हैं जिनमें हिन्दी का प्रभाव-क्षेत्र सहज ही देखा जा सकता

इस मास के प्रकाशन

शोध एवं आलोचना

हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि / डॉ० आदर्श सक्सेना

मूल्य ३२.००

यह शोध प्रबन्ध आंचलिक उपन्यासों का सर्वांगीण आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाला प्रथम ग्रंथ है।

संवेदना के बिम्ब / राजानन्द

मूल्य १३.००

प्रस्तुत पुस्तक में छायावाद युग से लेकर अब तक के 'काव्य' तथा 'कहानी' का विश्लेषण प्रस्तुत है। डॉ० राजानन्द की पैनी दृष्टि और तीखी शैली अवश्य आलोचनाके क्षेत्र में आये ठहराव को तोड़ेगी।

उपन्यास

न्याय मूर्ति / श्रीगोपाल आचार्य

मूल्य १४.००

न्याय तीर्थ के बाद श्रीगोपाल आचार्य का न्यायमूर्ति न्यायालय के जीवन से सम्बन्धित दूसरा उपन्यास है। न्यायमूर्ति का समाज में क्या स्थान है? क्या प्रतिष्ठा है? किस प्रकार न्यायपालिका कार्यपालिका से भिन्न है? किस प्रकार से समाज के ठेकेदार व नेता लोग न्यायमूर्ति के स्वरूप को अपने निजी स्वार्थों के लिए खण्डित करना चाहते हैं? क्योंकर समाज के झूठे नेता राजनीति को हथियाये हुए हैं? किस प्रकार वे लोग शासन को भ्रष्ट बनाये हुए हैं? क्या खूनी क्रांति समाज के लिए हितकर है? किस प्रकार की क्रांति समाज व राष्ट्र के स्वरूप को बदल सकेगी? इसी प्रकार के कई प्रश्नों की चर्चा इस उपन्यास में हुई है।

कुहरा और किरणें / करणीदान बारहठ

मूल्य ८-५०

समाज के मध्यम वर्ग के एक ऐसे युवक की कहानी जिसके बचपन में दूसरी मां के आने और सताये जाने के कारण घर छोड़ना पड़ा और नये घर को बनाने के लिए किस प्रकार समाज की विसंगतियों से लड़ना पड़ा। घर मिला परन्तु पुनः आर्थिक विषमताओं से लड़ते-लड़ते पुनः घर छूट गया—यह सब आप इस अत्यन्त रोचक और मनोहारी उपन्यास में पढ़ेंगे।

आंधी के अवशेष / सुमेरसिंह दईया

मूल्य ६.००

सुमेरसिंह दईया का नवीन और सशक्त रोचक उपन्यास।

शेष-अवशेष / सुगनचन्द मुक्तेश

मूल्य ६.००

मुक्तेशजी का नया सामाजिक व रोचक उपन्यास

काव्य

अन्तर्कपोत परिवेश के / सं० डॉ० वसन्तकुमार मिश्र

मूल्य ६.५०

हिन्दी के चौदह कवियों की पाँच-पाँच सशक्त कविताओं का संकलन।

कहानी

सड़क का दिल / मदन केवलिया

मूल्य ६.००

श्री केवलिया की चुनी हुई श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह

गुरु नानक / चकोर

मूल्य १.५०

गुरु नानक की बच्चों के उपयोग के लिए एक जीवनी

The Cultural Polity of the Hindus—N.K. Acharya 16.००

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

है। इस शोधपूर्ण कार्य के लिए लेखक, संपादक, प्रकाशक सभी हमारी हार्दिक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने भारत की साहित्यिक एकता के प्रयोग में साहसिक कदम बढ़ाया है।

एक और लाल तिकोन—ले० नरेन्द्र कोहली; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृ०-१३७; मूल्य ४-५०।

समीक्ष्य कृति में कोहलीजी की २७ रचनाएं संगृहीत हैं। इनमें अधिकांश कहानियां तथा कुछ व्यंग्यात्मक रचनाएँ हैं, जो विषय वस्तु और अभिव्यक्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। अपने परिवेश पर लेखक ने बहुत सजग दृष्टि डाली है और विसंगत स्थितियों पर तीखा व्यंग किया है। पुस्तक रोचक और पठनीय है।

देवराज उपाध्याय ग्रन्थावली खण्ड १—ले० डा० देवराज उपाध्याय; प्र० सौभाग्य प्रकाशन, कालिज रोड, उदयपुर; आकार डिमाई; पृष्ठ ४५६; मूल्य ४५-००।

डॉ० देवराज उपाध्याय की साहित्यिक सेवाओं से हिन्दी संसार पूर्ण रूप से परिचित है। मौन तपस्वी के रूप में उन्होंने साधना की है और विविध विचारोत्तेजक सामग्री देकर चिन्तन को प्रबुद्ध किया है। उनकी साहित्य साधना की अवधि प्रायः ४० वर्षों तक फैली हुई है। पर उनका पूरा साहित्य एकत्र उपलब्ध नहीं होने के कारण उनके चिन्तन के स्वरूप का मूल्यांकन करने में बड़ी कठिनाई महसूस की जाती थी। अतः उनकी रचनाओं को ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित करने की योजना स्वागत-योग्य है।

ग्रन्थावली के इस पहले खण्ड में उपाध्यायजी के वैयक्तिक ललित निबन्ध, संस्मरण और यात्राएँ संग्रहीत हैं, जिनसे उनकी सरस रचना-शैली, विचार-प्रवाह, सुलझे हुए मस्तिष्क और गहन अध्ययनशीलता का परिचय मिलता है। दो-टूक बात कहना लेकिन फिर भी कटु न होना उपाध्यायजी की विशेषता है जो प्रस्तुत ग्रन्थावली के संस्मरण और यात्राओं वाले खण्ड में देखी जा सकती है। सभी रचनाओं पर उपाध्यायजी के व्यक्तित्व की छाप है। वे उनकी निजता को अभिव्यक्त करती हैं। अतः पाठक ग्रन्थावली के इस खण्ड को पढ़कर उपाध्यायजी के व्यक्तित्व से भली-भाँति परिचित हो सकता है।

बाल साहित्य

समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा—ले० जुले वर्न; रूपान्तरकार श्रीकान्त व्यास; प्र० शिक्षा भारती, दिल्ली; आकार क्राउन; पृ० ११३; मूल्य २.००।

प्रस्तुत पुस्तक अँग्रेजी की सुप्रसिद्ध पुस्तक ट्वेण्डी थाउजैंड लीग्ज़ अण्डर दि सी का रूपान्तर है जो बाल-पाठकों को दृष्टि में रख कर किया गया है। संसार के प्रसिद्ध 'क्लासिक्स' हर देश व हर भाषा में अनूदित होकर लोकप्रियता पाते रहे हैं। हिन्दी के माध्यम से बच्चे भी इनका आनन्द ले सकें, प्रकाशक ने इस उद्देश्य से बहुत-सी ऐसी पुस्तकें किशोर साहित्य के अन्तर्गत प्रकाशित की हैं।

समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा में लेखक जुले वर्न के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया है। जुले वर्न ने अपने उपन्यासों में केवल कल्पना के बल पर जिन वैज्ञानिक आविष्कारों और तथ्यों का वर्णन किया वह उसके बहुत वर्ष बाद वास्तविकता में आए और इस प्रकार उसकी भविष्यवाणी ने समस्त संसार को चकित कर दिया।

पुस्तक मोटे टाइप में और सचित्र है। छपाई-सफाई व आवरण अत्यन्त रुचिपूर्ण हैं।

हो-न-हो—सम्पा० राजीव लोचन शर्मा; प्र० ज्ञान भारती पाकेट बुक्स, लखनऊ; पृ० १२८, मूल्य १-००।

बच्चों के लिए इसमें रोचक व विचित्र घटनाओं से परिपूर्ण कहानियों का संग्रह किया गया हैं। कहानी में वर्णित घटनाएं सम्भव भी हैं या नहीं, बच्चों को इससे कतई मतलब नहीं रहता बल्कि जितनी अधिक असम्भव कहानी होगी बच्चों को उसमें उतना ही मजा आता है। इस दृष्टि से संकलन की हर कहानी एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर है।

विश्वजित

● प्रत्येक राष्ट्र के इतिहास में कभी अग्नि-परीक्षा का भी समय आता है। राष्ट्र के लिए यह समय चुनौती का होता है। एक ओर होती है दमन और अत्याचारयुक्त शांति और दूसरी ओर होता है युद्ध और बलिदान। कौन हताभिमानी राष्ट्र युद्ध छोड़कर अन्य विकल्प पसंद करेगा। राम जामदग्न्य ने भी युग-धर्म समझ कर संभवतः युद्ध को पसंद किया होगा और इस प्रकार समस्त राष्ट्र की अन्तर्वाचा को मुखरित किया होगा।

● इस युग में यहूदियों की हत्या करने वाले हिटलर और क्षत्रियों का विनाश करने वाले भगवान परशुराम में बहुत बड़ा अंतर है। हिटलर का कार्य अहंकारवश आचरित विनाश-लीला थी, जबकि परशुराम का युद्ध जन-समुदाय की उन्नति के लिए युग-धर्म के रूप में रहा होगा।

● पराक्रमी ब्राह्मणों का समकालीनत्व, इतिहास जिसे भुला न सके, मात्र आकस्मिक नहीं हो सकता। अवश्य ही इसके पीछे कोई बड़ा परिबल होगा और यह परिबल परशुराम जैसे क्रांतद्रष्टा का ही प्रतीत होता है, जो इस उपन्यास के आधार-स्तंभ हैं।

● विश्वजित औपन्यासिक शैली में वस्तुतः हमारी संस्कृति का महाकाव्य है। इस दृष्टि से वह भारतीय भाषाओं में संभवतः पहला औपन्यासिक महाकाव्य है जिसमें यथार्थ और इतिहास, पुराण और साहित्य और मानविकी का पर्याप्त समंजन हुआ है।

● "विश्वजित" डा० पिनाकिन दवे लिखित गुजराती उपन्यास है, जिसका हिन्दी अनुवाद प्रो० नवनीत लाल गोस्वामी ने किया है। अनुवादक ने उनकी भाषा और शैली का पूरा अनुसरण किया है, फलतः उपन्यास मौलिक प्रतीत होता है, अनुवाद नहीं।

मूल्य १५-००

प्रकाशक

स्मृति प्रकाशन

६१, महाजनी टोला, इलाहाबाद-३

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली-६

—मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी (नाटक), डॉ० राजकुमार वर्मा
—सत्यकाम (उपन्यास), नारायण सान्याल
—कैद आवाजें (उपन्यास), रामकुमार भ्रमर
—समस्या और समाधान (निबन्ध), डॉ० नगेन्द्र
—भारतीय साहित्य में शृंगार-रस (आलोचना), गणपति-चन्द्र गुप्त
—साजिशों के सरताज (किशोर-उपन्यास), मनहर चौहान
—बलिए और छलिए (,, ,,), ,, ,,
—राधा और भिखारी (,, ,,), मार्क ट्वेन
—संविधान की आत्मा (राजनीति), डॉ० सुभाष काश्यप
—टाम काका की कुटिया (उपन्यास), हैरियठ बीचर स्टोव
—नटखट नन्दू (उपन्यास), मार्क ट्वेन

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६

—शंखध्वनि (कविता), सुमित्रानंदन पंत
—काला जल (उपन्यास), शानी
—समीक्षायण (आलोचना), पं० अयोध्यानाथ शर्मा एवं विश्वनाथ गौड़
—संयुक्त राष्ट्रसंघ और विश्वनागरिकता (विविध), यूनेस्को
—संयुक्त राष्ट्रसंघ और उसके विशेष अभिकरण (विविध), यूनेस्को

राजपाल एण्ड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

—प्रवास की डायरी (डायरी), बच्चन
—खुले आसमान के नीचे एक रात (कहानी), चन्द्रगुप्त विद्यालंकार
—तबेला (उपन्यास), गुरुदत्त
—दो टूक (कविता), बालकवि बैरागी

राजेश प्रकाशन, कृष्णा नगर, दिल्ली-६

—सूरदास : व्यक्तित्व और कृतित्व (आलोचना), डा० देवेन्द्र आर्य
—हिन्दी समीक्षा कोश (कोश), रघुबरदयाल वार्ष्णेय
—हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली काव्य का उद्भव और विकास (आलोचना), महावीरशरण जैन

लिपि प्रकाशन, कृष्णा नगर दिल्ली-५१

—छायावाद के आधार-स्तम्भ (आलोचना), गंगाप्रसाद पाण्डेय
—भगतसिंह और उनका युग (जीवनी), मन्मथनाथ गुप्त
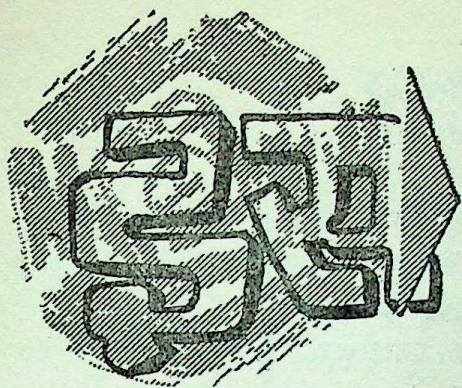
आलोचना

डॉ० गोपी नाथ तिवारी, भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली १८.००
डॉ० सरोजनी रोहतगी, अवधी का लोक-साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ५०-००
डॉ० इन्द्रनाथ मदान, प्रसाद प्रतिभा ,, ,, , १५-००
एच० जे० क्यॉलरॉयटर, संगीत : पूर्व और पश्चिम, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली ८-००
डॉ० ब्रह्मानन्द, राहुल सांकृत्यायन, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली १७-५०
हीरेन्द्रनाथ मुख्योपाध्याय, स्वयं ही थे एक काव्य, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली ६-००
डॉ० मलिक मोहम्मद, वैष्णव भक्ति आन्दोलन का अध्ययन, राजपाल एण्ड संज, दिल्ली ३०-००
डॉ० रवीन्द्र भ्रमर, समकालीन हिन्दी कविता, राजेश प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली-५१ १५-००
डॉ० रघुवरदयाल वार्ष्णेय, आधुनिक हिन्दी कवि, ,, ,, ,, २०-००
डॉ० देवेन्द्र आर्य, हिन्दी सन्त काव्य में प्रतीक विधान, ,, ,, ,, ३५-००
डॉ० आदर्श सक्सेना, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि, सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर ३२-००
राजानन्द, संवेदना के बिम्ब, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर १३-००
सिस्टर क्लेमेंट मेरी, हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर विचारात्मक गद्य, स्मृति प्रकाशन, महाजनी टोला, इलाहाबाद २५-००
प्रो० हरेन्द्र प्रताप सिनहा, बिहारी सतसई का मूल्यांकन, ,, ,, ,, ,, ५-००
देवेन्द्रनाथ शर्मा एवं गोपालराय, हिन्दी साहित्याब्द कोश, ग्रन्थ निकेतन, पटना-६ २५-००
जयदेव तनेजा, समसामयिक हिन्दी नाटकों में चरित्र सृष्टि, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली-६ २०-००
डॉ० अरविन्द पांडेय, भारतीय काव्यशास्त्र, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा १०-००
डॉ० राजमल बोरा, चिन्तामणि मीमांसा, नमिता प्रकाशन, टाउन हॉल, औरंगाबाद ७-५०
महेन्द्र चतुर्वेदी एवं ओम्प्रकाश गाबा, व्यावहारिक पर्याय कोश, शब्दकार, तुर्कमान गेट, दिल्ली १५-००
प्रो० विसेश्वरप्रसाद केसरी, नागपुरी भाषा और साहित्य, कमल प्रकाशन, राँची-१ ३-००
डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी, नागपुरी और उसके बृहत्-त्रय, , ,, ३-००
डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त, हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, ,, ,, ४-००

उपन्यास

राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली १६-००
अनन्त गोपाल शेवड़े, कोरा कागज, राजपाल एण्ड संज, दिल्ली १२-००
ख्वाजा अहमद अब्बास, तीन पहिये, ,, ,, ,, ५-००

समरेश बसु, फेराव, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली-६ ६-००
सुरेन्द्रनाथ सक्सेना, जय बांगला, " " " ७-००
आनन्द प्रकाश जैन, ताँबे के पैसे, लिपि प्रकाशन, कृष्णानगर, दिल्ली-५१ १६-५०
प्रमथनाथ विशी, जोड़ादीर्घी के चौधरी, शब्दकार, तुर्कमान गेट, दिल्ली १०-००
मन्नू भंडारी, कलुआ, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि० दिल्ली-६ ५-००
जगदम्बाप्रसाद दीक्षित, कटा हुआ आसमान, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ १६-००
हृदयेश, हत्या, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली -६ ६-००
अभिमन्यु अनत शबनम, आन्दोलन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६ ५-००
डॉ० पिनाकिन दवे, विश्वजित, स्मृति प्रकाशन, महाजनी टोला, इलाहाबाद १५-००
श्रीगोपाल आचार्य, न्यायमूर्ति, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर १४-००
करणीदान बारहट, कुहरा और किरणें, " " ८-५०
सुमेरसिंह दईया, आँधी के अवशेष, " " ६-००
सुगनचन्द मुक्तेश, शेष-अवशेष, " " ६-००
डॉ० त्रिलोचन पांडेय, बीती बातें, राजेश प्रकाशन, कृष्णा नगर, दिल्ली-५१ १०-००
राजेन्द्र यादव, सारा आकाश, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, दिल्ली-३२ ३-००
उपेन्द्रनाथ अश्क, अनाड़ी, " " " २-००
कृष्णचन्दर, प्यार एक खुशबू है, " " " २-००

कहानी

मदन केवलिया, सड़क का दिल, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर ६-००
कृष्ण भावुक, पत्थरों के बीच, शब्द प्रकाशन, कपूरथला रोड, जालंधर १५-००

कविता

नागार्जुन, भस्मांकुर, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ ५-००
डॉ० बसन्तकुमार मिश्र, सं०, अन्तर्कपोत परिवेश के, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर ६-५०

नाटक

चन्द्रशेखर भट्ट, दीपक जलने से पहले, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ ४-००
डॉ० रामकुमार वर्मा, धरती का स्वर्ग, राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली-६ ४-००

संस्मरण

अक्षयकुमार जैन, याद रही मुलाकातें, राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली ५-००
धर्मेन्द्र गौड़, मैं अँग्रेजों का जासूस था, लिपि प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली-५१ ६-५०

व्यंग्य

रवीन्द्रनाथ त्यागी, कृष्णवाहन की कथा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६ ४-००

बाल-साहित्य

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे, बन्दरों का नाटक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६ २-५०
वीरकुमार 'अधीर', चींटियों की समुद्र-यात्रा, " " " २-००
चकोर, गुरु नानक, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर १-५०
प्रदीप, अभिमन्यु, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली २-५०
रामकृष्ण शर्मा, एकलव्य, " " " २-५०
रामकृष्ण शर्मा, लवकुश, " " " २-५०

राजकमल द्वारा शीघ्र प्रकाश्य
कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन

अन्तराल
मोहन राकेश

मोहन राकेश का प्रतीक्षित उपन्यास, जिसका प्रथम आलेख 'धर्मयुग' में नीली रोशनी की बाँहें शीर्षक से धारावाहिक प्रकाशित हो चुका है।...बदलते मूल्यों की दुविधा में आज की मानसिक और शारीरिक आकांक्षाओं का आंतरिक चित्रण !

काला जल
शानी

इस उपन्यास का प्रकाशन हिन्दी में एक घटना माना गया था और इसके छपते ही पाठकों ने जितनी सहृदयता, उदारता और गर्मजोशी से इसका स्वागत किया वह अभूतपूर्व थी—बहुत समय तक अनुपलब्ध रहने के बाद अब यह महत्त्वपूर्ण कृति राजकमल से पहली बार प्रकाशित हो रही है।

मधुर रस स्वरूप और विकास
रामस्वार्थ चौधरी अभिनव

'मधुर रस : स्वरूप और विकास' के इस दूसरे भाग में मधुर रस-साधना के ऐतिहासिक विकास-क्रम तथा मध्यकालीन सगुणमार्गी एवं निर्गुणमार्गी साधना-पद्धतियों के हिन्दी साहित्य में मधुर रस के स्वरूप-विधान का पर्यालोचन किया गया है।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

श्रीमती शीला सन्धू, मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ८ फैज बाजार, दिल्ली, के लिए नवीन प्रेस यूनिट नं० २, इण्डस्ट्रियल एरिया ओखला, नई दिल्ली-२० में मुद्रित।

प्रकाशन समाचार
सितम्बर १९७१

राजनीतिशास्त्र पर हिन्दी में विश्वकोश के ढंग की पहली और अत्यन्त प्रामाणिक कृति

प्रत्येक पुस्तकालय और हिन्दी-प्रेमी पाठक के लिए सर्वथा संग्रहणीय

राजनीति कोश

डा० सुभाष काश्यप
एवं
विश्वप्रकाश गुप्त

राजनीतिशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों, शब्दबंधों का हिन्दी-अनुवाद और भारतीय संदर्भों में उनकी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कोश-ग्रन्थ की विशेषता है।

डिमाई आकार में लगभग
साढ़े-पाँच सौ पृष्ठ
रेक्सिन की मजबूत और
आकर्षक जिल्द
मूल्य ४०.००

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

सम्पादक : शीला संधू

वर्ष १८ ● अंक १२ ● दिसम्बर, १९७१

वार्षिक ४.००; विदेशों में ८.००; एक प्रति ० ४०

भारतीय लेखकों की पाठ्य-पुस्तकें

राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण को विकसित करने में शिक्षा का सर्वोपरि महत्त्व है। किन्तु शिक्षा इस दिशा में अपना योगदान तभी दे सकती है जब पाठ्य-पुस्तकें स्वदेशी विद्वानों द्वारा विशेष रूप से इस उद्देश्य को दृष्टि में रखकर लिखी गयी हों। विदेशी लेखकों की पाठ्य-पुस्तकों पर निर्भरता किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए लज्जा की बात होती है। यह स्थिति एक प्रकार की सांस्कृतिक पराधीनता की द्योतक तो है ही, स्वदेशी प्रतिभा को कुंठित करने वाली और आर्थिक दृष्टि से भी हानिकर है, क्योंकि रॉयल्टी आदि के रूप में काफी पैसा विदेशों में चला जाता है।

भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुए लगभग ढाई दशक होने को आये हैं लेकिन पाठ्य-पुस्तकों के मामले में आज भी उसे अधिकांशतया विदेशी लेखकों पर ही निर्भर करना पड़ रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, बी० एस० सी० के पाठ्य-क्रमों में कुल २६० पुस्तकें निर्धारित हैं जिनमें से भारतीय लेखकों की केवल २२ पुस्तकें हैं। एम० एस-सी० के पाठ्य-क्रमों में भी कुल ३८६ पुस्तकों में से २२ पुस्तकें ही भारतीय लेखकों की हैं। इसी प्रकार चिकित्सा में ३७४ पुस्तकों में से कुल ३५ पुस्तकें भारतीय हैं। इन आँकड़ों से भारत की दयनीय स्थिति का पता लगता है।

ऐसा नहीं है कि भारतीय लेखकों द्वारा लिखी गयी पाठ्य-पुस्तकों का अभाव है या भारत में ऐसे विद्वान नहीं हैं जो अच्छी पाठ्य-पुस्तकें लिख सकें। पिछले दिनों अखिल भारतीय प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता महासंघ ने भारतीय लेखकों की चार हज़ार पाठ्य-पुस्तकों का प्रदर्शन किया था, जिसका उद्देश्य यह दर्शाना था कि भारतीय लेखकों की पाठ्य-पुस्तकों का उतना अभाव नहीं है जितना समझा जाता है। इन चार हज़ार पुस्तकों में से २६७९ पुस्तकें अंग्रेज़ी में थीं और बाकी भारतीय भाषाओं में। एक विशेषज्ञों का दल इनमें से कुछ पुस्तकों का चुनाव करेगा और फिर उन्हें सस्ते संस्करणों में सुलभ कराया जायेगा।

क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बना देने से भारतीय लेखकों को उच्च-स्तरीय पाठ्य-पुस्तकें लिखने के लिए प्रोत्साहित करने की और भी अधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है। भारत सरकार का ध्यान इस आवश्यकता की तरफ गया है और उसने नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से कई ऐसी योजनाएँ चालू की हैं जिनसे क्षेत्रीय भाषाओं में उच्च स्तरीय पाठ्य पुस्तकों के लेखन-प्रकाशन को प्रोत्साहन मिलेगा। केन्द्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ऐसे विद्वानों के लिए 'फैलोशिप' देने की व्यवस्था की है जो विभिन्न विषयों पर उच्च स्तरीय पाठ्य पुस्तकें लिखने की इच्छा तथा योग्यता रखते हैं। इससे निश्चय ही भारतीय पाठ्य-पुस्तकों के लेखन-प्रकाशन को बल मिलेगा और हम विदेशी पाठ्य-पुस्तकों की दासता से मुक्त हो सकेंगे। लेकिन सरकार की पाठ्य पुस्तकों का पूर्णरूपेण राष्ट्रीयकरण कर लेने की जो नीति है वह बहुत उचित नहीं कही जा सकती। यदि इस कार्य में निजी प्रकाशकों का सहयोग लेकर चला जाता है तो अधिक सफलता की आशा की जा सकती है।

हमारे नये प्रकाशन

चम्बल की चमेली (उपन्यास) : चम्बल घाटी की कुख्यात नायिका पुतलीबाई पर कृश्नचन्दर ने अपनी रोचक शैली में मार्मिक उपन्यास प्रस्तुत किया है। पुतलीबाई के डाकू-जीवन की सारी करामातों के साथ उसके पिछले जीवन का चौंका देने वाला ब्यौरा भा यहाँ प्रस्तुत है। ६.००

मेरी प्रिय कहानियाँ (कहानियाँ) : श्री मोहन राकेश नये लेखन के एक मूर्धन्य व्यक्तित्व हैं। इस संकलन में उनकी स्वयं की चुनी हुई कुछ श्रेष्ठ कहानियाँ उनकी रोचक भूमिका के साथ प्रस्तुत हुई हैं। ५.००

काजल (उपन्यास) : बंगला के सुविख्यात उपन्यासकार श्री विमल मित्र की यह नई रचना है। इसमें एक रोमांचकारी कहानी उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली में रोचक ढंग से प्रस्तुत की है। ५.००

'अ' से असभ्यता : श्री दिनकर सोनवलकर हिन्दी के नये कवियों में अपनी शैली और कथ्य की दृष्टि से विशिष्ट कवि हैं। इस नये संकलन में सामयिक विषयों पर गहरे व्यंग्य और कटाक्ष उन्होंने इन कविताओं में प्रस्तुत किए हैं। ५.००

'भारत दर्शन' माला की पुस्तकें अपनी उपयोगिता और मुद्रण आदि की दृष्टि से पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय हुई हैं। अब इस माला की दो नई पुस्तकें और उपलब्ध हैं :

आन्ध्र प्रदेश	**आरिगपूडि**	३.००
भारत के द्वीप	**योगराज थानी**	३.००

राजपल एंड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

प्रकाशक और लेखक : एक महत्त्वपूर्ण कार्य में बराबर के सहयोगी

शीला संधू

जब हम प्रकाशन-व्यवसाय की बात करते हैं, तो उसका मतलब पुस्तक-प्रकाशन से होता है, पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से नहीं। पुस्तक-प्रकाशन में भी दो तरह के प्रकाशक होते हैं—एक पाठ्य-पुस्तकों के और दूसरे सामान्य पुस्तकों के। जहाँ तक पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन का सवाल है, वह शुद्ध व्यापारिक स्तर पर संचालित होता है और प्रकाशन-व्यवसाय के साथ जो एक भावना जुड़ी हुई है वह वास्तव में सामान्य पुस्तकों के प्रकाशन में ही प्रतिफलित होती है।

प्रकाशन व्यवसाय को ऊपरी नज़र से देखें तो लगेगा कि दूसरे व्यापारों की तरह यह भी एक व्यापार है। लेकिन ज़रा गहराई में जाते ही यह बात साफ़ हो जाती है कि यह महज़ एक व्यापार नहीं है और प्रकाशक साहित्य की ख़रीद-फ़रोख्त करने वाला व्यापारी मात्र नहीं है। अगर प्रकाशक का उद्देश्य सचमुच सिर्फ़ व्यापार करके पैसा कमाना होता तो शायद प्रकाशन का धंधा वह न अपनाता। इस व्यवसाय को चलाने में जितनी तरद्दुद उठानी पड़ती है वह दूसरे ज्यादा मुनाफ़ा देने वाले धंधों से किसी कदर कम नहीं है; और जहाँ तक व्यवसाय को चलाने की क्षमता का सवाल है, हिंदी प्रकाशकों में इस समय कई लोग ऐसे हैं, जो बड़े औद्योगिक संस्थानों का संचालन सफलतापूर्वक कर सकते हैं और इस तरह प्रकाशन-व्यवसाय की तुलना में कहीं ज्यादा पैसा कमा सकते हैं। वे खुद इस बात को अच्छी तरह समझते हैं, लेकिन फिर भी प्रकाशन-व्यवसाय को छोड़ नहीं पाते। कोई न कोई बात है, जो इन लोगों को प्रकाशन-व्यवसाय अपनाने के लिए विवश करती है और वह बात है किताबों से, किताबों की दुनिया से उनका मोह, पैसा कमाने के साथ-साथ एक सत्कार्य करने की लालसा। असल में यह मोह, यह लालसा ही प्रकाशन-कार्य को शुद्ध व्यापार होने से बचाती है।

जब हम यह कहते हैं कि प्रकाशन-व्यवसाय शुद्ध व्यापार नहीं है तो इसका मतलब यह है कि प्रकाशक उन्हीं पुस्तकों और उन्हीं लेखकों को अपनाता है, जिनमें उसकी निष्ठा होती है। बिना निष्ठा के पाठ्य-पुस्तकें बेची जा सकती हैं, सामान्य पुस्तकें नहीं। हर अच्छा प्रकाशक एक मिशन लेकर चलता है और कोई पांडुलिपि स्वीकार करते समय उसकी नज़र में हमेशा वह मिशन रहता है। वह लेखक से अपनत्व महसूस करता है, उसके विचारों और उसकी रचनाओं में आस्था रखता है तभी वह उसकी पुस्तकों को अच्छे से अच्छे रूप-रंग में प्रस्तुत करने और उन्हें बेचने में सफल होता है। यह ठीक है कि कोई कृति अपनी आंतरिक शक्ति और गुणवत्ता के बल पर बिकती है, लेकिन उस कृति का और उसके रचनाकार का सही चित्र पाठकों के सामने रखना प्रकाशक ही का काम है। इसलिए यह कहना शायद ग़लत नहीं होगा कि किसी रचना की सफलता बहुत-कुछ लेखक द्वारा प्रकाशक के सही चुनाव पर निर्भर करती है। सही प्रकाशक न मिले, तो कई बार अच्छी से अच्छी रचना का भी पाठकों में उतना स्वागत नहीं होता जितना वांछनीय है।

ऐसी स्थिति में यह जरूरी हो जाता है कि लेखक बहुत सोच-विचार कर प्रकाशक का चुनाव करे और उसकी स्थितियों तथा नीतियों को समझे। एक बार जब लेखक तथा प्रकाशक एक-दूसरे को समझ कर परस्पर सहयोग करते हैं, तो यह संबंध निश्चित रूप से चिरस्थायी होता है और एक श्रेष्ठ प्रकाशन गृह के निर्माण का आधार बनता है।

लेखक एक पुस्तक लिखता है और उसकी पांडुलिपि प्रकाशक को सौंपकर निश्चिन्त हो जाता है, लेकिन प्रेस-कॉपी की तैयारी से लेकर बाज़ार में बिक्री के लिए प्रस्तुत होने तक उस पांडुलिपि को कितनी प्रक्रियाओं के बीच से गुज़रना होता है, यह बात जो लोग जानते हैं, वही समझ

सकते हैं कि पुस्तकें प्रकाशित करना कितना महँगा और सिरदर्द का काम है। और इतनी तरद्दुद उठाने के बावजूद जो मुनाफ़ा इस व्यवसाय से होता है, उसे देखते हुए कोई भी ऐसा व्यक्ति, जो शुद्ध व्यापार करना चाहता है, इस धंधे की तरफ़ आकर्षित नहीं होगा।

एक सफल प्रकाशक को इस बात का गर्व रहता है कि उसे समाज के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी घटक —साहित्य-सर्जक की मैत्री प्राप्त है और अपने व्यवसाय के द्वारा वह उस कलाकार के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का काम कर रहा है। इस तरह वह अपने आप को साहित्यकार के काम में सहयोगी अनुभव करता है और यह अनुभूति ही उसके सारे व्यवसाय की मूल प्रेरणा होती है। जो प्रकाशक अपने लेखकों के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित नहीं कर पाता, वह सही मायनों में प्रकाशक नहीं बल्कि महज़ एक मुद्रक और विक्रेता है।

हिंदी प्रकाशन का इतिहास उठाकर देखें, तो ऐसे प्रचुर उदाहरण मिलेंगे, जहाँ लेखकों और प्रकाशकों के बीच यह भावनात्मक संबंध रहा है। हालांकि प्रारंभिक युग के प्रकाशकों के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि वे लेखकों का शोषण करते थे और निराला आदि कई लेखकों के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं जो उस शोषण के शिकार हुए, लेकिन यह बात शायद एकतरफ़ा है, क्योंकि ऐसी घटनाएँ भी उस समय अवश्य हुई होंगी जिनमें प्रकाशक लेखकों का शिकार बना, पर हिंदी प्रकाशकों में क्योंकि अपने संस्मरण लिखने की परंपरा नहीं रही है, इसलिए वे घटनाएँ अलिखित और अप्रकाशित ही रह गईं।

सब जानते हैं कि उस जमाने में लोग पुस्तकों का प्रकाशन आम तौर पर व्यवसाय के लिए नहीं बल्कि इस कारण करते थे कि किसी लेखक से उनका स्नेह होता था। उसकी रचनाओं को वे पसंद करते थे और उनकी इच्छा उन्हें प्रकाशित करके लेखक के साथ सहयोग करने की होती थी। लिखा-पढ़ी का उस जमाने में रिवाज नहीं था और दूसरे व्यापारों में जिस तरह होता था वैसे ही लेखकों तथा प्रकाशकों के बीच भी जबानी बात बड़ा मूल्य रखती थी।

जिन स्थितियों को आज हम शोषण समझते हैं वे उस समय एक प्रथा के रूप में विद्यमान थीं। यह और

बात है कि उन स्थितियों के कारण कई लेखकों को आर्थिक कष्ट भोगना पड़ा, लेकिन प्रकाशकों की तरफ़ से जानबूझ कर कोई ऐसी चेष्टा नहीं की जाती थी, जिससे लेखकों का शोषण हो। असल में लेखकों तथा प्रकाशकों के बीच मैत्री भाव ही उस समय के प्रकाशन की मुख्य प्रेरणा थी।

आज़ादी के बाद स्थितियाँ बदलीं। शिक्षा का प्रसार हुआ, अधिक स्कूल-कालिज और पुस्तकालय स्थापित किये गये। फलस्वरूप किताबों की माँग बढ़ी—खासकर स्कूली किताबों की; और क्योंकि स्कूली किताबों को छापने में मुनाफा ज्यादा था इसलिए बहुत से नये-नये लोग इस दिशा में अग्रसर हुए। सामान्य पुस्तकों के भी कुछ नये प्रकाशक सामने आये। इन लोगों के काम करने के तरीक़े पहले के प्रकाशकों से बिलकुल भिन्न और ज्यादा व्यवस्थित थे। फलस्वरूप हिंदी-प्रकाशन अब एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गया है, जहाँ से वह अपने भावी विकास का रास्ता अपने आप तयार कर सकता है। उसका एक स्वतंत्र व्यक्तित्व बन गया है और पाठ्य-पुस्तकों, सामान्य पुस्तकों तथा विषय-विशेष की पुस्तकों के अलग-अलग प्रकाशक हो गये हैं।

कुछ प्रकाशक सिर्फ़ पाकेट-बुक्स का ही प्रकाशन कर रहे हैं। विशेषीकरण की यह प्रवृत्ति हिंदी-प्रकाशन की परिपक्वता को सूचित करती है।

धीरे-धीरे हिंदी प्रकाशन में एक प्रवृत्ति यह भी विकसित हो रही है कि एक लेखक की रचनाएँ एक ही प्रकाशन-गृह से निकलें। यह एक शुभ संकेत है। इससे जाहिर होता है कि लेखकों तथा प्रकाशकों ने एक-दूसरे को पहले की निस्बत ज्यादा अच्छी तरह समझने की कोशिश की है।

हिंदी-प्रकाशन के विकास के फलस्वरूप उसमें औपचारिकता तथा व्यावसायिकता रूर आयी है, लेकिन आज भी महत्त्व लेखकों तथा प्रकाशकों के बीच सौहार्द्रपूर्ण संबंधों का ही है और इस बात को भुलाया नहीं जा सकता कि एक महत्त्वपूर्ण कार्य में ये दोनों बराबर के सहयोगी हैं। कई बार प्रकाशकों को तुच्छ और बेईमान समझने की जो प्रवृत्ति पहले से चली आ रही है, उसके कारण कुछ अप्रिय घटनाएँ हो जाती हैं, पर वे नगण्य हैं और एक लेखक की सद्भावना प्रकाशक को मिलती है, तो वह चार अप्रिय अनुभवों की चुभन को दूर कर देती है।

मानक हिन्दी अँग्रेजी कोश

सं०-राममूर्ति सिंह

नित्य व्यवहार में आने वाले हिन्दी शब्दों, शब्दावलियों व तकनीकी शब्दावली का अत्यन्त प्रामाणिक हिन्दी अँग्रेजी कोश ● एक ही हिन्दी शब्द के विभिन्न अर्थों के लिये अलग अलग पर्याय ● उर्दू-संस्कृत आदि के हिन्दी में प्रचलित शब्दों का भी समावेश ● हिन्दी शब्दों के पूर्ण सटीक अंग्रेजी पर्याय ● भारत सरकार द्वारा मान्य शब्दावली का प्रयोग।

पुस्तक विक्रेताओं के लिये विशेष सुविधाएँ

मूल्य १२.००

आदर्श कार्यालय पद्धति

मन्नूलाल द्विवेदी

भू० पू० संसद् सदस्य

यह पुस्तक सरकारी या गैर-सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में काम करने वालों के लिये इतनी अधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है कि महाराष्ट्र, बिहार आदि राज्यों की सरकारों ने अपने कर्मचारियों को हिन्दी परीक्षाओं के लिये इसे अनिवार्य पुस्तक के रूप में निश्चित किया है।

इसमें पत्र-व्यवहार, टिप्पणी, आलेख, सार-लेखन और मसौदे दिये गये हैं। सभी कार्यालयों में काम आने वाले पारिभाषिक शब्दों एव वाक्यांशों की ऐसी वृहद सूची भी इसमें है जो इसे सहज ही पारिभाषिक शब्द-कोश का भी दर्जा दे देती है।

पुस्तकालय संस्करण ८.००
पाठ्य संस्करण ६.००

अच्छी हिन्दी कैसे लिखें

डा० भागीरथ मिश्र एवं शुभकार कपूर

यह पुस्तक हिन्दी भाषा एवं साहित्य के छात्रों की कठिनाइयों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। अध्ययन कैसे करें, परोक्षा की तैयारी की विधि, प्रायः होने वाली भूलें, शब्दज्ञान की वृद्धि, व्याकरण, मुहावरे, प्रमुख साहित्यकारों का परिचय तथा परीक्षोपयोगी निबंध आदि अतीव उपयोगी सामग्री इसमें प्रस्तुत की गई है।

अनेक विश्व विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्वीकृत है।

पुस्तकालय संस्करण ७.००
पाठ्य संस्करण ५.००

स्वामी रामतीर्थ साहित्य

भारतीय नव जागरण के महाद्रष्टा स्वामी रामतीर्थ के विचारों का सम्पूर्ण संकलन, विषयानुसार अलग-२ ग्रंथों में सरल भाषा एवं रोचक शैली में प्रस्तुत है।

मूल्य प्रत्येक ३.५०

- हमारा भारत
- मानवता और विश्व प्रेम
- आनन्द की पगडंडियाँ
- ब्रह्मचर्य की शक्ति
- रामतीर्थ शक्ति सुधा
- हमारा राष्ट्रीय धर्म
- गृहस्थ धर्म
- व्यावहारिक वेदान्त
- सफलता का रहस्य
- स्वामी रामतीर्थ (जीवनी)

प्रभात प्रकाशन,

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

पुस्तकों की व्यक्तिगत खरीद को प्रोत्साहन देनेवाली एक आकर्षक योजना

आन्ध्रप्रदेश के पुस्तक-वितरकों ने मिलकर घरेलू लाइब्रेरी योजना के नाम से एक नई योजना आरम्भ की है, जिसका उद्देश्य पुस्तकों की व्यक्तिगत खरीद को प्रोत्साहन देना है। योजना के सदस्यों को १८ महीने तक प्रति माह पाँच रुपये देने पड़ते हैं। बदले में उसे १०० रुपये मूल्य की उसकी मनपसन्द पुस्तकें मिलती हैं, जिन्हें वह योजना द्वारा भेजे गये सूचीपत्र में से चुन सकता है। इस सूचीपत्र में तेलुगु के लगभग १४० प्रकाशकों की २००० से अधिक पुस्तकें सम्मिलित हैं। साथ ही, सदस्यों को १० पुस्तकें और 'बुक वर्ल्ड' नामक पत्रिका के १८ अंक निःशुल्क दिये जाते हैं। निःशुल्क मिलने वाली पुस्तकों के लिए सदस्यों को कम-से-कम ३० पुस्तकों में से चुनाव करने की स्वतंत्रता दी जाती है। पैकिंग और फारवर्डिंग आदि के खर्चे भी सदस्यों को नहीं देने पड़ते। इस प्रकार ९० रु० के शुल्क में उन्हें करीब १३१ रुपये मूल्य की पुस्तकें और सेवाएँ प्राप्त होती हैं।

जैसे ही कोई व्यक्ति इस योजना का सदस्य बनता है, उसे निःशुल्क मिलने वाली १० पुस्तकों में से ३ पुस्तकें और एक वृहत् सूचीपत्र भेज दिया जाता है। छह महीने बाद जब वह ३० रु० शुल्क रूप में जमा करा चुकता है, उसे ३० रु० मूल्य की उसके द्वारा चुनी हुई पुस्तकें और निःशुल्क पुस्तकों की अगली किस्त के रूप में दो पुस्तकें भेज दी जाती हैं। अगले छह महीनों के बाद फिर सूचीपत्र में से चुनी गयी ३० रु० मूल्य की पुस्तकें तथा दो और निःशुल्क पुस्तकें उसे भेज दी जाती हैं। १८ महीने के बाद उसे बाकी ४० रु० मूल्य की पुस्तकें तथा तीन निःशुल्क पुस्तकें भेज दी जाती हैं।

आन्ध्रप्रदेश की यह घरेलू लाइब्रेरी योजना मई सन् १९६० में शुरू हुई थी। इससे पहले केरल की साहित्य प्रवर्तक कोआपरेटिव ने 'बुक इन्स्टालमेंट स्कीम' नाम से पाठकों के लिए एक योजना शुरू की थी, जो आन्ध्रप्रदेश की उक्त योजना में प्रेरक रही। इस समय इस योजना के लगभग ६,१०० सदस्य हैं और आज तक कुल मिलाकर १,६५,००० पुस्तकें योजना के सदस्यों को वितरित की जा चुकी हैं, जिनमें ३२,००० निःशुल्क पुस्तकें सम्मिलित हैं।

योजना के सदस्य प्रमुख रूप से आन्ध्रप्रदेश के ही रहने वाले हैं, लेकिन आन्ध्रप्रदेश के बाहर से भी अनेक लोग इस योजना के सदस्य बने हैं। एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि योजना का औसत सदस्य आन्ध्रप्रदेश के गाँव का एक विवाहित व्यक्ति है जिसकी आमदनी २०० रु० महीना है। पुरुष सदस्य अधिकांशतया ग्रामीण क्षेत्रों से हैं किन्तु महिला सदस्यों का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि वे ग्रामीण क्षेत्रों से न होकर अधिकांशतया कस्बों और शहरों की रहने वाली हैं। एक यह तथ्य भी ज्ञात हुआ है कि तेलुगु पुस्तकें पढ़ने वाले इन सदस्यों का एक बहुत बड़ा प्रतिशत हिन्दी पुस्तकें पढ़ने में भी दिलचस्पी रखता है।

अब तक इस योजना को जो सफलता प्राप्त हुई है वह काफी उत्साहवर्धक है और उससे प्रकट होता है कि भारत की हर प्रमुख भाषा में इस तरह की योजना सफलतापूर्वक चल सकती है।

'नेशनल' के नये प्रकाशन

सितम्बर, १९७१

● **समस्या और समाधान**

भाषा तथा शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं पर मूर्धन्य आलोचक **डा० नगेन्द्र** के महत्वपूर्ण विचारोत्तेजक निबन्ध।

● **मेरे श्रेष्ठ रंग-एकांकी**

प्रख्यात नाटककार डा० **रामकुमार वर्मा** के चुने हुए मंचीय एकांकी नाटकों का प्रतिनिधि संग्रह।

● **सत्यकाम**

बंगला के सुप्रसिद्ध कथा-लेखक **नारायण सान्याल** का मार्मिक उपन्यास जिस पर बनी हिन्दी फिल्म बहुत ही लोकप्रिय और चर्चित हुई है। हिन्दी रूपान्तरकार : **भारत भूषण अग्रवाल**।

● **कैद आवाजें**

लोकप्रिय युवा-लेखक **रामकुमार भ्रमर** का अत्यन्त रोचक और सशक्त नया उपन्यास। दिशाहीनता के अँधेरे में भटकी युवा-पीढ़ी के लिए सन्देश की एक किरण...

● **चन्द्रवदनी**

जासूसी उपन्यास की तरह रोचक घटनाप्रधान और मार्मिक, **श्री सत्यप्रसाद पाण्डेय** का नया उपन्यास।

● **साजिशों के सरताज**

'अँग्रेज आए और गए' किशोर उपन्यास माला का पहला मनका। ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना से लेकर प्लासी की लड़ाई तक की रोचक कहानी। लेखक : **मनहर चौहान**

● **बलिए और छलिए**

'अंग्रेज आये और गए' किशोर उपन्यास माला का दूसरा मनका। मीर जाफ़र और मीर कासिम—इन दो नवाबों का समय इसमें समेटा गया है। लेखक : **मनहर चौहान**।

● **राजा और भिखारी**

बच्चों तथा किशोरों के लिए **मार्क ट्वेन** का एक अत्यन्त रोचक और रोमांचकारी उपन्यास।

● **टामकाका की कुटिया**

गुलामों की जिन्दगी पर आधारित **हैरियट बीचर स्टोव** का रोंगटे हिला देने वाला विश्वप्रसिद्ध उपन्यास, जिसने एक समय अमेरिका में इतिहास का रुख बदल दिया था।

● **नटखट नन्दू**

मार्क ट्वेन के विश्वप्रसिद्ध उपन्यास का सरल हिन्दी-रूपातर।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२३, दरियागंज, दिल्ली-६

समय की सलवटें और आधा गांव

भगवान सिंह

किसी महान् कृति और सुन्दर कृति में ठीक वही भेद होता है जो किसी महान व्यक्ति और सुन्दर व्यक्ति में होता है।-आवश्यक नहीं कि जो महान् हो वह सुन्दर भी हो। महान् कृति के अस्तित्व के कई स्तर होते हैं। इसके लिए तीव्रता, जटिलता, तनाव, आयामों के वैविध्य, परिप्रेक्ष्य के विस्तार तथा अनुभवों की प्रामाणिकता की आवश्यकता होती है। इन सभी दृष्टियों से देखने पर आधा गाँव एक असाधारण और कुछ सीमा तक महान् उपन्यास सिद्ध होता है।

इसकी कुछ झलक उपन्यास के आरम्भ में ही मिल जाती है जब लेखक कहता है, 'यह कहानी न कुछ लोगों की है और न कुछ परिवारों की। यह उस गाँव की कहानी भी नहीं है जिसमें इस कहानी के भले-बुरे पात्र अपने को पूर्ण बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह कहानी न धार्मिक है न राजनीतिक।' स्पष्ट है कि लेखक को यह विश्वास था, और उपन्यास को पढ़ने के बाद लगता है उसका यह विश्वास गलत भी नहीं था कि इस कहानी को इनमें से किसी भी दृष्टि से पढ़ा जा सकता है। परन्तु इसके आयामों का वैविध्य इतने से ही पूरा प्रकट नहीं हो पाता, क्योंकि यह उस पतली रेखा की भी कहानी है जिसने हिन्दुओं को अधिक हिन्दू और मुसलमानों को अधिक मुसलमान बना दिया; वह रेखा जो पहले कागज पर, फिर ज़मीन पर और अन्ततः पूरे देश के जीवन पर खिंच गई थी। यह कहानी विभाजन की है, पर विभाजन कहीं सामने नहीं आया है। वह प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त हुआ है, और इस अर्थ में गंगोली गंगोली भी है और पूरा देश भी।

यह कहानी टूटते और भहराते हुए सामन्ती मूल्यों और मान्यताओं की भी है, धार्मिक रूढ़ियों और विश्वासों की भी है। परम्परावादी समाज का स्थान लेने वाले नए सामाजिक तत्वों की भी है। और इन दृष्टियों से भी यह केवल एक गाँव की कहानी नहीं है, अपितु पूरे देश की कहानी है। कहानी एक साथ इतने स्तरों पर चलती है, इन सभी स्तरों के धागे एक-दूसरे को काटते हुए इस तरह की बहुरंगी बुनावट तैयार करते हैं कि हमें सदा यह डर लगा रहता है कि इनमें से कोई सूत्र हाथ से खिसक न जाए। इस सतपहली बुनावट के कारण ही लेखक ने सबको एक में समेटते हुए लिखा है, 'यह कहानी है समय की ही। यह गंगोली में गुज़रने वाले समय की कहानी है।' हाँ, यह कहने का एक ऐसा ढंग है जिसमें तमाम उलझावों का एक और लगभग अचूक उत्तर निकल आए, चाहे यह उत्तर अपने-आपमें कितना भी अस्पष्ट क्यों न हो। कारण, सामान्यतः कोई भी कहानी समय की ही कहानी होती है, चाहे वह समय गंगोली गाँव में गुजरे या किसी व्यक्ति के जीवन में या किसी पूरे देश में; और यदि इसे शब्दशः लिया जाए तो कोई भी कहानी समय की कहानी नहीं होती। समय इतना अमूर्त और निर्वैयक्तिक होता है कि उसकी कोई कहानी हो ही नहीं सकती।

गंगोली नाम का यह गाँव शीया और सुन्नियों में, सैयदों और जुलाहों में, उत्तर पट्टी और दक्खिन पट्टी में, और यदि आस-पास के पुरवों को भी लें तो हिन्दुओं और मुसलमानों में, छूतों और अछूतों में और एक निश्चित सीमा तक ज़मीदारों और असामियों में बँटा हुआ है। पूरी कहानी इन्हीं में तनी-कसी है और कहानीकार इनमें से हर एक को छूने के प्रयास में कथासूत्र को करघे की ढरकी की तरह एक सिरे से दूसरे तक दौड़ाता रहता है।

यह कहानी मुहर्रम के त्योहार से शुरू होती है और

१. आधा गाँव, लेखक राही मासूम रजा, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, डिमाई आकार, मू० १६.०० ।

पूरी कहानी इस त्योहार को ही केन्द्र बनाकर फैलती है। लगता है इस गाँव में केवल एक ही घटना होती है—मुहर्रम का त्योहार। लोग इसकी तैयारियों में, इसके आयोजनों में और इसकी स्मृतियों में जीते हैं। लगभग आधे उपन्यास तक जिन्दगी का केवल एक ही लक्ष्य रहता है—अगले मुहर्रम और अगले और अगले मुहर्रम के त्योहार में भाग लेना; पर कहानी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती जाती है मुहर्रम का यह त्योहार फीका पड़ता जाता है और उभरते जाते हैं इसी अनुपात में जिन्दगी के छोटे और बेडौल मरहले। हम कह सकते थे कि यह पूरी कहानी मुहर्रम के त्योहार की कहानी है, पर मुहर्रम भी मुहर्रम से अधिक परम्परावादी जीवन-पद्धति का प्रतीक ही है।

इस कहानी का चरम द्वन्द्व-बिन्दु लगभग तीन-चौथाई उपन्यास के बाद आता है जहाँ लेखक ने एक भूमिका देकर पूरी कथा को बड़े सुन्दर ढंग से सँभालने और मोड़ने का प्रयत्न किया है। यही वह बिन्दु है जहाँ पहले के तीन-चौथाई उपन्यास की ओर से आती हुई तिरछी धूप इससे आगे की छायाओं को मनहूस और लम्बी बना देती है। ठीक यही बिन्दु विभाजन का भी है। ठीक यही बिन्दु ज़मींदारी-उन्मूलन का भी है। ठीक यहीं पर वह बिन्दु है जहाँ हिन्दुस्तान का मुसलमान अपने भीतर यह टटोलने की कोशिश करता है कि वह कितना अपने गाँव का है और कितना अपने मज़हब का, कितना भारतीय और कितना मुसलमान।

इससे पहले अपने बेटे के थानेदार हो जाने की संभावना और ऊपर की आमदनी की आशा पर रेलगाड़ी खरीदने का सपना देखने वाले और रेलगाड़ी के अस्तबल की फिक्र करने वाले हकीम साहब इसके बाद पाकिस्तान, कांग्रेस और कम्मो की मार से जीवन से निराश हो जाते हैं, उनके पाँव में चोट लगती है और वे पाखाने में बेहोश पाए जाते हैं और भाग्य की विडम्बना यह कि उनके निदान और तीमारदारी के लिए उसी हरामी कम्मो को बुलाया जाता है जिससे वह जीवन-भर नफरत करते रहे थे और जिसे देखकर वह अपने जीवन की उस करुण घड़ी में भी चीख पड़ते हैं, 'तें हमरा इलाज करिह्यो ?' उनकी समझ में नहीं आता कि जब सरकार ने उनकी ज़मींदारी ले ली... कम्मो ने उनके मरीज़ ले लिए...तो वह जी क्यों रहे हैं।

उनके मोहभंग को उन्हीं के शब्दों में रखें तो—'ज़िन्दगी भर नमाज़-रोज़ा किया तो ओका बदला ई मिला कि डॉक्टर कमालुद्दीन आके नब्ज देख गए। हे बेटा, अल्लाह मियाँ की हाँ इन्साफ जाता रहा…'

पूर्वार्ध के अकड़मिजाज़ सैयद परिवार जिन्हें यह गवारा नहीं था कि 'जुलाहिनें सैयदानियों से अकड़ें' अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि 'ई सैयदी बघारने का ज़माना है ? अरे मियाँ, जै दिन इज्जत-आबरू से गुज़र जाएँ तो गनीमत जानो।' हड्डियों की पवित्रता का खास ख़्याल करनेवाले और माकूल हड्डियाँ न मिलने पर हरामी सन्तानें पैदा करनेवाले ये ही सैयद इस कठोर सत्य से आमने-सामने खड़े हैं कि 'हड्डी-उड्डी ज़मींदारी का चोंचला रहा।'

अन्त आने-आने तक पूरा चित्र बहुत ही करुण हो जाता है। घर खाली हो जाते हैं और हर ज़नाना कमरबन्द में कुंजियों का भारी गुच्छा लटकने लगता है जिनमें से एक-एक के साथ शेष रह जाती है यह याद कि फलाँ कुंजी किस ताले की थी या है। लुतरी बीवियाँ खामोश हो जाती हैं। जब लड़के ही न हों तो कोई लड़कियों को किसके साथ बदनाम करे! हम्माद मियाँ और जवाद मियाँ के अलावा किसी में अपने दरवाजे पर बैठने का हौसला नहीं रह जाता है, पर दूकान की बदौलत फुस्सू मियां इस लायक हो गए हैं कि दूकान बढ़ाने के बाद अपने दरवाज़े पर बैठ सकें।

यह पूरा पट-परिवर्तन बड़े ही चुप-चुप लहजे में सिर्फ जहाँ-तहाँ झटके देता हुआ कुछ इस तरह घटित होता है कि लगता है समय नाम की उस अदृश्य और अमूर्त चीज पर सचमुच सलवटें पड़ती जा रही हों। इन सलवटों को उभारने के लिए समय जैसी ही अचूक और पारदर्शी हजारों-हजार आँखों की आवश्यकता होती है और वह इस लेखक में है। वह स्वयं इस पूरे परिदृश्य के बीच बैठा, जो कुछ जिस अनुपात में दिखाना चाहता है, दिखाता चला जाता है और पूरी कहानी को बड़ी संभाल से अपने नियन्त्रण में बनाए रखता है, पर हम कहीं भी उसकी उपस्थिति से सचेत नहीं होने पाते, यह उसकी बहुत बड़ी सफलता है।

राजकमल द्वारा शीघ्र प्रकाश्य कुछ महत्वपूर्ण कृतियाँ

अन्तराल
मोहन राकेश

मोहन राकेश का प्रतीक्षित उपन्यास, जिसका प्रथम आलेख 'धर्मयुग' में नीली रोशनी की बाँहें शीर्षक से धारावाहिक प्रकाशित हो चुका है।...बदलते मूल्यों की दुविधा में आज की मानसिक और शारीरिक आकांक्षाओं का आंतरिक चित्रण !

काला जल
शानी

इस उपन्यास का प्रकाशन हिन्दी में एक घटना माना गया था और इसके छपते ही पाठकों ने जितनी सहृदयता, उदारता और गर्मजोशी से इसका स्वागत किया वह अभूतपूर्व थी—बहुत समय तक अनुपलब्ध रहने के बाद अब यह महत्त्वपूर्ण कृति राजकमल से पहली बार प्रकाशित हो रही है।

साँप और सीढ़ी
शानी

सिद्धहस्त कथाकार शानी का नया लघु उपन्यास, जिसके माध्यम से लेखक ने औद्योगिकता की चपेट में आये जन-जीवन और उसके नैतिक-सांस्कृतिक संकट को गहन मानवीय संवेदना के साथ चित्रित किया है।

दो खिड़कियाँ
अमृता प्रीतम

'दो खिड़कियाँ' दुनिया के निजाम पर भयानक व्यंग करती हुई कहानी है। साथ ही, इस पुस्तक में छह और कहानियाँ तथा एक लघु उपन्यास है, जिसमें स्त्री और स्त्री के रिश्ते का विश्लेषण करने तथा मनुष्य के मन की गुत्थियों को समझने की कोशिश भी गयी है।

मधुर-रस स्वरूप और विकास
रामस्वार्थ चौधरी अभिनव

'मधुर रस : स्वरूप और विकास' के इस दूसरे भाग में मधुर रस-साधना के ऐतिहासिक विकास-क्रम तथा मध्यकालीन सगुणमार्गी एवं निर्गुणमार्गी साधना पद्धतियों के हिन्दी साहित्य में मधुर रस के स्वरूप-विधान का पर्यालोचन किया गया है।

जीप पर सवार इल्लियाँ
शरद जोशी

देश के विकास की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ढोनेवाला अधिकारी-वर्ग देश के विकास की खेती को उसी तरह चाट रहा है जैसे इल्लियां फसल को चाट जाती हैं—इस विडम्बनापूर्ण स्थिति पर तिलमिला देने वाला व्यंग किया है सुप्रसिद्ध व्यंगकार शरद जोशी ने।

सोने की वर्षा
देवीदयाल चतुर्वेदी मस्त

बच्चों के लिए रोचक, सरल और उपयोगी कहानियों का सचित्र संग्रह।

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली-६ पटना-६

राजकमल द्वारा सद्यःप्रकाशित बहुचर्चित कृतियाँ

आधा गाँव
राही मासूम रज़ा

'आधा गांव' पहला उपन्यास है जिसमें ग्रामीण जीवन अपने भरे-पूरे रूप में पूरी सच्चाई, तीव्रता और बेबाकी के साथ सामने आता है। साथ ही, शीघ्र मुसलमानों का जीवन भी हिन्दी-उर्दू में पहली बार ही इस उपन्यास में चित्रित हुआ है। मूल्य १६-००

चंदा की चाँदनी
कृश्न चन्दर

लोकप्रिय कथाकार का नया उपन्यास, जिसमें उदात्त प्रेम की बड़ी ही मर्मस्पर्शी कहानी कही गयी है। आदि से अंत तक रोचक और प्रभावशाली। मूल्य ६.००

भारतेंदु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन
डा० गोपीनाथ तिवारी

भारतेन्दु जी अकेले ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने पश्चिमी तथा पूर्वी नाट्य-शास्त्र के उपयोगी सिद्धान्तों को हृदयंगम कर नाट्य-रचना की। अपने नाटकों में वे शास्त्र-अनुगामी भी हैं और शास्त्र-विरोधी भी। अतः उनके नाटकों का यह अनुशीलन उनके नाटकों को बोधगम्य कराने में सहायक होगा। मूल्य १८-००

समीक्षायण
पं० अयोध्यानाथ शर्मा
डा० विश्वनाथ गौड़

हिन्दी के तीन मूर्द्धन्य आलोचकों—आचार्य शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा लिखित चार भक्त कवियों—कबीर, जायसी, सूर और तुलसी—के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का विश्लेषण करने वाले निबन्धों का संकलन। मूल्य ६.००

शंखध्वनि
श्री सुमित्रानन्दन पन्त

पंतजी की इन कविताओं में मुख्यतः नये जागरण के स्वरों को तथा विश्व-जीवन के भीतर उदय हो रहे मनुष्यत्व की रूपरेखाओं को अभिव्यक्ति मिली है। मूल्य १५.००

भस्मांकुर
नागार्जुन

महाकवि कालिदास के विख्यात काव्य 'कुमारसंभव' के मदन दहन वाले प्रसंग पर आधारित यह लघु काव्य नागार्जुन के रचनाकार की अनूठी उपलब्धि है। मूल्य ५-००

चिट्ठी बोली फिर से
हरिकृष्ण देवसरे

एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश भेजने की पद्धति आदिकाल में क्या थी और उसका किस-किस तरह विकास हुआ इसकी दिलचस्प कहानी बच्चों के लिए। मूल्य २.५०

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

संस्कृत-अंग्रेजी कोश

पूना स्थित दक्कन कालिज पोस्ट-ग्रेजुएट एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट के तत्वावधान में एक संस्कृत-अंग्रेजी कोश के प्रकाशन की योजना बनायी गई है, जो बृहत् ऑक्सफर्ड इंगलिश डिक्शनरी के समान विशाल आकार वाला और परिभाषात्मक होगा। इस कोश के १५ या २० खण्ड होंगे और प्रत्येक खण्ड में अनुमानतः १००० पृष्ठ रहेंगे। सम्पूर्ण खण्डों का प्रकाशन आवधिक रूप से अगले १५ वर्षों में पूरा होगा। पूरी योजना पर एक करोड़ रु० के व्यय का अनुमान लगाया गया है, जिसे केन्द्रीय तथा महाराष्ट्र सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और यूनस्को मिलकर वहन करेंगे।

अफ्रीकी एशियायी देशों में पुस्तकों की कमी

एशियायी देशों में प्रति एक लाख निवासियों के लिए पाँच, अफ्रीका में ढाई तथा दक्षिण अफ्रीका में साढ़े-सात पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इसके विपरीत, संसार-भर में जितनी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं उनका ५० प्रतिशत भाग सात देशों—फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, जापान, स्पेन, सोवियत संघ, ब्रिटेन और अमरीका—के हिस्से में आता है। एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका में विश्व की कुल एक-चौथाई पुस्तकें तैयार होती हैं जबकि इन देशों में विश्व की ८० प्रतिशत जनता निवास करती है।

पाठ्य-पुस्तकों की कमी

पिछले महीने अखिल भारतीय प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता महासंघ की ओर से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कार्यालय में भारतीय लेखकों की चार हजार पाठ्यपुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। यह पुस्तकें पिछले पाँच सालों में लिखित और प्रकाशित हुई थीं जिनमें से २१७९ अंग्रेजी भाषा में थीं और बाकी भारतीय भाषाओं में। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य भारतीय लेखकों की उच्चस्तरीय पाठ्यपुस्तकों को प्रकाश में लाना था। एक सर्वेक्षण के अनुसार बी० एससी० के पाठ्यक्रमों में निर्धारित कुल २६० पुस्तकों में से केवल २२ भारतीय हैं। एम० एससी० के पाठ्यक्रमों में ३८६ में से केवल २२ और चिकित्सा में ३७४ में से केवल ३५ पुस्तकें भारतीय हैं।

लाइपजिग की अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-कला प्रदर्शनी

पिछले दिनों लाइपजिग की 'अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-कला प्रदर्शनी' में, जो हर छह साल बाद 'जर्मन प्रकाशक संघ' तथा 'लाइपजिग नगर परिषद' द्वारा समायोजित होती है, ६१ देशों के पुस्तक-सज्जाकारों, प्रकाशकों, मुद्रकों आदि ने अपने उत्कृष्ट प्रकाशन प्रदर्शित किये। प्रदर्शित पुस्तकों में से लगभग ४५० पुस्तकों को पुरस्कार और पदक प्रदान किये गये। भारत को एक रजत-पदक और एक प्रशंसापत्र प्राप्त हुआ। रजत-पदक 'भारतीय खाद निगम,' नई दिल्ली, के खाद तकनालॉजी सम्बन्धी एक प्रकाशन को प्राप्त हुआ है।

नवसाक्षरों के लिये पुस्तकें आमन्त्रित

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने नव-साक्षरों के लिए देश की चौदह प्रमुख भाषाओं में लिखी गयी पुस्तकें/पाण्डुलिपियाँ आमन्त्रित की हैं। चुनी हुई लगभग ४० पुस्तकों पर एक-एक हजार रुपये के पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। पुस्तकें / पाण्डुलिपियाँ प्रस्तुत करने की अन्तिम

तिथि ३० नवम्बर १९७१ है। प्रतियोगिता के नियमों आदि की जानकारी और आवेदन-पत्र प्राप्त करने के लिए सैक्शन आफीसर (ए. एफ. २), शिक्षा एवं समाज कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार, टी वी फ्लोर (कमरा नम्बर ४०३), सी. विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-१ को लिखा जा सकता है।

रायकृष्णदास सम्मानित

हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक, प्रख्यात कला-समीक्षक तथा भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, के निदेशक श्री रायकृष्णदास को उत्तरप्रदेश ललित कला अकादमी की सीनियर फैलोशिप प्रदान की गयी है। साहित्य के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के लिए उत्तरप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से भी उन्हें सम्मानित किया गया है।

मेरठ विश्वविद्यालय में हिन्दी परिषद् की स्थापना

मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ की नवनिर्मित हिन्दी-परिषद् का उद्घाटन १ अगस्त, १९७१ को, हिन्दी-साहित्य के मूर्धन्य विद्वान श्री बालकृष्ण राव, उपकुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता डा० जगतनारायण कपूर, उपकुलपति, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ, ने की।

इसी दिन मध्याह्न में 'तुलसी की सामयिक उपयोगिता' शीर्षक पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता तुलसी-साहित्य के मर्मी विद्वान डा० उदयभानु सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, ने की। सन्ध्या समय श्री बालकृष्णराव की अध्यक्षता में तुलसी-जयन्ती समारोह का भी आयोजन किया गया।

मेरठ विश्वविद्यालय हिन्दी-परिषद् के अधिकारी हैं— अध्यक्ष डा० रामप्रकाश अग्रवाल, मेरठ कालिज, मेरठ; मन्त्री डा० नत्थनसिंह, जनता वैदिक कालिज, बड़ौत; संयोजक डा० विष्णुशरण इन्दु, मेरठ कालिज, मेरठ; कोषाध्यक्ष प्रो० चन्द्रदत्त शर्मा, नानकचन्द कालिज, मेरठ।

परिषद् के संरक्षक हैं, डा० जगतनारायण कपूर, उपकुलपति, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ।

कविता

शंखध्वनि—ले० सुमित्रानन्दन पंत; प्र० राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ १८४; मूल्य १५.०० ।

श्री सुमित्रानन्दन पंत हिन्दी के अकेले कवि हैं जिन्होंने छायावाद के अभ्युदय-काल से लिखना आरम्भ किया और आज भी अनवरत साहित्य-सृजन कर रहे हैं। उनका भाव-बोध और उनकी संवेदना बराबर युगीन परिस्थितियों के साथ रही है। यही कारण है कि हिन्दी-कविता की प्रत्येक नई धारा को पंतजी का सृजन-सहयोग मिला है।

'शंखध्वनि' में पंतजी की नवीनतम ६७ कविताएँ संग्रहीत हैं। पंतजी मुख्यतः आस्था और सौन्दर्य के कवि हैं। संसार में वर्तमान अति-भोगवाद और अति-भौतिकता की प्रवृत्ति से उनका भावुक मन क्षुब्ध होता है और वे स्पष्ट देखते हैं कि इस प्रवृत्ति के चलते ही आज का व्यक्ति इतना संत्रस्त और संशयग्रस्त हो गया है कि उसके जीवन का रस ही सूख गया है, लेकिन फिर भी उनके मन में विश्वास है कि एक दिन अवश्य ही मनुष्यता अपने आपको इस जड़ स्थिति से मुक्त करेगी और उसके जीवन में नव-प्रभात का आगमन होगा :

> मृत्यु त्रास संशय-हिम जर्जर, आस्था विरहित
> देख न पाते लोग ओट में दिग् विनाश की
> नया मनुज ले रहा जन्म अब नये विश्व में !

प्रस्तुत कविताओं में पंतजी ने नये जागरण के इन्हीं स्वरों को तथा विश्वजीवन के भीतर उदय हो रहे मनुष्यत्व की इन्हीं रूपरेखाओं को अभिव्यक्त किया है। स्वयं कवि के शब्दों में :

> ओंकार ही शंख
> विश्व सागर से निःसृत,
> शत ध्वनि वर्णों भावों में
> नव जीवन मुखरित,—
> शुभ्र जागरण का आह्वान
> सुनो नव स्त्री नर !

प्रस्तुत संग्रह की कुछ रचनाओं में वर्तमान जीवन की विसंगतियों के प्रति कवि के मन की प्रतिक्रियाएँ तथा कुछ में उसके व्यक्तिगत सुख-दुख की अनुगूँजों को भी वाणी मिली है। अपने चिर-कुमार जीवन का एकाकीपन कभी जब उनके हृदय में एक हूक-सी पैदा कर देता है तो वे प्रश्न कर उठते हैं :

> क्या मैं
> एकाकी ही आया जग में ?
> फूलों-शूलों के भू-मग में ?

किन्तु दूसरे ही क्षण उन्हें समाधान मिल जाता है कि नहीं, मैं अकेला नहीं आया हूँ। हृदय में सहज प्रवाहित होनेवाला जन्मजात आनन्द मेरा संबल है और वे गा उठते हैं :

> नहीं अकेला आया मैं
> निःसंशय,
> बँधा सूक्ष्म आनन्द-सूत्र में
> जग को भी
> अपने ही संग
> लाया हूँ निश्चय !

पुस्तक जैसी पठनीय है वैसा ही उसका प्रस्तुतीकरण भी नयनाभिराम है।

बघेली भाषा और साहित्य—ले० डा० भगवतीप्रसाद शुक्ल; प्र० साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद; आकार डिमाई; पृष्ठ ३८४; मूल्य २०.०० ।

बघेली पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है । इसके बोलने वाले तीस हजार सात सौ चौवालिस वर्गमील में फैले हुए हैं । किन्तु इसका अधिकांश साहित्य अलिखित रहने के कारण इस भाषा और उसके साहित्य पर आज तक कोई प्रामाणिक कार्य नहीं हुआ था । डा० शुक्ल ने पहली बार इस साहित्य की मूल संवेदना को दृष्टि में रखते हुए बघेली के लिखित और अलिखित साहित्य का इस पुस्तक में संकलन तथा विश्लेषण किया है ।

प्रस्तुत पुस्तक में दो खण्ड हैं । पहला बघेली भाषा से सम्बन्धित है और दूसरा बघेली साहित्य से । भाषावाले खंड में लेखक ने बघेली की व्याकरणिक धारा, ध्वनि-परिवर्तन के स्वरूप और विशिष्ट शब्दों का वैज्ञानिक अनुशीलन किया है । इस कार्य के लिए उसने प्रत्येक क्षेत्र की बोली, लोकगीत, लोक-कथाओं, रीति-रिवाजों और विशिष्ट शब्दों का संकलन किया है तथा इसी सामग्री को आधार बनाकर बघेली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

दूसरे खंड में बघेली साहित्य का विवेचन और विश्लेषण है । पूर्वी हिन्दी की बोलियों—अवधी और छत्तीसगढ़ी तथा पश्चिमी हिन्दी की बोलियों—विशेष रूप से ब्रज, बुंदेली तथा खड़ी बोली के साहित्य के साथ, यथावसर बघेली साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन भी इस खंड में किया गया है । इससे बघेली की साहित्यिक उपलब्धियों को हिन्दी की अन्य बोलियों के व्यापक संदर्भ में देखने का अवसर मिलता है ।

समीक्षायण—सं०-पं० अयोध्यानाथ शर्मा एवं डॉ० विश्वनाथ गौड़; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १५०; मूल्य ६.०० ।

जो महत्त्व भक्त कवियों में कबीर, जायसी, सूर और तुलसी का है वही आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का है । हिन्दी में वैज्ञानिक समीक्षा का सूत्रपात करने का श्रेय इन्हीं आचार्यों को है । इनसे पूर्व समीक्षा के नाम पर या तो किसी कवि की प्रशंसा में वाहवाही की जाती थी या एक को दूसरे से छोटा या बड़ा सिद्ध करने में सारी शक्ति खर्च की जाती थी । युगीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में कवि का अध्ययन कर उसके काव्य का मर्म उद्घाटित करने की ओर समीक्षकों की दृष्टि नहीं रहती थी । हिन्दी समीक्षा के इस अभाव को उक्त आचार्यों ने पूरा किया और इसे हिन्दी आलोचना का दुर्भाग्य कहें या सौभाग्य, लेकिन यह तथ्य है कि आचार्य शुक्ल ने जायसी, सूर और तुलसी पर, आचार्य द्विवेदी ने कबीर पर तथा नन्ददुलारेजी ने सूर पर जो समीक्षात्मक निबन्ध लिख दिये हैं उनकी ऊँचाई तक, इन कवियों पर लिखे गये विपुल समीक्षात्मक साहित्य के बावजूद, कोई दूसरा समीक्षक नहीं पहुँच पाया है । इन आचार्यों की अद्भुत विवेचना-शक्ति, काव्य की गहरी समझ और सूक्ष्म दृष्टि के साथ ही साथ जीवन्त भाषा-शैली हिन्दी निबन्ध की अमूल्य निधि है—ऐसी निधि जिस पर किसी भी भाषा को गर्व हो सकता है ।

प्रस्तुत निबन्ध-संग्रह में भक्ति-काल के उक्त चारों प्रमुख स्तम्भों पर इन मूर्धन्य समालोचकों द्वारा लिखे हुए आलोचनात्मक प्रबन्धों के महत्त्वपूर्ण अंशों का संकलन है । आशा है कि यह संग्रह पाठकों को हिन्दी गद्य की एक महत्त्वपूर्ण शैली—आलोचनात्मक शैली—से परिचित कराने के के साथ ही साथ उनके समक्ष हिन्दी आलोचना के चूड़ान्त निदर्शन भी प्रस्तुत करेगा ।

उपन्यास

चंदा की चाँदनी—ले० कृशनचन्दर; प्र० राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १६०; मूल्य ६.०० ।

उर्दू और हिन्दी के जाने-माने कथाकार कृशनचन्दर का नया उपन्यास 'चंदा की चाँदनी' आकार में लघु होते हुए भी एक विराट कथानक की झलक पाठकों को देता है । व्यक्ति सदा कृतघ्न ही नहीं होता; कई बार वह अपने प्रति किये गये उपकार का प्रतिदान जीवन पर्यन्त चुकाता रहता है । उपन्यास के नायक राजेश के धर्म-पिता मोहन

राग-विराग

●

महाकवि निराला की प्रतिनिधि कविताएँ

डॉ० रामविलास शर्मा द्वारा सम्पादित महाकवि निराला के समग्र काव्य-कृतित्व में से चुनी हुई प्रतिनिधि कविताओं का मानक संग्रह । निराला-काव्य के अध्येताओं, विद्यार्थियों और सुरुचि-सम्पन्न पाठकों की एक अनिवार्य आवश्यकता का एक जीवंत उत्तर। साथ में निराला-साहित्य के विशिष्ट आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा की सार्थक सम्पादकीय भूमिका ।

मूल्य : ६.००

मेरा परिवार

●

महादेवी वर्मा के अनुपम रेखाचित्र

एक लंबी प्रतीक्षा के बाद महादेवी जी की अनूठी लेखनी का एक और अद्वितीय अवदान । मानवीय करुणा के अभूतपूर्व अनुभव की मार्मिक अंतरकथा : हिन्दी-साहित्य के विशिष्ट और जीवंत रेखाचित्र । अभिव्यक्ति की रचनात्मक सार्थकता को सहज ही उजागर करने वाली एक मर्मस्पर्शी कला-कृति ।

मूल्य : ७.५०

कारवाँ

●

भुवनेश्वर के कालजयी एकांकी

भुवनेश्वर और हिन्दी का नाटक साहित्य पर्याय है । इसीलिए कहा जा सकता है कि 'कारवाँ' हिन्दी के प्रमुखतम, प्रखर प्रतिभाशाली नाटककार के प्रतिनिधि एकांकियों का संग्रह है । अपने युग के संत्रास, दर्द, भोंथरेपन, आतंक और सतहीपन के दस्तावेज हैं ये एकांकी । यह अमूल्य संग्रह हिन्दी के नाट्य-प्रेमियों, मंच शिल्पियों और अध्येताओं के लिए एकमात्र रक्षणीय विकल्प है ।

मूल्य : ५.००

पठनीय : : संग्रहणीय

'लोकभारती' द्वारा प्रस्तुत प्रबुद्ध पाठकों के लिए तीन महत्त्वपूर्ण अनुपम कृतियाँ

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

१९७१ के नवीन प्रकाशन

आत्मविद्या तथा योगसाधना : शक्तिसन्त शिरोमणि माँ योगशक्ति सरस्वती

आध्यात्मिक जीवन की गूढ़ साधनाओं को अत्यन्त रोचक तथा सरल रूप से विस्तार में समझाने वाला अपने विषय का हिन्दी का एकमात्र ग्रन्थ। इसमें योग की परिभाषा से लेकर योगासनों से आगे बढ़कर, मुद्रा, बन्ध, सूर्य नमस्कार, प्राणायाम-विज्ञान, प्रत्याहार और धारणा, ध्यान और समाधि, अजपा ध्यान, षट्कर्म, त्राटक क्रिया, कुण्डलिनी योग, स्वरोदय विज्ञान, चेतन-निद्रा अथवा सहज समाधि आदि सभी अंगों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। प्रमुख आसनों के चित्रों के साथ-साथ कौन-सा आसन क्या लाभ पहुँचाता है, इसका भी मार्गदर्शन। आकर्षक प्लास्टिक की स्वर्णांकित बाइंडिंग।

मूल्य २०.००

औरंगजेब : सर जदुनाथ सरकार

मुगल काल पर विश्व के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी विद्वान की विख्यात कृति का हिन्दी संस्करण। अपने विषय का अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ। अनेक विश्वविद्यालयों की उच्च परीक्षाओं में पाठ्य। नवीन संशोधित संस्करण। प्लास्टिक की मजबूत स्वर्णांकित जिल्द।

मूल्य २०.००

पद्माकरश्री : डा. भालचन्द्रराव तेलंग

विगत ३० वर्षों से निरन्तर अध्ययनशील रहकर कवि के बारे में, उनके वंशज द्वारा लिखा गया अत्यन्त प्रामाणिक और शोधपूर्ण ग्रन्थ जिसमें पद्माकर के बारे में प्रचलित अनेक भ्रान्तियों का निराकरण करके कवि का सही जीवन-वृत और काव्य-प्रतिभा का विशद निरूपण हुआ है।

मूल्य २५.००

आधुनिक हिन्दी काव्य में क्रांति की विचारधाराएँ : डॉ. घनश्याम 'मधुप'

प्रस्तुत शोधग्रंथ में क्रान्ति के सभी पक्षों पर विस्तार से विवेचन हुआ है। भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावादी तथा प्रगतिवादी युगों के कवियों की क्रान्ति-चेतना का विशद अध्ययन। प्लास्टिक की स्वर्णांकित जिल्द।

मूल्य १८.००

युगे-युगे प्रेम : आशापूर्णा देवी

नारी जीवन की मर्मान्तक पीड़ा को शब्दों में उतारने वाली, बंगला की मूर्धन्य लेखिका का यह उपन्यास मानव-मन की छटपटाहट और व्यर्थ के मान-अभिमान का हृदयस्पर्शी चित्रांकन करता है। स्नेह और अभिमान की जब कर्तव्य से ठनती है तो गर्विता का रुदन दसों दिशाओं की प्राचीरों को ढहा देता है। मन को मथ देने वाले इस उपन्यास के अनुवादक हैं हंसकुमार तिवारी।

मूल्य ८.००

अनुराग : प्रियाराजन

विरक्ति के योग्य पति को भी नारी समर्पण तथा सौभाग्य देवता मानकर किस प्रकार पूज सकती है, इसे भारतीय नारी से अधिक कौन जान सकता है? "मौलश्री के फूल" की यशस्वी लेखिका के इस अत्यन्त मनोमुग्धकारी मार्मिक उपन्यास में जीवन संगीत आद्यन्त अपनी पकड़ में पाठक को जकड़े रहता है। नारी चरित्र का नया पृष्ठ! इसका छायांकन भी हो रहा है।

मूल्य ८.००

विशेष जानकारी के लिए हमारा सूचीपत्र मँगाएँ

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

हीरा बाग सी. पी. टैंक, बम्बई-४, २१, दरियागंज, दिल्ली-६

बाबू कृतज्ञता के बोझ से दबे हुए ऐसे ही कर्तव्यपरायण प्राणी हैं। उनकी छत्रछाया में पलकर राजेश भी जीवन के उच्च आदर्शों को अपनाता है और अपने निर्मल प्रेम की दिव्य ज्योति से एक वेश्या के अँधेरे जीवन को आलोकित करता है। बड़े से बड़े कष्ट सहकर भी वह उस वेश्या का उद्धार करता है और उसे सम्मानित जीवन जीने का अवसर देता है। प्रासंगिक रूप से उपन्यास में बड़े-बड़े सेठों के भ्रष्ट आचरणों का पर्दाफाश भी लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ किया है। एक छोटे-से प्रसंग में आज के चुनावों में बरती जाने वाली अनैतिकता लेखक के व्यंग का शिकार बनी है।

इस प्रकार, मुख्य रूप से यह एक प्रेम-कहानी है, लेकिन समाज के कई दूसरे महत्त्वपूर्ण पक्षों का उद्घाटन भी इसमें हुआ है। यही कारण है कि कहानी सरल और रोचक होने के साथ ही साथ सोद्देश्य भी बन गई है। लेकिन ऐसी सोद्देश्य नहीं जो कला के स्तर से गिरी हुई हो। मानवीय संवेदनाओं का बड़ा ही सूक्ष्म और प्रभावशाली अंकन इस उपन्यास में हुआ है।

रक्तकथा—ले० यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'; प्र० विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार क्राउन, पृष्ठ १७६; मूल्य ६.०० ।

हर प्रदेश की अपनी अलग संस्कृति होती है, अलग रीति रिवाज और जीवन-मूल्य होते हैं, जो वहाँ की लोककथाओं में विशेष रूप से अभिव्यक्त होते हैं। राजस्थान के सुपरिचित कथाकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने राजस्थान की लोकविश्रुत वीरता और अपनी आन पर मर मिटने की चाह को वाणी देनेवाली वहाँ की ऐसी ही कुछ लोककथाओं के आधार पर प्रस्तुत उपन्यास की रचना की है। दो ठिकाणेदार ठाकुर जो प्रगढ़ मैत्री के सूत्र में बँधे हुए सदा एक-दूसरे पर प्राण न्यौछावर करने को प्रस्तुत रहते हैं, एक दिन युद्ध का नाटक करते हैं और दैव-योग से वह नाटक यथार्थ में परिणत हो जाता है। एक ठिकाणेदार अपने मित्र के हाथों मारा जाता है और मरते समय वह अपना वध करने वाले मित्र के हाथों ही अपनी ठकुराणी के पास संदेशा पहुँचवाता है कि जिस सन्तान को वह अपने गर्भ में पाल रही है वह जवान होकर मेरा प्रतिशोध भाटी सरदारसे ले। वही होता है। उसकी ठकुराणी एक पुत्र को जन्म देती है और उसे अपने पिता का प्रतिशोध लेने के लिए तैयार करती है। यह संयोग ही था कि जिस भाटी सरदार से उस तरुण ठाकुर को अपना प्रतिशोध लेना था उसकी एकमात्र कन्या से उसका विवाह हो जाता है, लेकिन फिर भी अपनी राजपूती आन निभाने के लिए वह अपने ससुर का सर काटकर अपनी माँ की छाती शीतल करता है और तब भाटी सरदार का प्रतिशोध लेने के लिए उसकी कन्या अपने पति से युद्ध करती है और अपने रणकौशल से उसे परलोक पहुँचाकर स्वयं भी उसके साथ सती हा जाती है। इस प्रकार झूठी आन और सनक में दो परिवारों की वंश-वेलि नष्ट हो जाती है।

सामन्ती सनक की यह बड़ी सुन्दर प्रतीक-कथा है। बीच-बीच में राजस्थानी शब्दों और शब्द-बंधों के प्रयोग से राजस्थानी परिवेश सजीव हो गया है।

काँचघर—ले० रामकुमार भ्रमर; प्र० राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ २१५; मूल्य ७.०० ।

जिस तरह हिन्दी-भाषा-भाषी प्रान्तों में नौटंकी एक लोकप्रिय कार्यक्रम है उसी तरह महाराष्ट्र में 'तमाशा' बहुत लोकप्रिय नृत्य-नाट्य है। महाराष्ट्र के छोटे-छोटे गाँवों से लेकर बम्बई, नागपुर और पूना जैसे बड़े नगरों में यह देखा और सराहा जाता है। लेकिन जिस तरह नौटंकी में काम करनेवाले स्त्री-पुरुषों को समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त नहीं होता उसी प्रकार 'तमाशा' मंडलियों में काम करनेवाले लोग भी हेय दृष्टि से देखे जाते हैं। हालाँकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शासन ने इस नृत्यनाट्य को सांस्कृतिक मान्यता प्रदान की है और इसमें काम करनेवालों को 'तमाशा के कलाकार' कहा जाने लगा है, लेकिन उनकी सामाजिक स्थिति में अभी भी कोई अन्तर नहीं आया है और उन्हें पहले के समान ही लगभग वेश्या-बाजार का पात्र समझा जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास 'काँचघर' में लेखक ने तमाशा मंडलियों में काम करनेवाले इन्हीं स्त्री पुरुषों के व्यक्तिगत जीवन की झाँकी पेश की है। इस उपन्यास की माला और रत्ना का जीवन तमाशेवालियों के समूचे वैयक्तिक और सामाजिक संघर्ष को अपने आप में बटोरे हुए है। स्टेज पर आकर मुस्कराहटें और खुशियाँ बेचनेवाली इन नर्तकितों के भीतर

कितने आँसू, कितनी पीड़ा और कितनी कुंठा होती है—इसके दर्शन इस उपन्यास में होते हैं।

निबन्ध

शब्द की लकीरें—ले० डॉ० चन्द्रप्रकाश वर्मा; प्र० राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; आकार क्राउन; पृष्ठ १२०; मूल्य ४.००।

डॉ० चन्द्रप्रकाश वर्मा ने समय-समय पर कविता, नाटक, निबन्ध आदि कई विधाओं में लिखा है। 'शब्द की लकीरें' में उनके निबन्ध संग्रहीत हैं, जिनमें से कुछ ललित निबन्धों की कोटि में आते हैं, कुछ रेखाचित्र हैं और कुछ को रिपोर्ताज की कोटि में भी रखा जा सकता है। सारे निबन्धों की भाषा-शैली संस्कृतनिष्ठ और काव्यमयी है। लेखक की संवेदनशीलता इन निबन्धों से भली-भांति प्रकट होती है। पुस्तक पठनीय है।

गृह-विज्ञान

दैनिक गृहोपयोगी विज्ञान—ले० श्रीकृष्ण, मनमोहन सरल; प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; पृ० २३१; आ० डिमाई; मूल्य १०.००।

पाठक को दैनिक जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान सम्भवतः प्रस्तुत पुस्तक में मिल जाएगा। लेखक द्वय ने घरेलू सस्ते व सरल नुस्खे खोज-खोज कर इस पुस्तक में संकलित किए हैं। ४९ अध्यायों में शारीरिक स्वच्छता, स्वास्थ्य, वेशभूषा से लेकर घर की हर चीज़ की साज सम्भार व छोटे-मोटे रोगों में इलाज इत्यादि के कई-कई नुस्खे दिए गए हैं। भाषा भी सरल और रोचक है। जैसा कि पुस्तक के नाम से ही प्रकट है पुस्तक वास्तव में उपयोगी है और हर व्यक्ति के लिए लाभदायक सिद्ध होगी।

मौर्य साम्राज्य का इतिहास

लेखक डाक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार

भारत के इतिहास में मौर्य साम्राज्य का स्थान अत्यन्त महत्त्व का है। ऐतिहासिक विन्सेन्ट ए० स्मिथ ने इस साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य के राज्य-विस्तार का वर्णन करते हुए लिखा है कि "दो हजार साल से भी अधिक हुए, भारत के प्रथम सम्राट ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था, जिसके लिए उसके ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ में ही आहें भरते रहे और जिसे सोलहवीं तथा सतरहवीं सदियों के मुगल बादशाहों ने भी कभी पूर्णता से प्राप्त नहीं किया।" शस्त्रशक्ति और राजनीति द्वारा प्रायः सारे भारत को एक शासन में लाकर मौर्य वंश के सम्राटों ने अपनी शक्ति का उपयोग धर्म द्वारा विश्व की विजय के लिए किया। अशोक मौर्य ने देश-देशान्तर में भारतीय सभ्यता, धर्म और संस्कृति के प्रसार के लिये जो महान् उद्योग किया, विश्व के इतिहास में वह वस्तुतः अनुपम था।

प्राचीन भारतीय इतिहास के इस गौरवपूर्ण युग के इतिहास को क्रमबद्ध एवं विस्तृत रूप से लिखने का प्रथम प्रयास डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने सन् १९२५ में किया था। इस ग्रंथ के प्रथम संस्करण की भूमिका लिखते हुए इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय श्री काशीप्रसाद जायसवाल ने डा० विद्यालंकार की इस कृति पर अपनी सम्मति इन शब्दों में प्रगट की थी—"अध्यापक सत्यकेतु विद्यालंकार ने यह मौर्य साम्राज्य का इतिहास बहुत ही अच्छा ग्रन्थ बड़े परिश्रम से और अध्ययन-पुरस्सर, स्वयं सब मूल ग्रन्थों को पढ़कर और सूझ के साथ तथ्य का निर्णय करते हुए तैयार किया है। अब तक ऐसी रचना अंग्रेजी में ही होती रही है। मैंने ठोक-बजा कर देख लिया, यह माल खरा है।" हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, ने इस ग्रंथ के लिये डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया था, और अनेक विश्वविद्यालयों ने इसे एम. ए. के पाठ्यक्रम में स्थान दिया था।

डा. विद्यालंकार ने यह ग्रन्थ अब दुबारा लिखा है और इसमें उस सामग्री का समावेश कर लिया गया है जो गत वर्षों में मौर्य इतिहास के सम्बन्ध में प्रकाश में आयी है।

डिमाई अठपेजी साइज के ७०३ पृष्ठ, १० चित्र, ३ नकशे, मोनो की छपाई, कपड़े की सुन्दर जिल्द। मूल्य १६.७५

'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध' विषय पर दो नये ग्रन्थ

(१) **विश्व की राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध** (१९१९ से १९४५ तक) मूल्य ९.००

(२) **अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध** (१९४५ से वर्तमान समय तक) मूल्य १०.००

विविध विश्वविद्यालयों द्वारा इतिहास और राजनीतिशास्त्र विषयों की एम. ए. तथा बी० ए० (ओनर्स) परीक्षाओं के लिये विश्व की राजनीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विषय के प्रश्नपत्र का जो पाठ्यक्रम निर्धारित है, ये दोनों पुस्तकें उसे दृष्टि में रख कर लिखी गई हैं। एम. ए. तथा बी. ए. (ओनर्स) के विद्यार्थियों के लिये तो ये उपयोगी हैं ही, पर सर्वसाधारण पाठक भी इन द्वारा, विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से समुचित परिचय प्राप्त कर सकते हैं। इनके लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार हैं, जो इतिहास और राजनीतिशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् तथा हिन्दी के माने हुए लेखक हैं।

श्री सरस्वती सदन, मसूरी (उत्तर प्रदेश)
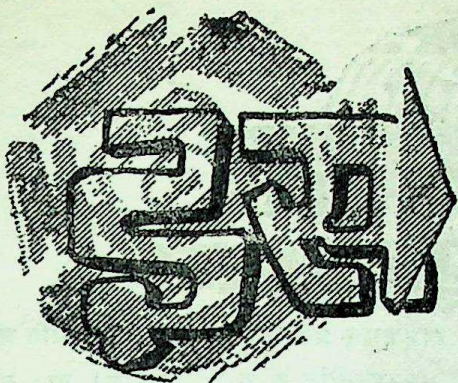
आलोचना

पं० अयोध्यानाथ शर्मा एवं विश्वनाथ गौड़, समीक्षायण, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली	६.००
डा० कृष्णकान्त चतुर्वेदी, द्वैत वेदान्त का तात्विक अनुशीलन, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली	२०.००

उपन्यास

कृश्नचन्दर, चंदा की चाँदनी, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६	६.००
कृश्नचन्दर, चम्बल की चमेली, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६	६.००
विमल मित्र, काजल, ,, ,, ,,	५.००
नारायण सान्याल, सत्यकाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली	८.००
रामकुमार भ्रमर, कैद आवाज़ें ,, ,, ,,	५.००
सत्यप्रसाद पांडेय, चन्द्रवदनी, ,, ,, ,,	५.००
शिवानी, मायापुरी, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२	३.००
आचार्य चतुरसेन, चिनगारियाँ, ,, ,, ,, ,,	३.००
राजेन्द्रसिंह बेदी, दस्तक, ,, ,, ,, ,,	२.००
शम्सुद्दीन, बेगमों के रोमांस, ,, ,, ,, ,,	२.००
शेखर, लांछन, ,, ,, ,, ,,	२.००
कर्नल रंजीत, उड़ती मौत, ,, ,, ,, ,,	२.००
त्रिलोचन, जेलों से फरार, ,, ,, ,, ,,	२.००

कविता

सुमित्रानन्दन पंत, शंखध्वनि, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६	१५.००
दिनकर सोनवलकर, श्र से असभ्यता, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६	५.००
पद्मा सुधि, डमी, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली-६	५.००
डा० सावित्री सिन्हा, मुट्ठियों में बन्द आकार, ऋषभचरण एवं संतति, दरियागंज जैन, दिल्ली	२२.००
ओमदत्त शर्मा, हमारे राष्ट्रीय गान, किताबघर, गाँधीनगर, दिल्ली-३१	३.००

कहानी

मोहन राकेश, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली	५.००

[शेष पृष्ठ ३० पर]
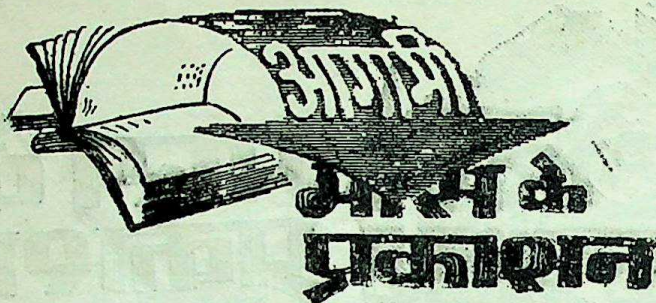
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली-६

—सफर (उपन्यास) आशुतोष मुखर्जी
—उसका घर (उपन्यास) मेहरुन्निसा परवेज
—दो जोड़ी आँखें (कहानी-संग्रह) राजेन्द्र अवस्थी
—मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी (एकांकी-संग्रह) डा० लक्ष्मीनारायण लाल
—शेरों के शेर (किशोरोपयोगी) मनहर चौहान
—एक थे नाना (किशोरोपयोगी) ,,
—सद्गुणों की कथाएं (प्रेरक कथाएँ) श्रीकृष्ण
—बर्फ़ से झाँकती आँखें (साहसिक कथाएँ) सुरजीत
—बोध-कथाएं (बोध-कथाएँ) सन्तराम वत्स्य

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली

—राजनीति कोश (कोश), डा० सुभाष काश्यप एवं विश्वप्रकाश गुप्त
—शशि की तरी (कविता), सुमित्रानन्दन पन्त
—सोने की वर्षा (बाल कथाएँ), देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

किताब घर, गांधी नगर, दिल्ली-३१

—आदर्श विद्यार्थी बनो (छात्र शिक्षा) जगतराम द्विवेदी
—भारत की लोक कथाएँ (कथाएँ) श्रीचन्द्र जैन
—जीवन विकास (दैनिक व्यवहार) श्री सत्यपाल

ऋषभ चरण जैन एवं सन्तति दिल्ली

—भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य में लोक तत्व, (शोध ग्रन्थ) डॉ० विमलेश कान्ति वर्मा

[पृष्ठ २९ का शेष]

व्यथित हृदय, दीदी ने कहा बच्चों ने सुना, किताबघर, गाँधीनगर, दिल्ली-३१ २.००

निबन्ध

डा० नगेन्द्र, समस्या और समाधान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली ७.००
सुरेश ऋतुपर्ण, निबन्धायन, ऋषभचरण जैन एवं संतति, दरियागंज, दिल्ली ४.००
धनंजय वर्मा, अंधेरा नगर, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली ६,००

एकाकी

डा० रामकुमार बर्मा, मेरे श्रेष्ठ रंग-एकांकी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ७.००

बालोपयोगी

हरिकृष्ण देवसरे, चिट्ठी बोली फिर से, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली २.५०
मनहर चौहान, साजिशों के सरताज, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ३.५०
मनहर चौहान, बलिए और छलिए, ,, ,, ,, ३.५०
मार्क ट्वेन, राजा और भिखारी, ,, ,, ,, २.५०
मार्क ट्वेन, नटखट नन्दू, ,, ,, ,, २.५०
हैरियट बीचर स्टोव, टाम काका की कुटिया, ,, ,, ,, २.५०
अमरनाथ शुक्ल, रामचरित मानस की प्रेरक कथाएं, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली २.५०
रामकृष्ण शर्मा, तमसा के तट पर ,, ,, ,, १.००

विविध

आरिगपूडि, आन्ध्रप्रदेश, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००
योगराज थानी, भारत के द्वीप ,, ,, ,, ३.००
जेम्स एलन, सफलता के सोपान, हिन्द पाकेट बुक्स प्रा० लि०, दिल्ली-३२ २.००
अभयशरण वेदालंकार. श्रीकृष्णलीला दर्शन, किताबघर, गाँधीनगर, दिल्ली-३१ ३.५०

युगकवि श्रीसुमित्रानंदन पंत की दो अभिनव कृतियाँ

शंखध्वनि

पन्तजी की नवीनतम कविताओं का संग्रह, जिसमें उनके कविव्यक्तित्व के नये आयामों का उद्घाटन हुआ है। इन कविताओं में मुख्यत: नये जागरण के स्वरों को तथा विश्व-जीवन के भीतर उदय हो रहे मनुष्यत्व की रूप-रेखाओं को अभिव्यक्ति मिली है। कुछ रचनाओं में वर्तमान जीवन की विसंगतियों के प्रति कवि के मन की प्रतिक्रियाएँ तथा कुछ में उसके व्यक्तिगत सुख-दुख की अनुगूँजों को भी वाणी मिली है। मूल्य १५.००

शशि की तरी

शशि की तरी के गीत अनुपमा को समर्पित हैं। अनुपमा तीन-चार साल की एक भोली लड़की थी, जिसे पंतजी ने स्वराज-भवन, इलाहाबाद के बाल-भवन में देखा था। इस अबोध वय की दिव्य बालिका के प्रति पंतजी के मन का आकर्षण इतना प्रबल हुआ कि वे उसे गोद लेने का सपना देखने लगे। किन्तु दुर्भाग्यवश वह स्वप्न साकार होने से पहले ही वह स्वर्ग की कली अपनी देहलीला समाप्त कर चली गई। उसी की स्नेह-मधुर पवित्र स्मृति में कवि के मन ने ये गीत गुनगुनाये हैं। मूल्य ७.००

पंत-काव्य के प्रेमियों के लिए राजकमल की नई भेंट

● पठनीय

● संग्रहणीय

राजकमल द्वारा प्रकाशित पंतजी की अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

लोकायतन	३०.००
लोकायतन (संक्षिप्त)	१२.००
चिदबरा	१८.००
रश्मिबंध	३-५०
अतिमा	६-००
स्वर्णधूलि	७-००
कला और बूढ़ा चाँद	८-००
युगवाणी	५-५०
पल्लव	७-००
पल्लविनी	१४-००
शिल्पी	५-००
पौ फटने से पहले	६-००
किरणवीणा	११-००
पुरुषोत्तम राम	३-५०

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

श्रीमती शीला सन्धू, मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ८ फ़ैज़ बाजार, दिल्ली, के लिए

प्रकाशन समाचार

अक्तूबर १९७१

राजनीतिशास्त्र पर हिन्दी में विश्वकोश के ढंग की पहली और अत्यन्त प्रामाणिक कृति

प्रत्येक पुस्तकालय और हिन्दी-प्रेमी पाठक के लिए सर्वथा संग्रहणीय

राजनीति कोश

डा० सुभाष काश्यप
एवं
विश्वप्रकाश गुप्त

राजनीतिशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों, शब्दबंधों का हिन्दी-अनुवाद और भारतीय संदर्भों में उनकी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कोश-ग्रन्थ की विशेषता है।

डिमाई आकार में लगभग
साढ़े-पाँच सौ पृष्ठ
रेक्सिन की मजबूत और
आकर्षक जिल्द
मूल्य ४०.००

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली-६ पटना-६

अमृता प्रीतम आज की सफल लोकप्रिय लेखिका है। साहित्य अकादमी और पंजाब भाषा विभाग द्वारा इन्हें सम्मानित किया जा चुका है। इनका रोमांटिक और कोमल भावनाओं से भरपूर यह कथा-साहित्य बहुत लोकप्रिय है।

अमृता प्रीतम का कथा - साहित्य

धरती, सागर और सीपियाँ २.००
एक थी अनीता २.००
हीरे की कनी २.००
जलावतन २.००
पिंजर २.००
पाँच बरस लम्बी सड़क २.००
दिल्ली की गलियाँ २.००
नागमणि २.००
जेबकतरे २.००
डाक्टर देव १.००
नीना १.००
एक सवाल १.००
बंद दरवाजा १.००
एरियल १.००

हमारे नियमित स्थायी ग्राहक बनकर अतिरिक्त कमीशन और बोनस आदि की अनेक सुविधाएं प्राप्त कीजिए।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

सम्पादक : शीला संधू

वर्ष १९ ● अंक १ ● अक्तूबर, १९७१

वार्षिक ४.००; विदेशों में ८.००; एकप्रति ४०

भारतीय भाषाओं में बाल-साहित्य

भारतीय भाषाओं में साहित्येतर अनेक विषयों की भांति ही बाल-साहित्य के प्रकाशन की ओर भी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही ध्यान दिया गया। तब से अब तक बालोपयोगी साहित्य प्रचुर परिमाण में प्रकाशित हुआ है, जिसमें अनेक उच्च स्तरीय पुस्तकें भी हैं, लेकिन बाल-पुस्तकों के लेखन-प्रकाशन का सामान्य स्तर अभी ऐसा नहीं है कि उस पर संतोष किया जा सके।

बच्चों के लिए पुस्तकों का लेखन और प्रकाशन बहुत बड़ी जिम्मेदारी का और कठिन काम है और इस दिशा में श्रेष्ठ स्तर की प्राप्ति के लिए हमारे देश के लेखकों तथा प्रकाशकों को अनेक समस्याओं से जूझना होगा। पिछले दिनों चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट द्वारा 'बच्चों के लिए श्रेष्ठतर पुस्तकें' विषय पर आयोजित एक चार-दिवसीय गोष्ठी में ऐसी कई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया और विचार-विमर्श किया गया।

हमारे देश में बाल-साहित्य के लेखन से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण समस्या यह है कि बाल-पुस्तकों के लेखकों को उचित सम्मान नहीं दिया जाता, जिससे अच्छे प्रतिभाशाली लेखकों को इस दिशा में अपनी प्रतिभा का उपयोग करने का प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। यही स्थिति बाल-पुस्तकों के चित्रकारों की है। इस स्थिति को समाप्त करने के लिए बाल-साहित्य विषयक दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन अपेक्षित है।

बच्चों की पुस्तकें लिखने के लिए जहाँ यह जरूरी है कि लेखक बच्चों की रुचि और मानसिक संरचना को समझने का प्रयत्न करे वहीं विभिन्न आयु-वर्गों के लिए उपयुक्त शब्दावली के निर्धारण की भी आवश्यकता है, जिससे बच्चों के लिए पुस्तकें क्लिष्ट न हों और उसमें भाषा का क्रमिक विकास हो सके। अभी इस क्षेत्र में पूरी तरह अनुशासनहीनता व्याप्त है और भाषा तथा विषय की दृष्टि से यह निर्दिष्ट करना लगभग असम्भव है कि अमुक पुस्तक किस आयु-वर्ग के बच्चों के लिए लिखी गई है।

उक्त गोष्ठी में विचार-विमर्श के दौरान यह सुझाव दिया गया कि बाल-साहित्य का सृजन करनेवाले नए लेखकों को समुचित मार्ग-दर्शन देने के लिए देश की प्रादेशिक भाषाओं में राइटर्स क्लब तथा उनकी समस्याओं पर विचार करने के लिए स्टडी सर्किल गठित किये जायें। साथ ही बच्चों की पुस्तकों को आकर्षक बनाने के लिए कलाकारों का एक नियमित पाठ्यक्रम भी आयोजित होना चाहिए।

गोष्ठी का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में एक बाल-पुस्तक परिषद् के गठन का निश्चय है। यह परिषद् बाल-साहित्य से सम्बन्धित व्यक्तियों तथा संगठनों की एक निर्देशिका प्रकाशित करेगी और विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध बाल-साहित्य का समय-समय पर सर्वेक्षण किया करेगी, जिससे श्रेष्ठतर पुस्तकों के प्रकाशन के लिए आवश्यक सुझाव दिये जा सकें। उच्च स्तरीय पुस्तकों को स्पष्ट मान्यता प्रदान करने के लिए यह परिषद् ऐसी पुस्तकों का विशेषज्ञों द्वारा मूल्यांकन कराकर उन्हें प्रमाणपत्र भी दिया करेगी।

—क्या ये पुस्तकें आपके पुस्तकालय में हैं ?

प्रसाद काव्य-कोश

● ● प्रो० सुधाकर पाण्डेय

महाकवि प्रसाद के समग्र काव्य-साहित्य को समझने-परखने के लिए एक अद्वितीय और अनिवार्य कृति । मूल्य : ६०.००

राजतरंगिणी (कल्हण कृत) : भाग १

● ● सं० अनु० : रघुनाथ सिंह

भारतीय वाङ्मय की एक अनुपम कृति का पहली बार गौरवपूर्ण प्रस्तुतीकरण । हिन्दी रूपान्तर और विवेचन । मूल्य : ७५.००

प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा

● ● डॉ० राय गोविन्दचन्द

भारतीय पुरातत्त्व साहित्य में एक नया अध्याय जोड़ने वाली यह कृति अपने विषय-क्षेत्र के लिए महत्त्वपूर्ण अवदान है । मूल्य : १८.००

प्रज्ञा के पथ पर

● ● डॉ० रोहित मेहता

भारतीय आस्था के प्राण-ग्रन्थ 'श्रीमद्भगवद्गीता' का मौलिक, मार्मिक सार्थक अध्ययन । मूल्य : ८.००

साहित्यिक निबन्ध

● ● सं० डॉ० त्रिभुवन सिंह

हिन्दी साहित्य के इतिहास. काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान, अधुनातन प्रवृत्तियों, वादों, प्रमुख कृति तथा कृती और युगीन संदर्भों पर अधिकारी विद्वानों के निबंध । मूल्य : २१.००

तार : प्रकाशक

फोन : ६२११४
६६७८७

हिन्दी प्रचारक संस्थान

[व्यवस्था : कृष्णचन्द्र बेरी एण्ड सन्स]

पो० बाक्स सं० १०६, वाराणसी-१ (उ० प्र०)

पुस्तक व्यवसाय की आर्थिक समस्याएँ

अब्दुल हसन

प्रकाशन उद्योग फिल्म उद्योग के बाद विश्व में सर्वाधिक जोखिम भरा उद्योग माना जाता है। जब कोई प्रकाशक एक नयी पुस्तक प्रकाशित करता है, तो दरअसल वह अपने विनियोजन का जुआ खेलता है, क्योंकि उसकी दिक्कतों और मेहनत की तुलना में उसकी प्राप्ति बहुत कम होती है। प्रकाशक पर मंडराते संकट का वर्णन प्रोफेसर रॉबर्ट इस्कार्पिट ने डेनिस डाइडरॉट के इन शब्दों में किया है, "जोखिम के दस प्रयासों में एक प्रयास सफल होता है...यह भी ज्यादा है—चार ऐसे होते हैं, जो बहुत देर में सफल होते हैं, और पांच ऐसे होते हैं, जो अन्त में असफल रहते हैं।" (रॉबर्ट इस्कार्पिट, बुक रिवोल्यूशन, हारप, लंदन, पृष्ठ ११५) दो सौ वर्ष पुराना यह कथन आज भी उतना ही सही है।

जैसे कि प्रो० इस्कार्पिट ने कहा है, पुस्तक प्रकाशन एक तरह का 'कार्यक्रम रहित निकास' है। पिछले दशक में पुस्तक व्यवसाय द्वारा लम्बे डंग भरे जाने के बावजूद दुनिया भर के प्रकाशकों के लिए पुस्तकों का बाजार खोजना सर्वाधिक विकट समस्या है। पुस्तक एक व्यक्ति सापेक्ष वस्तु है। हर पुस्तक का एक पृथक् अस्तित्व है। विभिन्न लोगों पर इसका विभिन्न (कभी एक व्यक्ति को वह अनेक स्तरों पर उद्वेलित करता है) अवसरों, विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रभाव पड़ता है। अतः अन्य उपभोग्य वस्तुओं की तरह इसकी माँग की पड़ताल करना बहुत मुश्किल है। एक प्रकाशक अक्सर अधिक उत्पादन या कम उत्पादन की समस्या से घिर जाता है। यदि वह ज़रूरत से कम पुस्तकें प्रकाशित करें, तो वह बड़े पैमाने के उत्पादन के लाभ से बंचित रह जाता है, और अगर वह अधिक पुस्तकें प्रकाशित करे, तो वे उसके गोदाम में ही पड़ी रह जायेंगी। अनबिकी पुस्तकों की लागत ख़ाक में मिल जाती है।

अनबिकी पुस्तकें प्रकाशक के लिए सिवाय बेकार के सरदर्द के और कुछ नहीं हैं। अनबिकी पुस्तकों के कागज की कीमत पुराने अख़बार के काग़ज से भी कम होती है। इस तरह जिल्द की लागत भी घाटा बढ़ाती है। यही कारण है कि ३० वर्ष पूर्व तक बहुत से भारतीय प्रकाशक केवल उतनी ही प्रतियों पर जिल्दें लगवाते थे, जितनी बिकती थीं। इस प्रकार वे अनबिकी पुस्तकों पर जिल्द लगवाने का ख़र्च बचा लेते थे।

वित्तीय स्रोत : हाल ही तक व्यावसायिक बैंक किताबों के स्टाक को बंधक रख कर प्रकाशकों को ऋण नहीं देते थे क्योंकि बिक सकने वाली पुस्तकों के स्टाक का मूल्य आँकना बहुत मुश्किल है और न बिक सकने वाली पुस्तकों की कीमत न कुछ के बराबर है। इसीलिए प्रकाशकों को बैंक से वित्तीय सहायता प्राप्त करने में बहुत कठिनाई होती थी। बताया जाता है कि कुछ साल पूर्व प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता संघ के एक प्रवक्ता ने कहा कि नोट बुक छापने वालों को अपने स्टाक की कीमत का ६० प्रतिशत तक अग्रिम धनराशि बैंक से मिल जाती हैं, यहाँ तक कि रद्दी वाले को भी ४० से ४५ प्रतिशत तक अग्रिम राशि मिल जाती है लेकिन अभी तक किसी भी बैंक ने पुस्तकों पर अग्रिम धन देना शुरू नहीं किया है। परिणामस्वरूप प्रकाशकों को सर्राफों और सूदखोरों से १२ से लेकर १८ रु० प्रतिशत तक वार्षिक ब्याज पर रु० उधार लेना पड़ता है।

पुस्तक उद्योग को अन्य उद्योगों की तुलना में दीर्घावधि के लिए ऋण की अधिक जरूरत है। प्रकाशक को एक अच्छी पुस्तक प्रकाशित करने के लिए लगभग ६ महीने का समय चाहिए। अगर वह भाग्यशाली है तो इस पुस्तक की सभी प्रतियाँ बेचने के लिए उसे दो या तीन वर्ष का समय और चाहिए। अपना धंधा चलाने के लिए उसे न केवल दीर्घकालिक ऋण चाहिए बल्कि उसे अपनी लागत वसूल करने तक ऋणदाता को ब्याज भी चुकाना पड़ता है। इन तमाम दिक्कतों के बावजूद उसका लाभांश अति अल्प होता है। रूसी तारापोरवाला के अनुसार "भारतीय पुस्तक प्रकाशन उद्योग को पूँजी हासिल करने में बहुत अधिक कठिनाई होती है क्योंकि अन्य उद्योग और व्यवसायों की तुलना में उसका लाभांश बहुत कम है।

"जहाँ एक ओर अन्य व्यवसायों और उद्योगों में कर चुकाने के बाद विनियोजित पूँजी पर १० और कभी २० प्रतिशत तक शुद्ध लाभ होता है, वहाँ दूसरी ओर इसमें शंका है कि पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय में ५ प्रतिशत भी शुद्ध लाभ होता है या नहीं।" (रूसी जे० तारापोरवाला, इकानॉमिक्स आव बुक पब्लिशिंग एंड नीड फॉर कैपिटल इन बुक डेवलपमेंट—सम करंट प्राबलम्स, पृष्ठ ४७) ऋण की सुविधा के अभाव में प्रकाशकों को कागज और जिल्दसाजों से उपलब्ध अल्पकालिक उधार पर निर्भर रहना पड़ता है, लेकिन ये भी अधिक से अधिक तीन महीनों तक ही अपना पैसा वसूल पाने की प्रतीक्षा कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में जरूरी है कि प्रकाशक की वित्तीय आवश्यकता पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाये।

सरकार का योगदान: सरकार को पुस्तक व्यवसाय के संवर्धन का सुझाव देने के लिए १९६७ में गठित राष्ट्रीय पुस्तक विकास संघ ने ऋण की सुविधा की कमी के मसले पर विचार किया। संघ ने यह सिफ़ारिश की कि पुस्तक उद्योग की खास तरह की जरूरतों को पूरा करने के लिए क्योंकि सामान्य बैंकीय सुविधाएँ सुलभ नहीं इसलिए बैंक ऋण और ब्याज की दर के मामले में प्रकाशकों को प्राथमिकता दी जाए। इसके अलावा राष्ट्रीयकरण हो जाने पर व्यावसायिक बैंकों ने छोटी औद्योगिक इकाइयों की

उपयोगी, पठनीय एवं संग्रहणीय प्रकाशन

गाँधी साहित्य

गाँधीजी के जीवन-प्रसंग	चन्द्र शंकर शुक्ल	६-००
गाँधीजी के संपर्क में	चन्द्र शंकर शुक्ल	३-२५
गाँधीजी की यूरोप यात्रा	म्यूरियल लीस्टर	२-२५

विज्ञान

अपोलो अभियान	हेनरी एस० एफ० कूपर, जूनियर	४-००
आधुनिक विज्ञान की महान सफलताएँ	मेलिविन बर्गर	३-००
विज्ञान की बातें	ग्लेन ओ० ब्लाऊ	५-००
बिजली के नये चमत्कार	वेन वेनडिक	३-००
भविष्य की ओर नौ मार्ग	डी० एस० हल्सी, जूनियर	२-५०
चन्दा की कहानी रेंजर की जबानी	विजली ले	३-००
पानी और मानव सभ्यता	एलिजाबेथ एस० टेल्कमैन	३-००
आने वाले कल की तस्वीर	इर्विन स्टेम्बलर	३-००

चित्रमय विज्ञान : चित्रों द्वारा विज्ञान की जानकारी

१-ग्रहों की दुनिया २-टेलीविजन ३-वायुयान ४-रेलगाड़ी और मोटर गाड़ी ५-राकेट ६- रेडियो ७-हेलीकोप्टर ८-राडार ९-प्रकाश १०-वैज्ञानिक खोज, प्रत्येक का मूल्य १-२५ और ११-टेलीफोन मूल्य १-५०

आलोचना

कवयित्री महादेवी वर्मा	डा० शोभनाथ यादव	१८-००
भारतेन्दु की गद्य भाषा	ब्रजकिशोर पाठक	२१-००
आधुनिक कविता की प्रवृत्तियाँ	सं० मोहनवल्लभ पन्त	५-००
साहित्यालोचन के सिद्धान्त	अनु० सोमेश पुरोहित	३-००
सूरदास और नरसिंह मेहता	डा० ललित कुमार पारिख	१५-००
मैथिलीशरण गुप्त	सं० ओंकार शरद	७-००
निराला	सं० ओंकार शरद	७-००

इतिहास

विश्व का सचित्र इतिहास (५०० चित्रों के सहित)	माईकल रेटा मार्टिन एवं चार्ल्स क्रो	८-००

वोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स प्रा० लि०

३-राउण्ड बिल्डिंग, कालबा देवी रोड, बम्बई-२

आर्थिक आवश्यकता पर उदारता से गौर करने का निश्चय किया। बदलती हुई परिस्थितियों में पुस्तकों को जमानत पर ऋण दिया जाने लगा। प्रकाशकों को उनके स्टाक के मूल्य का ५० से ६० प्रतिशत तक ऋण दिया जाने लगा है। ऐसे भी उदाहरण हैं कि बैंकों ने प्रकाशकों को बिना बंधक के ही ५० हजार रुपये तक का ऋण दिया। प्राथमिक और उपेक्षित क्षेत्रों के ऋण चाहने वालों के लिए इस साल रिजर्व बैंक द्वारा चलाई गई अल्प ऋण गारंटी योजना के अन्तर्गत पुस्तक प्रकाशन को व्यावसायिक उद्यम माना गया है बशर्ते कि प्रकाशक की सम्पत्ति का मूल्य मूलत: ५० हज़ार रुपये से अधिक न हो। यदि ऋणदाता संस्था यह प्रमाणपत्र देती है कि ऋण वसूल नहीं किया जा सकता, तो उक्त योजना के अन्तर्गत ७५ प्रतिशत तक का नुकसान भरने की गारंटी मिल जाती है। बेशक ऋण की मात्रा प्रकाशक के व्यवसाय के प्रत्याशित भविष्य जमानत की कीमत और संभावित जोखिम पर निर्भर करेगी।

राष्ट्रीय पुस्तक विकास संघ के सुझाव के अनुसार रिजर्व बैंक प्रकाशकों की विशिष्ट परिस्थितियों को बैंकों के नोटिस में लाने के प्रस्ताव पर भी विचार कर रहा है। वह यह सुझाव भी देगा कि जिन प्रकाशकों की साख और व्यावसायिक योग्यता पर बैंकों को विश्वास हो, उन्हें ऋण देने में वे अधिक उदारता बरतें। बड़े प्रकाशकों, जिनके पास अपना छापाखाना और जिल्दसाज़ी की व्यवस्था है, को 'औद्योगिक संस्थानों' का दर्जा दिया गया है और उन्हें औद्योगिक वित्त निगम और भारतीय औद्योगिक विकास बैंक जैसी राजकीय संस्थाओं से भी वित्तीय सहायता दी जायेगी। लेकिन जिन प्रकाशकों के पास छापाखाने और जिल्दसाज़ी की निजी व्यवस्था नहीं है, उन्हें यह सुविधा नहीं दी जायेगी। इसके बावजूद राष्ट्रीय पुस्तक विकास संघ की सिफ़ारिशों का ही यह परिणाम है कि सरकार ने हाल ही में सभी प्रकाशकों को विशेष छूट देने का महत्त्वपूर्ण निश्चय किया है। १९७१-७२ के बाद भारत में प्रकाशन व्यवसाय से संबद्ध संस्थानों को २० प्रतिशत के लाभ पर ५ वर्षों तक कोई कर नहीं देना पड़ेगा। आशा है कि कर की इस छूट से प्रकाशन व्यवसाय का लाभ बढ़ेगा और यह व्यवसाय अधिक पूंजी हासिल कर सकेगा।

प्रकाशकों का कर्तव्य : भारत विश्व के सबसे बड़े पुस्तक निर्माता देशों में से एक है। यहाँ निजी क्षेत्र में लगभग २०० बड़े प्रकाशन प्रतिष्ठान हैं। प्रकाशकों को ऋण की सुविधा देने के लिए सरकार जो क़दम उठा चुकी है या उठा रही है उसके साथ-साथ अब यह भी ज़रूरी हो गया है कि प्रकाशक अपने अतिरिक्त साधनों का उपयोग सभी प्रकाशकों के हितों की रक्षा के लिए करें। सभी प्रकाशक एक ही परिवार के सदस्य हैं। अतः समर्थ प्रकाशकों का यह कर्तव्य है कि वे अपने साथियों की मदद करें। बहुत मुमकिन है कि भारतीय प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता एसोसिएशनों का महासंघ सहकारिता के आधार पर पुस्तक प्रकाशकों का एक बैंक खोलने की पहल करेगा, जो छोटे प्रकाशकों को उदार शर्तों पर वित्तीय सहायता देगा। हमारे छोटे प्रकाशक जनता में अध्ययन की अभिरुचि जगाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण योग दे सकते हैं। अतः उन्हें प्रश्रय देना भारतीय पुस्तक उद्योग के व्यापक हितों के पोषण के लिए बहुत ज़रूरी है।

जापान में प्रकाशकों द्वारा संचालित अनेक ऐसी संस्थाएँ हैं, जिन से वे वित्तीय सहायता ले सकते हैं। काफ़ी हद तक यह आत्मनिर्भरता ही जापान के पुस्तक व्यवसाय की समृद्धि का आधार है।

एक महान प्रकाशक एक व्यापारी से अधिक शिक्षा और संस्कृति का दूत है। अगर सिर्फ़ आर्थिक दृष्टि से विचार किया जाये, तो अन्य व्यवसायों की तुलना में प्रकाशन व्यवसाय में कम लाभ होता है, और जैसा कि सर स्टैनले ने कहा है, "पुस्तकें प्रकाशित करके जो धनार्जन कर सकता है, वह अन्य व्यवसायों में शायद और अधिक लाभान्वित हो" लेकिन "प्रकाशन धन से अधिक मूल्यवान पुरस्कार देता है।" (सर **स्टैनले अनविन, 'द ट्रुथ एबाउट पब्लिशिंग', मैकमिलन, न्यूयॉर्क,** पृ० ३२०) यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है, जिसकी प्रकाशन व्यवसाय के लिए वित्तीय-व्यवस्था करने वाले लोग अक्सर उपेक्षा कर जाते हैं।

(दिनमान से साभार)

नयी उपलब्धि

ज़िन्दगी के बीच, आसपास
और उस के समानान्तर
दो कृतियाँ—

एकदा नैमिषारण्ये

श्री अमृतलाल नागर
का नवीनतम
उपन्यास

एकदा नैमिषारण्ये

अमृतलाल नागर का वृहद् उपन्यास

'अमृत और विष' के यशस्वी उपन्यासकार की लेखनी का नवीनतम अवदान। भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान का सजीव रंगारंग चित्र-फलक प्रस्तुत करने वाली एक अद्वितीय महागाथा। बेहद रोचक और मर्मस्पर्शी कथानक के साथ एक जीवंत उपन्यास।

मूल्य १६.००

ए पार बांग्ला
ओ पार बांग्ला

शंकर का रिपोर्ताज

ए पार बांग्ला ओ पार बांग्ला

शंकर

सिद्धहस्त और लोकप्रिय बांग्ला कथा-शिल्पी शंकर अब हिन्दी पाठकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण नाम है; और उनका यह रिपोर्ताज—समग्र बंगाल की अंतरंग तथा मर्मस्पर्शी छवियों का आलेखन—भी अब हिन्दी की उपलब्धि है। इस पार के एक सहयात्री द्वारा उस पार के परिदृश्य का मार्मिक चित्रण !

मूल्य ८.००

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए महात्मा गान्धी मार्ग, इलाहाबाद-१

राग-विराग

महाकवि निराला की प्रतिनिधि कविताएँ

डॉ० रामविलास शर्मा द्वारा सम्पादित महाकवि निराला के समग्र काव्य-कृतित्व में से चुनी हुई प्रतिनिधि कविताओं का मानक संग्रह। निराला-काव्य के अध्येताओं, विद्यार्थियों और सुरुचि-सम्पन्न पाठकों की एक अनिवार्य आवश्यकता का एक जीवंत उत्तर। साथ में निराला-साहित्य के विशिष्ट आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा की सार्थक सम्पादकीय भूमिका।

मूल्य : ६.००

मेरा परिवार

महादेवी वर्मा के अनुपम रेखाचित्र

एक लंबी प्रतीक्षा के बाद महादेवी जी की अनूठी लेखनी का एक और अद्वितीय अवदान। मानवीय करुणा के अभूतपूर्व अनुभव की मार्मिक अंतरकथा : हिन्दी-साहित्य के विशिष्ट और जीवंत रेखाचित्र। अभिव्यक्ति की रचनात्मक सार्थकता को सहज ही उजागर करने वाली एक मर्मस्पर्शी कला-कृति।

मूल्य : ७.५०

कारवाँ

भुवनेश्वर के कालजयी एकांकी

भुवनेश्वर और हिन्दी का नाटक साहित्य पर्याय है। इसीलिए कहा जा सकता है कि 'कारवाँ' हिन्दी के प्रमुखतम, प्रखर प्रतिभाशाली नाटककार के प्रतिनिधि एकांकियों का संग्रह है। अपने युग के संत्रास, दर्द, भोंथरेपन, आतंक और सतहीपन के दस्तावेज हैं ये एकांकी। यह अमूल्य संग्रह हिन्दी के नाट्य-प्रेमियों, मंच शिल्पियों और अध्येताओं के लिए एकमात्र रक्षणीय विकल्प है।

मूल्य : ५.००

पठनीय : : संग्रहणीय

'लोकभारती' द्वारा प्रस्तुत प्रबुद्ध पाठकों के लिए तीन महत्त्वपूर्ण अनुपम कृतियाँ

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

माँग कर पढ़ी गई पुस्तकें

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा पुस्तकें पढ़ने की आदतों के सम्बन्ध में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार व्यापारी लोग पुस्तकें खरीदने में सबसे कम रुचि रखते हैं। किसी व्यवसाय या अन्य धन्धों में लगे लोगों की अपेक्षा विद्यार्थी, पेपर बैक व सजिल्द दोनों प्रकार की पुस्तकें, अधिक संख्या में खरीदते हैं।

व्यवसायी लोग पुस्तकें उधार देने में भी हिचकिचाते हैं। इसका एक कारण शायद उनके दैनिक जीवन के दौरान का अनुभव होता है। विद्यार्थी औरों की अपेक्षा अधिक उदारता से पुस्तकें माँगे देते हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट की विस्तृत प्रश्नावली को जिन्होंने भरा है, और जिस पर यह सर्वेक्षण आधारित है, उन १३७२ पाठकों में से महिलाओं की संख्या केवल ४० है।

हालाँकि ब्यौरेवार सर्वेक्षण केवल मद्रास में ही सीमित था और सम्भवतः उसी क्षेत्र की पठन रुचि को सही तौर से प्रतिबिम्बित करता है फिर भी इससे जो निष्कर्ष निकले हैं उन्हें देश के हर भाग पर लागू किया जा सकता है। विशेषतः जबकि इससे पहले दिल्ली में किए गए सर्वेक्षण के परिणाम भी इससे बिल्कुल मिलते-जुलते ही थे।

१३७२ सर्वेक्षित सदस्यों में से ५०% से कुछ ही कम की आयु २५ से कम थी और लगभग १०% की ४५ से ऊपर। इस प्रकार यह सर्वेक्षण युवा और प्रौढ़ व्यक्तियों के विचारों और मनोवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

सर्वेक्षित लोगों में से ४०%प्रतिशत ने दावा किया कि उन्होंने २० पुस्तकें पढ़ी हैं, २०.१% प्रतिशत ने २१ और ४० के बीच, १६.२% ने ४१ से लेकर ६० के बीच, ३.५% ने ६१ से ८० के बीच और ३.३० ने ८० से १०० के बीच पुस्तकें पढ़ी थीं। किन्तु सबसे अधिक उत्साहवर्द्धक १५.६% लोगों का यह दावा था कि उन्होंने १०० से ऊपर पुस्तकें पढ़ी।

सर्वेक्षण से पता चला कि केवल १३.६% लोगों ने पुस्तकें खरीदी थीं। ३६.६% प्रतिशत उधार लेते हैं। ४६.२% ने पुस्तकें खरीदी भी और उधार भी लीं। एक रोचक तथ्य सामने यह आया कि महिलाएँ पुस्तकें पढ़ने के लिए खरीदने पर निर्भर नहीं करतीं। वे बड़े आराम से माँग कर काम चला लेती हैं।

कुल पाठकों में से २३.४०% का कहना था कि वे जानकारी बढ़ाने के लिए पढ़ते हैं। २३.१% मनोरंजन के लिए, २६.२% ज्ञानवर्द्धन के लिए, १८% प्रतिशत नौकरी में तरक्की पाने के लिए और केवल १४.३%प्रतिशत लोग नैतिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए पढ़ते हैं। इन आँकड़ों से यह भी पता चला कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ मनोरंजन की दृष्टि से अधिक पढ़ती हैं।

पुस्तकें न खरीदने के लिए दिए गए कारण भी अलग-अलग थे। ५२.३% का कहना था कि पुस्तकें बहुत मँहगी होती हैं। १६% का विचार था कि पुस्तकें पुस्तकालयों में आसानी से मिल जाती हैं। ११% का कहना था कि उनकी रुचि के विषयों की पुस्तकों का अभाव है। ६.३% ने बताया कि उनके इलाकों में अच्छी दुकानों का अभाव है और ८.४% ने यह विलक्षण तर्क दिया कि उनके घर में पुस्तकें रखने के लिए स्थान नहीं है।

अधिकतर, पढ़ी गयी पुस्तकें माँगी हुई थीं। केवल १०% पुस्तकें ऐसी थीं जो वास्तव में खरीद कर पढ़ी गई थीं।

उपन्यास सबसे अधिक लोकप्रिय विषय पाया गया। उसके बाद कहानी और लोककथा का नम्बर आता है। पाठकों की बड़ी संख्या रोमांस पसंद करती है। शेष पाठक सामाजिक, ऐतिहासिक, रहस्यात्मक, साहसिक और वैज्ञानिक कथावस्तु समान रूप से पसन्द करते हैं।

जबकि ७३% पाठकों का मत था कि भारत में प्रकाशित अँग्रेजी पुस्तकों का स्तर काफ़ी अच्छा है, शेष का विचार था कि उनका स्तर निराशाजनक है। दूसरी तरफ जहाँ ५५% प्रतिशत लोग सोचते थे कि प्रादेशिक भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकें निम्न स्तर की हैं, शेष को उनका स्तर ठीक प्रतीत हुआ।

पुस्तकों में उच्च स्तर के अभाव का दायित्व पूरी तरह लेखकों को दिया गया। लगभग २८% लोगों का विचार था कि लेखकों में न तो मौलिकता है और न ही उन्हें अपने विषय का पूरा ज्ञान होता है। १५% को शिकायत थी कि लेखन शैली का निर्वाह ठीक से नहीं किया जाता है। १४% का कहना था कि पुस्तकों में घटिया काग़ज़ का इस्तेमाल किया जाता है। १३% ने चित्रों के घटियापन की शिकायत की। ६% को पुस्तकें आकर्षक नहीं लगीं और ६% से अधिक पाठक खराब सिलाई व जिल्दसाजी के कारण दुःखी थे।

प्रश्नावली को भरने वाले अधिकांश पाठकों का कहना था कि नई पुस्तकों की सूचना उन्हें पुस्तक-समीक्षाओं से मिलती है। २४% प्रतिशत लोग पुस्तकालयों के सूची-पत्रों से नए प्रकाशनों की जानकारी पाते हैं। एक खास बात जानने में यह आई कि इन सब पाठकों में से एक भी ऐसा नहीं था जिसने नई पुस्तकों की जानकारी स्वयं जाकर पुस्तकों की दुकान या 'डिस्प्ले विण्डो' से ली हो।

लगभग ३ प्रतिशत पाठकों को नई पुस्तकों की सूचना अपने मित्रों से मिलती रही है।

'स्टेट्समैन' से साभार अनूदित

भारतेन्दु की नाट्यकला पर एक महत्वपूर्ण समीक्षा ग्रन्थ

डॉ० नत्थन सिंह

आलोच्य कृति' में हिन्दी-भाषा और साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन किया गया है। इस रूप में यह कृति सर्वथा नवीन एवं महत्वपूर्ण है। कुछ दिन पूर्व, डा० रामविलास शर्मा ने 'भारतेन्दु युग' नामक कृति के माध्यम से भारतेन्दु, उनके युग के अन्य साहित्यकारों और उनके साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मूल्यांकन किया था। इस मूल्यांकन का परिणाम यह हुआ कि भारतेन्दु को अपने युग का महान् साहित्यकार, उत्कट देशभक्त, चोटी का समाज-सुधारक और हिन्दी की जातीय शैली का जनक माना जाने लगा। तत्पश्चात्, भारतेन्दु की कविता, निबन्ध, पत्रकारिता और नाटकों पर कई शोधपरक तथा स्वतंत्र समीक्षात्मक ग्रंथों की रचना हुई। डा० रामविलास शर्मा ने 'भारतेन्दु-युग' लिखकर जिस मूल्यांकन का श्रीगणेश किया था, 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' लिखकर उसकी इति कर दी। जिस प्रकार भारतेंदु लीक तोड़ कर साहित्य की रचना करने वाले कवि, नाटककार तथा लेखक थे, उसी प्रकार समीक्षा की परंपरागत शैली को ठुकराकर मूल्यांकन करने वाले आलोचक हैं डा० रामविलास शर्मा। डा० शर्मा द्वारा भारतेन्दु के मूल्यांकन से, उनकी सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक जागरण, हिन्दी-प्रेम, उत्कट राष्ट्रीयता, हिन्दी को नई चाल में ढालने की क्षमता, उत्कृष्ट पत्रकारिता, महान् व्यक्तित्व, व्यंग्य की अपरिमेय क्षमता और प्रगतिशीलता आदि गुणों का सम्यक् विवेचन हुआ, उनके नाटकों की शास्त्रीय समीक्षा वाला रूप सम्यक् मूल्यांकन एवं परीक्षण का विषय नहीं बन पाया था। इस अभाव की पूर्ति प्रस्तुत रचना नितांत उत्तमता के साथ करती है।

प्रस्तुत रचना के प्रारम्भ में, भारतेन्दु-पूर्व अनूदित तथा मौलिक नाटकों का ऐतिहासिक विवरण दिया गया है, जो प्रामाणिक एवं उपयोगी है। दूसरे अध्याय में, भारतेंदु कालीन पौराणिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, अनूदित, जननाटक, प्रेमनाटक, तथा प्रहसन आदि के विकास-क्रम की संक्षिप्त एवं सारगर्भित रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। तीसरा अध्याय है, 'युग और पुरुष'। इसमें भारतेंदु-युगीन सामाजिक-सांस्कृतिक तथा आर्थिक-ऐतिहासिक परिस्थितियों के विवेचन के साथ-साथ भारतेन्दु के कवि एवं दानवीर रूप को अंकित किया गया है। कवि भारतेन्दु के मूल्यांकन की अपेक्षा व्यक्ति भारतेन्दु का मूल्यांकन समीक्षक का अभिप्रेत प्रतीत होता है और इस कार्य में वह पूर्णतः सफल हुआ है।

चौथे अध्याय में भारतेन्दु की नाट्यकला पर विचार किया गया है। उनकी नाट्य-प्रतिभा और उनके नाटकों की विशेषताएँ, इस अध्याय के मूल्यांकन का विषय हैं। हिन्दी-नाटक साहित्य को, साहित्य-रचना तथा मूल्यांकन दोनों स्तरों पर, भारतेन्दु ने परम्परा की लीक से बाहर किया था, उसको सामयिक बनाया था, उसको गति प्रदान की थी और भविष्य का प्रतिनिधि बनाने का प्रयास किया था। तिवारी जी के ग्रंथ से, भारतेन्दु की उक्त विशिष्टता का सम्यक् ज्ञापन होता है। इसी अध्याय में, शास्त्रीय समीक्षा की कसौटी—वस्तु, नेता, रस, कथोपकथन, भाषा-शैली, देशकाल, उद्देश्य और अभिनय आदि के आधार पर उनके समग्र नाटक-साहित्य का परीक्षण किया गया है। अध्याय के अंत में, 'भारतेन्दु जी का स्थान' शीर्षक से हिंदी-साहित्य में भारतेन्दु के स्थान का निर्धारण किया गया है।

लेखक काव्य-जगत में तुलसी के कृतित्व से और गद्य-क्षेत्र में भारतेन्दु के कार्य से प्रभावित है। लेखक की यह मान्यता पर्याप्त मात्रा में ग्राह्य है। नाटक-क्षेत्र में, भारतेन्दु के साथ-साथ प्रसाद जी के कृतित्व से भी लेखक प्रभावित है किन्तु उसको खेद है कि नाट्य-जगत में भारतेन्दु की शैली का अनुसरण न हो सका। यदि परवर्ती नाटककार भारतेन्दु से प्रभावित होते, तो हिन्दी में उच्चकोटि के अभिनेय नाटकों की रचना होती और कलात्मक रंगमंच का विकास हुआ होता।

'प्रेमयोगिनी' तथा 'भारतदुर्दशा' आदि कृतियों के नाट्यरूपकों का विवेचन, मूल्यांकन एवं निर्णय महत्वपूर्ण है। भारतेन्दु ने 'प्रेमयोगिनी' को नाटिका कहा है, जबकि नाटक की शास्त्रीय कसौटी के आधार पर वह नाटिका नहीं ठहरती। तिवारी जी ने सप्रमाण सिद्ध किया है कि छोटी रचना होने के नाते इसको नाटिका की संज्ञा दी गई है, यथार्थ में यह नाटिका नहीं है। तिवारीजी ने, डा० प्रेमनारायण शुक्ल तथा डा० वीरेन्द्र शुक्ल के मतों के विपरीत 'भारतदुर्दशा' नाटक को नाट्यरासक नहीं माना है। आपने, नाट्यरासक के नाट्यशास्त्रीय तत्वों तथा अन्तः एवं बाह्य साक्ष्य के आधार पर सिद्ध किया है कि वह नाट्यरासक नहीं है। तिवारी जी का निर्णय मान्य एवं प्रामाणिक है।

आलोच्य ग्रंथ, यद्यपि भारतेन्दु जी के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है, किंतु इस कृति के अध्ययन से भारतेन्दु के गतिशील साहित्यिक व्यक्तित्व तथा कृतित्व का सम्यक् ज्ञान हो जाता है। विवेचन तथा विश्लेषण की शैली तर्कपूर्ण एवं सशक्त है। भाषा का स्वरूप सर्वत्र प्राञ्जल एवं प्रवाहपूर्ण है। इस श्रेष्ठ कृति के लिए लेखक बधाई का पात्र है।

पुस्तक का मुद्रण एवं प्रकाशन बेजोड़ है। राजकमल प्रकाशन ने इस दिशा में उच्च स्तर की स्थापना की है।

---

१. भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन : लेखक : डा० गोपीनाथ तिवारी; प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; मूल्य—अठारह रुपया; डिमाई आकार; पृष्ठ संख्या—३१०; प्रथम संस्करण—१९७१.

राजकमल द्वारा शीघ्र प्रकाश्य कुछ महत्वपूर्ण कृतियाँ

अन्तराल
मोहन राकेश

मोहन राकेश का प्रतीक्षित उपन्यास, जिसका प्रथम आलेख 'धर्मयुग' में नीली रोशनी की बाँहें शीर्षक से धारावाहिक प्रकाशित हो चुका है।...बदलते मूल्यों की दुविधा में आज की मानसिक और शारीरिक आकांक्षाओं का आंतरिक चित्रण !

काला जल
शानी

इस उपन्यास का प्रकाशन हिन्दी में एक घटना माना गया था और इसके छपते ही पाठकों ने जितनी सहृदयता, उदारता और गर्मजोशी से इसका स्वागत किया वह अभूतपूर्व थी—बहुत समय तक अनुपलब्ध रहने के बाद अब यह महत्त्वपूर्ण कृति राजकमल से पहली बार प्रकाशित हो रही है।

साँप और सीढ़ी
शानी

सिद्धहस्त कथाकार शानी का नया लघु उपन्यास, जिसके माध्यम से लेखक ने औद्योगिकता की चपेट में आये जन-जीवन और उसके नैतिक-सांस्कृतिक संकट को गहन मानवीय संवेदना के साथ चित्रित किया है।

दो खिड़कियाँ
अमृता प्रीतम

'दो खिड़कियाँ' दुनिया के निजाम पर भयानक व्यंग करती हुई कहानी है। साथ ही, इस पुस्तक में छह और कहानियाँ तथा एक लघु उपन्यास है, जिसमें स्त्री और स्त्री के रिश्ते का विश्लेषण करने तथा मानव के मन की गुत्थियों को समझने की कोशिश है।

मधुर-रस स्वरूप और विकास
रामस्वार्थ चौधरी अभिनव

'मधुर रस : स्वरूप और विकास' के इस दूसरे भाग में मधुर रस-साधना के ऐतिहासिक विकास-क्रम तथा मध्यकालीन सगुणमार्गी एवं निर्गुणमार्गी साधना पद्धतियों के हिन्दी साहित्य में मधुर रस के स्वरूप-विधान का पर्यालोचन किया गया है।

जीप पर सवार इल्लियाँ
शरद जोशी

देश के विकास की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ढोनेवाला अधिकारी-वर्ग देश के विकास की खेती को उसी तरह चाट रहा है जैसे इल्लियां फसल को चाट जाती हैं—इस विडम्बनापूर्ण स्थिति पर तिलमिला देने वाला व्यंग किया है सुप्रसिद्ध व्यंगकार शरद जोशी ने।

सोने की वर्षा
देवीदयाल चतुर्वेदी मस्त

बच्चों के लिए रोचक, सरल और उपयोगी कहानियों का सचित्र संग्रह।

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली-६ पटना-६

राजकमल द्वारा सद्यःप्रकाशित बहुचर्चित कृतियाँ

आधा गाँव
राही मासूम रज़ा

'आधा गांव' पहला उपन्यास है जिसमें ग्रामीण जीवन अपने भरे-पूरे रूप में पूरी सच्चाई, तीव्रता और बेबाकी के साथ सामने आता है। साथ ही, शीआ मुसलमानों का जीवन भी हिन्दी-उर्दू में पहली बार ही इस उपन्यास में चित्रित हुआ है। मूल्य १६-००

चंदा की चाँदनी
कृश्न चन्दर

लोकप्रिय कथाकार का नया उपन्यास, जिसमें उदात्त प्रेम की बड़ी ही मर्मस्पर्शी कहानी कही गयी है। आदि से अंत तक रोचक और प्रभावशाली। मूल्य ६.००

भारतेंदु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन
डा० गोपीनाथ तिवारी

भारतेन्दु जी अकेले ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने पश्चिमी तथा पूर्वी नाट्य-शास्त्र के उपयोगी सिद्धान्तों को हृदयंगम कर नाट्य-रचना की। अपने नाटकों में वे शास्त्र-अनुगामी भी हैं और शास्त्र-विरोधी भी। अतः उनके नाटकों का यह अनुशीलन उनके नाटकों को बोधगम्य कराने में सहायक होगा। मूल्य १८-००

समीक्षायण
पं० अयोध्यानाथ शर्मा
डा० विश्वनाथ गौड़

हिन्दी के तीन मूर्द्धन्य आलोचकों—आचार्य शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा लिखित भक्त कवियों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का विश्लेषण करने वाले निबन्धों का संकलन। मूल्य ६.००

शंखध्वनि
श्री सुमित्रानन्दन पन्त

पंतजी की इन कविताओं में मुख्यतः नये जागरण के स्वरों को तथा विश्व-जीवन के भीतर उदय हो रहे मनुष्यत्व की रूपरेखाओं को अभिव्यक्ति मिली है। मूल्य १५.००

भस्मांकुर
नागार्जुन

महाकवि कालिदास के विख्यात काव्य 'कुमारसंभव' के मदन-दहन वाले प्रसंग पर आधारित यह लघु काव्य नागार्जुन के रचनाकार की अनूठी उपलब्धि है। मूल्य ५-००

चिट्ठी बोली फिर से
हरिकृष्ण देवसरे

एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश भेजने की पद्धति आदिकाल में क्या थी और उसका किस-किस तरह विकास हुआ इसकी दिलचस्प कहानी बच्चों के लिए। मूल्य २.५०

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

डा० सुमन द्वारा हिन्दी परिषद के २५ वें अधिवेशन का उद्घाटन

भारत के विश्वविद्यालयों के हिन्दी प्राध्यापकों के संगठन 'भारतीय हिन्दी परिषद' के २५वें वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति डाक्टर शिवमंगल सिंह सुमन ने कहा कि हिन्दी भाषा-भाषी ७ राज्यों में हिन्दी माध्यम से सभी विषयों के शिक्षण की व्यवस्था और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को व्यापक और हृदयग्राही बनाने की समस्या के संबंध में हमारे सामने स्थितियां स्पष्ट हो जानी चाहिये। हिन्दी को संपर्क भाषा बनाने के लिये त्रिभाषी सूत्र अनिवार्य है।

अधिवेशन के अध्यक्ष पटना के आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा ने हिन्दी की वर्तनी को लेकर फैली हुई अराजकता के सर्वसम्मत निराकरण, हिन्दी को दुर्बोधता से बचाने के प्रयास, शिक्षण की नई विधि के प्रयोग, साहित्य की नई पीढ़ी की उपेक्षा की समाप्ति, वैज्ञानिक एवं प्राविधिक साहित्य के प्रचुर निर्माण, शोध विषयों की नवीनता एवं गंभीरता, प्रकाशन कोष की व्यवस्था, आदि की आवश्यकता प्रकट की।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा पुस्तकें आमंत्रित

हिन्दी निदेशालय द्वारा हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों के स्कूलों, कालेजों, सार्वजनिक पुस्तकालयों और स्वैच्छिक संस्थाओं को हिन्दी पुस्तकें निःशुल्क भेंटस्वरूप देने के लिए प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं तथा लेखकों से विविध विषयों पर मौलिक और अनूदित हिन्दी पुस्तकें आमंत्रित की गई हैं। पुस्तकें ३० अक्तूबर १९७१ तक उपनिदेशक (विस्तार), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, पश्चिमी ब्लाक नं० ७, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-२२ के पते पर भेजनी होंगी।

पुस्तक परिषद् की स्थापना

चिल्ड्रेंस बुक ट्रस्ट द्वारा बाल साहित्य पर आयोजित एक विचारगोष्ठी में दिये गये सुझावों के अनुसार, ट्रस्ट ने एक बाल पुस्तक परिषद् की स्थापना करने का निश्चय किया है। यह परिषद् एक डायरेक्टरी प्रकाशित करेगी, जिसमें वर्गीकृत प्रकाशकों, बाल साहित्यकारों तथा बाल पुस्तकों के चित्र बनानेवाले चित्रकारों की सूचियाँ होंगी।

अरविन्द शताब्दी के कार्यक्रम

अरविन्द शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में साहित्य अकादमी विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में पाँच संगोष्ठियाँ आयोजित करेगी। केन्द्र सरकार ने इस आयोजन के लिए एक लाख रुपये की धनराशि स्वीकृत की है।

लेखक की कठिनाई

लेखकों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'पेन' की कांग्रेस में गहरी चिन्ता प्रकट की गई है कि कलम के बल पर जिन्दा रहने वालों के लिए अब दो जून का भोजन प्राप्त करना भी कठिन हो रहा है। निजी प्रकाशकों से लेकर सरकार तक सब लेखक पर घात लगा कर बैठे हैं। स्वतंत्र चिन्तन सिर्फ रोटी कमाने के लिए नहीं होना चाहिए, इस मत को स्वीकार करते हुए भी कहा गया है कि लेखक को उसकी प्रत्येक रचना का वाजिब पुरस्कार मिले यह आवश्यक है। लेखक और विचारक यदि किन्हीं आंतरिक और वाह्य दबावों या मजबूरियों में लिखता है तो यह उस समूचे उद्देश्य के आधार को खत्म कर देता है, जिस पर स्वतंत्र चिन्तन और लेखन का सिद्धान्त टिका है।

प्रकाशन समाचार

नोबुल पुरस्कार-विजेता कवि का देहान्त

नोबुल पुरस्कार विजेता कवि जार्ज सेफरिस की मृत्यु हो गयी। उन्हें डबल निमोनिया हो गया था। सेफरिस ७१ वर्ष के थे और उन्हें साहित्य का नोबुल पुरस्कार १९६३ में मिला था।

कथा-भारती

मलयालम के प्रमुख प्रकाशक साहित्य प्रवर्तक सहकारी संघ, कोट्टयम् ने हाल ही में "कथा-भारती" नामक भारतीय भाषाओं का एक-प्रतिनिधि कहानी-संकलन प्रकाशित किया है। इसमें चौदह भारतीय भाषाओं की एक-एक चुनी हुई कहानी दी गयी है। संपादक एवं अनुवादक हैं श्री वी० डी० कृष्णन नंपियार (प्राध्यापक, यूनिवर्सिटी कालेज, त्रिवेन्द्रम, केरल)। धर्मयुग, सारिका, नई कहानियाँ, युगप्रभात आदि हिन्दी की प्रमुख पत्रिकाओं से कहानियाँ चुनी गई हैं।

उ० प्र० में उर्दू साहित्य अकादमी

उर्दू के विकास एवं प्रचार के कार्य में और अधिक गति लाने और खास तौर पर उर्दू पुस्तकों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देने के लिए उत्तरप्रदेश के राज्यपाल ने मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में उर्दू अकादमी की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की है।

विश्व साहित्य पर फारसी का प्रभाव

विश्व-साहित्य पर फारसी भाषा का कितना प्रभाव है तथा भारत और ईरान के बीच सदियों पुराने संबंधों को बनाए रखने में इस भाषा ने कितना योगदान किया है, इन विषयों पर विचार करने के लिए प्राच्य विद्या और ईरान की सभ्यता और संस्कृति के जानकारों की एक द्वि-दिवसीय गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री प्रो० नुरूल हसन ने भारत और ईरान के बीच प्राचीन संबंधों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि ईरान में सबसे अधिक दिनों तक शासन करने वाले सम्राट खुरूश ने ही अपने देश में कानून बनवाए और व्यक्ति-स्वातंत्र्य का अधिकार अपनी जनता को दिया।

बंगला लेखक का निधन

विख्यात बंगला उपन्यासकार व कहानीकार सैयद वली उल्लाह शाह का पेरिस में दिल का दौड़ा पड़ने से देहान्त हो गया। वे ४९ वर्ष के थे।

साहित्य के
इतिहास की
एक नयी
सार्थक
घटना

हिन्दी साहित्य के सर्वोच्च शिखर

श्री जयशंकर प्रसाद

की इन पाँच कृतियों के प्रकाशन
के साथ—

प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी

अपनी यात्रा आरम्भ करते हुए
आपका
हार्दिक अभिनन्दन करता है !
आपके महत्त्वपूर्ण सहयोग और सद्भाव
की कामना के साथ—

प्रसाद प्रकाशन

पोस्ट बॉक्स, ३६, गोवर्द्धन सराय, वाराणसी-१
फोन : ६३४३६

कविता

शशि की तरी—ले० श्रीसुमित्रानन्दन पंत; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ १०२; मूल्य ७.०० ।

'शशि की तरी' श्रीसुमित्रानन्दन पंत की नवीनतम काव्यकृति है। इसमें संग्रहीत कविताएँ 'अनुपमा' नाम की एक बालिका की स्मृति में लिखे गये हैं। अनुपमा तीन-चार साल की एक बड़ी ही आकर्षक तथा भोली लड़की थी जिसे पंतजी ने स्वराज भवन, इलाहाबाद, के बाल-भवन में देखा था। इस बालिका के प्रति पंतजी के मन का आकर्षण इतना प्रबल हुआ कि वे उसे गोद लेने की कल्पना करने लगे, लेकिन उनका स्वप्न साकार होने से पहले ही वह स्वर्ग की कली अपनी देहलीला समाप्त कर चली गई। इस अप्रत्याशित घटना से पंतजी के कोमल मन को जो आघात लगा उसी से गीतों का यह निर्झर फूटा है जो आज 'शशि की तरी' के रूप में पाठकों के सामने है।

पंतजी ने अपने जीवन में अनेक मार्मिक आघात सहे हैं लेकिन फिर भी उन्होंने अपने आप को सदा संयमित रखा है। उन आघातों की असंयमित अभिव्यक्ति उनके काव्य में कहीं नहीं मिलेगी। 'शशि की तरी' के गीतों में भी उनके शोकाभिभूत मन का संयमित रूप देखने को मिलता है।

प्रस्तुत कविताएँ यद्यपि अनुपमा की स्मृति में लिखे गये हैं किन्तु नव-मानव और नव-संस्कृति के उदय की कामना, जो पंतजी के संस्कारों में बसी हुई है, यहाँ भी स्थान-स्थान पर सहज भाव से अभिव्यक्त हो गई है।

हिन्दी के 'शोक-गीति' साहित्य को 'शशि की तरी' पंतजी की एक विशिष्ट देन हैं।

उपन्यास

कटा हुआ आसमान—ले० जगदम्बा प्रसाद दीक्षित; प्र० अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, अंसारी रोड, दिल्ली-६; आकार डिमाई; पृष्ठ २३२, मूल्य १६.०० ।

'कटा हुआ आसमान' श्री जगदम्बाप्रसाद की पहली प्रकाशित कृति है, लेकिन इस पहले उपन्यास में ही उनकी सशक्त लेखनी का परिचय मिल जाता है। बड़े मामूली से कथानक का सहारा लेकर लेखक ने आज के महानगर की भागदौड़ में फँसे एक मध्यवर्गीय आदमी की असहायावस्था का चित्रण प्रभावशाली ढंग से किया है। अपनी और अपने परिवार की पेट की ज्वाला बुझाने के प्रयत्न में दिन-रात एक करनेवाले व्यक्ति और रोजी-रोटी की चिन्ता से मुक्त, जीवन की सुख-सुविधाओं के अतिरेक में जीने वाले एरिस्टोक्रैट की नैतिकताएँ कितनी भिन्न हैं और इन दोनों की समस्याओं में कितना बुनियादी फर्क है यह दिखाना ही इस उपन्यास का उद्देश्य है।

पूरा उपन्यास चेतना-प्रवाही शैली में लिखा गया है। इस शैली में हिन्दी में कुछ कहानियाँ तो लिखी गई हैं लेकिन सम्पूर्ण उपन्यास यह पहला ही है और यह इस कृति की एक बड़ी विशेषता है।

हत्या—ले० हृदयेश, प्र० अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, अंसारी रोड, दिल्ली-६; आकार क्राउन, पृष्ठ १४५; मूल्य ६.०० ।

हृदयेश ने पहले दो-तीन वर्ष हास्य-व्यंग्य लिखे, या खलील जिब्रान की रचनाओं के अनुवाद किये, फिर कहानियाँ लिखते और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे, लेकिन पुस्तक रूप में प्रकाशित अपनी पहली औपन्यासिक कृति 'गाँठ' के द्वारा ही वे पाठकों और समीक्षकों का ध्यान

अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल हो सके। 'हत्या' उनका दूसरा उपन्यास है।

प्रस्तुत कृति में लेखक ने एक छोटे-से गाँव की धड़कती जिंदगी को केन्द्र बनाकर हत्या के बहु-आयामी चित्र प्रस्तुत किये हैं। हत्या का मतलब सिर्फ यही नहीं है कि एक आदमी के प्राण ले लिये जायें; हत्या व्यक्ति के चरित्र की, उज्ज्वल सम्भावनाओं की, अभिव्यक्ति पाने के लिए छटपटाती प्रतिभा की भी होती है। प्रस्तुत उपन्यास में हत्या के इन्हीं सब रूपों को प्रस्तुत किया गया है।

भाषा-शैली और संवेदना की दृष्टि से यह कृति हिन्दी के लघु-उपन्यासों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी, यह आशा करना निराधार नहीं है।

अपराधिनी—शिवानी; प्रकाशक-राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली-६; मूल्य ५.००; पृष्ठ १४८; आकार क्राउन।

शिवानी हिन्दी की एकमात्र ऐसी कहानी लेखिका हैं जो लोकप्रियता और साहित्यिकता दोनों का निर्वाह साथ-साथ अपनी रचनाओं में करती हैं। बहुधा कहा जाता है कि लोकप्रियता और स्तरीयता दो विपरीत प्रकृति के शब्द हैं। स्तर को बरकरार रखते हुए लोकप्रिय साहित्य सृजन करने और लोकप्रियता प्राप्त करते हुए स्तर बनाए रखने की बात आज लोग सोच भी नहीं पाते। लेकिन भारती का 'गुनाहों का देवता' और शिवानी का 'कृष्ण कली' ऐसी पलायनवादी दलीलें देने वालों के लिए जोरदार उत्तर हैं।

शिवानी को कहानी लेखन के क्षेत्र में हिन्दी और बंगला कथा-शिल्प के मध्य का एक और एकमात्र सेतु माना जाना चाहिए। यह उनकी सहजता और सौम्यता ही है कि वे अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को गुरुदेव ठाकुर के प्रभा-मण्डल से अलग हटाकर न देखती हैं और देखना पसंद करती हैं। बंगला साहित्य से उनके नैकट्य का ही यह परिणाम है कि समीक्ष्य कृति 'अपराधिनी' में उन्होंने अपराधी औरतों की कर्कश और संवेदनाहीन कथाभूमि को संवेदना के चरमस्तर तक छुआ है और पाठक को अपराधी महिलाओं के बारे में 'पॉजिटिव अटीट्यूड' से सोचने को विवश किया है। 'अपराधिनी' का यह दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि वह मात्र एक उपन्यास बनकर रह गई है जबकि समाजशास्त्रीय दृष्टि से, उपन्यास से पहले, वह एक शोधकृति है जो भारतीय अपराधी महिलाओं के मनस्लोक का विस्तृत दर्शन कराती है। अपनी पड़ोसिन प्रतिवेशिनी का खून करने वाली चनुली, अपने से कम उम्र के अपने प्रेमी से अपने ही पति का खून कराने वाली जानकी, अपने पुत्र की सहमति से पुत्रवधू को जिन्दा जलाने वाली हीरा, 'अपराधिनी' में इन सबके चरित्र अपराध के बावजूद अपने धनात्मक पक्ष पर सोचने को विवश करते हैं और नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों पर एक गहरा—बहुत गहरा प्रश्न चिह्न लगाते हैं। और अन्त में यह निर्णय लेना ही पड़ता है कि भारतीय नारी में जो भी हेय और सड़ा-गला है उसके लिए उत्तरदायी वह नहीं बल्कि हमारा परिवेश है, हमारी सांस्कृतिक रूढ़ियाँ हैं जिन्हें तोड़ चुकने का अभिनय हम आए दिन करते रहते हैं।

आलोचना

सूफी महाकवि जायसी—वेदान्त और रहस्यवाद—ले०-डा० नारायणप्रसाद वाजपेयी; प्र० अमित प्रकाशन, गाजियाबाद; आकार डिमाई; पृष्ठ ९६; मूल्य ६.५०।

प्रस्तुत पुस्तक में छोटे-बड़े केवल सात लेख हैं। सभी लेख अनुसंधानात्मक कम, छात्रोपयोगी अधिक हैं। प्रथम अध्याय में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि सूफीमत कहाँ और किस प्रकार उत्पन्न हुआ एवं भारतागमन से पूर्व वेदान्त से किस प्रकार प्रभावित हुआ। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्वानों के मतों का संकलन किया गया है, विश्लेषण नहीं। तत्पश्चात वेदान्त और तसव्वुफ मतों के ब्रह्म, जीव, सृष्टि, माया तथा मोक्ष विषयक मतों की विचारगत एकता का प्रतिपादन करते हुए द्वितीय को प्रथम का मधुर रूपान्तर बताया गया है। यह मान्यता न तो मौलिक है और न सम्यकरूपेण प्रमाणित, पिष्टपेषित अवश्य है जो शैलीगत दोष बन गई है।

दूसरे अध्याय में, जायसी के रहस्यवाद पर विभिन्न विद्वानों के मतों का संग्रह किया गया है, उनका मूल्यांकन एवं परीक्षण नहीं। यह इस तथ्य का प्रतीक है कि प्रस्तुत कृति छात्रोपयोगी तथ्यों का आकलन अधिक है, स्वतंत्र मूल्यांकन कम। आलोच्य कृति में, जायसी के रहस्यवाद को पाँच भागों में वर्गीकृत किया गया है और प्रत्येक वर्गीकरण को एक अध्याय का रूप भी दिया गया है। यह

वर्गीकरण, केवल विभाजन मात्र है, इसके पीछे न ठोस तर्क हैं और न अकाट्य प्रमाण।

पुस्तक का मुद्रण एवं प्रकाशन उच्चकोटि का हुआ है। इसके लिए 'अमित प्रकाशन' बधाई का पात्र है। पुस्तक विद्वानों के लिए न सही, छात्रों के लिए अवश्य उपयोगी सिद्ध होगी। लेखक यदि विचार, संयम, तर्क एवं परीक्षण से काम लेता तो पिष्टपेषण से अवश्य बच सकता था। आशा है, आगामी संस्करण में इन दोषों का परिहार हो सकेगा।

आधुनिक हिन्दी-कविता में महाभारत के कुछ पात्र— ले०-डा० पुष्पपालसिंह; प्र० अमित प्रकाशन, गाजियाबाद; आकार-डिमाई; पृष्ठ ११६; मूल्य ८.००।

लेखकीय वक्तव्य के आधार पर कहा जा सकता है कि आलोच्य कृति की सामग्री, लेखक के शोध प्रबन्ध 'कृष्ण तथा महाभारत की मुख्य कथा सम्बन्धी आधुनिक हिन्दीकाव्य (१६०१ से १६६४)' से ग्रहण की गई है। आधुनिक युग की कविता में, आधुनिक युग की वैज्ञानिक दृष्टि, वर्तमान युग की परिवर्तित धार्मिक कसौटी, नवीन सांस्कृतिक चेतना के निकष और नवविकसित आर्थिक दृष्टिकोण के संदर्भ में महाभारत के पुराने पात्रों को अंकित किया गया है। महाभारत ने अधिकांश पात्रों को एकांगी संदर्भ में अंकित किया है। यह तो आधुनिक कविता की ही विशेषता है कि उसके कवि ने वैज्ञानिक स्तर पर व्यक्ति की अनुभूति को प्रस्तुत किया। आलोच्य कृति का महत्व, आधुनिक कविता के कृतित्व को समीक्षात्मक स्तर पर सफलतापूर्वक अंकित करने में है।

मैं अंग्रेजों का जासूस था— ले०धर्मेन्द्र गौड़, मूल्य ६.५०, पृष्ठ १५७, आकार क्राउन, प्रकाशक, लिपि प्रकाशन दिल्ली-५१।

प्रस्तुत कृति एक अवकाश प्राप्त गुप्तचर के संस्मरणों का संग्रह है। लेखक धर्मेन्द्र गौड़ प्रसिद्ध सिने लेखक श्री व्रजेन्द्र गौड़ के भाई हैं और साहित्यिक जगत में भी उनके काफी अच्छे संबंध हैं। श्री गौड़ को द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान लगभग तीन वर्ष तक पूर्वी युद्ध क्षेत्र में ब्रिटिश गुप्तचरी विभाग के 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' में एक महत्त्व-पूर्ण पद पर कार्य का अवसर मिल चुका है। उस पद पर कार्य करते हुए जिन-जिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा, जो-जो भूमिकाएँ अदा करनी पड़ीं उनका रोमांचक वर्णन लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में किया है। श्री गौड़ अब अवकाश प्राप्त कर चुके हैं किन्तु फिर भी भारतीय गुप्तचर विभाग से संबंधित रहने वाले ऐसे वही पहले व्यक्ति हैं जो अपनी गुप्तचरी जिन्दगी के संस्मरण प्रकाशित करने का साहस कर रहे हैं। पुस्तक रूप में प्रकाशित होने से पहले भी इसके कई अंश धर्मयुग, सा० हिन्दु० जैसे हिन्दी के शीर्षस्थ पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं और विद्वानों द्वारा सराहे गए हैं। विदेशी भाषाओं में तो उपन्यासों के अतिरिक्त भी बहुत सा 'स्पाई' साहित्य है लेकिन हिन्दी के प्रकाशन जगत में जब कि प्रकाशन का एकमात्र धर्म उपन्यास और थीसिस छापना रह गया हो, ऐसी पुस्तकों के प्रकाशन को शुभ संकेत माना जाना चाहिए।

बाल साहित्य

सोने की वर्षा— ले० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'; प्र० राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६; आकार १७×२७/८; पृष्ठ ६४; मूल्य ३.००।

'सोने की वर्षा' में बच्चों के लिए रोचक तथा सरस कहानियाँ संग्रहीत हैं। इनमें से कुछ लोककथाओं पर आधारित हैं और कुछ ऐतिहासिक आख्यानों पर। सबसे पहली कहानी जिसके आधार पर पुस्तक का नाम रखा गया है, धन के अनुचित लोभ के दुष्परिणाम दर्शाती है। 'रानी दुर्गावती' और 'अमर ढोल' आदि ऐतिहासिक आख्यानों पर आधारित कहानियों में वीरता और स्वाभिमान के आदर्श को प्रस्तुत किया गया है। 'सोने की कोयल' एक लोककथा है जिसका उद्देश्य बच्चों को कोई उपदेश देना नहीं बल्कि उनकी कुतूहल वृत्ति को जाग्रत करना और उनका मनोरंजन करना है। सभी कहानियों की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है तथा कलात्मक चित्रों ने पुस्तक के आकर्षण को और अधिक बढ़ा दिया है।

हमारे नये प्रकाशन

संदर्भ ग्रन्थ

हिन्दी साहित्य : आलोचना ग्रंथसूची (१६४७-१६७१) संपा० यशपाल महाजन ५०-००
(हिन्दी साहित्य पर आलोचना सम्बन्धी पुस्तकों की विषयवार सूची)

आलोचना

तुलसीदास के काव्य का नैतिक मूल्य (शोध-प्रबन्ध) डा० चरणदास शर्मा ३०-००
नेपाली और हिन्दी भक्ति काव्य का तुलनात्मक अध्ययन (शोध-प्रबन्ध) डा० मथुरादत्त पांडेय २२-००

उपन्यास

आंचल का बन्धन : शारदा शर्मा ५-५० भारमुक्ति : शत्रुघ्नलाल शुक्ल ८-००

हमारे अन्य प्रकाशन

संदर्भ प्रकाशन

वृहद् हिन्दी ग्रन्थ सूची : संपा० यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन ४०-००
वृहद् हिन्दी ग्रन्थसूची : परिशिष्ट १६६६ ,, १५-००
वृहद् हिन्दी ग्रंथसूची : परिशिष्ट १६७१ ,, शीघ्र ही प्रकाशित होगी
(हिन्दी में प्रकाशित ग्रन्थ तथा ग्रन्थकारों की विस्तृत सूची)

उपन्यास

आत्मत्याग की भूमिका	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	५-००	प्रतिष्ठा	प्रकाश भारती	८-००
अधूरा स्वर्ग	,,	७-००	दीवार	राजवंश	४-५०
स्वप्नों की गोद (नया संस्करण)	,,	८-००	दायरा	,,	५-००
दूखन लागे नैन	,,	७-००	पतिता	,,	४-५०
टूटा टी-सेट	,,	५-००	बिठूर के नाना	आनन्द सागर	६-५०
होटल का कमरा (कहानी-संग्रह)	,,	४-००	कैंची और कुर्सी	बैजनाथ गुप्त	४-५०
बात एक नाते की	,,	५-००	मधुर मिलन	हरिचरण वैद	४-५०
प्यार और करुणा	,,	६-००	शैलाधीश	शत्रुघ्नलाल शुक्ल	५-००
अन्तर्ज्वाला	श्रीराम शर्मा 'राम'	७-००	अनबूझे सपने	उमाशंकर	५-५०
दो धाराएँ	,,	६-००	भुवन विजयम्	,,	७-००
रथ से गिरी बाँसुरी	हिमांशु श्रीवास्तव	४-५०	दो फूल एक जिन्दगी	विमल वैद	४-००

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

१३३ लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-६
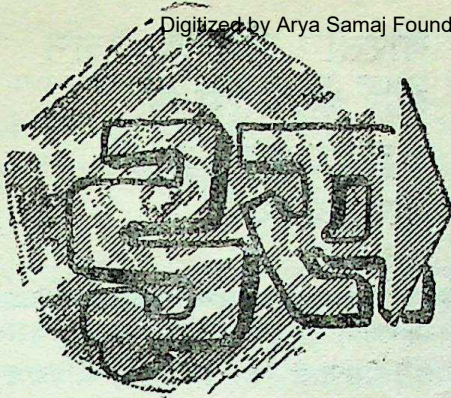
आलोचना

डॉ० इन्द्रनाथ मदान, तुलसी प्रतिभा, लोकभारती, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद	—
डॉ० कृष्णकांत चतुर्वेदी, द्वैत वेदान्त का तात्विक अनुशीलन, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली-६	२०-००
डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, मध्यकाल के पाँच कवि, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी	७-५०
डॉ० बालकृष्ण गुप्त, काव्य कौमुदी, साहित्य निकेतन, श्रद्धानंद पार्क, कानपुर	२-००
विसेश्वरप्रसाद केसरी, साहित्य के तत्त्व और आयाम, कमल प्रकाशन, हिन्द पिढ़ी, राँची	५-००
डॉ० रामनारायण सिंह, स्कन्दगुप्त : एक अध्ययन, ,, ,, ,,	४-५०
डॉ० पुष्पपाल सिंह, काव्य मिथक, अमित प्रकाशन, सुभाष द्वार, गाजियाबाद	६-००
डॉ० सिस्टर क्लेमेंट मेरी, हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर विचारात्मक गद्य, स्मृति प्रकाशन, महाजनी टोला, इलाहाबाद	२५-००
हरेन्द्रप्रताप सिनहा, बिहारी सतसई का मूल्यांकन, स्मृति प्रकाशन, महाजनी टोला, इलाहाबाद	५-००

कविता

श्रीसुमित्रानन्दन पंत, शशि की तरी, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६	७-००
पद्मा सुधि, डमी, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली-६	५-००
कमला पांडेय, काव्य लतिका, रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा	२-५०
जानकीवल्लभ शास्त्री, राधा, लोकभारती, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद	—
दिनकर सोनवलकर, 'अ' से असभ्यता, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली	४-००

उपन्यास

डॉ० पिनाकिन दवे, विश्वजित, स्मृति प्रकाशन, महाजनी टोला, इलाहाबाद	१५-००
कृश्न चन्दर, चम्बल की चमेली, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६	६-००
विमल मित्र, काजल, ,, ,, ,,	५-००

कहानी

मोहन राकेश, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६	५-००
बलवंतसिंह, पहला पत्थर तथा अन्य कहानियाँ, लोकभारती, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद	—
अशोक अग्रवाल, सं०, दस कहानीकार, साहित्यवाणी, गोसाईं टोला, इलाहाबाद	७-००
आर्या प्रसाद, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा	२-५०

नाटक

भुवनेश्वर, कारवाँ तथा अन्य एकांकी, लोकभारती, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद —
रावी, प्रबुद्ध सिद्धार्थ, रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा १-८०
कृष्णकिशोर श्रीवास्तव, रास्ते मोड़ और पगडंडी, रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा १-७५

कोश ग्रन्थ

डॉ० सुभाष काश्यप एवं विश्वप्रकाश गुप्त, राजनीति कोश, राजमकल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ ४०-००

निबन्ध

डॉ० गयाचरण त्रिपाठी, प्राचीन भारत की कला, साहित्य निकेतन, कानपुर-१ ६.००
धनंजय वर्मा, अँधेरा नगर, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली ५.००

जीवनी

यदुवंश, महर्षि दयानन्द, लोकभारती, इलाहाबाद —

भूगोल

विश्वनाथ तिवारी, दक्षिणी महाद्वीपों का प्रादेशिक भूगोल, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी १२.००
कृपाशंकर गौड़, भारत की भौगोलिक समीक्षा, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी २०.००
विश्वनाथ तिवारी, हमारा महाद्वीप एशिया, ,, ,, ,, ५.००

इतिहास

डॉ० उदयनारायण राय, गुप्त सम्राट् और उनका काल, लोकभारती, इलाहाबाद —

विविध

श्रीप्रकाश, उच्च शिक्षा के अभिनव आयाम, साहित्य निकेतन, कानपुर ३.००
स० द० श्रीवास्तव, वैज्ञानिक उद्यानशास्त्र, रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा ३.५०
जगदीशचन्द्र उपाध्याय, तकनीकी भौतिकी, रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा १६.००
रमेश चौधरी, आन्ध्रप्रदेश, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली ३.००
योगराज थानी, भारत के द्वीप ,, ,, ,, ३.००

बाल एवं किशोर साहित्य

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', सोने की वर्षा, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली-६ ३.००
अमरनाथ शुक्ल, रामचरितमानस की प्रेरक कथाएँ, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली-६ २.५०
रामकृष्ण शर्मा, तमसा के तट पर, ,, ,, ,, ३.०५
सुरेन्द्र भण्डारी, कथा पुरानी सदा सुहानी, ,, ,, २.५०
रामलखन शुक्ल 'मादक', अक्षरगीत, साहित्यवाणी, गोसाईंटोला, इलाहाबाद २५.००
डॉ० धनंजय, भारतीय किलों की कहानी, ,, ,, ,, २.००

अमित प्रकाशन, ६६ सुभाष द्वार, गाजियाबाद
—साहित्य की विधाएँ (काव्यशास्त्र), डा० रामलखन शुक्ल
—भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त (काव्यशास्त्र), डॉ० रामलखन शुक्ल

कमल प्रकाशन, हिन्द पिढ़ी, राँची
—प्रेमचन्द के उपन्यासों का वस्तुतात्विक अध्ययन (आलोचना), डॉ० श्यामसुन्दर घोष
—कामायनी : एक सरल अध्ययन (आलोचना), डॉ० कमलेश जैन

पूर्वोदय प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली-६
—समय, समस्या और समाधान (निबंध), जैनेन्द्र कुमार
—वृत्त विहार (निबंध), जैनेन्द्रकुमार
—अनाम स्वामी (उपन्यास), जैनेन्द्रकुमार
—बंगला देश : एक यक्ष प्रश्न (विविध), जैनेन्द्रकुमार

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दरियागंज, दिल्ली-६
—जीप पर सवार इल्लियाँ (व्यंग्य), शरद जोशी
—खट्टर काका (व्यंग्य), डॉ० हरिमोहन झा
—दो खिड़कियाँ (कहानी संग्रह), अमृता प्रीतम
—साँप और सीढ़ी (उपन्यास), शानी

राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६
—जंगली फूल (उपन्यास), ताराशंकर वन्द्योपाध्याय
—किस्सा तोता पढ़ाने का (उपन्यास), हंसराज रहबर
—नई राह पर (उपन्यास), शांति भट्टाचार्य
—मन की मौज (ललित निबन्ध), राजनाथ पांडेय
—तुलसीदास (जीवनी), वीरेन्द्रकुमार गुप्त
—कालिदास (जीवनी), वीरेन्द्रकुमार गुप्त
—सिक्किम (देश और निवासी), कमला सांकृत्यायन
—भूटान (देश और निवासी), कमला सांकृत्यायन

रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा
—पशुपालन (कृषि), इन्द्रदत्त भतेले एवं अजब सिंह यादव
—प्रायोगिक रसायन (रसायनशास्त्र), आर० के० स्याल एवं के० सी० गुप्त
—पदार्थ के सामान्य गुण (सांख्यिकी), डॉ० चन्द्रभान गुप्त
—शैक्षिक एवं माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था (शिक्षा), डी० एन० गौड़ एवं आर० पी० शर्मा

लोकभारती, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद
—गुरु नानक (जीवनी), डॉ० जयराम मिश्र
—ए पार बांगला ओ पार बांगला (उपन्यास), शंकर
—एकदा नैमिषारण्ये (उपन्यास), अमृतलाल नागर
—मेरा परिवार (रेखाचित्र), महादेवी वर्मा
—सुब्रह्मण्य भारती की राष्ट्रीय कविताएँ (कविताएँ), सुन्दरम्
—भारतीय संस्कृति (निबन्ध), डॉ० रामजी उपाध्याय
—संवर्त (कविता), डॉ० महेन्द्र भटनागर
—प्रबन्धकीय अर्थशास्त्र (अर्थशास्त्र), एस० एन० दुबे

साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर
—भारतीय पुरालिपि (पुरातत्त्व), डॉ० राजबलि पांडेय
—भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और संविधान (राजनीति), डॉ० बी० एन० शर्मा एवं बी० पी० गौतम
—हिन्दू राजशास्त्र (राजनीति), प्रो० के० सी० बंसल
—पद्मावती समय (काव्य-समीक्षा), विश्वनाथ गौड़
—निराला : तुलसीदास (आलोचना), प्रो० सेवक वात्स्यायन

स्मृति प्रकाशन, महाजनी टोला, इलाहाबाद
—समाज के दुश्मन (उपन्यास), विजयेश त्यागी
—पक्षधर (उपन्यास), विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
—भँवरगीत विमर्श (आलोचना), डॉ० भगवानदास तिवारी
—महाकवि नन्ददास प्रणीत भँवरगीत (पाठानुशीलन), डॉ० भगवानदास तिवारी

हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी-१
—प्रसाद काव्यकोश (साहित्य), सुधाकर पांडेय
—एक गाँव अनेक युग (उपन्यास), मार्टिन विक्रम
—काव्य के इतिहास पुरुष (जीवनी), अमरेश
—भाषा और हिन्दी भाषा (भाषाविज्ञान), डॉ० रोहरा
—तिकड़म (नाटक) राजकुमार
—शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी (मनोविज्ञान), आर० पी० वार्ष्णेय

युगकवि श्रीसुमित्रानंदन पंत की दो अभिनव कृतियाँ

शंखध्वनि

पन्तजी की नवीनतम कविताओं का संग्रह, जिसमें उनके कविव्यक्तित्व के नये आयामों का उद्घाटन हुआ है। इन कविताओं में मुख्यतः नये जागरण के स्वरों को तथा विश्व-जीवन के भीतर उदय हो रहे मनुष्यत्व की रूप-रेखाओं को अभिव्यक्ति मिली है। कुछ रचनाओं में वर्तमान जीवन की विसंगतियों के प्रति कवि के मन की प्रतिक्रियाएँ तथा कुछ में उसके व्यक्तिगत सुख-दुख की अनुगूँजों को भी वाणी मिली है। मूल्य १५.००

शशि की तरी

शशि की तरी के गीत अनुपमा को समर्पित हैं। अनुपमा तीन-चार साल की एक भोली लड़की थी, जिसे पंतजी ने स्वराज-भवन, इलाहाबाद के बाल-भवन में देखा था। इस अबोध वय की दिव्य बालिका के प्रति पंतजी के मन का आकर्षण इतना प्रबल हुआ कि वे उसे गोद लेने का सपना देखने लगे। किन्तु दुर्भाग्यवश वह स्वप्न साकार होने से पहले ही वह स्वर्ग की कली अपनी देहलीला समाप्त कर चली गई। उसी की स्नेह-मधुर पवित्र स्मृति में कवि के मन ने ये गीत गुनगुनाये हैं। मूल्य ७.००

पंत काव्य के प्रेमियों के लिए राजकमल की नई भेंट

● पठनीय

● संग्रहणीय

राजकमल द्वारा प्रकाशित पंतजी की अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

लोकायतन	३२.०
लोकायतन (संक्षिप्त)	१२.०
चिदंबरा	१८.०
रश्मिबंध	३-५
अतिमा	६-०
स्वर्णधूलि	७-०
कला और बूढ़ा चाँद	८-०
युगवाणी	५-५
पल्लव	७-०
पल्लविनी	१४-०
शिल्पी	५-०
पौ फटने से पहले	६-०
किरणवीणा	११-०
पुरुषोत्तम राम	३-५

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

श्रीमती शीला सन्धू, मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ८ फ़ैज़ बाजार, दिल्ली, के लिए [illegible] ओखला, नई दिल्ली-२० में मुद्रित ।